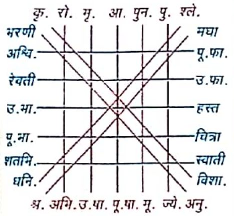
विवाहे पञ्चशलाका चक्रम्



वधू प्रवेशनेदाने वरणे पाणिपीडने।
वेधः पञ्चशलाकाख्योऽन्यत्रसप्तशलाककः।।

अथ ग्रहाणां चतुर्विध सम्बन्धमाह।

प्रथमः स्थानसम्बन्धो दृष्टिजस्तु द्वितीयकः तृतीयः सत्येकतोदृष्टिः स्थित्येकत्र चतुर्थकः।।१।।

अन्योन्यगौ तथा स्वे स्वेसंयुतावन्यभेस्थितिः। पूर्णेक्षितौ मिथे वापि चैक वर्ग गतौ यदा।।२।।

अथ ग्रहाणां फल विचारे विशेषमाह उच्च त्रिकोण स्वसुहृच्छत्रु नीच गृहांकगैः शुभं सम्पूर्णपादेन दलं पादाल्प निष्फलमिति।

वाण पंचकम्। (रवि गतांशा)

व्रतेत्याज्यः रोगः
८, १७, २६

अनलोऽयंगृह स्याच्छादने त्याज्यः सशल्यः
२, ११, २०, २९

नृपसेवायां नृपः
४, १३, २२

यात्रायांत्याज्यः चौरः
६, १५, २४

विवाहेत्याज्यः मृत्युः
१, १०, १९, २८

॥ॐ॥

श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम्



राजा - भौमः

।श्री।

काशी का शुद्ध पञ्चाङ्ग



॥ॐ॥

श्री विश्वनाथाय नमः



मंत्री - शनिः

अथ ग्रहाणामरिष्टं परिहरत्वमत्राह

गहुः दोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः। त्रयाणां भूमिजो, हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः।।१।।

पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमा। सप्तदोषं रविर्हन्याद्विशेषादुत्तरायणे।।२।।

अथ स्थान विशेषेण ग्रहाणां विफलत्वमाह- सभानुरिन्दुः शशिजश्चतुर्थे गुरुः सुते भूमिसुतः कुटुम्बे।।भृगुः सपत्ने रविजः कलत्रे विलग्नतस्ते विफला भवन्तीति।।३।।

विवाहादन्यत्र सप्तशलाका चक्रम्।



चक्रे सप्तशलाकाख्ये सवेधः सर्वकर्मसु। चिन्तनीयो विवाहे तु पञ्चरेखासमुद्भवः।।

श्री संवत् २०८१, शाके १९४६, बंगला सन् १४३० मेषार्कतः १४३१, ईसवीय सन् २०२४-२०२५, फसली सन् १४३१-१४३२, हिजरी सन् १४४५-१४४६, गतकलिः ५१२५, वर्ष विश्वा ८ वृहती महर्घताकरम्।

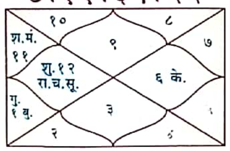
अकूपारं तीर्त्वा जनकतनयापादकमले।
प्रणम्याथो लंकामनयतसलीलं मलिनताम्।।
कृते यो रामस्य प्रथितचरितं कल्मषहरम्।
सदाऽहं तं वन्दे पवनतनयं भक्त परमम्।।

श्रीसंवत् २०८१, शाके १९४६ वर्षे समय-शुद्धिः

खरमासः-	वर्षारम्भात्- चैत्र शुक्ल ५ शनितः (१३.४.२०२४) यावत्।
गुरुः	वर्षारम्भे मेष राशौ, वैशाख कृष्ण ८ बुधतः (१.५.२०२४) वृष राशौ, वैशाख कृष्ण १३ सोमतः (६.५.२०२४) पश्चिमास्त। ज्येष्ठ कृष्ण १२ सोमतः (३.६.२०२४) पूर्वोदयः। आश्विन शुक्ल ५ भौमे (८.१०.२०२४) वक्री। माघ शुक्ल ५ सोमतः (३.२.२०२५) मार्गी
शुक्रः	वैशाख कृष्ण ६ सोमतः (२९.४.२०२४) पूर्वास्तः। आषाढ़ कृष्ण ७ शुक्रतः (२८.६.२०२४) पश्चिमोदयः। चैत्र कृष्ण ५ बुधतः (१९.३.२०२५) पश्चिमास्तः। चैत्र कृष्ण १० सोमतः (२३.३.२०२५) पूर्वोदयः।
शनिः	वर्ष पर्यन्तम् कुम्भ राशौ, वर्षारम्भे पूर्वा भाद्रपदे आषाढ़ कृष्ण ९ रवितः (३०.६.२०२४) वक्री। वक्र गत्या आश्विन शुक्ल १ गुरुतः (३.१०.२०२४) शतभिषा ४ चरणे। कार्तिक शुक्ल १३ गुरुतः (१४.११.२०२४) मार्गी। पौष कृष्ण १२ शुक्रतः (२७.१२.२०२४) पू.भा. १ चरणे।
राहुः-	वर्षपर्यन्तम् मीन राशौ।
केतुः-	वर्षपर्यन्तम् कन्या राशौ।
पौराणिक-	वैशाख शुक्ल १३ भौमतः (२१.५.२०२४) अगस्त्यास्तः। भाद्रपद शुक्ल ४ शनितः (७.९.२०२४) अगस्त्योदयः।
खरमासः	धनु-मीन राशिगते सूर्ये खरमासः।
विवाहः	चैत्र शुक्ल पक्ष, वैशाख कृष्ण पक्ष, आषाढ़ शुक्ल पक्ष, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

वर्ष लग्नम्

८।११।३९।५५



आर्द्रादौ भूमादौ वर्षाढक

आर्द्रा.	पुनर्व.	पुष्य	श्लेषा	मघा
२॥	२॥	२	२॥	१॥
पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती
१॥	१॥	१॥	१॥	१

आषाढे.३, श्रावणे ४, भाद्रपदे ४, आश्विने १, कार्तिके १ अन्येषु मासेषु साधारण वृष्टिः।

विन्ध्योत्तरवासिनांविंशोत्तरीयमतेनायव्ययचक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः	योगः
२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४	आयः	९९
१४	५	५	१४	११	५	५	१४	२	५	५	२	व्ययः	८७

विन्ध्यदक्षिणवासिनामष्टोत्तरीयमतेनायव्ययचक्रम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः	योग
८	२	५	१४	२	५	२	८	११	१४	१४	११	आयः	९६
१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	१४	१४	५	व्ययः	१०८

अनेन चक्रेण विशेष विचारः- लाभव्ययौ समौकृत्वा एक हीनं तु कारयेत्। अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत्।। लाभं१, सौख्यं २, क्लेश ३, रोगं ४, लोकापवादनं ५, सम्मानम् ६, विजयं ७, हानिः ८, कथितं पूर्व सुरभिः।। अथवा उभय लाभैक्यं लाभः।। व्ययैक्यंञ्च व्यय इति। विभागे यत्र लाभैक्यमधिकं तत्र शुभम्। काश्यां पलभा ५।४५ आक्षांशाः २५।१८ चरखण्डा ५७।४६।१९, देशान्तर स्पष्ट घट्यादिः ५।९

धर्मो रक्षति रक्षितः

श्रीकाशीस्थधर्मसभासदांसम्मतम् - २०८१

श्री डॉ.जीवनाथ ओझा, एम.ए.गणित पीएच.डी. विद्यावारिधि ज्योतिषशास्त्राचार्येण प्रवर्तितम्

प्रधानसम्पादक
रामेश्वरनाथ ओझा एम.ए. ज्योतिषशास्त्राचार्य
सम्पादिका
श्रीमती कान्ति ओझा एम.एससी. गणित, ज्योतिषी
सहायक सम्पादक- श्रेयांश ओझा
कार्यालय श्री महावीर पञ्चाङ्गम्
बी.३७/१८२-क, खत्रा वाटिका, बिरदोपुर, वाराणसी। मो. 9451528834
सलाहकार- डॉ.सुरेन्द्रनाथ ओझा पूर्व प्रोफे. राजकीय आयुर्वेदिक कालेज मं.सं.चि.चि. वाराणसी।
अजगरा (तारगाँव) चन्दौली, वाराणसी।

वर्षारम्भे
'पिङ्गल'
नाम संवत्सरः संकल्पादौ वर्षपर्यन्तम् योजनीयम्

सत्यान्नास्ति परोधर्मः

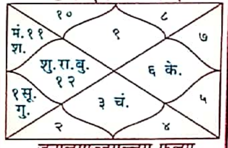
अग्रिम वर्षे चैत्र शुक्ल १ रवितः
'कालयुक्त'
नाम संवत्सरः प्रवेक्ष्यति।

श्री पंडित ऋषिकेश पाण्डेयेन विरचितम्

प्रकाशक-ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर राजादरवाजा, वाराणसी। फोन-(०५४२)२४१३६५०

जगल्लग्नम्

८।६।४०।२



जन्मलग्नाज्जगल्लग्न फलम्

१ देह सुखम्	७ स्त्री
२ धन लाभः	८ रोगभयम्
३ कुटुम्ब वृद्धिः	९ धर्म लाभः
४ मित्र सुखम्	१० पुत्रप्राप्तिः
५ पुत्र प्राप्तिः	११ लाभःसुखम्
६ शत्रु जयः	१२ व्यय कष्टम्

मूल्य- 85/-
विदेश में $ 6/-

विषय-सूची

प्रवर्तक एवं आद्यसम्पादक
स्व.डॉ.जीवनाथ ओझा
एम.ए.गणित, ज्योतिषाशास्त्राचार्य
विद्यावारिधि पीएच.डी.



विद्वत्सुपूज्यः कमनीयकीर्तिः। ज्योतिर्विदां यो गणिते च दक्षः।।
पञ्चांग निर्माण विधौ प्रशस्तः। तं जीवनाथं पितरं नमामि।।१।।
वाराणसी मण्डलमध्यवर्ती। ग्रामः सुधन्यो भुवि तारगांवः।।
लब्धा च येनात्र जनिः पवित्रा। प्रीतिर्भवत्तस्य सुपादपद्मे।।२।।
दूरीकृतस्तेन घनाऽन्धाकरः। शिक्षाप्रचारेण सदानराणाम्।।
सर्वं स्वकार्यं हनुत्प्रसादात्। संसाधितं तं प्रणमामि नित्यं।।३।।

दो शब्द

विगत ८१ वर्षों से प्रस्तुत **श्रीमहावीर पञ्चाङ्ग** आपकी सेवा में अनवरत् प्रकाशित हो रहा है। अनन्त श्रीविभूषित स्वामी करपात्री जी ने सन् १९४३ में दिल्ली के यमुना तट पर एक यज्ञ का आयोजन किया था, उसी अवसर पर हमारे पूज्य पिता स्व० पण्डित जीवनाथ ओझा ने उनका दर्शन कर पञ्चाङ्ग निर्माण-प्रकाशन की अपनी अभिलाषा बताई तब श्रद्धेय स्वामी करपात्रीजी ने हनुमत् आराधना के लिए 'अतुलितं [illegible] पादकमले......' श्लोक दिया तथा अपनी सम्मति एवं आशीर्वाद इस पञ्चाङ्ग के निमित्त प्रदान किया। तब से अद्यतन् यह पञ्चाङ्ग आपके सम्मुख है।

आप कृपालु पाठकों के स्नेह एवं सहयोग का ही परिणाम है कि आज काशी का यह प्राचीन एवं लोकप्रिय पञ्चाङ्ग भारत ही नहीं अपितु विदेशों में रहने वाले भारतीय बन्धुओं में भी सर्वदा प्रचलित है।

पञ्चाङ्गसंबंधित परामर्श, सुझाव का हम सदैव आदर करते हैं, अतः अपना अमूल्य सुझाव और सम्मति भेजते रहें, इससे हमारा उत्साह बढ़ेगा। यद्यपि कि पूर्ण प्रयास किया जाता है कि कहीं कोई त्रुटि न रह जाय किन्तु दृष्टि में न आने के कारण यदि कोई छूट हो जाती है तो आप विद्वज्जनों से निवेदन है कि संशोधन करें।

सूचना–यदि पञ्चाङ्ग में छपाई से सम्बन्धित कोई त्रुटि हो जैसे पृष्ठ उल्टा [illegible] हो या [illegible] तो कृपया 9369516832 पर संपर्क कर अपना नाम, पता लिखवा दें। आपको निःशुल्क [illegible] की जायेगी।

कृपाकांक्षी
रामेश्वरनाथ ओझा
श्रीमती कान्ति ओझा
9451528834

श्रीमंगलमूर्त्तयेनमः

काशीशं गणनायकं सुरगुरुं देवीं तथा श्रीपतिम्।
स्तुत्वावायुसुतं सभक्ति मनसा ध्यात्वा च नत्वा गुरुम्।।
स्वर्गीयं पितरं नमामि विबुधं श्रीजीवनाथं हि तम्।
नित्यं लोकहिताय यस्य कृपया पञ्चाङ्गमातन्यते।।

संवत्सरावली

सतयुग का मान	-	१७,२८००० वर्षाणि
त्रेतायुग का मान	-	१२,९६,००० वर्षाणि
द्वापरयुग का मान	-	८,६४,००० वर्षाणि
कलियुग का मान	-	४,३२,००० वर्षाणि

इस वर्ष कल्पारम्भ से १९५५८८५१२५ वर्ष कलियुग के आरम्भ काल से ५१२५ वर्ष, श्रीविक्रमादित्य के सिंहासनारोहण काल से २०८१ वर्ष एवं शकारम्भ से १९४६ वर्ष व्यतीत हुए। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ९ अप्रैल मंगलवार को सूर्य सिद्धान्तीय अहर्गण = ७१४४८४१६४६५१ + ३८४ = ७१४४८४१६५०३५ एवं ग्रहलाघवीय अहर्गण ३३७४ तथा गत चक्र ४५ है। वर्षारम्भ से **पिंगल** नामक संवत्सर चलेगा, जो संकल्पादि में वर्षभर प्रयोग किया जायेगा। अगले संवत्सर में **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से कालयुक्त** नामक संवत्सर का प्रयोग प्रारम्भ होगा।

५१वाँ 'पिंगल' संवत्सर– **गावो हया विनश्यन्ति चान्ये च नटनर्तकाः।**
मेघो न वर्षति तत्र पिंगले नाऽत्र संशयः।।

पिंगल संवत्सर में गाय, घोड़े, नट तथा नर्तकों का नाश होगा।

५२वाँ 'कालयुक्त' संवत्सर– **प्रजानां जायते रोगः कालयुक्ते विशेषतः।**
राजयुद्धं भवेद् घोरं प्रजानाशो वरानने।।

शिवजी कहते है कि हे वरानने! कालयुक्त संवत्सर में जनता को रोग, राजाओं में भयंकर युद्ध तथा प्रजा का नाश होता है।

ग्रह सभासद विचार– **चैत्रादिमेषादिकुलीरतौली मृगादिवाराधिपतिक्रमेण।**
राजा च मन्त्री ह्यथ सस्यनाथो रसाधिपो नीरसनायकश्च।।
आर्द्रादिनाथो घननायकश्च धान्याधिपश्चापदिनादिवारः।।

राजा मंगल फलम्

भौमे नृपे वह्निभयं नराणां चौराकुलं पार्थिवविग्रहश्च।
दुःखं प्रजाव्याधिवियोगपीडा स्वल्पं पयो मुंचति वारिवाहः।।

इस बार आकाशीय मन्त्रिमण्डल में मंगल राजा है जिनके फल में मनुष्यों को अग्निभय, चोरों का उत्पात, राजाओं में विग्रह जनता को दुःख तथा रोग से पीड़ा तथा मेघ स्वल्प वर्षा करेंगे।

मंत्री शनि फलम्

रविसुते यदि मन्त्रिणि पार्थिवा विनयसंरहिता बहुदुःखदाः।
न जलदा जलदा जनतापदा जनपदेषु सुखं धनजं क्वचित्।।

मन्त्री का पद इस बार शनि को मिला है जिसके फल में राजा लोग विनय रहित जनता को दुःख देने वाले वर्षा की कमी से जनता को कष्ट, लोगों को धनसम्बन्धी सुख बहुत कम मिलेगा।

सस्येश मंगल फलम्–**प्रथम धान्यपतौ धरणीसुते गजतुरंगखरोष्ट्रगवामपि। ननु भवेद्बहुरोग घनो जलं न समसौख्यकरं तृण धान्यहृत्।।**

यदि पूर्व धान्येश मंगल हो तो हाथी, घोड़े, गदहे, ऊँट तथा गौओं को बहुत रोग, वर्षा की कमी, सौख्य का अभाव तथा भूसेवाले अन्नों का नाश होगा।

दुर्गेश शनि फलम्–**रविसुते गढ़पालिनि विग्रहो सकलदेशगताश्चलिता जनाः। विविधवैरिविशोषितनागराः कृषिधनं न लभेद्भुविकश्चन्।।** यदि दुर्गेश शनि हो तो सभी खेतों में विग्रह तथा लोगों में व्यग्रता, नागरिकों में अनेक प्रकार से वैरभाव, कृषि पदार्थों का अभाव दिखेगा।

धनेश मंगल फलम्–**असित मौल्यकरो धरणीसुतः शरदि ताम्रकरस्तुपधान्यहृत्। सकलदेशगताश्चलिता नरा नरपतिर्जनशोकविधायकः।।** मंगल ही इस वर्ष धनेश भी हैं। इसके फल में काले पदार्थों का नाश, सभी देशों के लोग अशान्त तथा शासक जनता को कष्ट देने वाले होंगे।।

रसेश गुरु फलम्–**यदि गुरो रसपे जनसौख्यदे कमलवंति सरांसि तृणानि च। जनपदा द्विजपूजन तत्परा बहुगजवाजिरथोष्ट्रयुता नृपाः।।** यदि गुरु रसेश हो तो जनता को सौख्य, तालाबों में कमल सुशोभित तथा तृण (घास) की निष्पत्ति अधिक, जनपदों में लोग विप्रो का सत्कार करते हैं। राजा लोग हाथी-घोड़े रथ तथा ऊँटों से सम्पन्न रहते हैं।

धान्येश चन्द्र फलम्–**चन्द्रे धान्याधिपे जाते तोयपूर्णा वसुन्धरा। वर्द्धन्ते सर्वसस्यानि राजते विविधोत्सवैः।।** धान्येश का पद चन्द्रमा को मिला है। इसके फल में पृथ्वी जल से पूर्ण, सभी फसलों में वृद्धि, संसार में विविध उत्सव होंगे।

नीरसेश मंगल फलम्–**नीरसेशो यदा भौमः प्रवालं रक्तवाससम्। रक्तचन्दनताम्राणामर्घवृद्धिर्दिने दिने।।** यदि मंगल नीरसेश हो तो प्रतिदिन मूँगा, लाल वस्त्र, लाल चन्दन तथा ताँबा का भाव महँगा होता है।

फलेश शुक्र फलम्–**यदि फलस्य पतौ भृगुजे धरा मृदुकुसमा च महीरूहराशयः। बहुपथा नरनाथसुभोगदा द्विजवराः श्रुतिपाठपरायणाः।।** फलेश शुक्र के फल में वृक्षों में सुन्दर फल-फूल, राजा लोग बहुत भ्रमण करने वाले, जनता को सुख देने वाले तथा ब्राह्मण लोग वेदपाठ करने वाले होंगे।

मेघेश शनि फलम्–**रविसुते जलदस्य पतौ भवेद्विरलवृष्टिवती वसुधा तदा। मनसि तापकरो नृपतिः सदा विविधरोगयुता जनता तदा।।** शनि के मेघेश होने के फलस्वरूप पृथ्वी पर थोड़ी वर्षा राजा लोगों के मन में सन्ताप तथा जनता विविध रोगों से पीड़ित रहेगी।

रोहिणी वास फलम्–**पर्वते बिन्दुमात्रश्च।** रोहिणी निवास पर्वत पर होने से अत्यल्प वृष्टि का योग है।

संवत्सर वास फलम्–**कुम्भकारगृहे रासो तद्वर्षे मध्यमं फलम्।** इस वर्ष संवत्सरका निवास कुम्हार के घर में होने से यह वर्ष मध्यम बीतेगा। *समय वाहन फलम्*–**जनता भ्रमिता सर्वाश्चतुष्पदाः प्रपीडिताः। विफला सकला धात्री नौकावाहनवत्सरे।।** यदि समय वाहन नौका हो तो जनता भ्रमित, चौपायों को पीड़ा सम्पूर्ण पृथ्वी फल रहित होगी। *आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश फलम्–तिथि फलम्*–**प्रतिपद्यदि चार्द्रायाः प्रवेशः शुभदा रवेः।** सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश प्रतिपदा तिथि में होने से शुभदायक होगा। *वारफलम्*–**मन्दे मन्दफलं भवेत्**-सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश शनिवार को होने से मन्दफलदायक है। *नक्षत्रफलम्*–**मूले सर्वभयावहः**–मूल नक्षत्र में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश सबको भय देने वाला होगा। *योगफलम्*–**शुक्लौ वृद्धिकरौ जनानन्दकर बुभौ।** शुक्ल योग में सूर्य का आर्द्रा प्रवेश सस्य की वृद्धि तथा जनता को आनन्द प्रदान करने वाला होगा। *वेलाफलम्*-**दिवार्द्रा सस्यनाशाय।** सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश दिन के समय होने से कृषिनाशक होगा। *नवमेघानां*–**वरुणसत्वर्णवाकारं**-वरुण नामक मेघ में अत्यधिक वर्षा का योग है। *चतुर्मेघानां*–**आवर्तो विनिवृष्टिः**- आवर्त मेघ होने के फलस्वरूप अनावृष्टि का योग है।

वर्षाविचार

आर्द्रा से स्वाती तक कुल १० नक्षत्रों में वर्षा का विचार किया जाता है। अप्रैल-मई की सन्धि पर आँधी पानी एवं वर्षा होने के योग मिल रहे हैं। आर्द्रा नक्षत्र का प्रवेश २२ जून के आसन्न २२-२३-२४ को एक बार वर्षा होने के योग प्राप्त हो रहे हैं। बुध-शुक्र की युति वर्षा करायेगी। पुनः जून के अन्तिम सप्ताह अथवा २८ जून के आसन्न वर्षा होने की सम्भावना है। जुलाई के प्रथम सप्ताह तथा १४, १५ जुलाई के आस-पास भी वर्षा होगी। पुष्य नक्षत्र २० जुलाई के आसन्न भी वर्षा होगी। श्लेषा नक्षत्र में सामान्य वृष्टि की ही सम्भावना है। मघा नक्षत्र १७ अगस्त के आसन्न भी वर्षा होने के योग हैं। २६ अगस्त के आसन्न वर्षा के योग प्राप्त हो रहे हैं। पुनः ३१ अगस्त पू.फा. नक्षत्र में बादलों के घेराव के साथ साधारण से अच्छी वृष्टि हो सकती है। १३ सितम्बर उ.फा. नक्षत्र में एक बार अच्छी वृष्टि की सम्भावना है। २७ सितम्बर हस्त नक्षत्र में अच्छी से बहुत अच्छी वृष्टि होने के योग बन रहे हैं। इसके पश्चात् अक्टूबर में चित्रा एवं स्वाती नक्षत्र में विशेष वर्षा होने के योग बन रहे है।

वर्षफलम्

वातोद्धतश्चरति वह्निरति प्रचण्डो, ग्रामान्वनानि नगराणि च सन्दिधक्षुः।
हाहेति दस्युगणपातहता रटन्ति, निःस्वीकृताविपशवो भुवि मर्त्य संघाः।।
अभ्युन्नता वियति संहतमूर्तयोऽपि, मुञ्चन्ति न क्वचिदपः प्रचुरं पयोदाः।
सीम्नि प्रजातमपि शोषमुपैति सस्यं निष्पन्नमप्यविनयादपरे हरन्ति।।
भूपा न सम्यगभिपालनसक्त चिताः, पित्तोत्परूक् प्रचुरता भुजगप्रकोपः।
एवं विधोरूपहता भवति प्रजेयं, संवत्सरेऽवनिसुतस्य विपन्नसस्या।।
रणप्रचण्डक्षितिपोऽल्पसस्यो विशुष्कवारिद्रुमशष्पशीर्णः।।
अंगारकाब्दः प्रचुरोगाग्निरातंकचोर्यक्षुदवृष्टिदृष्टः।।

ज्योतिशास्त्र जितना व्यापक है उतना ही व्यावहारिक भी। इसे वेद का नेत्र कहा गया है और इसमें ज्योति प्राप्त होती है हमारे पञ्चांगों से। यद्यपि कि विश्व में कालगणना की अनेक पद्धतियाँ हैं किन्तु सबसे स्पष्ट एवं सटीक भारतीय गणना है। यह काल निर्धारक है तथा काल विधेयक भी। सर्वविदित है कि संवत्सरारम्भ चैत्रशुक्ल प्रतिपदा जिस वार से होता है वही उसवर्ष का पीठासीन अधिकारी **राजा** होता है। इस प्रकार **मंगलमहाराज** इस वर्ष के राजा हुए। इस संवत्सर के आकाशीय मन्त्री परिषद के दस पदाधिकारियों में सात पदाधिकारी पाप ग्रह हैं, जबकि शेष तीन पदाधिकारी शुभ ग्रह हैं। राजा सहित कुल चार विभाग तो अकेले मंगल के अधीन हैं। राजा के बाद सबसे महत्वपूर्ण पद मन्त्री पर शनि का अधिकार है। अतः परिस्थितियाँ स्वयंमेव परिणाम का आभास करा रही हैं। विश्व सहित देश को अनेक प्रकार की प्राकृतिक विपरीतता का सामना करना पड़ेगा। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि पृथ्वी का तापमान बढ़कर गम्भीर चुनौती पैदा कर देगा। झुलसा देने वाली गर्म हवाओं से आदमी पशु-पक्षी, फल-फूल वनस्पतियाँ पेड़ पौधे सभी कुम्हला जायेंगे। ग्राम-नगर एवं महानगर तथा वन उपवन कहीं भी भीषण गर्मी से राहत नहीं मिलेगी। तपते तवे की तरह पृथ्वी अनेक प्रकार के रोग एवं व्याधि का कारण बनेगी। ऐसा प्रतीत होगा जैसे भगवान भास्कर अग्निवर्षा कर रहे हैं। चोर डाकू लुटेरों का आतंक बढ़ेगा। सामान्य जनता की गाढ़ी कमाई का हरण होगा। जिससे हाहाकार मचेगा। आकाश में बादल तो घेर-घेर कर आयेंगे किन्तु पर्याप्त जल वर्षा के बिना ही इधर-उधर होते रहेंगे। नीची भूमि में पैदा होने वाले अनाज भी पानी की कमी के कारण सूख जायेंगे। खेत में पड़ी खड़ी फसल ओला पत्थर इत्यादि से नष्ट हो जायेगी। सरकार एवं राजनेता जनता की परेशानियों से न तो परेशान होंगे न ही जनता जनार्दन की परेशानियों को दूर करने में रुचि लेंगे। मनुष्यों में पित्त से सम्बन्धित एवं छुआ-छूत रोगाणु जनित कई बीमारियाँ फैलेंगी। विषैले जीव-जन्तु साँप बिच्छू इत्यादि का प्रकोप बढ़ जायेगा। इस प्रकार मंगल के शासन काल में सर्वत्र अमंगल ही दिखाई देगा।

शनि मन्त्री पद पर आसीन है। इसके प्रभाव के फलस्वरूप पृथ्वी के जलीय तत्व (आप्य) का शोषण हो जायेगा। राजा मंगल एवं मन्त्री शनि का आपसी सम्बन्ध भी बहुत अच्छा नहीं माना जाता। शनि न्याय का ग्रह है एवं मंगल प्रशासनिक एवं सैन्य दल का प्रतीक है। ऐसा आभास हो रहा है कि शासन-प्रशासन सत्ता तथा न्यायपालिका का आपसी संतुलन अच्छा नहीं होगा। मेघेश का पद भी शनि को प्राप्त हुआ है। वर्षा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं होगा ऐसी सम्भावना दिखाई दे रही है। सूखा पड़ जाने के योग मिल रहे हैं। इस वर्ष अग्निकाण्ड अथवा विस्फोट इत्यादि से देश को गम्भीर क्षति पहुँचेगी। सत्ता पर आसीन व्यक्ति अमानवीय व्यवहार करते हुए जनता जनार्दन को कष्ट पहुँचायेंगे।

उपरोक्त कई विपरीत परिस्थितियों के बावजूद कुछ राहत प्रदान करने वाली ग्रह स्थितियाँ भी दिखाई दे रही है। वर्ष प्रवेश कुण्डली के अनुसार लग्नेश बृहस्पति पंचम-त्रिकोण में मित्र क्षेत्री है अतः सत्ताशीर्ष पर बैठे व्यक्ति की बुद्धिमता से अनेक विपरीत परिस्थितियों का समाधान निकल जायेगा। धनु लग्न में वर्ष का प्रवेश देश के उत्तर-पूर्वी भाग में वर्षा एवं खेती तथा जन-स्वास्थ्य के लिए शुभ फलकारक है। देश के मध्य भाग में बहुत अधिक पानी बरस जाने के कारण खेती को काफी क्षति पहुँचेगी। पश्चिमी प्रदेशों में घी इत्यादि का भाव सस्ता चलेगा। दक्षिण भारत के लिये धनु लग्न में वर्ष का प्रवेश शुभफलकारी है। वर्ष प्रवेश कुण्डली में ग्रहों के भाव फल के अनुसार चतुर्थ भाव में स्थित सूर्य रीयल स्टेट भू-सम्पत्ति के मालिकों तथा व्यवसायियों के लिये विशेष लाभकारी साबित होगा।

खनिज पदार्थों एवं धातु का कोई भण्डार प्राप्त हो सकता है। सूर्य देश के राजा (प्रधान मन्त्री) अधिकारी सत्ताधीश राजपुरुष एवं न्यायाधीश का कारक ग्रह होता है अतः इनकी भूमिका का प्रभाव जनता एवं देश पर पड़ेगा। शुक्र भी चतुर्थ स्थान में उच्च राशि का है अतः कला नृत्यसंगीत सिनेमा, थियेटर रंग मंच के क्षेत्र में उन्नति होगी। चतुर्थ भाव में चन्द्रमा भी स्थित है। अतः सिंचाई के साधन बाँध नहर, खनिज से उत्पन्न धातुयें, इन क्षेत्रों के विकास-प्रसार का कार्य किया जायेगा। बुध पंचम स्थान में स्थित है इसलिये शिक्षा व्यवस्था पर सरकार ध्यान देने के लिये बाध्य हो जायेगी। तृतीय भाव में मंगल शनि की युति उस पर भी शनि का स्वगृही होना अत्यन्त शुभफलकारी है। देश की सैन्य-शक्ति का अभूतपूर्व विस्तार होगा तथा भारतीय सैन्य शक्ति विश्व के किसी भी सैन्य शक्ति विशेष कर शत्रुओं पर बहुत भारी पड़ेगी। सैन्यशक्ति में अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्र का विस्तार होगा। राहु-केतु नये-नये टेक्स लगवा कर जनता के जेब पर भारी खर्च डाल देंगे।

मेषार्क कुण्डली जगल्लग्न भी वार्षिक फलादेश के लिये बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसमें पंचम भाव में सूर्य गुरु की युति शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये आयाम उपस्थित करेगी। भारतीय शोध-छात्रों द्वारा नये-आविष्कार से दुनिया भारतीय मेधा को महत्वपूर्ण स्थान देगी। सप्तम भाव का चन्द्रमा नारी शक्ति का उत्थान करायेगी तथा महिलाओं की भागीदारी शासन प्रशासन से लेकर प्रायः हर क्षेत्र में बढ़ेगी। वर्षा एवं खेती तथा खाद्यान्नों के उत्पादन की दृष्टि से यह वर्ष गम्भीर चुनौतियों का सामना करेगा। या तो सुखा ही पड़ जायेगा अथवा अत्यधिक वर्षा से बाढ़ आ जायेगी एवं फसलों को क्षति पहुंचेगी।

पिंगल नामक संवत्सरमे– पिंगलाब्दे त्वीतिर्भीतिर्मध्यसस्यार्घवृष्टयः।
राजानो विक्रमाक्रान्ता भुंजते शत्रुमेदिनीम्।।

अतः इस वर्ष भय का वातावरण मध्यम वर्षा और खाद्यान्नों का उत्पादन कम होगा। सेना अपना पराक्रम दिखाती रहेगी। किन्तु देश के शत्रु परेशान करते रहेंगे।

पूरे वर्ष भर के कुछ विशेष ग्रह योगों पर विचार किया जाय तो वैशाख कृष्ण पक्ष में शुक्र एवं गुरु दोनों ही कुछ ही दिनों के अन्तराल पर अस्त हो रहे हैं तथा कुम्भ मीन और मेष इन तीन राशियों पर ही कुल छः ग्रह स्थित हो रहे हैं अतः दैवी प्राकृतिक आपदा की सम्भावना बन रही है। ऐसे योगों में समुद्री तूफान भूकम्पादि की स्थिति बन सकती है। जिससे धन-जन को क्षति पहुँच सकती है। वर्षान्त चैत्र कृष्ण पक्ष भी कठिनाइयाँ पैदा करेगा।

राशिफलम् संवत् २०८१

मेष– चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

वर्षारम्भ के बाद १ मई से बृहस्पति राशि परिवर्तित कर द्वितीय भाव का हो जायेगा। अतः राशि वालों के लिये अत्यन्त शुभफल प्रदान करने लगेगा। बहुप्रतीक्षित कार्य में सफलता मिलने की पूर्ण सम्भावना है अतः अपनी योजनाओं एवं महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने के लिये पूरे मनोयोग से एकाग्रचित होकर लग जाना चाहिए। नौकरी में सफलता मिलेगी तथा विवाह, पुत्र जन्मादिक मंगल कार्य सम्पन्न होने के लिये यह समय बहुत ही अनुकूल है। धन प्राप्ति के रास्ते बनेंगे। पारिवारिक सुख एवं सौहार्द्र में वृद्धि होगी। शत्रु एवं विरोधी स्वयमेव शान्त होकर आपसे समझौता कर लेंगे। मान-सम्मान में वृद्धि होगी तथा आप द्वारा प्रशंसनीय एवं उल्लेखनीय कार्य किये जायेंगे। दान-धर्म परोपकार का कार्य आप द्वारा किया जायेगा। चल सम्पत्ति में लाभ होगा। शनि भी गोचर से बहुत ही अनुकूल है तथा तृतीय भाव में है अतः आपके साहस पराक्रम में वृद्धि होगी। प्रायः प्रत्येक कार्यों में सफलता का मार्ग प्रशस्त होगा। नौकरी-व्यवसाय मे उन्नति होगी। भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी। स्मरण रखना चाहिए कि अच्छे समय का लाभ तभी प्राप्त होता है जब आपका प्रयास एवं परिश्रम भी उसी अनुसार होता है अतः अच्छे समय का सदुपयोग करें। राहु व्यय भाव में है अतः अनावश्यक पैसा खर्च करने से बचें। केतु कभी-कभी नेत्र विकार दे सकता है। कुल मिलाकर यह वर्ष राशि वालों के लिए उत्तम है।

वृष– इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो

वर्षारम्भ में व्यय भाव का गुरु १ मई से आपकी ही राशि मे संचरण करने लगेगा। जो मध्यनफल कारक है। सामाजिक मान सम्मान में कमी आयेगी। रोजी-रोजगार में कठिन परिश्रम करना पड़ेगा तथा कुछ विघ्न-बाधायें भी आयेंगी। पैसे की कमी रहेगी तथा बौद्धिक क्षमता कुछ मन्द पड़ जायगी। झगड़ा-झंझट से दूर रहना ही हितकर होगा अन्यथा अनावश्यक की परेशानी हो जायेगी। कार्य विलम्ब से पूरे होंगे। कष्टकर यात्रायें करनी पड़ सकती है। आपके हाथ में काम तो रहेगा किन्तु उसके प्रतिफल से आप संतुष्ट नहीं रहेंगे। इस प्रकार शनि एवं गुरु दोनों ही कुछ मन्द फल प्रदान कर रहे है अतः इनकी शान्ति करते रहने से परेशानियों कठिनाइयों में भी रास्ता निकलता रहेगा। गुरु की शान्ति के लिये चने की दाल, हल्दी, गुड़ का लड्डू बनाकर प्रत्येक गुरुवार को गाय को खिलावें। भारंगी अथवा केले की जड़ को पीला कपड़ा में बाँधकर दाहिने हाथ की भुजा में गुरुवार को धारण करें। खराब हो जाय तो उसको बदलते रहें। शनि की शान्ति के लिये हनुमान जी की पूजा-आराधना दर्शन प्रत्येक शनिवार को अवश्य करें। "**ॐ बृं बृहस्पतये नमः**" तथा **ॐ शं शनैश्चराय नमः** का १-१ माला जप नित्य करते रहे। लाभ स्थान का राहु अचानक लाभ करवाता रहेगा तथा काम बनाता रहेगा धार्मिक रुचि को बढ़ायेगा। पंचम भाव का केतु पुत्रों को कुछ कष्ट पहुँचा सकता है।

मिथुन– का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

वर्षारम्भ में लाभ-भाव में चल रहा बृहस्पति १ मई से बदल कर व्यय भाव में चलने लगेगा। परिणाम स्वरूप आप सही तरीके से काम तो करेंगे किन्तु उसका प्रतिफल विपरीत ही होगा। लोग आपके कार्यों की अनावश्यक आलोचना करेंगे। पैसे का खर्च बढ़ जायेगा तथा धनागम का मार्ग अवरुद्ध सा हो जायेगा। शारीरिक सुख-स्वास्थ्य में कमी आ जायेगी। घर-परिवार तथा पुत्रादिकों से मनमुटाव हो सकता है किन्तु उसका प्रभाव अस्थायी होगा। यात्रा मे व्यय एवं कष्ट दोनों ही होता रहेगा। विश्वासपात्र व्यक्ति से भी धोखा मिल सकता है। व्यर्थ का झूठा उपदेश देने की प्रवृत्ति रहेगी। विरोधी एवं शत्रु सक्रिय होकर आपको क्षति पहुँचाने का प्रयास करते रहेंगे। धर्म--अध्यात्म एवं पूजा-पाठ में मन नहीं लगेगा। सहायक एवं सहयोगी भी आपको परेशान करेंगे। दशम भाव का राहु अकस्मात् कहीं न कहीं से कोई न कोई काम बनाता रहेगा जिससे लाभ होता रहेगा। केतु भी भूमि भवन सम्बन्धी उपलब्धि दिला सकता है। बृहस्पति एवं शनि की शान्ति के लिए कोई न कोई पूजा-पाठ करते रहने से कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। **ॐ बृं बृहस्पतये नमः** तथा **ॐ शं शनैश्चराय नमः** का १-१ माला जप नित्य करते रहे तथा दान देते रहें। लाभ होगा।

कर्क– ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

वर्षारम्भ के बाद १ मई से बृहस्पति गोचर से लाभ स्थान अर्थात् ग्यारहवें भाव का हो जायेगा। फलतः मध्यम गति से चल रहे अथवा सुस्त पड़ गये आपके सभी कार्य तेज गति से आगे बढ़ने लगेंगे। पद-प्रतिष्ठा नौकरी व्यवसाय में उन्नति होगी। शत्रु एवं विरोधी परास्त हो जायेंगे या आप से समझौता कर लेंगे। विवाह पुत्र जन्म आदि मांगलिक कार्य सम्पन्न होने अथवा करने का अवसर आ जायेगा। नौकरी में पदोन्नति होने की सम्भावना है। हाथ में लिये समस्त कार्य सफलता पूर्वक पूर्ण होंगे। राजकीय तथा न्यायालय सम्बन्धी कार्यों में फैसला आपके पक्ष मे आयेगा। अच्छे काम करने की प्रवृत्ति मन में पैदा होगी। मन शान्त रहेगा। धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। अष्टम भाव में संचरण करता हुआ शनि आपके ऊपर **शनि की ढैय्या** की स्थिति बना रहा है। अतः शनि अपना दुष्प्रभाव भी दिखाता रहेगा। यह शनि आपके पारिवारिक जीवन में लड़ाई-झगड़ा कलह की स्थिति ला सकता है। बुरी संगति एवं प्रवंचना से काम बिगड़ सकता है अतः लड़ाई-झगड़े से दूर ही रहना आपके हित मे होगा। धन की हानि करायेगा तथा स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालता रहेगा। राजकीय एवं न्यायालय सम्बन्धी कार्यों में सफलता संदिग्ध रहेगी। जीवन-साथी का स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है। नवम् भाव का राहु चमत्कारिक तरीके से कोई काम बनाता रहेगा जो स्थायी लाभ में भी बदल सकता है। तीसरे भाव का केतु भाग्योदय कारक है। शनि की शान्ति का उपाय अवश्य करें। प्रत्येक शनिवार को पीपल वृक्ष में स्थित शनि भगवान को तिल तेल का दीपक जलावें तथा हनुमान जी की यथा सम्भव पूजा-आराधना दर्शन करते रहें।

सिंह– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

वर्षारम्भ में शुभफल प्रदान करने वाला बृहस्पति १ मई से परिवर्तित होकर थोड़ा मध्यम फल कारक हो जायेगा। सामाजिक मान-सम्मान एवं पद प्रतिष्ठा में कमी आ जायेगी। स्वास्थ्य ठीक न रहने से मन उदास एवं शरीर थका-हारा सा रहेगा। पैसे की कमी से मनचाहे कार्य आप नहीं कर पायेंगे। झगड़ा-झंझट, वाद-विवाद से दूर ही रहने का प्रयास करें अन्यथा अपमानित होने का भय रहेगा। अनावश्यक पैसा खर्च होता रहेगा। सप्तम भाव में संचरण करता हुआ शनि आपकोकाम तो देता रहेगा तथा व्यस्त भी रखेगा किन्तु तदनुसार लाभ नहीं होगा। बौद्धिक क्षमता में कमी आ जायेगी एवं स्वजनों मित्रों परिजनों से पूर्ण सहयोग प्राप्त नहीं हो पायेगा जिससे मानसिक पीड़ा पहुँचेगी। राहु अष्टम भाव का है जिसके कारण अकस्मात् कोई ऐसा कार्य बन जायेगा जिससे लाभ हो जायेगा किन्तु पेट से सम्बन्धित कोई परेशानी हो सकती है। आपरेशन इत्यादि की भी सम्भावना बन सकती है। केतु के कारण धन का लाभ तो होगा किन्तु नेत्र विकार भी हो सकता है। गुरु एवं शनि दोनों की ग्रह शान्ति का उपाय करते रहने से विपरीत परिस्थियों में भी रास्ता निकलता रहेगा। "**ॐ बृं बृहस्पतये नमः**" तथा **ॐ शं शनैश्चराय नमः** का १-१ माला जप नित्य करते रहे।

कन्या– टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो।

वर्षारम्भ से अष्टम भाव का गुरु १ मई से परिवर्तित होकर नवम भाव का हो जायेगा जो अत्यन्त शुभफल प्रदान करने लगेगा। आपकी कार्य क्षमता का विस्तार होगा तथा आप द्वारा उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय कार्य किये जायेंगे। किसी नये पद अथवा अधिकार की प्राप्ति हो सकती है। पुत्रादिकों की उन्नति होगी तथा घर-परिवार में विवाह पुत्र-जन्मादिक मंगल कार्य सम्पन्न होंगे। आपके द्वारा किये जा रहे प्रायः प्रत्येक कार्यों में सफलता मिलेगी। किसी स्थायी सम्पत्ति के प्राप्त होने का भी अवसर प्राप्त हो सकता है। भूमि-भवन वाहन तथा भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। शनि भी छठें भाव का है जो अत्यन्त शुभफल प्रदाता माना जाता है। रोग एवं शत्रु दोनों पर विजय प्राप्त होगी। स्त्री-परिवार का उत्तम सुख सान्निध्य प्राप्त होगा। आपके विरोधी आपसे हार मान लेंगे अथवा समझौता कर लेंगे। सातवें भाव का राहु व्यापार एवं व्यवसाय दोनों में वृद्धि करायेगा। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी।

तुला– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

वर्षारम्भ में शुभफल कारक चल रहा बृस्पति १ मई से अष्टम भाव का होकर अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ पैदा कर देगा। शरीर में कई प्रकार से कोई न कोई रोग-विकार पैदा होता रहेगा जिसके कारण स्वास्थ्य बहुत खराब रहेगा। घर-परिवार में सुख-शान्ति नहीं रहेगी, जिससे मानसिक रूप से आप परेशान रहा करेंगे। खर्च बहुत बढ़ जायेगा जिससे आर्थिक रूप से आप कमजोर हो जॉयेंगे। रोग-शोक एवं बन्धन तीनों कष्ट उठाना पड़ेगा। पंचम भाव से गोचर वश आयी शनि की 'पनौती' आर्थिक शोषण करायेगी एवं शारीरिक कष्ट प्रदान करेगी। इस प्रकार गुरु एवं शनि दोनों के नेष्ट फल के कारण आप अपने आप को विचलित महसूस करेंगे। सबके बावजूद जैसे रोग का निदान औषधियों से हो जाता है उसी प्रकार ग्रहों का अरिष्टफल भी ग्रह शान्ति, दान, हवन एवं सत्कर्मों के माध्यम से दूर हो जाता हैं। गुरु की शान्ति के लिये **चने की दाल हल्दी, गुड़ का लड्डू** बनाकर प्रत्येक बृहस्पतिवार को गाय को खिलावें। ब्राह्मण बटुकों को पठन-पाठन की सामग्रियों का दान करें। केले अथवा भारंगी की जड़ को पीले कपड़े में सिल कर पीले धागे में दाहिनी भुजा में गुरुवार को धारण करें। खराब हो जाय तो उसको बदलते रहें। **ॐ बृं बृहस्पतये नमः** तथा **ॐ शं शनैश्चराय नमः** मन्त्र का १-१ माला जप नित्य करें। सुन्दर काण्ड का यथा सम्भव पाठ करते रहें तो कष्ट कटता रहेगा और परेशानियाँ दूर होती रहेंगी। राहु-केतु के कारण नेत्र विकार की सम्भावना।

वृश्चिक– तो, ना, नी, नू, ने नो, या, यी, यू

राशि वालों के लिये यह वर्ष सर्वथा शुभफलकारक है। गोचर से सप्तम भाव का आया बृहस्पति भूमि-भवन-वाहन इत्यादि भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि कारक है। स्त्री परिवार का उत्तम सुख-सान्निध्य प्राप्त होगा तथा घर-परिवार में विवाह पुत्र जन्म आदि मांगलिक कार्यों के अवसर आयेंगे। किसी स्थिर लाभ की भी सम्भावना है। राजकीय एवं न्यायालय सम्बन्धी कार्यों मे प्रगति होगी तथा सफलता भी मिलेगी। बौद्धिक-क्षमता एवं कार्य दक्षता दोनों में वृद्धि होगी तथा आप द्वारा उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय कार्य किये जायेंगे। एक बात ध्यान रखें कि आपके ऊपर **शनि की ढैय्या** भी चल रही है अतः सभी सुख सुविधाओं के बावजूद परिजनों मित्रो रिश्तेदारों से तालमेल सही नहीं रहेगा। कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी जिससे मन चिड़चिड़ाता सा रहेगा। मन में हमेशा नकारात्मक सोच बनी रहेगी। अतः इन सब परिस्थितिगों से बचते रहना पड़ेगा। राहु के कारण आर्थिक लाभ तो होगा किन्तु संतुष्टि नहीं मिलेगी। केतु भी लाभ भाव का है अतः शुभफल प्रदान करेगा। शनि की शान्ति का उपाय अवश्य करते रहें जिससे शनि जन्य कष्ट से छुटकारा मिलता रहे। प्रत्येक शनिवार को पीपल वृक्ष की जड़ में स्थित शनि भगवान के निकट तिल-तेल का दीपक जलावें तथा '**ॐ शं शनैश्चरायनमः**'' का १-१ माला जप कर लिया करें। गरीब असहायों की सहायता करें।

धनु– ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे

वर्षारम्भ से अनुकूल चल रहा बृहस्पति १ मई से बदलकर कुछ हल्का पड़ जायेगा। सुन्दर से सुन्दर व्यक्ति एवं अच्छी से अच्छी वस्तु भी आपको आकर्षित नहीं कर पायेगी। घर-बाहर कहीं भी मन नहीं लगेगा। मन बेचैन एवं शरीर थका-हारा सा लगेगा। शरीर में नये प्रकार के रोग पैदा हो जायेंगे। परिजनों-रिश्तेदारों के साथ सम्बन्ध सामान्य नहीं रह पायेंगे। पेट की बीमारी से विशेष परेशानी हो सकती है। राजकीय एवं न्यायालय से सम्बन्धित कार्यों में विलम्ब होगा जिससे मन अशान्त रहेगा। तीसरे भाव में संचरण करता हुआ शनि बहुत ही अनुकूल फल दे रहा है जिसके कारण उपरोक्त वर्णित गुरु के फल में कुछ राहत का रास्ता निकलता रहेगा। पैसा खूब आयेगा एवं सहायक आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे। भौतिक सुख सुविधाओं के साधन जुटेंगे और यह शनि रोगों पर नियन्त्रण करने में औषधियों के माध्यम से सहायता करता रहेगा। आपका साहस एवं धैर्य विपरीत परिस्थितियों में भी आपको विचलित नहीं होने देगा। परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करने की शक्ति प्रदान करेगा। चतुर्थ भाव का राहु जमीन जायदाद से सम्बन्धित परेशानी दे सकता है।

मकर– भो, जा, जी (जू, जे, जो) खी, खू, खे, खो, गा, गी

वर्षारम्भ में हल्का चल रहा बृहस्पति १ मई से बहुत ही अनुकूल हो जायेगा। भृत्य (नौकर) सहायक एवं परिजन सभी आपकी सेवा सहायता करने में तत्पर रहेंगे। घर-परिवार में विवाह पुत्र जन्मादिक मांगलिक कार्य सम्पन्न होने के अवसर प्राप्त होंगे। प्रेम सम्बन्ध प्रगाढ़ होंगे एवं भौतिक सुख सुविधाओं के अनेक साधन एकत्रित हो जायेंगे। भूमि-भवन वाहन का सुख प्राप्त होगा कोई स्थिर लाभ भी हो सकता है। आपकी बौद्धिक क्षमता बढ़ जायेगी तथा वाणी-व्यवहार से आप सबको आकर्षित कर लेंगे। आपके द्वारा कोई उल्लेखनीय कार्य किया जायेगा, जिसकी सर्वत्र प्रशंसा होगी। शनि की उतरती साढ़े साती भी शनि जन्य कष्ट में राहत प्रदान करने लगेगी। शरीर में बल एवं तेज दोनों धीरे-धीरे बढ़ने लगेगा। विमुख हुए दोस्त रिश्तेदार तथा परिचित पुनः आपकी सेवा-सहायता में तत्पर होने लगेंगे। जीवन साथी को यह शनि कुछ कष्ट देता रहेगा। तीसरे भाव का राहु शत्रुओं एवं विरोधियों को परास्त करने में सहायक होगा। हनुमान जी की आराधना से शनि जन्य कष्ट कटता रहेगा। **ॐ शं शनैश्चराय नमः** मन्त्र का १ माला जप नित्य करें तथा तिल तेल का दीपक शनि भगवान के सन्निकट प्रत्येक शनिवार को जलाकर उनकी पूजा करते रहें।

कुम्भ– गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो दा

वर्षारम्भ में नेष्ट फलकारक बृहस्पति १ मई से परिवर्तित होकर यद्यपि कि बहुत शुभ फलकारक तो नहीं होगा किन्तु केन्द्र में होने से कुछ राहत प्रदान करेगा। यद्यपि कि आप अपना कार्य परिश्रम एवं लगन तथा ईमानदारी से करेंगे किन्तु उसको तदनुरूप महत्व नहीं दिया जायेगा। मन अशान्त रहा करेगा। राजकीय एवं न्यायालय से सम्बन्धित कार्यों में विलम्ब होगा तथा परिश्रम के मनोनुकूल फल नहीं प्राप्त होगा। परिजनों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त नहीं होगा। स्मरण रखें शनि आपकी ही राशि में संचरण करता हुआ मध्य साढ़ेसाती की स्थिति बनाये हुए है अतः प्रत्येक कार्य को सोच समझकर तथा अपने विश्वसनीय लोगों से परामर्श लेकर ही सम्पन्न करें। यद्यपि कि शनि आपकी राशि का स्वामी भी है अतः अपेक्षाकृत कम कष्ट कारक होगा। चोट-चपेट लगने का भय रहेगा अतः सदैव सतर्कता का पालन करें। जीवन साथी का स्वास्थ्य भी प्रभावित रहा करेगा। शनि ग्रह की अगर आप शान्ति का उपाय करते रहेंगे तो अवश्य शनि जन्य कष्ट से राहत मिलती रहेगी। सुन्दर काण्ड तथा हनुमान चालीसा का पाठ करें। **बजरंग बाण** का पाठ भी सहायता करेगा। प्रत्येक शनिवार को हनुमान जी के निकट पीपल वृक्ष की जड़ में स्थित शनि भगवान के लिये तिल युक्त तिल तेल का दीपक जलावें। छायादान करना बड़ा सहायक होगा। **ॐ शं शनैश्चराय नमः** का १ माला जप नित्य करें। पूज्य सहायक तथा नौकरों की खूब सहायता करते रहें। बृहस्पति वार को **ॐ बृं बृहस्पतये नमः** का १ माला जप कर लिया करें।

मीन– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची

वर्षारम्भ में शुभ फल प्रदान करता हुआ बृहस्पति १ मई से बदल कर तृतीय भाव का हो गया है जिसके कारण आपके पद-प्रतिष्ठा में कमी आयेगी। आपके कार्य क्षेत्र में कठिनाई आती रहेंगी, शारीरिक सुख-स्वास्थ्य भी बाधित रहा करेगा और अपने मित्र एवं परिजनों से विवाद उत्पन्न होगा। नौकरी, व्यवसाय, रोजी-रोजगार में बाधा उत्पन्न होने से आर्थिक समस्या पैदा होती रहेगी। आपके परिजनों को कठिनाई से गुजरना होगा और आपके द्वारा की गयी यात्राओं का आपको मनोनुकूल लाभ नहीं मिल पाएगा। शनि के बारहवे भाव में होने के कारण आपको एक के बाद एक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। आपकी राशि में ही संचरण करता हुआ राहु आपकी मान-मर्यादा में आयी कमी को थोड़ा सतुंलन प्रदान करेगा। आर्थिक समस्याओं को कम करेगा और आपके और आपके सगे सम्बन्धियों को धन-लाभ करवायेगा। चन्द्रमा का शत्रु होने के कारण राहु आपको मानसिक रूप से तनाव देगा। सातवें भाव में होने के कारण केतु आपको राजकीय कार्यों में सफलता प्रदान करायेगा और मान प्रतिष्ठा मे वृद्धि होगी। चूंकि आप शनि की चढ़ती साढ़े साती के चपेट में है अतः शनि की शांति के लिए हनुमान जी की अराधना करना श्रेयस्कर होगा। **ॐ शं शनैश्चराय नमः** का एक माला जप नित्य करें तो कष्ट कटता जायेगा।

मासफलम् : तेजी मन्दी विचार के साथ

चैत्र शुक्ल पक्ष– पक्ष के तीन मंगलवार अग्नि काण्ड की कुछ बड़ी घटनाएं करा सकते हैं। शेयर बाजार में उछाल आयेगा एवं व्यापार जगत चमकेगा। शनिवार की मेष संक्रान्ति चना की खेती करने वाले कृषकों को लाभकारी साबित होगी। भूसी वाली अनाज की पैदावार जैसे गेहूं, जौ इत्यादि का भाव गिरेगा। प्रजा को कष्ट होगा एवं खाद्यान्नों को विदेशों मे प्रचुर निर्यात किया जायेगा। रुई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम अन्य सब प्रकार के फल गुड़, खाण्ड, शक्कर, चांदी-सोना में तेजी आयेगी। गेहूं, चावल, उड़द, मूंग, अरहर, जौ, मटर आदि मे मन्दी चलेगी। पक्षान्त २३ अप्रैल के आसन्न आँधी, पानी, बूंदा-बांदी होने की सम्भावना है।

वैशाख मास– मास का पहला पखवारा दैवी-प्राकृतिक दृष्टि से उपद्रवकारी साबित होगा। २९ अप्रैल को पूर्व दिशा मे शुक्र का अस्त हो रहा है एवं ८ मई को गुरु भी पश्चिम दिशा मे अस्त हो जायेंगे फलतः मौसम मे काफी उलट-फेर होगा। आँधी, पानी, तूफान तथा वर्षा होने के योग मिल रहे हैं। रुई, अलसी में मन्दी चलेगी। सोना-चांदी, ताँबा, मूंगा, पीतल के बर्तन, सूती चादर तथा सूती वस्त्र, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड मे तेजी का झटका आयेगा। कोई दैवीय, प्राकृतिक दुर्घटना भी घट सकती है। शुक्ल पक्ष में मंगलवार की वृष संक्रान्ति भी किराना मे तेजी कारक है। रोहिणी नक्षत्र एवं अक्षय तृतीया का योग सुभिक्षकारक है किन्तु मनुष्यों के साथ-साथ चौपायों एवं पशु-पक्षियों मे कोई रोग फैलेगा। पीपलामूल, मादक द्रव्य, सेंधा नमक, लाल चन्दन मे भी तेजी का दौरा आयेगा किन्तु मास के पांच बुधवार एवं गुरुवार देश एवं समाज के लिए शुभफल कारक हैं। राजनैतिक स्थिरता का वातावरण बनता दिखायी देगा तथा देश का नेतृत्व किसी कुशल राजनीतिज्ञ, बुद्धिमान एवं उच्च प्रशासनिक अनुभवों से युक्त व्यक्ति के हाथ मे जाने की पूर्ण सम्भावना बन रही है।

ज्येष्ठ मास– इस मास मे जून के आरम्भ होते ही बूंदा-बांदी वर्षा होने की सम्भावना है। अमावस्या का पंचग्रही योग एवं निकटस्थ राशियों मे तीन और ग्रहों का जमावड़ा नेष्टफलकारक है। भयंकर गर्मी से जनता त्राहि-त्राहि करने लगेगी। जून का प्रथम सप्ताह दैवीय, प्राकृतिक दृष्टि से अनिष्टकारी है। समुद्री तूफान अथवा भूकम्पादि के भी योग बन सकते हैं। ३ जून से गुरु पूर्व दिशा में उदित हो जायेगा किन्तु शुक्र अभी अस्त ही चल रहा है इसलिये विवाहादि शुभ कार्यों के लिये मुहूर्त्त का अभाव बना ही रहेगा। तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा,

सूती वस्त्र, सन, सुपारी, मिर्च मे तेजी का झटका आयेगा। शुक्ल पक्ष मे १५ जून को मिथुन की संक्रान्ति शनिवारी है अत: खाद्यान्नों के भाव में तेजी आ जायेगी। मेषराशि का मंगल सत्ता के विरोधी पक्षों में अनर्गल प्रलाप पैदा करने का योग पैदा कर रहा है जिससे राजनैतिक कटुता बढ़ेगी मृगशिरा नक्षत्र का सूर्य ८ जून शनिवार को आकर तथा संक्रान्ति भी शनिवारी एवं पूर्णिमा भी शनिवारी, कुल मिलाकर शरीर में चुभने वाली गर्मी से जनता बेहाल हो जायेगी। पक्षान्त २२ जून को आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश हो जायेगा, इसमें कुछ वर्षा हो जाने के योग मिल रहे हैं।

आषाढ़ मास– इस महीने की सबसे बड़ी बात यह है कि आषाढ़ कृष्ण पक्ष १३ दिन का ही है। द्वितीया तिथि से चतुर्दशी तिथि तक जब दो तिथियो का क्षय हो जाता है तो वह पक्ष **'विश्वपक्ष'** नामक १३ दिन का ही होता है। ज्योतिष के सभी आचार्यो ने इसका फल बहुत ही खराब बताया है। इस मास में शनि भी व्रकी हो रहा है। घटना विशेष के बारे में तो ठीक-ठीक नहीं बताया जा सकता है किन्तु कुछ न कुछ अनहोनी-अनकहीं अनचाही दैवी प्राकृतिक प्रकोप हो ही जाता है। वर्षा का समय प्रारम्भ हो चुका है। इस पक्ष मे २८ जून को पश्चिम दिशा में शुक्र भी उदित हो जायेगा किन्तु १३ दिन का पक्ष होने के कारण विवाहादि शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं हो पायेंगे। जून के अन्तिम सप्ताह में अच्छी वृष्टि होने की सम्भावना है। शुक्ल पक्ष में ६ जून को पुनर्वसु नक्षत्र आ जायेगी और इसमें भी बादल की घेर-घार के साथ वर्षा होगी। मास के पॉच रविवार दैवी प्राकृतिक घटनाएँ करायेंगे। मासान्त २० जुलाई को पुष्य नक्षत्र के सूर्य में अच्छी वृष्टि की सम्भावना है। कई दृष्टियों से यह महीना कई घटनाओं का साक्षी बन सकता है। मंगलवार की कर्क संक्रान्ति गेहूं, चावल आदि खाद्यान्नो तथा खाण्ड, गुड़ घृतादि रस पदार्थो में तेजी लायेगी।

श्रावण मास– सुखद संयोग है कि सावन की शुरुआत ही सोमवार से हो रही है तथा कुल पॉच सोमवार इस वर्ष सावन के महीने में मिल रहे है जो सर्वथा शुभफलकारक है। कहा गया है कि– **''सोमस्य पंचवारास्तु यत्र मासे भवंतिहि। धन्यधान्य समृद्धि: स्यात्सुखं भवति सर्वदा।''** श्लेषा नक्षत्र का सूर्य ३ अगस्त शनिवार को आयेगा एवं अगस्त के प्रारम्भ से ही शुक्र-बुध की युति भी हो जायेगी जो अच्छी से अच्छी वर्षा होने के योग पैदा कर रही है। शुक्र बुध की युति पूरे महीने चलती रहेगी अत: वर्षा के लिये शुभफल कारक है। मघा नक्षत्र और सिंह राशि का सूर्य संक्रान्ति १७ अगस्त शनिवार को आ रही है। यह भी अच्छी वर्षा के संकेत प्रदान कर रहे है। ये हवा के साथ वर्षा होगी। मूँग, उड़द, चना, चावल आदि भूसी वाले अनाज को क्षति पहुँचेगी। जिससे इन चीजों में मँहगाई बढ़ेगी। सोना, चाँदी, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर तिल, तेल, एरण्ड, सरसों तथा लाल रंग की वस्तुओं तथा रत्न तेज होगा। शेयर बाजार में मन्दी चलेगी।

भाद्रपद मास– इस महीने में कोई आतंकवादी अथवा अन्य कोई घटना घटकर धनजन को क्षति पहुँचा सकती है। अग्निकाण्ड की कोई बड़ी दुर्घटना भी घट सकती। जन्माष्टमी के आसन्न वर्षा होने की सम्भावना है। इस महीने गर्मी बहुत पड़ेगी और तीखी धूप होगी तथा अनेक तरह की बीमारी फैलेगी। अनेक प्रकार के बुखार फैलेंगे जिससे प्राय: हर घर में रोग-व्याधि फैलेगी। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का सूर्य ३१ अगस्त शनिवार को आयेगा। इसमें अच्छी वृष्टि होने की सम्भावना है। जीरा, सोना, गुड़ खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़ा, रुई, सूत में तेजी आयेगी। चाँदी में घटा बढ़ी चलेगी। शुक्ल पक्ष में उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र का सूर्य १३ सितम्बर शनिवार को आयेगा। इसमें भी अच्छी वृष्टि की सम्भावना बन रही है। मासान्त १८ सितम्बर के आसन्न की वर्षा होने की सम्भावना है। कन्या राशि का सूर्य १७ सितम्बर मंगलवार को आयेगा। रुई, सूत, बिनौला, अलसी, मूँग, उड़द, मसूर, मक्का, गेहूँ, तांबा, लोहा, पीतल, नमक, हल्दी, धनियाँ, जीरा में तेजी तथा नारियल जायफल में मन्दी की धारणा बनेगी तेजी। शेयर बाजार भी मन्दा हो जायेगा।

आश्विन मास– विगत माह में फैली रोग-व्याधियों से कुछ छुटकारा मिलता हुआ प्रतीत हो रहा है। मास के पाँच गुरुवार पश्चिमी प्रदेशों में राजनीतिक विग्रह-विरोध का वातावरण बनायेंगे। हस्त नक्षत्र का सूर्य २७ सितम्बर शुक्रवार को आयेगा इसमें वायुवेग के साथ वर्षा होने के योग मिल रहे है। गेहूँ, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, घास, इमारती लकड़ी, नमक, हरड, हींग, धनिया, हल्दी, शण, क्षार में तेजी का दौरा आयेगा। अमावस्या २ अक्टूबर का चतुर्ग्रही योग मौसम मे उलट-फेर करेगा। शुक्ल पक्ष शुभफल कारक है। गुरु ९ अक्टूबर को वक्री हो रहा है अत: सुभिक्ष एवं सुविधा का वातावरण बनेगा। चौपायों में दुधारु गाय-भैंस का भाव तेज होगा। इमारती लोहा, छड़ इत्यादि का भाव भी चढ़ जायेगा। चित्रा नक्षत्र का सूर्य १० अक्टूबर गुरुवार को आयेगा इसमे भी वर्षा होने की सम्भावना है। रुई, सूत, सोना-चाँदी, मोती आदि रत्न गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, जौ, चना, तिल, नारियल सन केशर कपूर लाल कपड़ा में तेजी आयेगी। तुला राशि की सूर्य संक्रान्ति १७ अक्टूबर गुरुवार को आयेगी। गेहूँ, जौ, चना का भाव सम चलेगा, ज्वार, बाजारा, उड़द, मूँग, मोठ, चावल, चाँदी, नमक के भाव में मन्दी की धारणा बनेगी। सरसों, अलसी, तिल, तेल, नारियल, सोना, तांबा रेशमी व ऊनी वस्त्र तेज होंगे।

कार्तिक मास– विगत मास से भी यह दिव्यकार्तिक मास सुभिक्षकारक है। मनुष्यों में फैली अनेक प्रकार की बीमारियों का शमन होता हुआ दिखाई देने लगेगा। मास के पाँच शुक्रवार एवं गुरुवार की दीपावली शुभफलकारक है। देश के वाणिज्य-व्यापार में काफी प्रगति होगी। स्वाती नक्षत्र का सूर्य २३ अक्टूबर बुधवार को आयेगा। रुई, सूत, शण, रेशमी, कपड़ा, सोना-चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल मे तेजी आयेगी। इसमें पानी बरसने की भी अच्छी सम्भावना है। दीपावली के आसपास भी मौसम में उलट फेर आँधी-तूफान वर्षा होने के योग मिल रहे है। शुक्ल पक्ष में विशाखा नक्षत्र का सूर्य ६ नवम्बर बुधवार को आयेगा। इसका फल सुभिक्षकारक है किन्तु नई प्रकार की बीमारी का प्रकोप भी हो सकता है। जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम इत्यादि मे तेजी का झटका आयेगा। १४ नवम्बर को शनि मार्गी होकर देश समाज एवं व्यक्ति के लिये शुभफलकारक होने लगेगा।

मार्गशीर्ष मास– यह महीना कई दृष्टियो से बहुत भारी प्रतीत हो रहा है। मास के पाँच शनिवार एवं पाँच रविवार तथा शनिवार की वृश्चिक संक्रान्ति देश समाज एवं जनता के लिये अनेक प्रकार की मुसीबतें खड़ी कर देंगे शनि-मंगल का षडाष्टक योग आग में घी का काम करेगा। समुद्री तूफान भूकम्पादि दैवी-प्राकृतिक दुर्घटना से धन-जन को काफी क्षति पहुँचेगी। २९ नवम्बर के आसन्न बूंदा-बाँदी वर्षा होने से खेत-खलिहान में पड़ी फसल को गम्भीर क्षति पहुँचेगी। मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी मंगलवार के योग से कोई बड़ी विस्फोट अथवा अग्नि काण्ड की घटना हो सकती है। सोना-चाँदी, लौंग, इलायची, कोयला, लकड़ी पत्थर के भाव मन्दे चलेंगे। रुई, सूत, लोहा, जस्ता, पीतल, मक्का ज्वार बाजरा तेज चलेंगे। गेहूं, जौ, चना के भाव मे घटा-बढ़ी होकर मन्दी ठहरेगी। रंगो के भाव भी मन्दे चलेंगे। तिल, तेल, अलसी सरसों के भाव सम चलेंगे। शुक्ल पक्ष में १० दिसम्बर के आसपास भी पानी बरसने की सम्भावना बन रही है। कुल मिलाकर यह महीना कई घटनाओं का साक्षी बनेगा।

पौष मास– पक्षारम्भ से ही भयंकर सर्दी एवं कोहरा-पाला का प्रभाव बढ़ने लगेगा। मासारम्भ में ही मूल नक्षत्र एवं धनु राशि की सूर्य संक्रान्ति सोमवारी है तथा अमावस्या भी सोमवती है फलस्वरूप हाड़ कँपा देने वाली सर्दी पड़ने लगेगी। खरमास प्रारम्भ हो जायेगा। जिससे विवाहादि शुभ कार्य बन्द हो जायेंगे। सूत, चाँदी, चावल, गेहूँ मे मन्दी का झटका आयेगा तथा तिल, तेल, सरसों, लाल मिर्च व अन्य लाल रंग की वस्तुओं तथा लोहा व लोहे से बनी चीजों पर तेजी रहेगी। उड़द, मूँग, मोठ,ज्वार, मक्का, बाजरा का भाव सम रहेगा। खाद्यान्नों का संग्रह रखने वाले व्यापारियों को लाभ के साथ विक्रय करने का अवसर मिलेगा। शुक्ल पक्ष में तो ठंडक और बढ़ जायेगी तथा जन-जीवन ठिठुर जायेगा। कुल मिलकर यह महीना सुभिक्ष एवं सुविधाजनक है।

माघ मास– प्रत्येक १२ वर्ष के अन्तराल पर लगने वाला कुम्भ महापर्व से युक्त यह महीना पूरे विश्व में चर्चा का विषय बनेगा। मासारम्भ १४ जनवरी को मकर संक्रान्ति मंगलवारी है। १६ जनवरी के आसपास अथवा मकर संक्रान्ति पर्व के अवसर पर मौसम करवट लेगा तथा बादल बदली मघवदरिया के योग बन रहे हैं। मास के पाँच मंगलवार यद्यपि कि बादल-बदली के बाद धूप में तेजी लाने लगेंगे। इस मास कोई दैवी-प्राकृतिक दुर्घटना भी घटकर धन जन को क्षति पहुँचा सकती है। उत्तर प्रदेश शासन को कुम्भ महापर्व की व्यवस्था के प्रति अत्यधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है। गेहूँ, जौ, चना, मटर, ज्वार, बाजरा, मक्का, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अचार, अनारदाना, इमली, तेल, सरसों, तिल, अलसी, हल्दी, मजीठ, ताँबा, पीतल, जस्ता, लोहा, कोयला, पत्थर में तेजी आयेगी। सूत, कपास, बिनौला, सोना-चांदी व किराने की वस्तुओं मे घट-बढ़ रहेगी। उड़द, मूँग, मसूर, लोबिया, अरहर, घी में कुछ मन्दी चलेगी। चौपायों में भी मन्दी रहेगी। शुक्ल पक्ष से ठंडक से राहत मिलने लगेगी। मासान्त पूर्णिमा को कुम्भ राशि में सूर्य का प्रवेश हो जायेगा। बुधवारी संक्रान्ति से लौंग, इलायची, काली मिर्च, इमली,अनारदाना मे मन्दी चलेगी।

फाल्गुन मास– यह महीना कई दृष्टियो से शुभफल कारक है। चैती की फसल अच्छी उतरेगी इस तरह के योग बन रहे है। इस महीने मे पांच गुरुवार और पांच शुक्रवार होने से सुभिक्ष एवं सस्ती का वातावरण बनेगा। देश के पश्चिमी प्रान्तो में राजनैतिक उलट-फेर विग्रह-विरोध की सम्भावना बन रही है। सोना, पीतल, सूत, सूती कपड़ा, चावल एवं शक्कर के भाव में मन्दी चलेगी। अफीम इत्यादि मादक द्रव्यों मे तेजी आयेगी। २२ फरवरी के आस पास पानी बरसने तथा ओला-पत्थर पड़ने की सम्भावना है। वक्री चल रहा मंगल मार्गी होकर सूत एवं सूती कपड़ा तथा लाल रंग की वस्तुओ में मन्दी लायेगा। सोना-चांदी, शण, कपड़ा, तिल, तेल, एरंड, सरसो, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गुड़ का भाव तेज होगा। ४ मार्च के आसपास मे किराना की वस्तुओं में तेजी का रुख बनेगा। मासान्त १४ मार्च शुक्रवार को मीन राशि की सूर्य संक्रान्ति शुभफल कारक है।

चैत्र कृष्ण पक्ष– वर्ष का यह अन्तिम पखवारा कई दृष्टियों से भारी पड़ेगा। पक्ष के तीन शनिवार एवं शनिवार की अमावस्या तथा कुछ ही दिनों में शुक्रास्त एवं शुक्रोदय दैवी प्राकृतिक घटनाओं का कारण बनेगा। कुछ भी अनहोनी हो सकती है। दैवी-प्राकृतिक समुद्री तूफान भूकम्पादि की सम्भावना है।

ग्रहण विवरणम् संवत् २०८१ शाके १९४६

इस संवत् मे कुल चार ग्रहण लगेंगे। २ सूर्य ग्रहण होगा जबकि २ चन्द्रग्रहण। **इन चारों ग्रहणों में से कोई भी ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा।** सन्दर्भ वश सूचना मात्र के लिये चारों ग्रहणो का दिनांक निम्नलिखित है-

१.खण्ड चन्द्रग्रहण–दिनांक १७।१८ सितम्बर २०२४ को खण्डचन्द्र ग्रहण यूरोप मध्य एशिया, अफ्रीका उत्तर व दक्षिण अमेरिका अटलांटिक महासागर, हिन्द महासागर आर्कटिक तथा अन्टार्कटिका मे दिखाई देगा। इस ग्रहण का सम्बन्ध भारत से कतई नही है अत:इसका विशेष विवरण केवल भ्रम फैलायेगा। अत: नही दिया जा रहा है।

२.सूर्यग्रहण–दिनांक २ अक्टूबर २०२४ ई. को कंकणाकृत सूर्यग्रहण दक्षिण व उत्तरी अमेरिका पैसफिक क्षेत्र अटलांटिक भाग आर्कटिक क्षेत्र, अन्टार्कटिका में दिखाई देगा। इस ग्रहण का भी सम्बन्ध भारत से कुछ भी नहीं है अत: विवरण देना अनावश्यक है।

३.खग्रास चन्द्रग्रहण–दिनांक १३।१४ मार्च २०२५ को खग्रास चन्द्र ग्रहण लगेगा किन्तु यह ग्रहण भी यूरोप, मध्य एशिया पश्चिम अफ्रीका, उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका पैसफिक क्षेत्र अटलांटिक आर्कटिक तथा अन्टार्कटिका में लगेगा। यह ग्रहण भी भारत में नहीं लगेगा अत: इसकी कोई मान्यता भारत में नही होगी।

४.खण्ड सूर्यग्रहण–दिनांक २९ मार्च २०२५ को खण्डसूर्य ग्रहण लगेगा किन्तु भारत में नहीं लगेगा। इसकी कोईमान्यता भारत मे नहीं होगी।

विशेष- इस प्रकार हमारा देश इस संवत्सर में ग्रहण से रहित होगा अर्थात् कोई भी ग्रहण भारत में नहीं लगेगा। इसका वेध,सूतक,धार्मिक मान्यता भारत में नहीं होगी। कृपया भ्रमित न हों।

सूतक–सूर्य ग्रहण का सूतक स्पर्श समय से १२ घंटे पूर्व प्रारम्भ हो जाता है एवं चन्द्र ग्रहण का ९ घंटे पूर्व। स्पर्श के समय स्नान पुन: मोक्ष के समय स्नान करना चाहिए। सूतक लग जाने पर मन्दिर में प्रवेश करना मूर्ति को स्पर्श करना, भोजन करना, मैथुन क्रिया, यात्रा इत्यादि वर्जित है। बालक, वृद्ध, रोगी अत्यावश्यक में पथ्याहार ले सकते हैं। भोजन सामग्री जैसे दूध, दही, घी इत्यादि में कुश रख देना चाहिए। ग्रहण मोक्ष के बाद पीने का पानी ताजा ले लेना चाहिए। गर्भवती महिलाएँ पेट पर गाय के गोबर का पतला लेप लगा लें। ग्रहण अवधि में श्राद्ध-दान-जप, मंत्र सिद्धि इत्यादि का शास्त्रोक्त विधान है। **ग्रहण जहाँ से दिखाई देता है सूतक भी वहीं लगता है एवं धर्मशास्त्रीय मान्यताएं भी वहीं लागू होती है तथा उसका फलाफल भी वही लागू होगा।**

आभार-ग्रहण विवरण तथा ग्रहों के उदय-अस्त, चन्द्रोदय-चन्द्रास्त खोगल विज्ञान केन्द्र के सोजन्य से।

सम्पादन-श्रीमती कान्ति ओझा (एम.एससी.गणित)

प्रयाग में कुम्भ महापर्व संवत् २०८१ सन् २०२५ ई.

चतुर: कुम्भांश्चतुर्धा ददामि।

ब्रह्मा जी कहते है- हे मनुष्यों मैं तुम्हें ऐहिक तथा आमुष्मिक सुख देने वाले चार कुम्भ पर्वों का निर्माण कर पृथ्वी के चार स्थानो (हरिद्वार, प्रयाग,उज्जैन और नासिक) में प्रदान करता हूँ।

कुम्भ महापर्व का प्रमाण वेदों से भी प्राप्त होता है यह सिद्ध है। इतिहासकारों ने सटीक विश्लेषण नही किया है किन्तु कुम्भ महापर्व अति प्राचीनकाल से आयोजित होता आ रहा है। कुम्भ महापर्व अद्भुत एवं अतुलनीय है। विश्व के किसी भी धर्म-सम्प्रदाय में इसका कोई जोड़ ही नहीं है। सम्पूर्ण भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व से लोग इस महापर्व में गंगा-जमुना एवं अदृश्य सरस्वती के संगम 'त्रिवेणी' के अमृतोमय जल में डूबकी लगाने के लिये जिस भाव एवं श्रद्धा के साथ आते है वह वर्णनातीत एवं अकल्पनीय है। प्रयाग मे लगने वाले कुम्भ महापर्व के लिये शर्ते एवं परिस्थितियाँ तथा प्रमाण यह है कि १. वृहस्पति मेष राशि में अथवा वृष राशि पर होना चाहिए। २. सूर्य मकर राशि का हो तथा चन्द्रमा भी मकर राशि में आ जाये। ३. सबसे महत्वपूर्ण यह है कि १२ वर्ष का अन्तराल होना आवश्यक है इसलिये मेष राशि एवं वृष राशि दोनो ही राशियों में से किसी भी राशि में वृहस्पति आ जाये तो माघ कृष्ण अमावस्या को कुम्भ महापर्व का मुख्य स्नान होता है-

मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ। कुम्भ योगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यतिदुर्लभ:।।

तथा च- **माघे वृष गतेजीवे मकरे चन्द्रभास्करौ।**
अमायां च ततो योग: कुम्भाख्यास्तीर्थ नायके।।

अथर्ववेद का निम्नलिखित मन्त्र बारह वर्ष के अन्तराल को प्रमाणित करता है-

पूर्ण: कुम्भोऽधिकाल अहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्त:।
सऽइमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ्काल तमाहु: परमेव्योमन्।।

हे सन्त गण! पूर्ण कुम्भ समय पर बारह वर्ष के बाद आता है। इस प्रकार संवत् २०८१ सन् २०२५ में **२९ जनवरी बुधवार** को **पूर्ण महाकुम्भ पर्व** का मुख्य स्नान पर्व अपनी भव्यता-विशालता एवं श्रद्धा भाव में सराबोर होकर सम्पन्न होगा।

वस्तुत: यह सन्तों महात्माओं के सम्मिलन का पर्व है। इसको वे ही अपनी-अपनी परम्पराओं के अनुसार शाही स्नान के रूप में सम्पन्न करते है उसके पश्चात् ही जन-सामान्य का स्नान प्रारम्भ होता है। **इस पर्व के प्रवर्तक आदि जगद्गुरु शंकराचार्य को भी माना जाता है।** प्रयाग महाकुम्भ पर्व के तीन प्रमुख स्नान निम्न तिथियों पर होंगे-

१. **प्रथम स्नान** - मकर संक्रान्ति १४ जनवरी मंगलवार २०२५

२. **द्वितीय स्नान (मुख्य स्नान)** - २९ जनवरी बुधवार २०२५

३. **तृतीय स्नान** - माघ शुक्ल पञ्चमी (बसन्त पंचमी) ३ फरवरी २०२५ सोमवार। इसके पश्चात् भी महाशिवरात्रि तक इसका स्नान चलता रहता है।

शनि की साढ़ेसाती

शनि वर्ष पर्यन्त कुम्भ राशि में संचरण करेगा। मकर राशि वालों के लिये उतरती, कुम्भ राशि वालों को मध्य तथा मीन राशि वालों के लिए चढती शनि की साढ़ेसाती चलेगी। कर्क एवं वृश्चिक राशि वालों को शनि की ढैय्या चलेगी।

परामर्श- **शनि जन्य कष्ट निवारणार्थ शनि स्तोत्रम-**

नमस्ते कोण संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते।। नमस्ते बभ्रुरूपायृष्णाय च नमोऽस्तुते।।
नमस्ते रौद्र देहाय नमस्ते चांतकाय च।। नमस्ते यम संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्द संज्ञाय शनैश्चर नमोस्तुते।। प्रसीदं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

१. **उपरोक्त शनि स्तोत्र अथवा महाराज दशरथ कृत शनिस्तोत्र** का पाठ प्रत्येक शनिवार को करें, सम्भव हो तो नित्य करें। २. नोकर-भृत्य-सहायक का भरण-पोषण करें तथा उसको पास रख उसकी सहायता करें। ३. कौवे को चारा दें। ज्यादा कष्ट समझ में आवे तो कांसे के कटोरे में तेल रखकर उसमें अपनी मुखाकृति देख कटोरा सहित दान ग्रहण करने वाले को दान दें। ४. सुन्दरकाण्ड का पाठ नित्य करें।

शनिदान मंत्र-शनैश्चर प्रीतिकरं दान पीड़ा निवारकम्।
सर्वापत्ति विनाशाय द्विजाग्रयाय ददाम्यहम्।।

विंशोपका:

धान्यम् ११, तृणम् ५, शीतम् १३, तेजम् १७, उष्णम् १७, वायु: १३, वृद्धि: १५, विनाश: १४, विग्रह: १०, क्षुधा २, तृष्णा ८, निद्रा १३, आलस्यम् १२, उद्यम् ११, शान्ति: १३, क्रोध १०, दम्भ ४, मैत्री १३, उत्सव १०, पाप १७, पुण्यत्व ७, उग्रता १५, रसोत्पत्ति ७, फलोत्पत्ति १०, व्याधि ७, व्यधिनाश ८, आचार ११, अनाचार ४, मृत्यु ८, जन्म १४, चौर १३, अग्नि ११, शमन १३, सत्यम् ९, वर्षा ८, धर्म ८, रत्न ११, वस्त्रम् ९, अनावृष्टि ७, अतिवृष्टि २०, मूषक १५, शूल १७, सेवकत्वम् ९, स्वामित्त्वम् १८, घृतम् ८, तैलम् ५, दुकूलम ५, ऊनी वस्त्रम् ३ भेद: १, उत्साह ९, भैषज्य ७।

पञ्चाङ्ग देखने की रीति

गत ८१ वर्षों से यह पंचाग प्रकाशित हो रहा है। अतः प्राचीन प्रेमियों के निमित्त पञ्चांग देखने की विधि बताना तो निष्टपेषण मात्र ही है। पुनरपि, नवीन उत्सुक एवं जागरुक बन्धुओं के हित हेतु संक्षिप्त निर्देशन देना आवश्यक है।

प्रत्येक विज्ञान में बड़ी पारिभाषिक शब्दावलियों के स्थान पर सुविधार्थ संक्षिप्त संकेत निर्धारित कर लिए जाते हैं। इस पंचांग में भी किंचित् निर्णीत चिह्न हैं। उनका सम्यक् ज्ञान प्रथम ही आवश्यक हैं। वे निम्नांकित हैं।

उपर्युक्त संकेतों को यदि किसी पक्ष का आश्रय लेकर समझा जाय तो सरलता से समझ में आ सकता हैं।

सांकेतिक चिह्न	स्पष्टार्थ	सांकेतिक चिह्न	स्पष्टार्थ	मुहूर्त के स्पष्टार्थ
दि.मा.	दिनमान	रा.	सायमान से राष्ट्री.तारीख	ग्र.व.वि. - ग्रहवल विस्वा
ति.	तिथि	चं.रा.प्र.	चन्द्रसंचार अर्थात् उक्त घटी पल पर चन्द्रराशि बदलेगा	सू.दा. - सूर्यदान
वा.	वार			चं.दा. - चन्द्र दान
घ.प.	घटी पल			भौ.दा. - भौम दान
घं.मि.	घण्टा-मिनट	सू.उ.	सूर्य-उदय	श.दा. - शनि दान
दि.	दिन	सू.अ.	सूर्य-अस्त	रा.के. - राहु-केतुदान
ग.	गत	उ.	उपगन्त	मृ.बा. - मृत्युवाण
न.	नक्षत्र	या.	यावत्	लग्न १ = मेष लग्न, लग्न २= वृष लग्न, लग्न ३ = मिथुन इसी तरह सभी लग्नों को दर्शाया जाता है।
यो.	योग	ति.दा.	तिथि-दान	
क.	करण	र.क्रां.	रविक्रान्ति (प्रतिदिन सूर्यो. कालिक क्रान्ति)	
अं.	अंग्रेजी तारीख	रे.अं.	रेलवे घटी अन्तर	ना.च.शु.= चक्र शुद्धि नही
सौ.	सौर तारीख	चं.अ.	चन्द्र-अस्त	भू.सू.= भूमि सुप्त
फ.	फसली	चं.उ.	चन्द्र-उदय	
		भ.	भद्रा	

उदाहरण-चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (ति.१५) को लीजिए। इस तिथि को दिनमान ३१।५९ लिखा गया है। इसका अर्थ हैं कि सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन का मान ३१ घटी ५९ पल हैं। आगे तिथि वार में १५ मंगलवार लिखा है, इसका अर्थ तिथि १५को मंगलवार है। आगे घ.प.५७।५ लिखा है। इसका अर्थ तिथि १५ का मान ५७ घटी ५ पल तक रहेगा। घण्टा मिनट का खाना घटी पल को घण्टा मिनट में परिवर्तित कर देता हैं। जैसे तिथि १५ का मान रात ४ बजकर २६ मिनट तक रहेगा। इस तिथि को चित्रा नक्षत्र का मान ४० घटी ५५ पल है जो रात ९ बजकर ५८ मिनट तक है। वज्र नामक योग है जिसका मान ५७ घटी ३० पल है जो रात ४ बजकर ३७ मिनट तक रहेगा। करण विष्टि का मान २५ घटी ० पल तक है। द्वितीय करण बव का मान ५७ घटी ५ पल है। ध्वांक्ष नामक योग है। इसके आगे चन्द्र संचार का खाना है जिसमें तुला राशि का चन्द्रमा ८ घटी ५ पल है अर्थात् दिन ८।५० बजे से तुला राशि का चन्द्रमा आयेगा। इसके बाद उस दिन का सूर्योदय ५।३६ पर एवं सूर्यास्त ६।२४ पर होगा। रविक्रान्ति जैसे १२।१९ है इसका अर्थ १२ अंश १९ कला उत्तर क्रान्ति है। सूर्योदय कालिक स्पष्ट सूर्य ० राशि ९ अंश ३ कला ३५ विकला है। उस दिन की सूर्य गति ५८।२१ अर्थात् ५८ कला २१ विकला है। रेलवे अन्तर -४ लिखा है। इसका अर्थ है उस दिन ४ मिनट घटा देने पर उस दिन का रेलवे घड़ी (स्टैण्डर्ड टाइम) के अनुसार समय होगा। चन्द्र अस्त होने का समय आगे दिया गया है। इसके अतिरिक्त दैनिक सूर्योदय कालिक ग्रह दिये गये हैं। प्रत्येक दिन की ग्रहगति दी गई है। दैनिक लग्न सारिणी भी दिन-रात संयुक्त लिखी गई हैं। प्रत्येक पक्ष में पक्षफल, धर्मशास्त्र, राशिफल और मुहूर्त्त सरल नागरी लिपि में लिखा गया है। काशी सूर्य घड़ी के समय (लोकल टाईम) में पंचांग में दिए हुए दैनिक अन्तर को संकेत के अनुसार धन-ऋण कर देने से काशी में रेलवे घड़ी (स्टै.टा.) के अनुसार समय हो जायेगा।

मुहूर्त्त तालिका संवत् २०८१

नोट-विस्तार से पक्ष में देखकर निर्णय लें। तिथि एवं अंग्रजी तारीख का मिलान सम्बन्धित पक्ष देखकर कर लें।

विवाह मुहूर्त्ताः

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि ५ शनौ (१३.४.२४) खरमास रात्रि ११।१९ वादनात्परं मृगशिरा नक्षत्रे ल.९

तिथि १० गुरौ (१८.४.२४) दिवा ९।३८ वादनात्परं मघायां दिवा ल.३ वा ल.४ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.८ वा ल.९वा ल.११

तिथि १२ शनौ (२०.४.२४) दिवा २।३४ वादनात्परं उ.फा.ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.८ वा ल.९ वा ल.११

तिथि १३ रवौ (२१.४.२४) सायं ५।११ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.८ वा ल.९ वा ल.११

तिथि १४ सोमे (२२.४.२४) हस्त नक्षत्रे ल.गोधूलि

तिथि १५ भौमे (२३.४.२४) रात्रि ९।५८ वादनात्परं स्वात्यां ल.९ वा ल.११

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ गुरौ (२५.४.२४) रात्रि १।२० वादनात्परं अनुराधायां ल.११

तिथि २ शुक्रे (२६.४.२४) भद्रा सायं ६।२९ वादनात् पूर्व अनुराधायां दिवा ल.४

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ४ भौमे (९.७.२४) दिवा ७।५७ वादनात्परं मघायां दिवा ल.४ वा ल.८ सायं ५।५५ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः।

तिथि ४ बुधे (१०.७.२४) प्रातः ६।३९ वादनात्परं मघायां आ. दिवा ल.४

तिथि ५ गुरौ (११.७.२४) दिवा १२।२८ वादनात्परं उ.फा. दिवा ल.८ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.१

तिथि ६ शुक्रे (१२.७.२४) उ.फा. दिवा ल.४ वा ल.८ वा हस्त नक्षत्रे ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.१

तिथि ७ शनौ (१३.७.२४) हस्त नक्षत्रे दिवा ल.४ दिवा १२।२५ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः।

तिथि ८ रवौ (१४.७.२४) रात्रि ८।८ वादनात्परं स्वात्यां मृत्युवाणः।

तिथि ९ सोमे (१५.७.२४) मृत्युवाण रात्रि ८।५३ वादनात्परं स्वात्यां पंचेष्टलग्नाभावः

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १ शनौ (१६.११.२४) रात्रि ९।१५ वादनात्पर रोहिण्यां ल.४ वा ल.६

तिथि २ रवौ (१७.११.२४) रोहिण्यां दिवा ल.११ वा ल.१ वा ल. गोधूलि किन्तु रात्रि ७।११ वादनात्परं मृत्युवाणः।

तिथि ७ शुक्रे (२२.११.२४) रात्रि ८।५७ वादनात्परं मघायां ल.४ वा ल.६ वा ल.७ पंचेष्टाभावः।

तिथि ८ शनौ (२३.११.२४) मघायां दिवा ल.११ वा ल.१ वा ल.११

तिथि ९ रवौ (२४.११.२४) रात्रि १२।३४ वादनात्परं उ.फा. ल.६ वा ल.७

तिथि १० सोमे (२५.११.२४) उ.फा. भद्रा दिवा १२।५१ वादनात् पूर्व दिवा ल.११ अथवा भद्रा रात्रि १।४६वादनात्परं ल.५ वा हस्त नक्षत्रे ल.६

ति.११ भौमे (२६.११.२४)हस्त नक्षत्रे दिवा ल.११ दिवा ४।१० वादनात्परं मृत्युवाणः।

तिथि १३ गुरौ (२८.११.२४) स्वात्यां अत्यावश्यक ल.गोधूलि।

तिथि १३ शुक्रे (२९.११.२४) स्वात्यां भद्रा व्याप्ति। तत्परं मासान्तः।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ सोमे (२.१२.२४) दिवा ४।१३ वादनात्परं मूल नक्षत्रे ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६ वा ल.७ पंचेष्टाभावः।

तिथि २ भौमे (३.१२.२४) मूले दिवा ल.१० वा ल.११ वा ल.१

तिथि ३ बुधे (४.१२.२४) सायं ५।१८ वादनात्परं उ.षा. ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.५ पंचेष्टाभावः ततो रात्रि १२।११ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः।

तिथि ४ गुरौ (५.१२.२४) उ.षा.भद्रा मृत्युवाणः

तिथि ९ सोमे (९.१२.२४) दिवा १।७ वादनात्परं उ.भा. आवश्यके रात्रौ ल.६ वा ल.७ पंचेष्टाभाव

तिथि १० भौमे (१०.१२.२४) उ.भा.आ. दिवा ल.१० दिवा ११।३० वादनात्परं ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६वा ल.७ पंचेष्टाभावः

तिथि ११ बुधे (११.१२.२४) रेवत्यां दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः।

तिथि १४ शनौ (१४.१२.२४) रोहिण्यां दिवा ८।३० वादनात्परं मृत्युवाणः भद्रा च।

तिथि १५ रवौ (१५.१२.२४) मृत्युवाणः दिवा ८।० वादनात्परं मृगशिरायां दिवा ल.१० वा ल.१ वा ल.२ अथवा गोधूलि वा रात्रौ ल.६

माघ कृष्ण पक्षः

तिथि ३ गुरौ (१६.१.२५) दिवा ११।४२ वादनात्परं तथा भद्रा दिवा ३।४९ वादनात्पूर्व मघायां दिवा ल.१ वा ल.२ पंचेष्टाभावः भद्रा रात्रि ४।१० वादनात्परं ल.९ पंचेष्टाभावः।

तिथि ४ शुक्रे (१७.१.२५) मघायां दिवा ल.११ वा ल.१

तिथि ५ शनौ (१८.१.२५) दिवा २।५५ वादनात्परं उ.फा. ल. गोधूलि वा रात्रौ ल.५ वा ल.८ वा ल.९

तिथि ५ रवौ (१९.१.२५) उ.फाल्गुन्यां दिवा ल.११ वा ल.१ सायं ५।९ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.५ वा ल.८ वा ल.९ पंचेष्टाभावः।

तिथि ६ सोमे (२०.१.२५) हस्त नक्षत्रे भद्रा व्याप्तिः।

तिथि ७ भौमे (२१.१.२५) रात्रि १०।१५ वादनात्परं स्वात्यां ल.९

तिथि ८ बुधे (२२.१.२५) स्वात्यां दिवा ल.१ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६

तिथि ९गुरौ (२३.१.२५) भद्रा रात्रि ३।१० वादनात्परं अनुराधायां पंचेष्टलग्नाभावः।

तिथि १० शुक्रे (२४.१.२५) अनुराधायां भद्रा तथा न मृत्युवाणः।

ति.१२रवौ (२६.१.२५) प्रातः ६।४९ वादनात्परं मूल नक्षत्रे ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.८

तिथि १३ सोमे (२७.१.२५) मूले प्रातः पंचेष्टलग्नभावः तत्परं मासान्तः।

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ शनौ (१.२.२५) रात्रि शेष ५।१२ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः ततो मृत्युवाणश्च।

तिथि ४ रवौ (२.२.२५) भद्रा मृत्युवाणः।

तिथि ५ सोमे (३.२.२५) रेवत्यां दिवा ल.१ वा ल.२ वा ल.गोधूलि।

तिथि ९ गुरौ (६.२.२५) रात्रि ९।१३ वादनात्परं रोहिण्यां पंचेष्टलग्नाभावः।

तिथि १० शुक्रे (७.२.२५) रोहिण्यां दिवा ल.१२ वा ल.१ वा ल.गोधूलि वा मृगशिरायां रात्रि शेषे आ.ल.१०

तिथि ११ शनौ (८.२.२५) मृगशिरायां आ.दिवा ल.१० तत्परं भद्रा व्याप्तिः।

तिथि १५बुधे (१२.२.२५) रात्रि ७।१० वादनात्परं मघायां ल.१।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि १ गुरौ (१३.२.२५) मघायां दिवा ल.१ वा ल.४ वा गोधूलि।

तिथि २ शुक्रे (१४.२.२५) रात्रि १०।१० वादनात्परं उ.फा. तथा मृत्युवाण रात्रि २।६ वादनात्परं ल.९ वा ल.१०

तिथि ३ शनौ (१५.२.२५) उ.फा. भद्रा दिवा ९।७ वादनात्पूर्व पंचेष्ट लग्नाभावः ततो भद्रा रात्रि १०।२३ वादनात्परं पंचेष्टाभाव। रात्रि १२।१९ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे आ.ल.९ वा ल.१०

तिथि ४ रवौ (१६.२.२५) हस्त नक्षत्रे दिवा ल.१ वा ल.४ वा ल.गोधूलि।

तिथि ५ सोमे (१७.२.२५) रात्रि शेष ५।२१ वादनात्परं स्वात्यां ल.८

तिथि ६ भौमे (१८.२.२५) स्वात्यां दिवा ल.१ वा ल.४ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६ वा ल.९

तिथि ७ बुधे (१९.२.२५) स्वात्यां भद्रा व्याप्तिः।

तिथि ७ गुरौ (२०.२.२५) दिवा १०।२२ वादनात्परं दिवा ल.१ वा ल.४ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.६ वा ल.९ वा ल.१०

तिथि ८ शुक्रे (२१.२.२५) अनुराधायां दिवा ल.१

तिथि ९ शनौ (२२.२.२५) मूले आ.ल. गोधूलि।

तिथि १० रवौ (२३.२.२५) भद्रा व्याप्तिः।

तिथि ११ सोमे (२४.२.२५) दिवा ४।१० वादनात्परं उ.षाढ़ायां ल.गोधूलि।

तिथि १२ भौमे (२५.२.२५) उ.षाढ़ायां दिवा ल.१ वा ल.४

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ शनौ (१.३.२५) दिवा २।१४ वादनात्परं उ.भाद्रपदे ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.९ वा ल.१०

तिथि ३ रवौ (२.३.२५) उ.भाद्रपदे दिवा ल.१ वा रेवत्यां दिवा ल.४ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.९ वा ल.१०

तिथि ४ सोमे (३.३.२५) रेवत्यां दिवा १०।४ वादनात्पूर्व दिवा ल.१

ति.७ गुरौ (६.३.२५) भद्रा दिवा ३।३ वादनात्पूर्व रोहिण्यां दिवा ल.१ वा ल.४ भद्रा रात्रि २।६ वादनात्परं ल.९वा मृगशि.ल.१०

तिथि ८ शुक्रे (७.३.२५) मृगशिरायां दिवा ल.१वा ल.४ वा ल.गोधूलि वा रात्रौ ल.९

तिथि १२ भौमे (११.३.२५) रात्रि २।४३ वादनात्परं मघायां ल.९ वा ल.१०

तिथि १३ बुधे (१२.३.२५) मघायां दिवा ल.१ वा ल.४ वा ल.गोधूलि रात्रि ८।४७ वादनात्परं मृत्युवाणः।

तिथि १४ गुरौ (१३.३.२५) रात्रि ५।३० वादनात्परं उ.फाल्गुन्यां संलग्नाभावः।

ततो मीनार्कः खरमासः।

वर-वरणं कन्या वरणं मुहूर्त्ताः

(तिलक गोद भराई)

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि १० गुरौ (१८.४.२४) मघायां

तिथि १३ रवौ (२१.४.२४) उ.फाल्गुन्यां

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (२४.४.२४) स्वात्यां

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ४ बुधे (१०.७.२४) मघायां पू.फा.

तिथि ५ गुरौ (११.७.२४) पू.फा., उ.फा.

तिथि ६ शुक्रे (१२.७.२४) उत्तराफाल्गुन्यां

तिथि ९ सोमे (१५.७.२४) रिक्ता दिवा ३।५७ वादनात्परं स्वात्यां

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि २ रवौ (१७.११.२४) रोहिण्यां

तिथि ३ सोमे (१८.११.२४) भद्रा दिवा १०।५३ वादनात्पूर्व मृगशिरायां

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (४.१२.२४) पू.षा. रिक्तापूर्व

तिथि ४ गुरौ (५.१२.२४) रिक्ता भद्रा उपरान्त उत्तराषाढ़ायां

तिथि ५ शुक्रे (६.१२.२४) श्रवणे (कन्यावरणं)

तिथि १३ शुक्रे (१३.१२.२४) कृत्तिकायां

तिथि १५ रवौ (१५.१२.२४) मृगशिरायां

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ गुरौ (१६.१.२५) दिवा ११।४२ वादनात्परं मघायां

तिथि ५ रवौ (१९.१.२५) उ.फा. हस्त नक्षत्रे

तिथि ६ सोमे (२०.१.२५) भद्रा दिवा ८।४९ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे

तिथि ८ बुधे (२२.१.२५) रिक्ता दिवा १।७ वादनात्परं स्वात्यां

तिथि १० शुक्रे (२४.१.२५) भद्रा दिवा ४।५१ वादनात्परं अनुराधायां

तिथि १२ रवौ (२६.१.२५) मूले

तिथि १३ सोमे (२७.१.२५) पू.षाढ़ायां

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ सोमे (३.२.२५) रेवत्यां

तिथि १० शुक्रे (७.२.२५) रोहिण्यां

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि १ गुरौ (१३.२.२५) मघायां

तिथि २ शुक्रे (१४.२.२५) पू.फाल्गुन्यां

तिथि ७ गुरौ (२०.२.२५) दिवा १०।२२ वादनात्परं अनुराधायां

तिथि ८ शुक्रे (२१.२.२५) रिक्ता दिवा १।८ वादनात्पूर्व अनुराधायां

तिथि १० रवौ (२३.२.२५) भद्रा दिवा १०।५ वादनात्परं मूले

तिथि ११ सोमे (२४.२.२५) पू.षाढ़ायां उ.षाढ़ायां च।

तिथि १३ बुधे (२६.२.२५) रिक्ता भद्रा दिवा ९।१९ वादनात्पूर्व श्रवणे (कन्यावरणं)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ६ बुधे (५.३.२५) कृत्तिकायां

तिथि ७ गुरौ (६.३.२५) रोहिण्यां भद्रा दिवा ३।३ वादनात्पूर्व

तिथि ८ शुक्रे (७.३.२५) रिक्ता दिवा ९।६ वादनात्पूर्व मृगशिरायां

तिथि १५ शुक्रे (१४.३.२५) उ.फाल्गुन्यां

वैवाहिक वधूप्रवेश मुहूर्त्त

(विवाह से १६ दिन, १ मास या १ वर्ष के अन्दर)

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि १० गुरौ (१८.४.२५) दिवा ९।३८ उपरान्त मघायां लग्न ३ वा गोधूलि

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (२५.४.२४) भद्रा सायं ६।२९ वादनात्पूर्व अनुराधायां लग्न २ वा ३

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ सोमे (८.७.२४) प्रातः ६।१७ वादनमयावत् लग्नं ३

तिथि ५ गुरौ (११.७.२४) दिवा १२।२८ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां

तिथि ६ शुक्रे (१२.७.२४) उत्तराफाल्गुन्यां लग्नं गोधूलि।

तिथि ९ सोमे (१५.७.२४) रिक्ता दिवा ३।५७ वादनात्परं स्वात्यां

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (१८.११.२४) भद्रा दिवा १०।५३ वादनात्पूर्व लग्नं ८

तिथि ६ गुरौ (२१.११.२४) पुष्ये लग्नं ९

तिथि ७ शुक्रे (२२.११.२४) रात्रि ८।५७ वादनात्परं मघायां

तिथि १० सोमे (२५.११.२४) भद्रा दिवा १२।५१ वादनात्पूर्व उ.फा. लग्नं ९

तिथि १३ गुरौ (२८.११.२४) चित्रायां स्वात्यां लग्नं ९ वा गोधूलि

तिथि १३ शुक्रे (२९.११.२४) रिक्ता भद्रा पूर्व स्वात्यां लग्नं ८

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ सोमे (२.१२.२४) मूले लग्नं गोधूलि

तिथि ४ गुरौ (५.१२.२४) रिक्ता भद्रा उपरान्त उ.षाढ़ायां ल. गोधूलि

तिथि ५ शुक्रे (६.१२.२४) श्रवणे ल.९ वा गोधूलि

तिथि १२ गुरौ (१२.१२.२४) प्रातः अश्विन्यां ल.८

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ गुरौ (१६.१.२५) भद्रा दिवा ३।४९ वादनात्पूर्व मघायां ल.१२

तिथि ६ सोमे (२०.१.२५) भद्रा दिवा ८।४९ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे

तिथि १० शुक्रे (२४.१.२५) भद्रा दिवा ४।५१ वादनात्परं अनुराधायां ल.गोधूलि

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि १ गुरौ (३०.१.२५) धनिष्ठायां ल.२

तिथि ५ सोमे (३.२.२५) रेवत्यां

तिथि १० शुक्रे (७.२.२५) रोहिण्यां

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि १ गुरौ (१३.२.२५) मघायां ल.२

तिथि २ शुक्रे (१४.२.२५) रात्रि १०।१० वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां

तिथि ५ सोमे (१७.२.२५) चित्रायां ल.२

तिथि ७ गुरौ (२०.२.२५) दिवा १०।२२ वादनात्परं अनुराधायां ल.२ वा ३

तिथि ८ शुक्रे (२१.२.२५) रिक्ता दिवा १।८ वादनात्पूर्व अनुराधायां

तिथि ११ सोमे (२४.२.२५) दिवा ४।१० वादनात्परं उ.षाढ़ायां ल.गोधूलि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ७ गुरौ (६.३.२५) भद्रा दिवा ३।३ वादनात्पूर्व रोहिण्यां

तिथि ८ शुक्रे (७.३.२५)रिक्ता दिवा ९।६ वादनात्पूर्व मृगशिरायां ल.१२ वा २

तिथि ११ सोमे (१०.३.२५) भद्रा दिवा ९।२६ वादनात्परं पुष्ये ल.२ वा ३

तिथि १५ शुक्रे (१४.३.२५) उ.फा. ल.२

द्विरागमन मुहूर्त्ता

चैत्र शुक्ल पक्षः

तिथि ७ सोमे (१५.४.२४) भद्रा पूर्व पुनर्वसौ ल.२

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (२४.४.२४) स्वात्यां ल.२

तिथि २ शुक्रे (२६.४.२४) भद्रा सायं ६।२९ वादनात्पूर्व अनुराधायां ल.२

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (१८.११.२४) भद्रा दिवा १०।५३वादनात्पूर्व मृगशिरायां ल.८वा९

तिथि ५ बुधे (२०.११.२४) पुनर्वसौ ल.१२ वा गोधूलि

तिथि ६ गुरौ (२१.११.२४) पुष्ये ल.९ वा गोधूलि

तिथि १० सोमे (२५.११.२४) भद्रा दिवा १२।५१ वादनात्पूर्व उ.फाल्गुन्यां ल.९

तिथि १२ बुधे (२७.११.२४) चित्रायां ल.९ वा गोधूलि

तिथि १३ शुक्रे (२९.११.२४) रिक्ता भद्रा पूर्व ल.८

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ सोमे (२.१२.२४) मूले ल.गोधूलि

तिथि ४ गुरौ (५.१२.२४) रिक्ता भद्रा उपरान्त उ.षाढ़ायां श्रवणे ल.गोधूलि

तिथि ५ शुक्रे (६.१२.२४) श्रवणे ल.९ वा धनिष्ठायां ल.गोधूलि।

तिथि ११ बुधे (११.१२.२४) भद्रा पूर्व रेवत्यां अश्विन्यां ल.११

तिथि १२गुरौ (१२.१२.२४)प्रातः अश्विन्यां ल.८

....शेष पृष्ठ ४ पर देखे।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (१४.२.२५) रात्रि १०।१० वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां

तिथि ५ सोमे (१७.२.२५)चित्रायां ल.२

तिथि ८ शुक्रे (२१.२.२५) रिक्ता दिवा ८।१ वादनात्पूर्व अनुराधायां ल.११

तिथि ११ सोमे (२४.२.२५) दिवा ४।१० वादनात्परं उ.षाढायां ल.गोधूलि

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ७ गुरौ (६.३.२५) भद्रा दिवा ३।३ वादनात्पूर्व रोहिण्यां ल.१२

तिथि ८ शुक्रे (७.३.२५) मृगशिरायां रिक्ता दिवा १।६ वादनात्पूर्व ल.१२वा २

तिथि ११ सोमे (१०.३.२५) भद्रा दिवा ९।२६ वादनात्परं पुष्ये ल.२ वा ३

तिथि १५ शुक्रे (१४.३.२५) उ.फा.ल.२

गर्भाधान

मानव जीवन के षोडश संस्कारों में गर्भाधान संस्कार ही आधारभूत संस्कार है और इसको अवश्य ही तिथि नक्षत्रो एवं लग्नों से ग्रहों के बलाबल को ध्यान में रखते हुए करना एक यशस्वी सन्तान हेतु आवश्यक एवं समीचीन होगा। इसलिए इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए प्रमुखता से दिया जा रहा है।

वैशाख कृष्ण पक्षः

तिथि १ बुधे (२४.४.२४) स्वात्यां रात्रौ ल.१०

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि १ गुरौ (९.५.२४) रात्रौ रोहिण्यां ल.९

तिथि २ शुक्रे (१०.५.२४) मृगशिरायां रात्रौ ल.९

तिथि ९ शुक्रे (१७.५.२४) रात्रि ९।५१ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १ शुक्रे (७.६.२४) मृगशिरायां रात्रि ८।१४ वादनं यावत्।

तिथि १२ बुधे (१९.६.२४) रात्रौ अनुराधायां

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ९ सोमे (१५.७.२४) रिक्तोत्तरे रात्रौ स्वात्यां

तिथि ११ बुधे (१७.७.२४) रात्रौ अनुराधायां

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (२२.७.२४) रात्रौ श्रवणे

तिथि ४ गुरौ (२५.७.२४) रात्रि ८।२२ वादनात्परं उ.भाद्रपदे ल.११

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि ४ गुरौ (८.८.२४) रात्रि ९।५६ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां

तिथि ५ शुक्रे (९.८.२४) रात्रो हस्त नक्षत्रे

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे (४.९.२४) उत्तराफाल्गुन्यां रात्रौ ल.२

तिथि २ गुरौ (५.९.२४) हस्त नक्षत्रे रात्रौ ल.२

तिथि ६ सोमे (९.९.२४) रात्रि १०।३८ वादनात्परं अनुराधायां

आश्विन शुक्ल पक्ष

तिथि ४ सोमे (७.१०.२४) अनुराधायां रात्रौ ल.२

तिथि १२ सोमे (१४.१०.२४) रात्रि १०।२८ वादनात्पूर्व शतभिषायां

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ७ शुक्रे (८.११.२४) भद्रा पूर्व उ.षा.-श्रवणे

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ४ गुरौ (५.१२.२४) रात्रौ श्रवणे ल.५

तिथि ५ शुक्रे (६.१२.२४) धनिष्ठायां रात्रौ ल.५

पौष कृष्ण पक्ष

तिथि १२ शुक्रे (२७.१२.२४) रात्रि ७।५९ वादनात्परं अनुराधायां ल.५

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (१.१.२५) उ.षा. ल.६

तिथि ११ शुक्रे (१०.१.२५) रोहिण्यां रात्रौ ल.६

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि १०शुक्रे (२४.१.२५) अनुराधायां रात्रौ ल.६

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि १ गुरौ (३०.१.२५) धनिष्ठायां रात्रौ ल.६

तिथि ९ गुरौ (६.२.२५) रात्रि १२।२८ वादनात्परं रोहिण्यां ल.८

तिथि १० शुक्रे (७.२.२५) रोहिण्यां मृगभे रात्रौ ल.८

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (१४.२.२५) रात्रि १०।१० वादनात्परं उ.फाल्गुन्यां

तिथि ११ सोमे (२४.२.२५) उत्तराषाढ़ायां रात्रौ ल.८

चैत्र कृष्ण पक्ष

तिथि ५ बुधे (१९.३.२५) अनुराधायां रात्रौ ल.८

चौल केशान्त मुण्डन मुहूर्त्ता

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ३सोमे (८.७.२४) प्रातः ६।१७ वादनम् यावत् पुष्ये ल.३

तिथि ६ शुक्रे (१२.७.२४) उ.फाल्गुन्यां

तिथि ९ सोमे (१५.७.२४) रिक्ता दिवा ३।५७ वादनात्परं स्वात्यां

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१५.१.२५) पुष्य नक्षत्रे ल.१२

तिथि ८ बुधे (२२.१.२५) रिक्ता दि.१।७ वादनात्पूर्व स्वात्यां

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि १ गुरौ (३०.१.२५) धनिष्ठायां ल.२

तिथि २ शुक्रे (३१.१.२५) धनिष्ठा प्रातः७।३६ वादनम् यावत् ल.२

तिथि ५ सोमे (३.२.२५) रेवत्यां ल.१२

तिथि १३ सोमे (१०.२.२५) पुनर्वसौ ल.१२

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ सोमे (१७.२.२५) चित्रायां ल.२

तिथि १३ बुधे (२६.२.२५) भद्रा दिवा ९।१९ वादनात्पूर्व श्रवणे

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ११ सोमे (१०.३.२५) भद्रा दिवा ९।२६ वादनात्परं पुष्ये ल.२

उपनयन व्रतबन्ध मुहूर्त्ताः

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि १० गुरौ (१८.४.२४) श्लेषायां ल.३

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (२६.४.२४) अनुराधायां ल.४

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि २ रवौ (७.७.२४) पुष्ये ल.४ वा.६

तिथि ३ सोमे (८.७.२४) श्लेषायां ल.६

तिथि ५ गुरौ (११.७.२४) पू.फा.ल.४वा.६

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१५.१.२५) पुष्ये श्लेषायां ल.१२ वा.१

तिथि ३ गुरौ (१६.१.२५) श्लेषायां ल.१

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ४ रवौ (२.२.२५) रिक्ता भद्रा दिवा ११।५३ वादनात्परं उ.भाद्रपदे ल.२

तिथि ५ सोमे (३.२.२५) रेवत्यां ल.२

तिथि १० शुक्रे (७.२.२५) रोहिण्यां ल.१२

तिथि १३ सोमे (१०.२.२५) पुनर्वसौ ल.१२ (ति.दा.)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (१४.२.२५) पू.फाल्गुन्यां ल.२

तिथि ५ सोमे (१७.२.२५) चित्राया ल.२

तिथि १० रवौ (२३.२.२५) भद्रा दिवा १०।५ वादनात्परं मूले ल.२

तिथि ११ सोमे (२४.२.२५) पू.षाढायां ल.२

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १० रवौ (९.३.२५) पुनर्वसौ ल.१२व.२

तिथि११ सोमे (१०.३.२५) भद्रा दिवा ९।२६ वदनातारं पुष्ये ल.२

कर्णवेध (नासिका छेदन) मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि२ शुक्रे(२६.४.२४)अनुराधायां ल.२वा.३

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ सोमे (८.७.२४) प्रातः ६।१७ वादन यावत् पुष्ये ल.३

तिथि ६ शुक्रे (१२.७.२४) उ.फाल्गुन्यां

तिथि ९ सोमे (१५.७.२४) रिक्ता ३।५७ वादनात्परं स्वात्यां

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि १२ बुधे (१३.११.२४) रेवत्यां

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (१८.११.२४) भद्रा दिवा १०।५३ वादनात्पूर्व मृगशिरायां

तिथि ६ गुरौ (२१.११.२४) पुष्ये

तिथि १२ बुधे (२७.११.२४) चित्रायां

तिथि १३ गुरौ (२८.११.२४) चित्रायां

तिथि १३ शुक्रे (२९.११.२४) रिक्ता भद्रापूर्व स्वात्यां

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (६.१२.२४) श्रवणे

तिथि ११ बुधे (११.१२.२४) भद्रापूर्व रेवत्यां

तिथि १२ गुरौ (१२.१२.२४) अश्विन्यां

तिथि १५ रवौ (१५.१२.२४) मृगशिरायां

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१५.१.२५) पुष्य नक्षत्रे ल.१२

तिथि ६ सोमे (२०.१.२५) भद्रा दिवा ८।४९ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे

तिथि १० शुक्रे (२४.१.२५) भद्रा दिवा ४।५१ वादनात्परं अनुराधायां

माघ शुक्ल पक्ष

ति.१गुरौ (३०.१.२५) श्रवणे धनिष्ठायां ल.२

तिथि २शुक्रे (३१.१.२५) धनिष्ठायां प्रातः ७।३६ वादनम यावत्।

तिथि ५ सोमे (३.२.२५) रेवत्यां ल.१२

तिथि १३ सोमे (१०.२.२५) पुनर्वसौ ल.१२

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ सोमे (१७.२.२५) चित्रायां ल.२

तिथि ७ गुरौ (२०.२.२५) दिवा १०।२२ वादनात्परं अनुराधायां

तिथि १३ बुधे (२६.२.२५) रिक्ता भद्रा ९।१९ वादनात्पूर्व श्रवणे

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ११ सोमे (१०.३.२५) भद्रा दिवा ९।२६ वादनात्परं पुष्ये ल.२

गृहारम्भ मुहूर्त्ताः

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (२६.४.२४) अनुराधायां ल.३

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (२२.७.२४) रात्रि १२।४१ वादनात्परं धनिष्ठायां ल.२

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि १३ शनौ (१७.८.२४) दिवा १०।१३ वादनात्परं उ.षाढायां ल.८

तिथि १५ सोमे (१९.८.२४) भद्रा दिवा १।२५ वादनात्परं धनिष्ठायां ल.८

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि १२ बुधे (१३.११.२४) रेवत्यां ल. गोधूलि (भु.सु.)

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (१८.११.२४) भद्रा दिवा १०।५३ वादनात्पूर्व मृगशिरायां ल.८

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १४ शनौ (१४.१२.२४) रात्रि शेषे मृगशिरायां ल.८

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१५.१.२५) पुष्ये ल.११

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ९ गुरौ (६.२.२५) रात्रि १२।२८ वादनात्परं रोहिण्यां ल.८

तिथि १० शुक्रे (७.२.२५) रोहिण्यां ल.२

तिथि ११ शनौ (८.२.२५) भद्रा दिवा ९।४४ वादनात्पूर्व मृगशिरायां ल.११

तिथि १३ सोमे (१०.२.२५) सायं ६।८ वादनात्परं पुष्ये ल.५

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ८ शुक्रे (७.३.२५) रिक्ता दिवा १।६ वादनात्पूर्व मृगशिरायां ल.१२ व २

तिथि ११ सोमे (१०.३.२५) भद्रा दिवा ९।२६ वादनात्परं पुष्ये ल.२

नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त्ताः

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ८ बुधे (२२.१.२५) रिक्ता दिवा १।७ वादनात्पूर्व स्वात्यां (आवश्यके)

तिथि ९ गुरौ (२३.१.२५) भद्रा रात्रि ३।५९ वादनात्परं अनुराधायां ल.८ वा ९

ति.१० शुक्रे (२४.१.२५) भद्रा दिवा ४।५२ वादनात्परं अनुराधायां ल.गोधूलि वा ल.६

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ९ गुरौ (६.२.२५) रात्रि १२।२८ वादनात्परं रोहिण्यां ल.८

तिथि १० शुक्रे (७.२.२५) रोहिण्यां ल.२

तिथि ११ शनौ (८.२.२५) भद्रा दिवा ९।४४ वादनात्पूर्व मृगशिरायां ल.११

तिथि १३ सोमे (१०.२.२५) सायं ६।८ वादनात्परं पुष्ये ल.५

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ११ सोमे (२४.२.२५) उ.षाढायां रात्रि शेषे अग्निवाणात् परं ल.११

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ७ गुरौ (६.३.२५) भद्रा दिवा ३।३ वादनात्पूर्व रोहिण्यां ल.११

तिथि ८ शुक्रे (७.३.२५) रिक्ता दिवा १।६ वादनात्पूर्व मृगशिराया ल.१२व २

तिथि ११ सोमे (१०.३.२५) भद्रा दिवा ९।२६ वादनात्परं पुष्ये ल.२

जीर्णादि गृहप्रवेश मुहूर्त्ताः

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि ११ बुधे (३१.७.२४) रोहिण्यां मृगभे ल.६ वा.८

तिथि १२ गुरौ (१.८.२४) दिवा १२।१ वादनम यावत मृगशिरायां ल.६

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (९.८.२४) रात्रि १२।५८ वादनात्परं चित्रायां

तिथि ६ शनौ (१०.८.२४) चित्रायां ल.५

तिथि १३ शनौ (१७.८.२४) दिवा १०।१३ वादनात्परं उ.षाढायां ल.८

तिथि १५ सोमे (१९.८.२४) भद्रा दिवा १।२५ वादनात्परं धनिष्ठायां ल.८

कार्तिक कृष्ण पक्ष

ति.११ सोमे (२८.१०.२४)उ.फा.ल.६ (रात्रौ)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ६ गुरौ (७.११.२४) उ.षाढायां (सप्तम्या) ल.३

तिथि ७ शुक्रे (८.११.२४) भद्रापूर्व उ.षा.ल.८

तिथि १२ बुधे (१३.११.२४) रेवत्यां (त्रयोदश्यां) ल.गोधूलि।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १० सोमे (२५.११.२४) भद्रा दिवा १२।५१ वादनात्पूर्व उ.फाल्गुन्यां ल.९

तिथि १२ बुधे (२७.११.२४) चित्रायां ल.९ वा गोधूलि

तिथि १३ गुरौ (२८.११.२४) चित्रायां प्रातः ल.८

तिथि १३ शुक्रे (२९.११.२४) रिक्ता भद्रापूर्व स्वात्यां ल.८

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (६.१२.२४) धनिष्ठायां ल.गोधूलि वा.२

तिथि ६ शनौ (७.१२.२४) धनिष्ठायां ल.१२

सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशय-वाटिका (बगीचा) आरम्भ मुहूर्त्ताः

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि ७ सोमे (१५.४.२४) पुनर्वसौ भद्रापूर्व

तिथि १३ रवौ (२१.४.२४) उ.फा.ल.२वा.५

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (२६.४.२४) भद्रा सायं ६।२९ वादनात्पूर्व अनुराधायां ल.३

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि २ रवौ (७.७.२४) पुष्ये ल.६

तिथि ३ सोमे (८.७.२४) पुष्ये प्रातः ६।१७ वादनम् यावत ल.३

तिथि ५ गुरौ (११.७.२४) दिवा १२।२८ वादनात्परं उ.फाल्गुन्यां ल.६

तिथि ६ शुक्रे (१२.७.२४) उ.फाल्गुन्यां ल.६

तिथि ८ रवौ (१४.७.२४) रिक्ता २।१९ वादनात्पूर्व चित्रायां ल.६

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (१५.१.२५) पुष्य नक्षत्रे ल.११

तिथि ५ रवौ (१९.१.२५) उ.फा. हस्त नक्षत्रे

तिथि ८ बुधे (२२.१.२५) रिक्ता दिवा १।७ वादनात्पूर्व स्वात्यां

तिथि १० शुक्रे (२४.१.२५) भद्रा दिवा ४।५१ वादनात्परं अनुराधायां ल.गोधूलि

माघ शुक्ल पक्ष

ति.१गुरौ (३०.१.२५) श्रवणे धनिष्ठाया ल.२

तिथि ५ सोमे (३.२.२५) रेवत्या ल.२

ति.१०शुक्रे (७.२.२५) रोहिण्यां ल.१२ वा.२

तिथि १३ सोमे (१०.२.२५) सायं ६।८ वादनात्परं पुष्ये ल.५

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ सोमे (१७.२.२५) चित्रायां ल.२

तिथि ७ गुरौ (२०.२.२५) दिवा १०।२२ वादनात्परं अनुराधायां ल.२

तिथि १३ बुधे (२६.२.२५) रिक्ता भद्रा दिवा ९।१९ वादनात्पूर्व श्रवणे

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ७ गुरौ (६.३.२५) भद्रा दिवा ३।३ वादनात्पूर्व रोहिण्यां ल.१२ वा.३

तिथि ८ शुक्रे (७.३.२५) रिक्त दिवा १।६ वादनात्पूर्व मृगशिरायां ल.१२

तिथि ११ सोमे (१०.३.२५) भद्रा दिवा ९।२६ वादनात्परं पुष्ये ल.२

चूल्हिका स्थापना मुहूर्त्ताः

(सभी मुहूर्तों में चक्र शुद्धि प्राप्त है।)

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ सोमे (८.७.२४) प्रातः ६।१७ वादनम् यावत पुष्ये

तिथि ६ शुक्रे (१२.७.२४) उ.फाल्गुन्यां प्रातः

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि ४ गुरौ (२५.७.२४) रिक्ता दिवा ७।५४ वादनात्परं पू.भाद्रपदे

तिथि ११ बुधे (३१.७.२४) रोहिण्यां मृगभे

तिथि १२ गुरौ (१.८.२४) दिवा १२।१ वादनम् यावत् मृगशिरायां

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि ४ गुरौ (८.८.२४) भद्रा दिवा ८।५९ वादनात्पूर्व उ.फाल्गुन्यां

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे (४.९.२४) उ.फाल्गुन्यां

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ६ गुरौ (७.११.२४) उ.षाढायां

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १५ शुक्रे (१४.३.२५) उ.फाल्गुन्यां

श्रेष्ठ विशेष मुहूर्त्ताः

(षोडष संस्कारों को छोड़कर नूतन उद्योग-व्यापार वाहन क्रय इत्यादि के लिये)

चैत्र शुक्ल पक्षः

तिथि १ भौमे (९.४.२४) दिवा ८।९ वादनात्परं अश्विन्यां

तिथि १३ रवौ (२१.४.२४) सायं ५।११वादनात्परं हस्त नक्षत्रे

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १४ भौमे (७.५.२४) दिवा २।५३ वादनम् यावत् अश्विन्यां

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि २।३ शुक्रे (१०.५.२४) अक्षय तृतीयायां स्वयं सिद्ध मुहुर्तः

तिथि ११ रवौ (१९.५.२४) भद्रा दिवा ११।१७ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १० रवौ (१६.६.२४) दिवा १०।२२ वादनम यावत् हस्त नक्षत्रे

तिथि १२ बुधे (१९.६.२४) दिवा ४।३० वादनात्परं अनुराधायां

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (२४.६.२४) दिवा ५।२३ वादनात्परं श्रवणे

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि २ रवौ (७.७.२४) पुष्य नक्षत्रे सायं ५।५६ वादनात्परं अनुराधायां

तिथि ११ बुधे (१७.७.२४) सायं ५।५६ वादनात्परं अनुराधायां

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (२२.७.२४) श्रवणे

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि ९ बुधे (१४.८.२४) दिवा ९।० वादनम् यावत् अनुराधायां

तिथि १५ सोमे (१९.८.२४) दिवा ८।४१ वादनम् यावत् श्रवणे

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

तिथि ४ शुक्रे (२३.८.२४) दिवा ३।६ वादनात्परं रेवत्यां

आश्विन कृष्ण पक्ष

तिथि ९ गुरौ (२६.९.२४) रात्रि शेष ३।५७ वादनात्परं पुष्ये

तिथि १० शनौ (१२.१०.२४) श्रवणे (स्वयं सिद्ध मुहूर्त)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

तिथि ४ सोमे (२१.१०.२४) दिवा १२।१६ वादनात्परं मृगशिरायां

तिथि ८ गुरौ (२४.१०.२४) दिवा ११।३८ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १ शनौ (१६.११.२४) रात्रि ९।१५ वादनात्परं रोहिण्यां

तिथि ३ सोमे (१८.११.२४) मृगशिरायां दिवा १०।५३ वादनम् यावत्

तिथि ६ गुरौ (२१.११.२४) पुष्य नक्षत्रे रात्रि ७।४९ वादनम् यावत्।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः

तिथि १४ शनौ (१४.१२.२४) दिवा ४।१४ वादनात्पूर्व रोहिण्यां

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ५ रवौ (१९.१.२५) सायं ५।९ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ६/७ भौमे (४.२.२५) अश्विन्यां

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ४ रवौ (१६.२.२५) हस्त नक्षत्रे

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ५ भौमे (४.३.२५) दिवा ८।२४ वादनम् यावत् अश्विन्यां

•

मधुमेह रोग एवं उसकी चिकित्सा-व्यवस्था

प्रस्तुति-प्रो.जे.के.ओझा, काशी हिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी।

मधुमेह अथवा डायबिटीज स्वयं कोई रोग नहीं है, अपितु कई रोगों की उत्पत्ति का कारण अवश्य है। मेह का अर्थ बहना या जल त्याग से है, अर्थात् जिस रोग में मधु के समान (मधुर-कषाय) रस वाला मूत्र त्याग होता है उस रोग को मधुमेह कहते हैं। मधुमेह रोगी के शरीर से (मधु एवं ओज जो रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र का सार है) मूत्ररूप में शरीर से बाहर निकल जाता है जिसके कारण बल क्षीण हो जाता है तथा शरीर निस्तेज एवं दुर्बल प्रतीत होने लगता है। आयुर्वेद के महान ग्रन्थ "चरक संहिता" में इसका उल्लेख है।

कारण-अनुवांशिक कारण में माता-पिता अथवा रक्त सम्बन्धी के मधुमेही होने पर सन्तान में यह रोग हो सकता है किर भी यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। अनुवांशिकी रोगों में मधुमेह के लक्षण कम उम्र में ही प्रकट होने लगते हैं एवं तीव्रता से बढ़ते हैं।

आहार-विहार-मुख्यरूप से मधुमेह का सम्बन्ध आहार-विहार अर्थात् खान-पीने रहन-सहन, दिनचर्या पर निर्भर करता है। जैसे-चावल, आलू, शकरकन्द, रस तथा बचपन में चाकलेट, टाफी, मिश्री, मिठाइ, पिपरमिन्ट की गोलियाँ हैं। शक्कर, वनस्पति घी प्रमुख हैं। मांसाहारियों की अपेक्षा शाकाहारी जनों में मधुमेह कम होता है। अव्यवस्थित दिनचर्या से मधुमेह रोग के बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है।

स्थूलता-आहार (डाइट) एवं मोटापा का आपस में गहरा रिश्ता है। मोटे लोगों में ८०% मधुमेह रोग पाया जाता है। उनका कारण अधिक वसायुक्त भोजन, शर्करा का सेवन चर्बी के रूप में परिवर्तित होकर मोटापा में वृद्धि करता है। शर्करा को चर्बी में परिवर्तित करना अन्याशय से उत्पन्न इन्सुलिन के कारण होता रहता है जो शरीर में उदर, नितम्ब, जंघा, छाती में दिखाई देता है। मधुमेह रोगी ३ प्रकार के होते हैं-१.स्थूल एवं बलवान २.दुर्बल ३.बालमधुमेही। यह रोग प्रायः सम्पन्न किन्तु आलसी लोगों में ज्यादा होता है। बैठकर कार्य करने वालों में भी इस रोग की सम्भावना अधिक रहती है। प्रायः लेटकर जीवन-यापन करने से मधुमेह होता है। आयु की दृष्टि से प्रायः ३५ से ४५ वर्ष के व्यक्ति में प्रायः मधुमेह की संख्या अधिक होती है। स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा मधुमेह कम पाया जाता है। ७०-८० वर्ष की आयु वालों में मधुमेह किंचित ही होता है।

चिकित्सा-व्यवस्था-आहार प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग हो सकता है, शर्करा, वसा के सेवन पर यथेष्ट नियंत्रण रखें। शक्कर की जगह गुड़ का सेवन अपेक्षाकृत कम शर्करा उत्पन्न करता है। मोटा अनाज, शाक-सब्जी, भुना हुआ आहार का पर्याप्त सेवन किया जा सकता है। सत्तू सुर्तीगम है। अनाज में जौ-चना का सेवन पर्याप्त मात्रा में कर सकते हैं। नियमित भोजन में निम्न तालिका के अनुसार खाद्य पदार्थ प्रयोग किया जाना उत्तम होगा। एक चावल ७५ ग्राम, रोटी, चपाती २० ग्राम, इडली-१, ब्रेड २०-३० ग्राम (२ब्रेड), डोसा-१ मध्यम आकार का, बिस्कुट ३ पीस। दाल इनमें से एक-राजमा २५ ग्राम, काला मूंग २५ ग्राम, भुना चना २५ ग्राम, मसूर दाल २५ ग्राम। दूध-गाय का दूध १५० मि.लीटर, भैंस का ९० ग्राम, मक्खन मिला दूध-३०मि.ली., मट्ठा ७८० मि.ली., चीज ३० ग्राम, दधि गाय की ३० ग्राम, फल कोई एक संतरा १ मध्यम, ३ सेब मध्यम, केला-१ आम ५० ग्राम, तरबूज ३०० ग्राम, पपीता २०० ग्राम, अंगूर ७५ ग्राम, मटर दाना ९० ग्राम अनन्नास ९० ग्राम, नारियल पानी २०० मि.ली. अमरूद १०० ग्राम।

व्यायाम-व्यायाम करने से पहले निश्चित कर लें कि शरीर एवं मन व्यायाम योग्य है। इटकर अथवा व्यायाम करते समय कष्ट हुआ तो न पहनें। खाद्य न ही इसका ध्यान रखें। १. तेज गति से चलना, साईकिल चलाना, एक जगह खड़े होकर उछलना, दौड़ना, तैरना, टेनिस खेलना व्यायाम की समय सीमा ३०-४५ मिनट। प्रारम्भ में १०-१५ मिनट से शुरू कर धीरे-धीरे बढ़ायें। कार्यालय में कार्य करने वाले अपने वाहन को दूर खड़ा करें एवं उस दूरी को पैदल तय करें।

सामान्य औषधि-चिकित्सक की सलाह से ही दवा लें। वैसे सामान्य रूप से निम्न चूर्ण काफी फायदेमन्द होगा। मेथी का चूर्ण ५० ग्राम, चिरायता का चूर्ण ५० ग्राम, दालचीनी ५० ग्राम, १०० ग्राम, विजयसार चूर्ण ५० ग्राम, गुडूची चूर्ण ५० ग्राम, शिलाजीत २ रत्ती सबको मिलाकर मात्रा के अनुसार प्रतिदिन सेवन करने से निश्चित लाभ होगा। कोई नशा न करें।

ज्योतिष की दृष्टि से मधुमेह-शुक्र ग्रह मधुमेह रोग का कारण होता है। अष्टमभाव गत शुक्र यदि पाप ग्रहों द्वारा देखा जाता हो तो मधुमेह रोग हो सकता है। इसको अष्टमेश से भी देखा जा सकता है।

अष्टम स्थान गते शुक्रे पापग्रह निरीक्षिते।
वातरोगात् क्षयाद्वापि प्रमेहाद्वामृतिर्वदेत्।।

परामर्श-७ रत्ती, असमर्थता में २ रत्ती का वज्रमणि (हीरा) शुक्रवार मृगशीर्ष नक्षत्र में धारण करना चाहिए। उपरत्न-चांदी में जड़ी हुयी मोती।

जड़ी-विच्छोल की जड़ सफेद कपड़े में बाँधकर दाहिनी भुजा में धारण करें। प्रत्येक शुक्रवार को, दूध, दही खीर का दान करें।

पञ्चांग परिचय

भारतीय गणितानुसार प्रधान रुप से पाँच प्रकार की गणना होती है- सौर, चान्द्र, सायन, नक्षत्र और बार्हस्पत्य। जितने समय में मेषादि बारहों राशियों में सूर्य भोग करे उसे सौर वर्ष जितने दिन में मेषादि प्रत्येक राशि का भोग करे उसको सौर मास तथा जितने काल में प्रत्येक राशि का एक-एक अंश भोग करे उसे सौर दिन कहते है। जिस दिन में चन्द्रमा सूर्य के एक राशि में हो वह अमावस्या तिथि कहलाती है। एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक के समय को चान्द्रमास कहते हैं। एक इसका तीसवाँ भाग चान्द्र दिन या एक तिथिमान कहलाता है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदयों के बीच को सावन दिन कहते है। नाक्षत्र का अर्थ है नक्षत्र सम्बन्धी, यह समय नाक्षत्री ६० घड़ी के तुल्य है। एक वर्ष ३६५ दिन १५ घटी ३० पल २२।। विपल का होता है। **तिथि, नक्षत्र, बार, योग और करण नामक पाँच मुख्य विषयों का निश्चय जिससे किया जाता है उसे पञ्चांग पंजिका कहते हैं।** सूर्योदय सब स्थानों में एक समय नहीं होता है। पूरब के स्थानों में पहले और पश्चिम के स्थानों में पीछे सूर्योदय होता है। इसलिये भिन्न-भिन्न स्थानों में भेद होना स्वाभाविक है। पर भिन्न-भिन्न देश में लौकिक कार्यों में भारी भ्रम होना स्वाभाविक है। इसलिए यह नियम बना दिया कि सब स्थान में वार की प्रवृत्ति उस समय से मानी जाय जिस समय उज्जैन में प्रातःकाल ६ बजता है।

दिनमान-सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिनमान और सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय को रात्रिमान कहते हैं। सूर्य की गति और दक्षिण के स्थानों के भेद के कारण इनके मानों में भिन्नता रहती है। जब सायन सूर्य मेष पर जाता है तब सब जगह रात्रि और दिन बराबर होते हैं। जब सायन सूर्य कर्क पर जाता है तो उत्तर अक्षांश में दिन सबसे बड़ा और रात सबसे छोटी होती है। जब सायन सूर्य तुला पर जाता है तब रात सबसे बड़ी और दिन सबसे छोटा होता है। किन्तु दक्षिण अक्षांश में इसका विपरीत होता है।

इस पञ्चांग में दिन मान सूर्योदय सूर्यास्त आदि सब सूर्य घड़ी के अनुसार दिये गये हैं। शुद्ध इष्ट काल के लिये रेलवे घड़ी और सूर्य घड़ी का अन्तर संस्कार आवश्यक है। प्रत्येक पक्ष में रेलवे घड़ी का दैनिक अन्तर दिया गया है। पण्डितगण धन-ऋण देख लेवें। पञ्चांग में दिये हुए सूर्य घटी में धन-ऋण संस्कार कर देने से रेलवे घटी का स्टैण्डर्ड समय हो जायेगा।

तिथि-जिस समय सूर्य और चन्द्रमा एक सीध में होते हैं अर्थात् जिस समय दोनों के भोग्यांश समान होते हैं, उस समय अमावस्या का अन्त होता है। चन्द्रमा की गति तीव्र होती है, इसलिए अमावस्या के उपरान्त वह आगे हो जाता है। प्रत्येक १२ अंश आगे होने पर एक तिथि बढ़ती जाती है। जब चन्द्रमा सूर्य के १२×१५=१८० अंश आगे हो आता है तब १५ वीं तिथि पूर्णिमा का अन्त होता है। १६ वीं तिथि अथवा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा लगती, जब फिर अमावस होती है तब ३० तिथियां बीत चुकती है। इसलिए अमावस की जगह ३० का अंक लिखा जाता है।

तिथिक्षय और तिथिवृद्धि-सूर्य चन्द्रमा को गतियां सदा समान नहीं रहती। कभी सूर्य मन्द या तीव्र होता है उसी तरह चन्द्रमा भी कभी अधिक गति से कभी मन्द गति से चलता है। इसी कारण तिथियों का भी मान सदा समान नहीं होता। तिथि का मान अधिक से अधिक ६५ घटी के लगभग और कम से कम ५४ घटी के लगभग होता है परन्तु एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय सदैव कल्पित ६० घटी ही होता है। इसलिए एक दिन में किसी समय तिथि बदल जाती है।

कभी-कभी दो तिथियाँ एक ही बार में पूरी होती है, और वार के समाप्त होने के पहले तीसरी तिथि लग जाती है। ऐसी दशा में उस वार के सूर्योदय काल में जो तिथि विद्यमान रहती है वहीं मानी जाती है। अगले वार तीसरी तिथि होती है। दूसरी का मान पञ्चांग में पहली तिथि के नीचे दिया रहता है। परन्तु लौकिक व्यवहार में नहीं मानी जाती है। **ऐसी तिथि को क्षय तिथि या अवम कहते हैं।** प्रायः कभी-कभी एक ही तिथि दो सूर्योदय काल में विद्यमान रहती है। ऐसी दशा में वह तिथि दो वार मानी जाती है। **इसी को तिथि वृद्धि कहते हैं।** इन सब कारणों से कभी १६ दिन, कभी १५ दिन और कभी १४ दिन का पक्ष होता है। कई वर्षों के बाद १३ दिन का भी पक्ष हो जाता है जो जगत के लिये अनिष्ट कर होता है। शुक्लपक्ष में इसका प्रभाव विशेष रुप से पाया गया है।

करण-आधी तिथि जितने समय में बीतती है उसको करण कहते हैं। यह कुल ११ हैं। इसके नाम ये हैं- बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुन, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न।

नक्षत्र-तारों के बीच पश्चिम से पूरब की ओर खिसकता हुआ जिस मार्ग से सूर्य साल भर में चक्कर लगाता हुआ दीख पड़ता है उसको क्रान्तिवृत्त कहते हैं इसके आसपास चन्द्रमा भी अपना चक्कर लगाता है जो मध्यम मान से २९ दिन १९ घटी १८ पल और १२ विपल में पूरा होता है। इस मार्ग के २७ वें भाग को नक्षत्र कहते हैं। इसका मान १३ अंश २० कला का होता है।

गोल अयन-यदि आकाश गोल के दो भाग इस प्रकार किये जायें कि एक भाग के मध्य में आकाश का उत्तरी ध्रुव हो, और दूसरे भाग के मध्य में दक्षिणी ध्रुव हो तो पहले को उत्तर गोल और दूसरे को दक्षिण गोल कहते हैं। सायन मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या-ये छः राशियाँ उत्तर गोल में हैं। सायन तुला, वृश्चिक, धनु मकर, मीन - ये छः राशियाँ दक्षिण गोल में हैं।

एक वर्ष में दो अयन होते हैं-उत्तरायण और दक्षिणायन। सायन मकर संक्रान्ति से उत्तरायण आरम्भहोता है और सायन मिथुन की समाप्ति तक रहता है। सायन कर्क संक्रान्ति से लेकर सायन धनु के अन्त तक दक्षिणायन सूर्य कहलाता है। उत्तरायण में दिन क्रम से बढ़ता है और दक्षिणायन में रात्रि क्रम से बढ़ती है।

अहर्गण-किसी निश्चित काल से किसी अन्त काल तक जितने अहोरात्र होते हैं उस संख्या को अहर्गण कहते हैं। साधारण कलियुग के आदि से अहर्गण की संख्या गिनी जाती है। सूर्य सिद्धान्त में सृष्ट यादि से अहर्गण गणना विधि है। ग्रह लाघव की गणित शक १४४२ से चलती है। इसके अहर्गण के सा की ११ वर्ष के पश्चात् पुनरावृत्ति होती है। तदनुसार सं.२०३२ चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को अहर्गण ४८०८ हुआ।

योग-अश्विनी नक्षत्र के आदि बिन्दु से सूर्य और चन्द्रमा जितने अंशों की दूरी हो उसको एक जगह लिखकर जोड़ने और ४०/३ से भाग देने से लब्धि बीते हुए योग और आगे आनेवाला वर्तमान योग होता है। कुल २७ योग होते हैं-१.विष्कुम्भ, २. प्रीति, ३. आयुष्मान, ४. सोभाग्य, ५.शोभन, ६.अतिगण्ड, ७.सुकर्मा, ८.धृति, ९.शूल, १०.गण्ड, ११.वृद्धि, १२.ध्रुव, १३.व्याघात, १४.हर्षण, १५.वज्र, १६.सिद्धि, १७.व्यतीपात, १८.वरीयान्, १९.परिघ, २०.शिव, २१.सिद्ध, २२.साध्य, २३.शुभ, २४.शुक्ल, २५.ब्रह्म, २६.ऐन्द्र, २७.वैधृति। योग के भोग्यकाल समान नहीं होते और तिथि नक्षत्रों की तरह इनमें भी क्षय-वृद्धि होती है।

अथारिष्टशान्तये महामृत्युञ्जयवैदिकमन्त्रजपविधिः।।

आचम्य प्राणानायम्य, शान्तिपाठं पठित्वा सुमुखश्चेत्यादि गणेशस्मरणं च कृत्वा।। संकल्पः।। अमुकमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासरे स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरोत्पन्नोत्पत्स्यमानाऽखिलारिष्ट निवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादाद्दीर्घायुष्यसततारोग्यतावाप्तये महामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये।। **ऋष्यादिन्यासः**।। वामदेवकहोलवसिष्ठऋषयः मूर्ध्नि।। पंक्तिगायित्री अनुष्टुपछन्दांसि वक्त्रे।। सदाशिवमहामृत्युञ्जय रुद्र देवतायै नमः हृदि।। ह्रीं शक्तये नमो लिंगे।। श्रीबीजाय नमः पादयोः।। इति ऋष्यादिन्यासः।। ॐ ह्रौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्। भूर्भुवः स्वरों जूंसः ह्रौं ॐ।। ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठऋषयः पंक्ति गायत्र्युष्णिगनुष्टुपछन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रोदेवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्ट सिद्धयर्थं जपे विनियोगः।। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमोभगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे, ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनं, ॐ नमोभगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखायै वौषट्।। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं ह्रौं कवचाय हुं।। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय, ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भुर्भवः स्वः मामृतात ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्चलज्वालाय मां रक्षरक्ष अघोराय अस्त्राय फट्। इति षडङ्गन्यासः।।

त्र्यम्बकं शिरसि।। यजामहे भ्रुवोः।। सुगन्धिं नेत्रयोः।। पुष्टि वर्द्धनं मुखे।। उर्व्वारकं गण्डयोः।। इव हृदये।। बन्धनात् जठरे।। मृत्योर्लिङ्गे।। मुक्षीय उर्वोः।। मा जान्वोः।। अमृतात् पादयोः।। इति पदन्यासः।। मूलेनव्यापकं कृत्वाध्यानं कुर्यात्। **अथ ध्यानम्।** हस्ताम्भोजयुगस्थं कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयंशिरः। सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भौकरौ। अक्षस्रग्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषोत्ततनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।१।। चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजंसुरपतिपीयूषपात्रंवहद्धस्ताब्जेनदधत्सुदिव्यममलं हास्यास्यपङ्केरुहम्।। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलं पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।।२।। **इति ध्यात्वा।।** मानसोपचारैः संपूज्य ॐलं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि।। ॐ रं तेजसात्मकं दीपं समर्पयामि।। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। मंत्रं जपेत्।। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनं उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूंसः ह्रौं ॐ।। ततोजपानन्तरं देवदक्षिणकरेजपं समर्पयेत्।। गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः।।१।। मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।।२।। **अर्पणम्**-अनेन महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम।। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं तु त्र्यंबकम्।। जपसांगतासिद्धयर्थं यथाकामनाद्रव्येणतद्दशांशदुग्धाज्यसंसिक्तापामार्गसमिद्भिर्होमं तद्दशांशः मार्जनम्।। तद्दशांशंतर्पणम्।। तद्दशांशंब्राह्मणभोजनं कारयेत्।। इति।।

।। अथारिष्टशान्तये शताक्षरागायत्रीमन्त्रजपविधिः।।

ॐ अस्य श्रीशताक्षरगायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्रमरीचिकश्यपवसिष्ठऋषयो गायत्री त्रिष्टुबनुष्टुपछन्दांसि सावित्री जातवेदस्त्र्यम्बका देवताः गायत्र्यक्षराणि बीजानि त्रिष्टुवक्षराणि शक्तयः अरिष्ट शान्तये जपे विनियोगः। विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्ठ ऋषिभ्योनमः शिरसि। गायत्रींत्रिष्टुबनुष्टु छन्दोभ्यो नमः मुखे।। सवितृजातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नमः हृदये।। गायत्र्यक्षराणि बीजानि गुह्ये।। त्रिष्टुवक्षराणि शक्तये नमः पादयोः।।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नमः ॐ धियो यो नः प्रचोदयात, शिरसे स्वाहा।। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममारातीयतोनिदाहतिवेदः। शिखायैवौषट्। ॐ स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वनावेवसिन्धुदुरितात्यग्निः कवचाय हूं। ॐ त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिपुष्टि वर्द्धनं नेत्रत्रयायवौषट्। ॐ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् अस्त्राय फट्।। अथ ध्यानम्।। स्मर्त्तव्याखिलोकवर्त्ति सततं यज्जंगमस्थावरम्। व्याप्तं येन च यत्प्रपंचविहितं मुक्तिश्च यत्सिद्धयति।। यदा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं गृत्वा च यद्गीयते तद्वत्तस्थिति सिद्धयेऽस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं महः।।१।। एवं ध्यात्वाशताक्षरां भावयेत्।। अथहोमार्थसताक्षरागायत्रीमन्त्रः।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममारातीयतोनिदहातिवेदः। ॐ स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेवसिन्धुदुरितात्यग्निः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् स्वाहा।।

नवग्रहाणां जपार्थ वैदिकमन्त्राः।। सूर्यस्य।।

ॐ आकृष्णेन रजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतं मर्त्यंच।। हिरण्ययेन सवितारथेनादेवो यातिभुवनानि पश्यन्।। **चन्द्रस्य** ॐ इमन्देवाऽअसपत्नठं सुवध्वं महतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।। इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाठं राजा।। **भौमस्य**।। ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाठं रेताठं सि जिन्वति।। **बुधस्य**।। उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहीत्वमिष्टापूर्त्तेसठं सृजेथामयञ्च।। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत।। **गुरोः**।। ॐ बृहस्पतेऽतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु।। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मा-सुद्रविणंधेहिचित्रम्। **शुक्रस्य**।। ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रंपयः सोमं प्रजापतिः।। ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानठं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधुः।। **शनेः**।। ॐ शं नोदेवीरभिष्टये आपाभवन्तुपीतये शय्योरभिस्रवन्तु नः।। **राहोः**।। ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा।। कयाशचिष्ठ यावृता।। **केतोः**।। ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे समुषद्भिरजायथाः।। इति।।

अथ वशिष्ठकल्पोक्तमृतसंजीवनीमन्त्रः

ओं ह्रौं जूँ सः ओं भूर्भुवः स्वः ओं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, ओं स्वः भुवः भूः ओं सः जूँ ह्रौं ओं।

पुराणोक्तमृत्युञ्जयमन्त्रः

ॐ मृत्युञ्जयाय रुद्राय, नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाय, महादेवाय ते नमः ॐ।

अथ सारिणीतीदृष्टानयनम्

द्रष्टाविहीनदृश्यस्य ग्राह्यं राश्यंशतः फलम्। कलादिकं-गुणन्घ्नं होराप्तं तेन संस्कृतम्। धनर्ण-रीत्या तत्स्पष्टं फलग्राह्यहिदृक्फलम्।

अथात्र त्रिराशिपाः

ल.२	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिवा	र.	शु.	श.	शु.	गु.	सो.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	सो.
रात्रौ	गु.	सो.	बु.	मं.	र.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	सो.

अथ होराचक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कु.	मी.	अं.
५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	१५
सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	सो. ४	र. ५	१५

अथ द्रेष्काण चक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कु.	मी.	अं.
१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१०
५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	२०
९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	३०

अथ त्रिशांशचक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कु.	मी.	रा.
५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	अं. स्वा.
५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	अं. स्वा.
८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	अं. स्वा.
७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	अं. स्वा.
५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	अं. स्वा.

द्वादशाक्षरो मृत्युञ्जय मन्त्रः

ॐ जूँ सः पालय पालय सः जूँ ॐ।

(स्वयं के लिए-करना हो तो पालय के पूर्व माम् जोड़े दूसरे के लिए करना हो तो **उसका नाम जोड़े**)।

अथ होड़ाचक्रं वरकन्ययोर्भस्य-मेलापकविचारोपयोगीदम्

नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठ	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
अक्षरः	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई. ऊ.ए.	ओ.वा. वी.वू.	वे.वो. का.की.	कू.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा	डी.डू. डे.डो.	मा.मी. मू.मे.	मो.टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रू.रे. रो.ता.	ती.तू. ते.तो.	ना.नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू	ये.यो. भा.भी	भू.धा. फा.ढा	भे.भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. दा.दी.	दू.थ. झ.ञ.	दे.दो. चा.ची.
राशिः	मेष	मेष	मे.१ वृ.३	वृष	वृ.२ मि.२	मिथुन	मि.३ क.१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं.१ क.३	कन्या	कं.२ तु.२	तुला	तु.३ वृ.१	वृश्चि.	वृश्चि.	धनु	धनु	ध.१ म.३	मकर	म.२ कुं.२	कुम्भ	कुं.३ मी.१	मीन	मीन
वर्णा	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शू.२	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वैश्य	वै.२ शू.२	शूद्र	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वैश्य	वै.२ शू.२	शूद्र	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.
वश्य.	चतु.	चतु.	चतु.	चतु.	चतु.२ न.२	नर	न.३ जल.१	जल	जल	वन	वन	व.१ न.३	नर	नर	नर	न.३ की.१	कीट	कीट	नर	न।। च.३।।	चतु.	च.२।। ज.२।।	ज.२ न.२	नर	न.३ ज.१	जल.	जल.
योनिः	अश्व	गज	मेष	सर्प.	सर्प.	श्वान	मार्जर	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो.	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग.	मृग.	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
वैरम्	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग.	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो	अश्व	गो.	श्वान	श्वान	मृग.	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	मं.	मं.	म.१ शु.३	शु.	शु.२ बु.२	बु.	बु.३ चं.१	चं.	चं.	सूर्य	सूर्य	सू.१ बु.३	बुधः	बु.२ शु.२	शुक्रः	शु.३ मं.१	मं.	मं.	गुरु	गुरु	गुरु १ शनि ३	शनि	शनि	शनि	श.३ गु.१	गुरु	गुरु
गणः	देव	मनु.	राक्ष.	मनु.	देव	मनु.	देव	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु.	मनु.	देव	राक्ष.	देव.	राक्ष.	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु	मनु	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु	मनु	देव
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

ग्रहाणां नैसर्गिकमैत्रीचक्रम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्रः	शनि.	ग्रहाः
चं.मं. गुरु	सूर्यः बुध	सू.चं. गुरु	सूर्यः शुक्रः	सूर्यः चं.मं.	बुधः शनिः	बुध शुक्रः	मित्राणि
बुधः	मं.गु. शु.श.	शुक्र शनिः	मं.गु. शनि	शनि	मंगल. गुरु	गुरु	समाः
शुक्र शनिः	०	बुध	चन्द्रः	बुधः शुक्रः	सूर्यः चन्द्रः	सूर्य चं.मं.	शत्रवः

नक्षत्रयुजिभचक्रम्

रे. अ. भ. कृ. रो.मृ.	आ. पुन. पु. श्ले. म. पू. फा. उफा. ह. चि. स्वा.वि.अनु.	ज्यं. मू. पू. षा. उषा. श्र. ध. श. पूभा. उ.भा.
पूर्वाभाग ६	मध्यभाग १२	परभाग ९
पतिः श्रेष्ठ	द्वयोः सुप्रीतिः	कन्या श्रेष्ठ

१ वर्णगुणज्ञानाय चक्रम् । वरः

(कन्या)

वर्णाः	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुण। वरः

(कन्या)

वश्यः	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्प	२	१	१	०	१
नर	१	२	।।	०	१
जलचर	१	।।	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	०	१	०	२

६ गुणगुणाः वरः

(कन्या)

गणाः	देव	मनुष्य	रा.
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

३ तारागुण। वरः

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुण । वरः

(कन्या)

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्रः	५	५	४	१	४	।।	।।
मंगल	५	४	५	।।	५	३	।।
बुध	४	१	।।	५	।।	५	४
गुरु	५	४	५	।।	५	।।	३
शुक्रः	०	।।	३	५	।।	५	५
शनि	०	।।	।।	४	३	५	५

४ योनिगुण। वरः

(कन्या)

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल.	सिंह.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	२	०	२	२	२
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	३	३	१	१	०	४	३	३	२	३	२	१	२
गो	३	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	२	१	२	२	४

७. राशिकूटस्य गुणबोधकचक्रम्। वरः

राशय	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथु.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कं.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कु.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

८ नाड़ीकूटस्य गुणचक्रम् वरस्य

(कन्या)

नाड़ी	आ.	म.	अं.
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

विवाहेरविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम्

रविः	चन्द्रः	गुरु	ग्रहाः
३।६ १०।११	३।६।७ १०।११	२।५।७ ९।११	शुभ स्थानानि
१।२ ५।७।९	१।२ ५।९	१।३ १०।६	पूज्य स्थानानि
४।८ १२	४।८ १२	४ ८।१२	निन्दित स्थानानि

द्विपदादिभानांबोधकचक्रम्

मानव द्विपद	चतुष्पद	जलचर	कीट
मि.कं. तुला	मेष वृष सिंह	कर्क कुम्भ मीन	वृश्चि.
धनु पूर्वार्द्ध	ध.उत्तरा म.पूर्वार्द्ध	मकर उत्तरार्द्ध	

अथाष्टौ वर्गास्तद्दोपाश्च

७अ.	५क.	५च.	५ट.	५त.	५प.	४य	४श.	वर्गा
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष	स्वामिन

वैधव्यदोषपरिहारः - लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वामदनाधिपश्च। द्यूनिस्थितो हन्त्यपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषाङ्गनाख्यम्।। केन्द्रकोणे शुभाढ्यश्चेत्त्रिषडाये ऽप्यसद्ग्रहाः। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपंतया।।

अथ गुणानामैक्येन ग्राहाग्राह्यविचारः

गुणैः षोड़सभिर्निन्द्यंमध्यमं विंशतिस्तथाश्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूतमांतमम्।। सद्भकूटेग्रीतिर्ज्ञ-याद्दुष्ट कूटे नचान्यथा। निन्द्यंगुणैर्विंशतिभिर्मध्यं बाणाधिकैः स्मृतम्। ऊर्ध्वंच पंचविंशत्या श्रेष्टं श्रेष्ठतरं ततः।।

अथोद्वाहलग्नेरेखा प्रदग्रहाः

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।

सू.श.रा.के. ३।११।६।८ मं. ३।६।११ चं.२।३।११ बु.वृ.१।२।३।४।५।६।९।१०।११ शु.१।२।४।५।९।१०।११ उक्तस्थानस्थग्रहांकान् संयोज्यविवाहलग्ने ग्रहबलविचार्यम्। लग्नेशनवलवेशौ १।४।७।१०।११ स्थानेषु दोषसमूहं नाशयतच।

अथ सामान्य विवाह कृत्यम्

(वर-कन्या कुण्डली मेलापक व्यवस्था) वशिष्ठ ऋषि के अनुसार "ऋणत्रयं-देवऋणं पितृऋणमृषिऋणं को उतारने के लिये विवाह ही माध्यम है **"कश्चिद् गृहाश्रम समो न परोऽस्ति धर्मः सोऽपि स्थितः सुगुण वृत्त युताङ्गनासु। उद्वाहलग्नवशतोगुणवृत्तलब्धिस्तासां तथा विध सुलग्न मतः प्रवच्मि।।"** गृहस्थाश्रम से बढ़कर कोई धर्म नहीं है एवं उसकी नींव विवाह से ही पड़ती है, अतः अलंकारादिकों से वर-कन्या का पूजन कर विचारवान् विवेकी वर को कन्या का दान ही विवाह अथवा ब्राह्म विवाह है। इससे उत्पन्न सन्तान पूर्व की २१ पीढ़ी तक को पवित्र करती है। अतः सर्वप्रथम ज्योतिषी की पूजा कर प्रश्न पूछना चाहिए। **"आदौ सम्पूज्य रत्नादिभिरथ गणक वेदयेत्स्वस्थचित्तं।"**

विवाह मेलापक में विचारणीय विषय

धर्मशास्त्र, कुल परम्परा एवं लोकरीति से सम्पन्न विवाह ही सार्थक एवं सिद्धिप्रद होता है तथा वैवाहिक जीवन सुखमय व्यतीत होता है। विवाह के लिये वर-कन्या के गोत्र का एक नहीं होना चाहिए। गोत्र और प्रवरों की संख्या अधिक है। इनसे वंश परम्परा के अवान्तर भेदों से बहुत से कुल उत्पन्न हो गये हैं अतः कोई सीमा बनानी पड़ेगी, जो विचारणीय है। वैसे तो वर कन्या मेलापक की कई विधियां हैं किन्तु मुख्यरूप से दो ही शास्त्र सम्मत एवं व्यावहारिक हैं-१. **नाक्षत्र मेलापक** और २.**ग्रह मेलापक**। इनमे भी नक्षत्र मेलापक प्रधान है। दक्षिण भारत में दशविध मेलापक प्रचलित है। उत्तर भारत में अष्टविध मेलापक का प्राविधान है, ये है-१.वर्ण २.वश्य ३.तारा ४.योनि ५.ग्रहमैत्री ६.गणमैत्री ७.भकूट ८.नाड़ी। इन आठो कूट में प्राप्त अंको को जोड़ने पर गुण बनते है जो पञ्चाङ्ग में दिये गये चक्र से ज्ञात किया जा सकता है। कुल गुण ३६ होते हैं। अष्ट विध मेलापक में वर-कन्या की नाड़ी का विचार प्रमुखता से करने का निर्देश आचार्यो ने बताया है। वस्तुतः नाड़ी का सम्बन्ध शरीर संरचना के आवश्यक अवयवों से है जिसको हम वैज्ञानिक रूप में जेनेटिक जीन्स या डी.एन.ए. भी कह सकते हैं। **वर-कन्या की एक नाड़ी सर्वथा वर्जित है।** वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक हो किन्तु राशि भिन्न हो तथा राशि एक ही हो किन्तु नक्षत्र भिन्न हो एवं नक्षत्र एक, राशि एक होने पर नक्षत्र के चरणों में अन्तर हो जाने पर भी नाड़ी दोष नहीं होता-**"राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोःस्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव। नाड़ी दोषो नोगणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पाद भेदे शुभं स्यात्।** उपरोक्त परिस्थिति में नाड़ी एवं गण दोनो ही का दोष नहीं माना गया है। तत्पश्चात् ग्रह मैत्री अर्थात् वर-कन्या के राशि स्वामीयो में परस्पर मैत्री एवं शत्रुता का विचार भी प्रमुख है। भकूट से तात्पर्य वर कन्या के राशियो का परस्पर सम्बन्ध से है। ग्रह मैत्री एवं भकूट दोनों में से एक का मिलना आवश्यक है।-**'मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथ द्वन्द्वस्यापि स्याद् गणानां न दोषः। खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापिदुष्टंभकूटं।** राशियों के नवांशो के आधिपतियो में भी मैत्री होने पर गण दोष का परिहार हो जाता है। ग्रह मैत्री का सम्बन्ध पति-पत्नी के पारस्परिक सामञ्जस्य से है अतः इसको महत्व दिया जाना चाहिए। **नाड़ी दोष में मध्य नाड़ी का दोष सबसे गम्भीर प्रकृति** का है। नाड़ी दोष के परिहार में यदि वर कन्या की एक ही नाड़ी हो किन्तु उनके जन्म नक्षत्र के चरणों में परस्पर वेध न हो तो नाड़ी दोष कम हो जाता है। चक्रतः स्पष्ट है- **"आद्यांशेन चतुर्थांशेन चतुर्थांशेनचादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्।। एवं भांशव्यधो येषां जायते वरकन्ययोः। तेषां मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाःस्वल्पदोषदाः।।**

१	२	३	४
४	३	२	१

नाड़ीदोष का परिहार–रोहिण्यार्द्रामृगेंद्राणांपुष्य श्रवणपौष्णभम्। अहिर्बुर्ध्यर्क्षमेतेषां नाड़ीदोषो न विद्यते। अर्थात् रोहिणी, आर्द्रा, मृग.,विशाखा,पुष्य, श्रवण, रेवती, उ.भा.। इन नक्षत्रों में नाड़ी दोष का विचार नहीं किया जाता। ***वृहद्दैवज्ञरंजन पृष्ठ- २१२***

नाड़ीदोष न होने तथा ग्रहमैत्री अथवा भकूट शुद्ध होने पर अन्य दोष अपेक्षाकृत स्वयं ही कम हो जाते है। १८ से २० गुण का मेलापक सामान्य, २० से २५ गुण का मेलापक मध्यम तथा इसके ऊपर के गुणमेलापक उत्तम श्रेणी के माने गये हैं।

कन्यायाः वैधव्यादिदोषविचारः वा मंगलीक योग

आजकल इसी को मंगला- मंगली योग किंवा दोष कहा जाने लगा है। वस्तुतः यह मंगलीक योग है, दोष नही। लग्ने **व्यये च पाताले जामित्रेचाष्टमें कुजे। कन्याभर्तृविनाशाय भर्त्ता पत्नी-विनाशकृत्।** इदं लग्न चन्द्राभ्यां वरकन्ययोः जन्मकुण्डल्यां विचार्यम्। एवं यदि कन्याकुण्डल्यां लग्नाद्वा चन्द्रात् (१।४।७।८।१२) स्थानेषु कश्चित् पापग्रहो भावेश-त्वेन स्थितस्तदाप्यनिष्ट करः। सप्तमेशोऽष्टमषष्ठ रिष्फेषु गतोऽनिष्टः अथ तेषां वरकुण्डल्यां (१।४।७।८।१२) स्थानानामन्यतमे स्थाने शनिभौमोवा अन्यः कश्चित्क्रूरग्रहस्तिष्ठे त्तदा विवाहः शोभनः। उक्तं च- जामित्रे च यदा सौरिलग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्। कन्यायास्सप्तमभावनाथ-शुक्रादि शुभग्रहाणां शुभस्थानस्थित्याऽस्याः सौभाग्यादियोगः दीर्घायुर्योगश्च विलोकनीयः। एकं द्वयोः ग्रहसाम्येऽथवा वरस्य ग्रहाधिक्यं मेलापकः शोभनो नान्यथा। शशांक पञ्चाङ्ग शुचौ सौम्ये चैव विवाहभे राज्ञो गोधूलिके लग्ने खड्गोद्वाहः प्रशस्यते।।१।। अथोद्वाहान्ते मण्डपोद्वासनं। युग्मे घस्रे षष्ठहीने च पञ्च सप्ताहे कार्य शुभ वारे।। इति।।

जातकोक्तसूत्रात् कन्या वैधव्यविषाख्यादियोगज्ञानम्। लग्नाच्चन्द्रादन्यतमतः पापाः सप्तमेऽष्ट मेवा विधवा।।१।। भौमे राहौ सप्तमेऽऽष्टमे व्यये वा विधवा।।२।। द्यूने राहौ कुलदोषदा दुःखार्ता।।३।। लग्नेन्दु पापान्तरगोशुभैरदृष्टो कुलद्वयघ्नी।।४।। द्युनेऽङ्गे पापे विवाहोत्तरं सप्तमाब्दे विधवा।।५।। षष्ठेऽष्टमे चन्द्रेऽष्ट माब्देरन्डा।।६।। सप्तमं रन्ध्रेशं पापदृष्टनवोडा रण्डा।।७।। षष्ठाष्टमेशो षष्ठगतो व्यये पापस्तदापि विधवा।।८।। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा मृतवत्सा वा।।९।। कुजेऽष्टमे कुल्या मन्देऽष्टमे पतिरोगवान्।।१०।। सूर्येऽष्टमे पापयुक्ता भवति।।११।। रन्ध्रे राहो कुलद्वयघ्नो।।१२।। लग्नतुर्याष्टमान्त्यारांस्थाः पापास्तदा पतित्यक्तापरासक्ता च भवति।।१३।। सप्तमंशोष्टमेतस्याः सप्तमे निधनाधिपः। पापाश्रयता बाल वैधव्यं लभते ध्रुवम्। सप्ताष्टमपती षष्ठे व्यये वा पापपीड़ितो। तदा वैधव्यमाप्रोतिनारी नैवात्र संशयः। मन्दाश्लेषा द्वितीयायां जाता विषाख्या।।१४।। सूर्यवारुणद्वादश्यां जातविषाख्या।। कुजविशाखासप्तम्यां जाता विषाख्या।।१६।। पापाङ्गं सशुभोपापावरिगौ जाता विषाख्या।।१७।। पुत्रेऽर्क नन्देऽङ्गे भौमेऽङ्गे विषाख्या।। अथ विषाख्या योगस्यापवादमाहलग्नादिन्दोवा यदि जन्मकाले शुभ ग्रहो वा मदनाधिपश्च। द्यूनं स्थितोहन्त्यनपत्यदोषं च त्रिषाङ्गनाख्यम्।।१९।। भौमतुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्। उद्वाहः शुभद प्रोक्तः चिरायुपुत्रपौत्रदः।।२०।।

अथ मंगलीकयोग वैधव्य योग परिहारः

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्यतस्यास्ति वृद्धिः। पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्विदिष्टत्या पृच्छतां जन्मतो वा।' स्वस्वामि-सौम्यैरीक्षितं चेत्सप्तगस्थानं भवति यदा तद्भावसुखं वाच्यम्। केचित्तु स्त्रीणां महत्यारिष्ट योगे भर्तुश्च स्वल्पारिष्ट योगे तत्परिहारमाहुः। इति भट्टोत्पलोक्तेः। इसके अतिरिक्त मंगलीक योग के लिये निम्नलिखित परिहार वचन प्राप्त होते हैं। **१. भौम तुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्। उद्वाहः शुभदः प्रोक्तः चिरायु पुत्र पौत्रदः।।** वर-कन्या की लग्न कुण्डली, चन्द्रकुण्डली अथवा प्रश्न कुण्डली में मंगल या पाप ग्रह के समतुल्य भावों में मंगल या अन्य पापग्रह रहने पर परस्पर विवाह शुभफलकारक होता है। २. वर-कन्या के १,४,७,८,१२ वें भाव में शनि से मंगलीक योग स्वयं समाप्त हो जाता है। **'शनि भौमोऽथवा कश्चितपापो वातादृशो भवेत।तष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाशकृत। ३. कुजजीव समायुक्तो युक्तो वा कुज चन्द्रमाः। चन्द्रः केन्द्रगतो वापि तस्य दोषो न मङ्गली।।** मंगल गुरु एक साथ हो अथवा मंगल चन्द्रमा का योग हो वा चन्द्रमा केन्द्र (१,४,७,१०) स्थान में हो तो मंगलीक होने का दोष कट जाता है। **४. न मंगली चन्द्र भृगौ द्वितीये न मङ्गली पश्यति जीवयस्यः। न मंगली चन्द्रगतश्च केन्द्रे न मंङ्गली मङ्गल राहुयोग।।** चन्द्रमा शुक्र दूसरे स्थान में हो, अथवा मंगल पर बृहस्पति की दृष्टि हो अथवा मंगल राहु के एक साथ होने पर भी मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है। ५. इसके अतिरिक्त वर-कन्या के जन्माङ्ग में मंगल शत्रुक्षेत्री (मिथुन-कन्या) अथवा नीच (कर्क) का हो तो भी मंगलीक दोष नहीं होता। ६. गुणाधिक्य २५ गुण से अधिक का मेलापक हो जाने पर मंगलीक योग शिथिल हो जाता हैं। **'गुणाधिक्ये भौम दोषं न विद्यते।'** इति।

कुण्डली मिलाने की रीति

फलित ग्रन्थों के द्वारा स्त्री-नाशक या पति-नाशक,योग प्रसिद्ध है। उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है।

कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश मे पापग्रह का होना प्रायः पतिनाशक या पत्नीनाशक योग होता है, इसमें पति को मंगला और स्त्री को मंगली कहते है। यह पण्डितों का अनुभव है कि सबसे अधिक दोषकारक मंगल, उससे कम बाकी पापग्रह होते हैं।

इस योग को चन्द्रमा, शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए। द्वितीय सप्तम भावों में भी पाप योग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम अष्टम भावों में भी पाप योग होना अधिक अनिष्ट कर है। द्वितीय अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्यवर्द्धक है। सप्तमेश अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश को सप्तम में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धक योग प्रायः वैधव्य सूचक भी होते हैं। एकादश या पंचम स्थान में विशेष पाप योग वैधव्य सूचक होता है। इन योगो के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु सन्तान और भाग्य योग को देखना युक्ति संगत है।

प्रश्न लग्न से या लग्न से स्त्री की कुण्डली में छठें या सातवें मंगल होतो भी वैधव्यकारक योग होता है।

यदि कन्या को प्रबल वैधव्य योग होतो ब्रह्मविवाह, कुम्भ, विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवी वर के साथ विवाह किया जाय तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता। परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ सप्तम, नवम, अष्टम द्वादश में पापायुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिए अनिष्ट दोष होता है। सप्तमेश का पंचम भाव में होना अच्छा नहीं होता। ज्योतिष के फलित शास्त्र में दो ही वस्तु की अधिक प्रधानता है। (१) लग्न और (२) चन्द्रमा इनमें लग्न को शरीर और चन्द्रमा को मन कहते हैं। प्रेम मन से होता है, शरीर से नही। अतएव जन्मराशि के मेलापक विचार किया जाता है। गणना जन्मनाम से देखी जाती है। विवाह, यात्रा, उपनयन, चूड़ा गोचर, विचार मंगल-कृत्य इत्यादि कार्यो में जन्म नाम की ही प्रधानता है। जन्म नाम न रहने पर प्रसिद्ध नामसे गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई हों तो अन्तिम नाम ग्रहण कर गणना देखने का विधान है नाम हो तो मेलापक प्रसिद्ध नाम से और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्म नाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम औरद दूसरे का जन्म नाम ग्रहण कर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर कन्या यदि एक ही गोत्र में हो तो विवाह नहीं करना चाहिए।

चैत्र अयनांशानयनाय एकादिगुणकाः।।

१ गुणोत्तराः		१० गुणोत्तराः।।			
१	०	५०	१०	८	२२
२	१	४०	२०	१६	४४
३	२	३१	३०	२५	७
४	३	२१	४०	३३	२९
५	४	११	५०	४१	५२
६	५	१	६०	५०	१४
७	५	५१	७०	५८	३६
८	६	४२	८०	६६	५९
९	७	३२	९०	७५	२२
०	क.	वि.	१००	८३	४३

अस्मिन्वर्षस्फुटायनभागे - प्रत्यब्दिक-गतियोगादग्रिम-वर्षादावयनभागा भवन्ति। शके १८०० वर्षस्फुटायनांशाः २२।८।३३ अतोऽग्रेष्टे च।।

गणनागुणैक्यबोधकचक्रम्। वरायनक्षत्राणि। (कन्या नक्षत्राणिपार्श्वे)

अथ काश्यां निरयणसायनादिलग्नमानानि लंकोदयाश्च

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशय
३	४	५	७	५	५	५	५	५	५	४	३	सा.ध.
४१	१३	४	४२	४५	३५	३५	४५	४२	४	१३	४१	
४	४	५	५	५	५	५	५	५	४	३	३	नि.घ.
५	५१।	३।।	४४।।	३७।।	३५	४२।।	४२	१३।।	२४।।	३९	४१	
२२१	२५३	३०४	३४५	३४५	३३५	३३५	३४५	३४२	३०४	२५३	२२१	पलात्मकं
२७८	२९९	३२३	२९९	२७८	२७८	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८	लंकोदय

अथ ग्रहाणा होमार्थ समिधाः-अर्कः पलाशः खादिरस्त्वपामार्गोऽथपिप्पलः।। औदुम्बराः शमीदुर्वाकुशाश्चसमिधः क्रमादिति।।१।। **अथग्रहाणां होमप्रमाणम्।।** एकैकस्याष्ट शतकमष्टाविंशति रेव वा।। होतव्या मधुसर्पिभ्यां सहस्रम् चाष्ट संयुतम्।। इति।।२।। **सन्ततिप्रदमन्त्रो।** देवकीसुतगोविन्दवासुदेवजगत्पते देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः।। कौशल्या शुशुभे तेन पुत्रणामिततेजसा। यथा वरेणदेवानामदितिवज्रपाणिना।।३।। सपादलक्षजपः।। तिलपायसघृतदशांशहवनं तद्दशांशतर्पणम्। तद्दशांशब्राह्मणभोजनम्।।४।। **जन्मराशिनामराश्योः प्रधानता निर्णीयते। विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यहारके। नामभाच्चिन्तयेत्सर्वंयदि जन्म न ज्ञायतते यदा।।५।।** अन्योप्यावश्यककार्य विशेषोवृहस्पतिनाभिहितः।। मासप्रयुक्तकार्येषु मूढत्वं गुरुशुक्रयोः। न दोषकृन्मलमास गुर्वादित्यादिकं तथा इति। शुभाछिक्काः भोजने। शयने दाने। आसने। वामे। पृष्ठे। पूर्वे। औषध सेवने। अध्ययने। बीजवापे एषु सत्।।६।।

।। अथ गोचराद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलस्य शमनाय प्रत्येकग्रहाणांदानवस्तूनि।।

सूर्यदानम्	चन्द्रदानम्	भौमदानम्	बुधदानम्	गुरुदानम्	शुक्रदानम्	शनिदानम्	राहुदानम्	केतुदानम्
माणिक्य	वंशपात्र	विद्रुम,पृथ्वी	कांस्यपात्र	पीत धान्य	श्वेत चन्दन	नीलम,तिल	सप्तधान्य	कम्वलकस्तुरी
गोधूम,गुड़	श्वेत चावल	मसूर,द्विदल	हरित वस्त्र	पीतवस्त्र,सुवर्ण	श्वेत चावल	माषान्न, तेल	माषान्नहेमनाग	माषान्न
सवत्सागो	श्वेत वस्त्र	गोधूम	गजदन्त,घृत	घृत,पीतपुष्प	श्वेत चित्रवस्त्र	कृष्ण वस्त्र	नीलवस्त्र,गोमेद	वेदूर्यमणि
कमलपुष्प	श्वेत चन्दन	रक्त वृषभ	मुद्गान्न पन्ना	पीतफलं	श्वेत पुष्प	कुल्थी,लोहा	कृष्ण पुष्प	कृष्ण पुष्प
नूतन गृह	श्वेत पुष्प	गुड़,रक्तचंदन	सुवर्ण,दासी	पुखराज	रजत,हीरा	महिषी वा	खड्ग तिल	तिल तेल
रक्त चन्दन	चीनी, रजत	रक्तवस्त्र	सर्वपुष्प, रत्न	हरिद्रा अश्व	घृत सुवर्ण	कृष्णाधेनु	तैल, लोह	रत्न सुवर्ण
रक्त वस्त्र	वृषभ, घृत	रक्त पुष्प	कपूर,शंख	पुस्तक मधु	श्वेताश्व दधि	कृष्णपुष्प	शूर्पकम्बल	लोहा,बकरा
सुवर्णताम्र	शंख,दधि	सुवर्ण,ताम्र	अनेक फल	लवण शर्करा	सुगंधद्रव्याणि	उपानह	सतिलताम्रपात्र	शस्त्र
केशर,मूंगा	मोती कपूर	केशर,कस्तूरी	षट्रसभोजन	भूमि छत्र	शर्करा, गौ	कस्तूरी,सुवर्ण	सुवर्ण रत्न	सप्त धान्य
वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा
ज.सं.७०००	ज.सं.११०००	ज.सं.१००००	ज.सं.९०००	ज.सं.१९०००	ज.सं.१६०००	ज.सं.२३०००	ज.सं.१८०००	ज.सं.१८०००

अथ योगिनीदशाकृतारिष्टशमनाय जपार्थ मंगलादीनां मन्त्राः

मंगलामन्त्रः	अथ पिंगलामन्त्रः	धान्यामन्त्रः	अथभ्रामरी मन्त्रः	भद्रिका मन्त्रः	उल्का मन्त्रः	सिद्धामन्त्रः	संकटामन्त्रः
ॐ ह्रीं मंगले	ॐग्लौंपिंगले वैरिका	ॐश्रीवनदे	ॐभ्रामरिजगतामधी	ॐ भद्रिके	ॐउल्के	ॐह्रीं सिद्धे	ॐ ह्रीं संकटे
मंगलाये	रिणिप्रसीदफट्	धान्ये	श्वरोभ्रामरीक्लीं	भद्रंदेहिअभद्रं	रोगंत्राशय	मे सर्वमानसं	मम रोगं
स्वाहा	स्वाहा	स्वाहा	स्वाहा	नाशय स्वाहा	जृम्भयस्वाहा	साधय स्वाहा	नाशय स्वाहा

अथात्रग्रहाणामेकर्क्ष भोगफलसमयादिज्ञानम्

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः	राहुः केतुः	ग्रहाः
मा.१	दि.२।	मा.१।।	मा.१	मा.१३	मा.१	मा.३०	मा.१८	एकर्क्षभोग
आदौ	अन्त्ये	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये	फल समय
दि.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.२	दि.७	मा.६	मा.३	गन्तव्यराशे प्राक्फलदा

अथ सर्वग्रहाणां दोषापनुत्तये सामान्यौषधयः

सर्षप	देवदारु	हरिद्रा	लोध	सरपुखा	कुष्ठ	तीर्थोदक
धनलावा		वरियरा	लजारु	नागरमोथा	कंगुनी	

एतैस्सवारिभिः स्नानंप्रोक्तंदानपुरस्सरम्। एतत्सामान्यत् सर्वग्रहपीडोपशांतये।।१।। यथासिद्धौषधैः रोगान्नश्यं युर्मन्त्रतोभयम्। तथा स्नान विधानेनग्रहदोषः प्रणश्यति।

अथात्रषड्भानि

जन्म	१	मृत्युभयः
कर्म	१०	कर्मनाशः
संघात	१६	बन्धुनाशः
समुदायः	१८	सुखनाशः
विनाशः	२४	देहनाशः
मानसः	२५	मनस्तापः

ग्रहाणां धारणमणयः

रवि	माणिक्यम्	विद्रुमम्
सोम	मोती	चाँदी
मंगल	मूंगा	मूंगा
बुध	पन्ना	सोना
गुरु	पुष्पराग	मोती
शुक्र	वज्र	चाँदी
शनि	नीलम	लोहा
राहु	गोमेद	लाजावर्त
केतु	वैडूर्य	लाजावर्त

अथात्र मासि जनिभेरविवासरादौ फलम्।

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः
गम	सुभो-	वह्नि	सम्म	वस्त्र	सौ-	दुःखम्
नम्	ज्यम्	भयम्	ति.	लाभः	ख्यम्	

एकस्मिन्नेकोष्ठात्मकेयन्त्रे मणिन्यासक्रमः

ऐशान्यां	पूर्वे	आग्नेय
बुधपन्ना	शुक्र हीरा	चन्द्रमोती
उत्तर	मध्ये	दक्षिणे
वृ.पुष्पराज	सूर्यमाणिक	मं.मूंगा
वायव्ये	पश्चिमे	नैऋत्ये
केतु वैडूर्य	शनिनीलम्	राहुगोमेद

आवश्यकेऽनिष्ट तिथ्यादौ दानम्

तिथौ	वारे	न.	करणे	योगे
तण्डु	रत्नं	गौ.	धान्यम्	सुवर्ण
चन्द्र	भद्रां	ता.	ब्राह्मण दत्वा	
शंख	धान्य	लवणं	तत्कर्म कार्यम्	

मुन्यादानम्

वर्षपत्रे
चावल
सुवर्ण
कांस्य
पात्र
घृत
पीतवस्त्र
वर्ण
दक्षिणा

ग्रहाणांतन्त्रसारोक्तमन्त्राः

ग्रहाः	मन्त्राः
रवि	ॐ घृणिः सूर्याय नमः
सोम	ॐ सों सोमाय नमः
मंगल	ॐ अं अङ्गारकाय नमः
बुध	ॐ बुं बुधाय नमः
गुरु	ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र	ॐ शुं शुक्राय नमः
शनि	ॐ शं शनैश्चराय नमः
राहु	ॐ रां राहवे नमः
केतु	ॐ कें केतवे नमः

अथ स्त्रीणामाद्यरजोदर्शने श्रेष्ठ मासपक्षतिथ्यादयः।

तत्र श्रेष्ठ पक्ष मासा	वैशाखे फाल्गुने माघे मार्गशीर्षे ज्येष्ठे श्रावणाश्विने।। एषुसितेपक्षे चोत्तमम्। श्वेतवस्त्रे श्रेष्ठोऽयम्।। नान्याम्बरे।।
तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५। एतासु तिथिषुसत्। परन्तु तत्र कृष्ण पक्षस्यदशमीयावन्मध्यमम्।। तदुपरिकुलयत्वं स्यात्।।
वाराः	चन्द्र।। बुध।। गुरु।। शुक्र।। एषां वारे प्रशस्तम्।।
शुभ नक्षत्राणि	अश्वि.मृ.श.ध.रे.चि.अनु.ह.श्रवण पुष्य, उत्तरा ३, रो.एषु भेषु शुभः।। मू.पुनर्व.म.वि.कृ.एषु मध्यमं परेष्वसत्।। दिवादुर्योगभद्रादिरहिते श्रेष्ठं न रात्रौ।
शुभ लग्नानि	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्याङ्गेषु सद्भिर्दृष्टे सत्युत्तमम्।। तत्र विवाहवद्ग्रहसंस्थाऽपि विचार्य्या इति।।

अथ रजोदर्शने निषिद्धसमयमाह

अष्टम्यां द्वादशीषष्ठ्योरिक्तदर्शाऽथसंक्रमे।।
भद्रा निद्रा व्यतीपाते ग्रहणे रजं वैधृतौ।।१।।
परतात गृहे मार्गे कुदेशे कृष्णवाससि।।
प्राग्रजोदर्शने नेष्टं शान्त्या तु शुभदं भवेत्।।२।।
प्रागुक्तं विलयं यान्ति रजोदर्शनसंभवाः।।३।।

अथ ऋतुमत्याः स्नानमुहूर्तस्य विचारः

ह.स्वा.अश्वि.मृ. अनु.ध.रो.उत्तरा ३ ज्ये. एषुभेषु शुभतिथौ। सद्वारे।। सत्तनौ स्नाया-दृतुमती नारी।

अथ गर्भाधानमुहूर्तस्य विचारः

तत्र त्रिविधं गण्डान्तम्। जन्मताराम्। मू. म. अश्वि. रे.। ग्रहणदिनम्। व्यतिपातवैधृति- श्राद्धदिनम्। दिवा परिघार्द्धं उत्पातहतभम्। जन्मराशितोषष्ठाष्टमं पापग्रहस्य भवनम्। भद्रा पर्वदिनं ४।६।९।१४ तिथिषु संध्यायाम् सू. मं. श. वासरान्। रजोदर्शनाच्चतुर्थरात्रिपर्यन्तं न शुभः। उत्तरा ३, म, ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श., एषु भेपु लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैः। लग्नात् ३।६।११ पापैश्चोत्तमः। सू. मं. वृ. दृष्टलग्ने विषमराशिनवांशके चन्द्रे शुभम्। युग्म (६।८।१०।१२) रात्रौ चोत्तम गर्भाधानम्। चि., पुन., पुष्य., अश्वि., एतद्भेषु मध्यम स्यादिति।।

अथास्यशान्तिः कल्पोक्तः

घृतदूर्वातिलाक्षतैर - ष्टोत्तरशतं जुहुयादिति। स्वर्णगोभूदानं - च विस्तरस्त्वत्रनिबन्धेभ्य।। इति।।

अथ गर्भादशमासानामधिपाः

१	२	३	४	५	६	मासाः
शु.	मं.	वृ.	सू.	सो.	श.	पतयः
७		८		९	१०	मासाः
बु.	गर्भलग्नपति			सो.	सू.	पतयः

अथ गर्भसंस्कार विशेषमाह

स्त्रीणां विधोबलमुशन्ति-विवाहगर्भ संस्कारयोरितर-कर्मसु भर्तुरेव इति।

अथ जातकर्मानन्तरकृत्यम्

जन्मलग्नंनिरीक्ष्य-तत्रस्थग्रहदोष परिहाराय ग्रहदानं जपं वा कुर्यात्। जातमात्रस्य नूलोत्पन्नस्य मुखमालोक्य स्नायादिति।।

अथ पुंसवनसीमन्तयोर्मुहूर्ताः

तत्र गर्भतोद्वितीये तृतीये वा मासिपुंसवनंकर्मविधेयं।। षष्ठे वाष्टमेमासि मासाधिपतौसवलेसतिसीमन्तोन्नयनं प्रशस्तम्।। नात्रशुक्रेज्ययोर्मूढत्वदोषः।।

सद्वाराः	सू.मं.वृ. एषां वारे मतान्तरेण ज्ञेन्दुशुक्राणां वारे वा दम्पत्यो श्चन्द्रताराशुद्धौ सत्यां पुंसवनसीमन्तसंस्कारो भवतः।।
सद्भानि	मृ. पुष्य, मू. श्रवण.पुनर्व., हस्त. रे. रो. उत्तरा ३ एतद्भेषु पुंजन्मभं विना सीमन्तोन्नयनं पुंसवनञ्च प्रशस्तम्।।
सत्तिथय	१।२।३।५।७।१०।११।१३ एतासु तिथिषु सिते। तिथि १० यावत् कृष्णे चोत्तमः परन्तु पूर्वाह्न एव कार्या नापराह्ने।।
साङ्ग-लग्न शुद्धिः	संस्कारद्वयं पुंभस्याङ्गे पुंभांशे च श्रेष्ठम्। तत्रलग्नात् १।४।५।७।९।१० एषु शुभैः।३।६।११। एषु पापैश्चोत्तमः। चन्द्रे १।६।८।११ वर्जिते श्रेष्ठः। ४।८।१२ पाप एकोप्यसत्।

अथ सूतिकायाः सूतीगृहप्रवेशमुहूर्तस्य विचारः

रो. मृ. पुष्य. स्वा. श. पुनर्व. ह. ध. अनु. चि. अश्वि. उ.३ श्र. एषु भेषु।। शुभवासरे।। सतिथौ रिक्ता षष्ठ्यष्ट मीवर्जिते।। शुभाङ्गे।। लग्नतः केन्द्रेषु शुभेषु।। ३।६।११ पापेषु।। शुभांशे सत्युत्तमः।।
श्रुत्वा जातं पितापुत्रं सचेलं स्नानमाचरेत्।। एतच्च रात्रावपि कर्तव्यम् श्राद्धादिकं हेम्ना कर्तव्यम्।। तत्कालाभावे सूतकान्तेऽपि कर्तव्यम्।।

तत्कालातिक्रमणे जातकर्मणि विचारः

सत्तिथय	१।२।३।५।६।७।१०।।११।१२।१३ एतासु तिथिषु व्यतिपातसंक्रान्ति-भद्रादिदोषरहितासु श्रेष्ठम्।
सद्वाराः	चन्द्रबुधगुरुशुक्राणां वारे। जन्माहात् प्रथम एकादशद्वादशदिने चोत्तमः।।
सद्भानि	मृ.,रे.,चि.,अनु.,उत्तरा ३, रो. पुनर्व., स्वा., ध., श्र., श., ह., पुष्य, अश्वि., एषु सत्तनौ चायं श्रेष्ठः।।

स्तनपानमुहूर्तस्य विचारः

उत्तरा ३, रो. अश्वि., रे., पुष्य, पुनर्व., अनु., ह., चि., मृ., ध., श्र., श., एषु भेषु शुभवासरे।। शुभतिथौ। स्थिराङ्गे स्तनपानं प्रशस्तं स्यादिति।।
अथ सूतकापथ्यम्।। अन्नप्राशनोक्तभे तिथौ च दुर्योगादिरहिते श्रेष्ठम्।

बालस्यादौ दुग्धपानसमयश्च

ई.४ उ.७ रवा.	पू.१ चरयोगिनी ५ प.	आ.६ ३ द. ८ नै.	एकत्रिंशद्दिने चैव पयः शंखेन पाययेत्। अन्नप्राशन नक्षत्रदिवसंदयराशिषु।। इन्द्रवायु-यमशूलहस्तिनां यहिवाश्रवणरक्षसा क्रमात्।। अर्द्धयाममनुवासरादितोदिक्षु संभ्रमति योगिनीचरा।।

अथ चैत्रादि १२ मासानां नामानि

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	मासाः
वैकु	जना	उपे	यज्ञ	वासु	त्रिवि	योगी	पुंडरी	कृष्ण	अन	अच्यु	चक्र	नामा
ण्ठ	र्दनः	न्द्रः	पुरुष	देवः	क्रमः	शः	काक्षः		न्तः	तः	धरः	नि

अथ खट्वारोहणमुहूर्तस्य विचारः।। जन्माहात् १०।१२।१६।२२ एषु दिवसेषु। मृ.रे.चि.अनु.उत्तरा.३, रो., ह. अश्वि., पुष्य, अभि.,एषु भेषु।। शुभाहे।। रिक्तामारहितातिथौ प्राक्शीर्षं बालकं तत्र विन्यसेत्।

अथ सूतिकाक्वाथौपधिभक्षणमुहूर्तज्ञानम्।। हस्त., अश्विनी, पुष्य, अभि., मृ., अनु., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मृ., भानि। ३।६।९।१२ लग्ने। सू.चं.वृ.शु. वाराः। लग्नात् ७।८।१२ शुद्धेषु। रिक्ताऽमा रहिते तिथौ। पुंलग्ने पूर्णेन्दुयुते श्रेष्ठः। जन्मराशौ न रसभक्षणम्।

सूतिस्नानमुहूर्तस्य विचारः।। रे., उ.३, रो., ह., स्वा., अश्वि., अनु., एषु भेषु रवि, भौम, गुरु, दिवसेषु १।२।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु सत्। आर्द्रा. पुन. पु. श्र. म. म. वि. कृ. मू. चि. एषु भेषु बुधशनिवारयोः ४।६।८।९।१२।१४ तिथिषु न सत् एतद्भिन्नतिथिनक्षत्रवारेषु मध्यमम्।

अथ भूम्युपदेशनमुहूर्तविचारः

तत्रादौ पृथ्वीवराहञ्चाभि पूज्य भौमबले पञ्चमे मासि कार्यम्।। उ.३, रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य, अभि. एतदभेषु। रिक्तामारहिततिथौ।। स्थिरभस्याङ्गे।। शुभवासरे च।। बालकस्य कटिस्थले कटिसूत्रं बध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्।। तत्र मन्त्राः।। रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगते शुभे।। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रियेति।। अथात्रैव बालाग्रे इमानि स्थापयेत्।। वस्त्रं।। शस्त्रं।। पुस्तकं।। लेखनीं।। स्वर्णं।। रौप्यं।। एषु एतद्बालो गृहणाति तैराजीविनी वृत्तिः प्रतिष्ठा च भवेत्।।

अथ निष्क्रमणमुहूर्तज्ञानम्। जन्मतश्चतुर्थे मासे यात्रोक्तसमयेऽर्कमितेहि वा सत्।

अथ नामकरणमुहूर्तस्य विचारः

सूतकान्ते नामकरणं कर्त्तव्यं स्वकुलोचितं।। बृहस्पतिः।। द्वादशे दिवसे वापि जन्मतो दिवसे शुभे।। षोडशे विंशतौ चैव द्वाविंशे वर्णतः क्रमात्।।

भानि	मृ., रे., चि., अनु., उ.३., रो., ह., अश्वि., पुन., अभि., स्वा.,पु.,श्र., ध., श., नक्षत्रेषु।
वाराः	चं. बु., बृ. शु. एषां वारे नामकर्महितम्।
तिथयः	१।२।३।५।७।११।१२।१३ तिथौ भद्रारहिते सत्युत्तमम्।
शुद्ध लं.	२।५।८।११ एतद्भस्याङ्गेऽष्टमशुद्धौशुद्धलग्ने शुभांशे चोत्तमम्।
लग्न शुद्धिश्च	लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैर्लग्नात् ३।५।११ पापैश्चोत्तमः।। लग्नात् ६।८।१२ सर्वे न शुभाः।। चन्द्रताराबले पितृपुत्रयोः।। दिवापूर्वाह्णे एव कर्तव्यं। मध्याह्ने मध्यमं तदग्रे न सत्।।

व्यतिपात - संक्रान्त्यमावैधृतिग्रहणाह - श्राद्धाह - पक्षच्छिद्ररिक्तापूर्णा शकुनोकिंस्तुघ्नाविष्टि - करणादीन्वर्जयित्वोक्त - तिथ्यादीनामकर्मविहितम्।। अथ विहित-कालातिक्रमे सतीदं गुरुशुक्रयोरस्तादिदोषरहिते सौम्यायने कार्यम्।। नान्यथेति।

अथान्नप्राशनमुहूर्तज्ञानाय चक्रमिदम्

तत्र बालानां षण्मासादारभ्य सममासेषु। कन्यकानां पञ्चममासादारभ्य विषममासेषु कार्यम्।। मासगणनासौरेणान्नप्राशनं परिमितिज्ञेया।।

सद्भानि	रो. उत्तरा ३ मृ. रे. चि. अनु. ह. पुष्य. अश्वि. अभि. पुन. श्र. ध. स्वा. श. एषु भेषु शुभः।। अन्नसप्तशलाकविद्धं ग्रहणभं त्याज्यम्।
तिथयः	२।३।५।७।१०।१३।१५ सत् अन्येषु समः। वाराः चं. बु. वृ. शु.

एषां वारे श्रेष्ठः।। नान्यस्मिन्नह्नि। लग्नानि २।३।४।५।६।७।१०।११ एषु जन्माङ्गभयोर्मृत्युभस्याङ्ग तदंशकञ्च हित्वा प्रशस्तम्, नान्यलग्ने।

अथ प्रथमादिमासेषु बालकानां दन्तजननफलबोधकचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मासाः
स्वयं नाशः	कनिष्ठ भ्रातृ नाशः	भगिनी नाशः	मातृ नाशः	ज्येष्ठ भ्रातृ नाशः	सुभोगम्	तातात्सुखं	पुष्टता	लक्ष्मी	सौख्यं	सौख्यं	धन संपत्ति	फलानि

अथ जनौसदनो बोध्यं स्वपित्रादिहा। तदर्थ शान्तिविधेया इति।।

अथ जलपूजनमुहूर्तविचारः।। तत्र सूतिकायाः मासपूर्तौ सत्यां शुक्रे ज्योरस्ते चैत्रपौषयोर्मासे तयाधिकमासे जलं न पूजयेत्।। श्र., पुष्य., पुन., मृ., ह., मू., अनु. एषु भेषु विरिक्ते तिथौ।। चं.बु.गु. एषां वारे शुभम्।।

अथ कर्णवेधमुहूर्तज्ञानाय चक्रमिदम्

तत्र जन्माहात् १२।१६ दिने।। ततः ६।७।८ मासि।। ततः विषमवर्षे कर्णवेधः शुभः। चैत्रपौषावामाजन्म-मासचातुर्मास्यारिक्ता अमासमवर्षजन्मतारां हित्वा प्रशस्तः कर्णवेध इति।।

सत्तिथयः	१।२।३।५।७।१०।१२।१३।१५ एतत्तिथौ सिते।। कृष्णे च ति. १० यावत् शुभः।।
वाराः	चं.बु.वृ.शु एषां वारे भद्रारहिते सत्युत्तमः।।
सद्भानि	पुनर्वसु., अश्वि., ह., पुष्य., अभि., मृ., चि., अनु., रे.,श्र., ध., एतद्भेषु चन्द्रबले सति प्रशस्तः।।
शु.ल.	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नेस्वंशेषु च सत्।।
लग्न शुद्धिः	लग्नादष्टमभवनेसंशुद्धे।। लग्नात् १।३।४।५।७।९।१०।११ एषुशुभैः तथा ३।६।११ एषुपापैश्चोत्तमः।। लग्नस्थे गुरौकर्णवेधः शुभावहः।।

अथ चौल मुहूर्तस्य बोधकार्थमिदं चक्रम्। तत्र वर्षत्रयाद्विषमवर्षे जन्मतः विचैत्रोद्गमने भानौ चोत्तमम् मनुना प्रथमवर्षेऽपि सदुक्तम् चौलम्।।

सद्भानि	ज्ये.,मृ., रे., चि., ह., अश्वि., पुष्य., अभि., स्वा., पुनर्वसु., श्र., ध., श., एषु चन्द्रतारानुकूले सति शुभः।।
वाराः	चं. बु. गु. शु. एतद्वारेषु भद्रादिदोषरहिते श्रेष्ठम्।।
सत्तिथयः	२।३।५।७।१०।११।१३ एतत्तिथौ सत्।। परन्तु पूर्वाह्नो।।
शु.ल.	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नांशे श्रेष्ठोऽयम्।।

अथाक्षरारम्भमुहूर्तस्य विचारः

तत्रोत्तरायणे रवौ। पञ्चमेब्दे गणेशविष्णुसरस्वती लक्ष्मीकुलदेवान्नत्वा सविधि सम्पूज्य च शिशोर्नूतनाक्षरलेखनारम्भः कार्यः।

तिथयः	२।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु दुर्योगादिरहितासु शुभः।।
वाराः	चं.बु. गुरु शुक्र एषां वारेषु। शुक्लपक्षे चाक्षरारम्भः शुभः।।
भानिः	अश्वि.आर्द्रा,पुनर्व,पुष्य.,ह.,चि.,स्वा.अनु.,श्र.,रे.,एषु भेषु शुभः।।
लग्न शुद्धिः	२।३।६।९।१२ एतद्भस्याङ्गेतंदशेचोत्तमः।। अत्राष्टमशुद्धेकुम्भां शकेविनोत्तमः।। जीवे बुध शुक्रे लग्ने खेटबलाढ्ये श्रेष्ठोऽयम्।।

अथ विद्यारम्भमुहूर्तस्य विचारः

तत्रादौ अक्षरग्रहणे दृढे संजाते सौम्यायने रवौ आश्विने कन्यार्के बुधप्राबल्ये

सद्वाराः	बु.सू.बृ.शु. एतद्वारेषु शुभः। गणेशवाग्देवतामभ्यर्च्य कार्यः।।
सद्भानि	अश्वि.पुष्य.आ.अनु.मृ. पुन. ह. चि. स्वा. श्र. ध. मू. पू.३. श्लेषा सत्
सत्तिथय	२।३।५।६।१०।११।१२ एषुसिते।। ति.५ यावत्कृष्णेचोत्तमः एषु सत्
साऽङ्ग लग्न शुद्धिः	२।३।६।९।१२ एतद्भस्याङ्गेशुभः।। लग्नादष्टमे सर्वग्रहाः नेष्टाः। लग्नात १।२।४।५।७।९।१०।११ एषु शुभैः ३।६।११ एषु पापैश्चोत्तमा अधीतिः ।इति।।

अथ व्रतबन्धमुहूर्त्तबोधकचक्रमिदम्

तत्रगुरुशुक्रयोर्वृद्धत्वास्तशिशुत्वकालंविनोत्तरायणे रवौ मघादि ५ मासेषु शुभः।। परन्त्वर्केन्दुगुरुशुद्धिवशेन। चैत्रे सति मीनार्के ब्राह्मणानां व्रतं सत्।।

सद्भानि	अश्वि,ह. पुष्य. उत्तरा ३ रो. ऽश्ले. स्वा. पुन. ध. श्र. श. मू. चि. मृ. अनु. पूर्वा ३. रेव. आर्द्रा. एतद्वेधरहितेषु सत्।। परन्तुनापराह्ने।
तिथयः	२।३।५।१०।११।१२ एतासु शुक्ले २।३।५ कृष्णे तिथिसु चोत्तमः। केचन्मते ७।१३
सद्वाराः	सू. चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रारुवाणादिदोषरहिते सत्युत्तमः।।
लग्न शुद्धि-ज्ञान माह	त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्राद्विद्यूनादिकात्रिभः।। सौम्याः कन्द्रत्रिकोणस्था लाभसर्वव्रतेशुभाः।।१।। चं.सु.बृ. लग्नेशोलग्नात ६।८ नशुभाः।। चन्द्रशुक्रौ लग्नात १२ निंद्यौ। ११।५।८ पापाः न शुभाः। ६।८।१२ सौम्या न शुभाः ।। ३।६।११ पापाः शुभदा। पूर्णेन्दु वृषकर्कगतोलग्नेश्रेष्ठोऽन्यथान।। लग्नेऽर्कशुभः।। चन्द्रांशं विनेति।।

अथ दीक्षाग्रहणमुहूर्तस्य बोधकचक्रमिदम्

मासः	चै. वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. फा. एतन्मासेषुशुभमधिमासे।।
भानिः	अश्वि. रो. उ.३ पू.३ चि. अनु. पुष्य. स्वा. पुन. मू. श्र. ध. श. एषु सत्।।
वाराः	सू. चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रादिदोषवर्जिते सति प्रशस्तम्।।
तिथयः	२।३।५।७।१०।११।१२ एतासु तिथिषु श्रेष्ठं कृष्णंयावत्पंचमीसत्।।
शुद्धलग्नं	२।३।४।५।६।७।९।१२ एतद्भस्याङ्गेषुचंद्रतारानुकूलेसति शुभम्।
लग्न शुद्धिश्च	लग्नात् ३।६।११ एषु पापैः १।४।५।७।९।१० एषु शुभैश्चोत्तमम्। अष्टम्यां संक्रान्तौ रविचन्द्रोपरागेनोत्तमम्। गुरुशुक्रयोरुदये श्रेष्ठम्।

अथ द्वादशस्थचन्द्रफलम्। पाणिग्रहे स्त्रीसुरतोभिषेकेयात्रान्नतबन्धने च।। व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वे प्रोक्तः शुभोद्वादशो हिमांशुः ।इति।।

षोडशसंस्काराः।।- गर्भाधानमतश्च पुंसवनकं सीमन्तजाताभिधे। नामाख्यं सहनिष्क्रमणं च तथाऽन्नप्राशनं कर्म च।। चूड़ाख्योव्रतबन्धको -ऽप्यथचतुर्वेद-व्रतानां पुनः। केशान्तः सविसर्गकः परिणयः स्यात् षोडशीकर्मणाम्।। ब्रह्म-क्षत्रियविट् शूद्रा वर्णास्त्वाद्यस्त्रयोद्विजः।। निषेकादिश्म-शानान्तास्तेषां वै मन्त्रतः क्रिया।। शूद्रोऽप्येवंविधः कार्यो विना मन्त्रेण संस्कृतः।। स्त्रीणां चौलान्तसंस्कारान् प्रकुर्वीत ह्यमन्त्रकाद। पुंस्त्रियोरुभयोरत्र विवाहः स्याद्यथाविधिः।।

अथ विवाहमुहूर्तस्य विचारः

स्त्रीणामष्टमवर्षांतस्त्रि अतः परं सम वर्षे नृणां विषमवर्षेषु। विवाहसमये स्त्रीणां नृणां क्रमेण गुर्वर्कः सबली। तद्दिने उभयोश्चन्द्रबलं विवाहः शुभाः प्रोक्तः।

सद्वारा- शु. चं. बु. वारेषु श्रेष्ठ । सत्तिथयः- रिक्ता (४।९।१४) मावर्जयित्वा सर्वासु तिथिषु श्रेष्ठः। सद्भानि-मृग, ह., अनु. म. रो. उत्तरा ३ स्वा. रेवती मूल एषु भेषु वेधादिदोषरहितेषु शुभः।।

लग्नानिः- लग्नात् ३।६।११ एषु स्थानेषु भौमः २।३।११ स्थानेषु चन्द्रः ७।८।१२ एषु स्थानेष्वतिरिक्तस्थानेषु बुधगुरु ३।६।७।१२।८ एतद्भिन्नस्थानेषु शुक्रः शुभः। वर्गोत्तमांशश्च शुभदः स्यात्।

अथ वधू प्रवेश मुहूर्तस्य विचार

विवाहादूर्ध्वं वध्वाः प्रथम भर्तृगृहे प्रवेशो वधूप्रवेशः स च विवाहदिवसात् २।३।४।५।६।९।१०।१२।१४।१६ दिवसेषु शुभः अतः ऊर्ध्व विषममासवर्षेषु पञ्चवर्षात्परं स्वेच्छया।।

सद्वाराः- चं.बृ.शु.बु. दुष्टयोगादिरहितेषु शुभा सत्तिथयः १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ एषु भद्रादिदोषरहितेषु शुभः।

साङ्गलग्नशुद्धिः- २।३।५।६।८।९।११।१२ एतद्भस्यांगे शुभः। लग्नात् १।३।५।७ ।९।१०।११ स्थानेषु शुभः। १।६।११ स्थानेषु शुभः ३।६।११ स्थानेषु पापाः चतुर्थाष्टमशुद्धौ निशिप्रवेशः शुभः।

अग्न्याधानमुहूर्त्तस्य विचारः- तथोत्तरायणे रवौ स्वशाखंशगुरु सितानामुदये चोत्तमः।

सद्वारा - सू. चं. बु. गु. श. एषु- वारेषु, भद्रादिदोषरहितेपूत्तम्। सत्तिथयः २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एतत्तिथयः शुभाः।

सद्भानि- वि. कृ. रो. ज्ये. मृ. रे. उत्तरा ३ पुष्य एषु भेषु चन्द्रतारानुकूले सति शुभः। न्यूनाधिकमासे न कार्यः।

सल्लग्नानि - १।२।३।५।६।७।८।९ एतद्भस्य नवांशो चोत्तमः लग्नशुद्धिः त्रिकोणोपचये केन्द्रे सूर्यजीवकुजेन्दुषु। शेषे चोपचये शुद्धरन्ध्रेअग्न्याधानं चोत्तमम् चन्द्रलग्नेन शुभः। रव्यारेन्दुशुक्रेज्य न नीचे नास्तंगते वारिगेहे वर्धिते चेत्तदोत्तमः धनुलग्ने जीवयुते वा मेषगे भौमे ८।१० गते वा ३।६।११ गतेषु सूर्य चन्द्र शनि राहु एषामन्यतमे चक्रभेदे सत्युतमः।

अथ वृक्षारोपणस्य मन्त्रमप्याह - ओम् वसुधेति च शीतेतिपुण्यदेति वरदेति च।। नमस्ते सुभगे देविद्रुमोऽयं त्वयि रोप्यते।

अथ राज्याभिषेकमुहूर्त्तस्य विचार-

तथोत्तरायणे रवौ गुर्वीन्दु शुक्रदृश्ये यथा भौमार्कलग्नेशदशमेशवायेचेदुत्तमः परन्तु अधिमासे, चैत्रे रात्रौ भौमे न शुभदः।

सद्वारा-सू. चं. बु. बृ. शु. एषु वारेषु चन्द्रबले कुयोगादिरहिते सति शुभदः।

सत्तिथय-१।२।३।५।७।८।१०।१२।१३।१५ एषु भद्रादिदोषरहिते शुभः।

सद्भानि-ज्ये. श्र. ह.अश्वि. पुष्य. मृ. रे. अनु. उत्तरा ३, रो. एषु शुभः।

सल्लग्नानि-२।३।५।६।७।८।११।१२ एतद्भस्यांशे वा जन्मराशि वा उपचये लग्ने सद्ग्रहेक्षिते शोभनः जन्मांगयोमृत्युराशौ लग्ने नेष्टः।

लग्नशुद्धि-लग्नाद् पापस्त्रिपष्ठायगतेः शुभः। लग्नाच्छुभग्रह केन्द्रे त्रिकोणायधनत्रिसस्थितेः शुभः मित्र क्षेत्र गतेः खेटेश्चेच्छुभः अस्तंगतेनीचारि शत्रु गृहे च न सत्। पञ्चदुष्ट ग्रहेश्चेदुत्तमोऽयम्।

अथ भर्तृ गृहात्पितृगेहगमनमुहूर्त्तस्य विचारः-दारुणोग्रभिन्नेषु भेषु शनिसूर्यभौमभिन्नवारेषु सत्तिथौ कुयोगादिभद्रादिदोषरहिते शुभलग्नेशुभः।

अथ कोष्ठदौ धान्यस्थापनमुहूर्त्तस्यात्र विचार- मृ. पुन. रे, अनु. श्र. ध. अश्वि. पुष्य रो. ध. उ. एषु भेषु सत्तिथौ सू. चं. गु. शु. वारेषु।। अथ निष्कासनधान्यानां। उ. ३, रो. ध. श. एषुभेषुसद्वारे शुभांगे सत्तिथौचप्रशस्तः।

अथ जलाशयारामसुरप्रतिष्ठमुहूर्तस्य विचार- तत्रोत्तरायणे भानौ जीवेन्दुशुक्रे दृश्ये सिते पक्षे चोत्तमा प्रतिष्ठा।

सद्वारा- सू. चं. बु. गु. शु. एषु. वारेषु शुभः।

सत्तिथय- १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ एतासु तिथिषु भद्रादिदोषरहितासु शुभदः।

सद्भानि- मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३, रो. एषु भेषु चन्द्रतारानुकूलेषु सत्सु शुभः। अथवा यस्य देवस्य प्रतिष्ठा कर्तुमिष्टस्तस्य तत्स्वामिनोक्तकाले तिथौ च प्रशस्तः।

लग्नशुद्धि- २।३।५।६।।९।११।१२ एतद्भस्यांगांशे शुभः चरांगे अशुभः। लग्नात् १।२।४।७।९।१०।११ स्यानेषु शुभैः ३।८।११ सेन्दुभिः पापैश्चातीवोत्तमः पंचाष्टखेटदृष्टलग्नं ङ्ष्टग्रहे शुभांशे श्रेष्ठम्।।

अथ वापीकूपतड़ागादीनामारम्भः मुहूर्तस्य विचारः तद्वारा- चं. बु. बृ. शु. एषु वारेपूत्तमम्।

तिथयः- १।२।३।५।७।८।१०।१२।१५ एतत्तिथिषु शुभः। सद्भानि ह, अनु. रो. उत्तरा ३, घ. श. रे पुष्य, मू. पूषा एतद्भेषु स्वस्वचक्रशुद्धिसत्यां शुभे मासिगुरुसितयोरस्तादि-दोषभद्रादिदुर्योगरहिते दिने शुभः।

लग्नशुद्धि- लग्ने जीवज्ञऽथवा दुर्वलक्रूरं शुक्रे चापि मेपूरणस्थे। आप्येचन्द्रे सूर्यतोयश्रयाणामारम्भाः स्युः सिद्धये निर्विकल्पम्।

अथचौलमुहूर्त्तस्य वोधकचक्रम्।

तत्रविशेषः - ऋतुमत्याः सूतिकायाः सुनोश्चौलादिना च सूनोर्मातरि गर्भिण्यां चूड़ाकर्म न कारयेत्। पञ्चमाब्दाद्चोर्ध्वं तु गर्भिण्यापि कारयेत्। तत्र जन्मतो द्वित्रिपंचोन्मितेऽब्दे स्वचराशे कुत्रचित्प्रथमवर्षेऽपि भवेत्। विचैत्रोदगयने भानोः तत्रापि ३ वर्षे श्रेष्ठ ५।७ वर्षे मध्यम ९।११ अधमस्मृतम, **सत्तिथयः-**२।३।५।७।१०।११।१३ एतत्तिथिपर्वोनादिषु शुभं लग्नशुद्धि - २।३।४।।७। ९।१२ एतद्भस्य लग्नांशे शोभनम्। तत्रापिजन्मांगभात् मृत्युभं विनालग्नात् १।२।४।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभः ३।६।११ पापस्तथा ६।८।१२ स्थानातिरिक्त स्थानेष्विन्दो शुक्ररहिताष्टमभवने शुद्धे सत्युत्तमः। **सद्भानि** -मू. रे. ह. उ. ३ रो. पुनर्व. स्वा. अश्वि. नक्षत्रेषु सत्तनो चायं श्रेष्ठः।

द्विरागमन मुहूर्त्त- स च विवाहतो द्वितीयवारं भर्तृगृहे गमो द्विरागमः विषमाब्दमासयोः मेषवृश्चिककुम्भराशौ रवौसति शुक्लपक्षे वरस्य गुरुमान्वोः प्रावल्यं, गुरुशुक्रयोररतादिदोषस्य वध्वा सम्मुखदक्षिणयोः शुक्रकृतदोषस्यचाभावे सत्युत्तमः सद्वाराः - चं. बु. बृ. शु. एषु वारेषु दुर्योगादिरहितेषु शुभः। सद्भानि- ह. अश्वि. पुष्य, उत्तरा ३, रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मृ. रे. चि. अनु. एषुभेषु चन्द्रतारानुकूलेसति शोभनः लग्नशुद्धि लग्नात् ३।६।११ एषु स्थानेषु गुरौ १।४।७।१० स्थानेषु भृगो शुभलग्ने शोभनः।

अथ नूतनवध्वाः पाककर्ममुहूर्त

मृगोत्तरातिष्यकुशात्पाक श्रुतित्रये व्रह्म दुर्द्रव पौष्णम्। शुभे तिथौ शुभांगे च प्रकुर्यान्नवधूनूतनपाककर्म।।१।। स्थिरे लग्ने सुखे शुद्धं सप्तमे च वलान्विते रन्ध्रे खेटविहीने न नवोढा पाकमाचरेत्।।२।।

व्यवसायमुहूर्त्तः-नक्षत्राणि- मृ. रे. चि. अनु. उत्तरात्रयं रो. ह. पुष्य अभि। तिथय- १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ ३०। वाराः- रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। लग्नानि-कुम्भंतराणि सर्वाणि शुभानि। शुक्रचन्द्रग्रहो लग्ने शुभदौ। ८, १२ स्थानगाः पापाः न शुभदाः २, १० ११ स्थानेषु शुभग्रहा शुभदाः।।

अथ क्षेमार्थ शान्तिमुहूर्त्तविचार- मू. ह. अश्वि. पुष्य उत्तरा ३, रो. रे. स्वा. श्र. आश्ले. ध. शः पुन. अनु. म. एषु शुभांगे वारे सप्तमी, सितेज्यरस्तादि दोपरहिते आवश्यके व्रतं शुभदः। लग्नात् विधौ ४ स्थे १० रवौ, १ लग्ने जीवे, ८।९ पापरहिते वाराः।

हलप्रवहणमुहूर्त्त - नक्षत्राणि - मू. वि. स्वा. पुन. म. ध. श. उ३ रो. मृ. रे. चि. अनु. हस्त. आर्द्रा पुष्य. अभि।वाराः- शनि रवि विहाय सर्वे शुभः। तिथयः- ४, ६, ९, १४, ३० विहाय सर्वे शुभाः चन्द्रोदयः। चन्द्र मकर मीन कर्क नवांशेसु पापग्रहा निर्वलाः सिंह कुम्भ, मेष मकर तुलाराशि लग्नानि।

वीजवपनमुहूर्त्तः - नक्षत्राणि- मू. म. स्वा. ध. उ.३ रो. मृ. चि. रे. अनु. ह. पुण्य. अश्वि. एषु भेषु। वाराः- सोम, वुध, गुरु, शुक्रः। तिथय- ४, ६, ९, १४, ३० विहाय सर्वे शुभाः।

कणमर्दन मुहूर्त्त -अनु. अ. भ. रे. पू. फा. ज्ये. रोहिणी, कृत्तिका, एषु भेषु सत्तिथौ, सद्वारे शुभांगे चोत्तमम्।

यात्रामुहूर्त्त-शुभनक्षत्राणि- अश्विनी मृ. पुन. पुष्य ह. अनु. श्र. ध. रे. मध्यमनक्षत्राणि- रो. उ.३, ज्ये. पू.३, श.। शुभतिथयः- भद्रा रहिता २, ५, ७, १०, ११, १३ तथा कृष्णक्षे प्रतिपदा त्रिशेष - कुम्भराशौ कुम्भनवांशके वा कदापि यात्रा न कर्त्तव्या। शुभलग्ने १, ४, ५, ६, ९, १० स्थानेषु शुभग्रहाः शुभदाः ३, ६, १०, ११ स्थानेषु पापग्रहा शुभाः अशुभ लग्ने १, ६, ८, १२ चन्द्रः। दशमे शनिः, शुभः सप्तमे शुक्रः ७, २, ६, ८ स्थानेषु लग्नेशः।

ध्रुवस्थिर-संज्ञकनक्षत्राणि - उ.३ रो. भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम्। तत्र स्थिरं वीजगेह शान्तारामादि सिद्धये। तीनों उत्तरा रोहिणी हस्त और रविवार के नक्षत्र दिन योग से ध्रुव वा स्थिर संज्ञा होती है। इसमें स्थिर कार्य करना वीज वोना, गृह वनाना शान्ति करना वगीचा लगाना आदि कार्य करना शुभ फलदायक होता है।

चल-संज्ञक नक्षत्राणि-स्वात्यादित्ये श्रुते स्त्रीणिचन्द्रश्चापि चरंचलं। तस्मिनगजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम्।। स्वाती पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठ, शतभिषा और सोमवार इनका चर और चल नाम है। इन नक्षत्रों में घोड़ा आदि पर चढ़ना वगीचे में जाना शुभद होता है।

क्रूरोग्र नक्षत्राणि-पूर्वात्रयं याम्य मघे उग्र क्रूर कुजस्तथा। तस्मिन् वाताग्नि शाठ् यानि विषशस्त्रादि सिद्धयति। तीनों पूर्वा, भरणी, मघा और मंगलवार इनका नाम उग्र और क्रूर है। इनमें शठता, वात, विष, शस्त्र, अग्निकार्य करने में सफलता मिलती है।

मिश्र-साधारण संज्ञक नक्षत्राणि-विशाखाग्नेयभे सौम्ये मिश्रं साधारणं स्मृतम्। तत्राग्नि कार्यमिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्धयति। विशाखा कृतिका और बुधवार इनका नाम मिश्र और साधारण है। इसमें अग्निकार्य और साँड़ छोड़ना शुभद है।

क्षिप्रं लघु संज्ञक नक्षत्राणि-हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघुगुरुस्तथा। तस्मिन्पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम्।।हस्त, अश्वनी पुष्य, अभिजित् और गुरुवार इसका क्षिप्र और लघु नाम है। इसमें व्यवसाय करना रतिज्ञान, भूषणनिर्माण और रत्न धारण और चित्रण कला कार्यारम्भ होने का मुहूर्त्त होता है।

मृदु-मैत्रसंज्ञक नक्षत्राणि

मृगान्त्य चित्रा मित्रर्क्ष मृदुमैत्रं भृगुस्तथा।
तत्र गीताम्बर क्रीडा मित्र कार्यं विभूषणम्।

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार इनको मृदु मैत्र कहते हैं। इनमें गीत, कपड़ा, क्रीड़ा मित्र-कार्य और भूषण वनवाना शुभ है।

तीक्ष्ण-दारुण संज्ञक नक्षत्राणि

मूलेन्द्रार्द्राहिनं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम्।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम्।।

मूल, ज्येष्ठ, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार दारुण है। इनका नाम तीक्ष्ण और दारुण है। इनमें अभिचारघात, भेद पशुदमन आदि तीक्ष्ण कार्य सफल होते

तात्कालिक करणवशेन संक्रान्तीनां वाहनादिज्ञानाय चक्रम्।

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प	नाग.	किंस्तुः
स्थिति	निवि	उपवि.	ऊर्ध्व	सुप्त	निविष्ट	निवि	निविष्ट	ऊर्ध्व	सुप्त	सुप्त	ऊर्ध्व
तत्फलं	सम	मध्यम	श्रेष्ठ	महर्घ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	समहर्घ	महर्घ	महर्घ	समहर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	अश्व	श्वान	मेष	वृषभ	कुक्कुट
उपवा.	गज	अश्व	वृषभ	मेष	गर्दभ	उष्ट्र	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वानर
तत्फलं	भीतिः	भयम्	पीड़ा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीतं	हरित	पांडु	आरक्त	श्याम	कृष्ण	चित्र	कंबल	नग्न	धनाय
उपव.	श्वेत	रक्तं	चित्र	पीत	नील	कंवल	पट्ट	अजिन	कुसुम	वल्कल	वेणव
आयुधं	वन्दूक	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	शस्त्र	वाण
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष	पक्वान्न	दुग्ध	दधि	चित्रान्न	गुड़	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	मृत्तिका	गौरी	महावर	ओतु.	हरिद्रा	कज्जल	अगर	कपूर
जातय	देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	द्विज	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण सं.
पुष्प	पुन्नाग	जाती	वकुल	केतकी	विल्व	अर्क	दूर्वा	कमल	वेला	पाटल	जपा
भो.पा.	सुवर्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	लोह	खप्पर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	प्रवाल	मुकुट	मणि	गुंजा	कोड़ी	नीलम	वज्र	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पीत	हरित	भूर्जप.	सित	पांडु	नील	कृष्ण	चर्म	वल्कल	धूम्र
स्नान	गंगा	यमुना	सरस्व	मन्दा	नर्मदा	कृष्णा	गोदा	भागी.	तुंगा	कावेरी	कृष्णा
वय	बालं	कुमार	गतायुः	युवा	प्रौढ़ा	प्रगल्भा	वृद्धा	वन्ध्या	अन्ध्या	पुत्रार्थि	प्र.वा.

अथ संक्रान्तिवाहनादीनां दुष्ट फलं तदाह - वाहनान्नायुधाहारदीनां वृत्युपजोविनाम्। विनाशः स्याच्च संक्रान्तेर्वस्त्रादीनां महर्घता।। स्थितिनिविष्टसुप्तानां तथा ज्ञेयं विनाशनम्।।२।।

मासेषुशून्यतिथ्यादि ज्ञानाय चक्रमिदं शुभे न सत्।

चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मार्ग	पौष	माघ.	फा.	मासा
९	१२	कृ.१४	कृ.६	३	१	१०	कृ.५	७	४	कृ.५	कृ.४	शू.ति.प.
८	१२	शु.१३	शु.७	२	२	११	शु.१४	८	५	शु.६	शु.३	शू.ति.प.
अश्वि. रोहि.	चि. स्वा.	उ.षा. पुष्य	पू.फा. ध.	उ.षा. श्र.	श. रे.	पू.भा.	कृ. म.	वि. वि.	आर्द्रा अश्वि.ह.	श्र. मू.	भ. ज्ये.	शून्यन-क्षत्राणि
कृ.११	मी.१२	वृ.२	मि.३	मे.१	कं.६	वृ.८	तु.७	ध.९	क.४	म.१०	सिं.५	राशयः

काष्ठसंचयचक्रमर्कभात्।			अश्वचक्रमर्कभात्			शिविकाचक्रमर्कभात्			सफलंभद्रांगचक्रम्		
अधः	६	पाकसुरसः	स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि
शीर्षे	२	शवदाहः	शीर्षे	५	सुखम्	पूर्वे	५	शुभम्	मुखे	५	कार्यहानिः
मध्ये	४	सर्पभयम्	पृष्ठे	१०	लाभदः	दक्षिणे	५	पीड़ा	कण्ठे	१	पीड़नं
पूर्वे	४	मित्रागमः	पुच्छे	२	स्त्री.नाश	पश्चिमे	५	भयम्	वक्षसि	१०	द्रव्यहानिः
दक्षिणे	४	रोगभयम्	पादे	४	रणभंग	उत्तरे	५	रोगः	नाभौ	४	कलहः
पश्चिमे	४	क्वाथादिः	उदरे	५	अश्वनाशः	मौ.ली.	३	सुखम्	कटयां	६	अर्थनाशः
उत्तरे	४	सुखम्	मुखे	२	अर्थलाभः	दंडयोः	४	शुभम्	पुच्छे	३	शुभम्

अथवारदोषशमनार्थंदानमाह-भानुस्ताम्बुलदानादपहरतिनृणांवैकृतंवासरोत्थं। सोमः श्रीखण्डदानादवनिवरसुतो भोजनात् पुष्पदानात्।। सौम्यः शुक्रस्यमन्त्रीहारहरनमनाद्भार्गवः शुभ्रवस्त्रैः तैलस्नानात्प्रभाते दिनकरतनयो व्रह्महत्यां परे च।।१।। इति।।

त्रिधाशान्तिः ज्योतिः प्रकाशे।।- यथोक्तमौषधीस्नानं ग्रहविप्रार्चनं तथा।। ग्रहानुद्दिश्यहोमा वत्रिधा शांतिर्बुधे स्मृताः।।१।। श्रीपतिः।। देवव्राह्मणवन्दनाद्गुरुवचः सम्पादनात्प्रत्यहं, साधूनामपि भाषणाच्छ्रुतिरवेच्छ्रेयः कथाकर्णनात्।। होमादध्वरदर्शनाच्छुभमनोभावाज्जद्दान्तो न कुर्वन्ति कदाचिदेवपुरुषस्यैव ग्रहाः पीडनम्।।२।। इति।।

अथ दिनमानस्य १६ कलांश मुहूर्तादिज्ञानम्।

सूर्य	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
१४	९	३	८	६	४	१	दुष्क्षण
	१२	४		१२	६	२	
१४	१२	१०	८	६	४	२ दि.	कुलिका
१३	११	९	७	५	३	१ रा.	कुलिका
६	४	२	१४	१२	१०	८	कंटकक्षण
८	६	४	२	१४	१२	१९	कालवेला
७	१३	३	९	१५	५	११	अर्धयाम
८	१४	४	१०	१६	६	१२	
१०	८	६	४	१३	१४	१२	यमघंट

अत्रदोषफलमाह - वशिष्ठः।

निधनं प्रहरार्धे तु निः स्वत्वं यमघंटके।
कुलिके सर्वनाशः स्याद्यात्रावेते न दोष भाक्।।

विजोप्तिचक्र राहुभाद्दिनभाचक्रम्			गजचक्रमर्कभात्			द्वारचक्रमर्कभात्	
			स्थान	नं.	फलानि	नं.	फलानि
८	सूर्य	अशुभम्	शीर्षे	३	लक्ष्मी	४	राज्यलाभः
३	बुध	शुभम्	कण्ठे	३	श्रीलाभः	२	हानिः
४	शुक्र	अशुभम्	मुखे	२	मरणम्	४	धनप्राप्ति
३	रवि	शुभम्	हृदि	३	सुखम्	२	भयम्
१	सोम	अशुभम्	अग्रपादे	४	व्याधिः	४	मृत्युभयम्
३	मंगल	शुभम्	पृष्ठपादे	४	भीतिः	२	मृत्यु
१	बृह.	अशुभम्	पुच्छे	४	मृतिः	४	द्रव्यप्राप्तिः
३	राहु	शुभम्	पृष्ठे	४	व्याधिः	२	शोकभयम्
४	केतु	अशुभम्				२	धनलाभः

प्रयोगारम्भार्कभात्			नौकाचक्रंसूर्यभुक्तभात्			शनिचक्रंशनिभात्		
स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि
शीर्षे	३	हानिः	स्तनाग्रे	३	अशुभम्	मुखे	१	अर्थनाश
मुखे	४	सिद्धिः	मध्ये	६	शुभम्	द.भुजे	४	सुजयप्राप्ति
कण्ठे	३	मृत्युः	मुखे	३	अशुभम्	अङ्गे	६	भ्रमणम्
हस्ते	४	शत्रुभयम्	हृदि	३	अशुभम्	वा.भुजे.	४	रोगभयम्
हृदये	३	इष्टाप्तिः	पृष्ठे	१	अशुभम्	हृदये	५	श्रियागमः
उदरे	३	हानिः	अग्रे	३	अशुभम्	मस्तके	३	राज्यलाभ
कट्यां	३	इष्टाप्तिः	मुखाग्रे	३	अशुभम्	नेत्रे	२	सौख्यं
चरणे	४	धनप्राप्ति	मध्ये	३	शुभम्	गुह्ये	२	मृत्युभयं

मासदशानयनम् - गतवर्षसंख्यायां द्वादशगुणां विधाय तत्र जन्मवर्षसंख्या संयोज्यद्विहीनां तां नवभि भक्ते शेषेदशा नायको भवति।। वर्षमुद्दादशायां द्वादशो भागः मासदशाकालः।

शनिचक्रम् - द. कर. ४ - रोगः। पादयुगल ६ लाभ। वाम, ४ गमनम्। ज्वर, ५ दरिद्रता। ३- लाभम्। द. नेत्र वा. नेत्र १ - सौभाग्यम् गुदा. ९ अल्प मृत्युः।

जलाशयारम्भमुहूर्त्तः

भानि। ह. अनु. रे.उत्तरा ३ ध. श. म. रो. पुष्य, मृ. पू.षा. गुरुसितयोरस्तादि दोषरहिते चं. बु. बृ. शु. वारे च रिक्तोन तिथौ शुभः। लग्नेजीवेज्ञेऽथवा दुर्बलैश्च क्रूरैः शुक्रेवापिमेषूरणस्थे। आप्ये चन्द्रे सर्वतोयाश्रयाणामारम्भाः स्युः सिद्धये निर्विकल्पम्।

अग्नि वास

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि ह्निवासः। सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च।।

तद्चक्रम्

शेषः	अग्निवासः	फलः
१	स्वर्ग	प्राणनाशः
२	पाताले	धननाशः
३,०	मर्त्य	सुखः

विशेष-शुक्ल प्रतिपदा से तिथि गिने तथा एक जोड़े, रविवार से दिन गिने पुनः दोनो को जोड़कर चार का भाग दे वचे शेष के अनुसार फल होगा।

अथ पुरुषजन्मकुण्डल्यां १२ भावस्थ ग्रहफलानि

भावाः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र ५	रिपुः ६	जाया ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	शूरः अगदः	वक्ता रोगीधनी	सुखी विक्रमी	असुखी संविग्नः	निरस्व असुतः	बलवान् शत्रुजितः	स्त्रीजितः खलः	नेत्ररोगी अल्पायुः	सुवीर्य सुखभाक्	सुखशौर्य भाक्	बहुधन वान्	व्यंगः पतितः
चन्द्रः	सुरूपः अन्धः	कुटुम्बी धनी	हिंस्र सात्विकः	ससुखी सुशीलः	धनी पुत्रवान्	अल्पायुः बहुशत्रुः	ईर्ष्यंरतीव्र मदः	रोग पीडितः	सौभाग्यः धनीच	धर्मार्थ शौर्ययुतं	ख्यातः सुलाभः	अंगहीनः हिंस्र
भौमः	क्रूरः व्रणी	कोपी कुटिलः	विक्रमी- सुधीः	विसुखः पीड़ितः	असुतः दरिद्रः	अरिजितः सुखी	दाराजित रणरुचिः	अल्पपुत्रः रोगी	पापरतः दुर्मनोरथः	सुखैश्वर्य वान्	बहुधनी सुखी	जातिभ्रष्टः दारहा.
बुधः	विद्वान् सुखी	धनी गुणी	दुर्ज्जनः अरिमर्दनः	पंडितः सुखी	मन्त्री असुतः	अशत्रुः विशीलः	धर्मज्ञः सुकीर्ति	सद्गुणी धनी	पुत्रार्थः सुखभाक्	सुखी पराक्रमी	यशस्वी धनी	अज्ञः पतितः
गुरु	चिरायुः विद्वान्	सुवाक् धनी	कृपणः पापी	सुखी धनी	धीमान् प्रतापी	अशत्रुः कामी	पितृतो- ऽधिकः	नीचः अल्पायुः	तपस्वी पुत्रवान्	सधनः सुकृतः	सलाभः पुत्रप्राप्तः	खलः दरिद्रः
शुक्रः	सुकामी सुखी	धनी सु-वाक्यं	पापी कृपणः	सुखी सुधीः	सुखी धीमान्	रोगी अशत्रुः	कलह प्रियः	नीचः दीर्घायुः	प्रतापी तपस्वी	सुधनी मानवान्	सुमतिः सलाभः	खलः बंधुनाशः
शनिः	आलसी रोगी	वक्तारः गोधनी	मति विक्रमवान्	विसुखः दुःखी	दरिद्री विपुत्रः	शत्रुजित सुखी	स्त्रीजित दुःखी	नेत्ररोगी अल्पपुत्रः	सुतीर्थ सुखभाक्	सुखी पराक्रमी	प्रभूत धनवान्	दुखीः पतितः
राहुः	सुकामी रोगी	अधमः विरोधी	सुधी विक्रमी	असुखी मातृहानि	कुमित्रः दुर्भगः	सबलः श्रीयुत्	सप्रमेह दुराचारी	रोगी गतायुः	सबलः दैन्ययुक्तः	सुखी मानी	धनीअपुत्र ख्यातः	कष्टः पतितः
केतुः	गतायुः सकामः	खलः धनहानिः	शूरः पराक्रमी	मातृहानि दुःखी	असुतः मूर्खः	धनी सवीर्य्यः	प्रमेह रोगी	क्लेशयुक्तः व्रणी	पापी दुर्भगः	श्रेष्ठपितृ हानिः	सधनः पराक्रमी	दुर्जनः पतितः
गुलिका	रोगार्तः सम्बन्धीः	क्रोधी विषयी	विशोदरः अशोकः	रोगी पापकृत	स्वल्पपुत्रः अल्पायु	रिपुहन्ता विनोदी	कुदारः कृतघ्नः	चिन्तित दुःखी	पापकृत निर्दयी	सुखी विमानः	सुधनी विपुत्रः	हीनांग नीचरताः

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां १२ भावस्थग्रहाणां फलजातकोक्तम्।

श्रीः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र ५	रिपुः ६	पति ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	विधवा सक्रोधा	दरिद्रा दुखार्ता	सुत धनान्विता	दरिद्रा सुपीड़ा	नष्टा- त्मजा	सुख धनाढ्या	सर्वसुख विमुक्ता	विधवा दुःखार्ता	धन धर्मा- न्विता	सुकर्म- रता	सुलाभा बहुपुत्रा	सरोगा विधवा
चन्द्रः	अल्पा- युषी	बहुधन पुत्रान्विता	सुखार्थ युक्ता	सुभागार्थ युक्ता	सुपुत्रा संसुता	सरोगा विधवा	पतिप्रिया सुदेहा च	रोगार्दिता कुनेत्रा	सुख पुत्रा- न्विता	धनधर्म युक्ता	भव्य विधिज्ञा	हीनांगी व्ययाढ्या
भौमः	विधवा दुःखार्ता	वन्ध्या सरोगा	सहज- विरहिता	दुःखार्ता विधवा	अपुत्रा कुसंगता	रोगादि रहिता	विधवा कुलटा	विधवा रोगार्ता	विधर्मा दुःखिनी	कुकर्मरता कुपुत्रा	नृपादर्थ लाभा	खला रुजार्ता
बुधः	सौभाग्य वृद्धिः	धनाढ्या सतीव	धनाढ्या पुत्रवती	सुखगृहा- न्विता	श्रीकान्ति युक्ता	गतायुषा सकोपा	विदग्धा पतिव्रता	कृतघ्ना भीतियुता	सुभगा- सुधर्मा	सत्कर्म वृद्धियुता	सुलाभा पतिव्रता	कृशांगा सुपुत्रा
गुरु	सती सुभगा	वित्तसौ भाग्ययुक्ता	सहजा- न्विता	सौख्यार्थ युक्ता	साध्वी सगुणा	बृहत्पदा सत्यहोत्री	सौभाग्य कीर्तियुता	सरोगा विशीला	कृतज्ञा पुत्राढ्या	साध्वी सुभगा	सुपुत्रा सुस्मा	सरुजा सुव्यथा
शुक्रः	सुमुखी पतिव्रता	धनी सुवाक्या	धनाढ्य परहन्त्री	सुख कीर्तियुक्ता	सुख सुतान्विता	विसुखा दरिद्रा	पतिव्रता शास्त्ररता	विसुखा प्रमत्ता	धर्मपरा सुभगा	सुकर्मार्थ युक्ता	पुत्रार्थ लाभयुक्ता	सुव्यथा दुःखार्ता
शनिः	बन्ध्या दरिद्रा	निर्धना दुखयुक्ता	सुभगा सुदत्ता	हृद्रोगार्ता बन्ध्या	विपुत्रा विसुखा	सगुणा सुभगा	विधवा सरोगा	विधवा दुःखिता	वन्ध्या शोकार्ता	पापरता सधवा	सुलाभा सुपुत्रा	रोगार्ता शुद्धश्च
राहुः केतुः	पुत्रदा दुःखार्ता	दरिद्री दुःखार्ता	सवित्ता रोगाढ्या	रोगार्त मातृहा	सुतार्थ- रहिता	निरोगार्थ युक्ता	सदुःखा विधवा	सदुःखिता विधवा	वन्ध्या शोकार्ता	कुकर्म- रता	निरोगी सुभगाः	खला सरोगी

अथ संक्रान्तिवाहनादीनां दुष्टफलं तदाह- वाहनावपुपहारादीनां मृत्युपर्जीविनाम्। विनाशः स्याच्चरसंक्रान्तेर्वस्त्रादीनां महर्घता।। स्थितनिविष्टसुप्तान तथा ज्ञेयं विनाशनम्।।२।।

नक्षत्राणां स्वामिशुभाऽशुभादिविशेषसंज्ञा।

नक्षत्राणि	स्वामिनः	शुभाशुभः	जातयः	संज्ञाः	मुखम्	घ.उ.ने.	यात्रादोहदम्
अश्विनी	अश्विकु.	शुभम्	वैश्यः	ल.क्षि.	तिर्यक्	५०	तिलतण्डुल
भरणी	यमः	नाशकः	चाण्डालः	क्रू.उग्र.	अधः	२४	साक्षतमाषः
कृतिका	वह्नि	अशुभम्	ब्राह्मणः	मि.सा.	अधः	३०	माषः
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभम्	शूद्रः	ध्रु.स्थिर	ऊर्ध्वः	४०	गव्यम्
मृगशिरा	चन्द्रः	शुभम्	कृषकः	मृदुमै.	तिर्यक्	१४	गोघृतम्
आर्द्रा	शिवः	अशुभम्	क्रूरजातिः	ती.दा.	ऊर्ध्व.	२१	दुग्धम्
पुनर्वसु	अदितिः	शुभम्	वैश्यः	चर.च.	तिर्यक्	३०	हरिणमांसम्
पुष्य	गुरु	शुभम्	क्षत्रियः	ल.क्षि.	ऊर्ध्वः	२०	मृगारक्तम्
श्लेषा	सर्पः	अशुभम्	चाण्डालः	ती.दा.	अधः	३२	पायसम्
मघा	पितरः	शोकदः	शूद्रः	क्रू.उग्र.	अधः	३०	चाषमांसम्
पू.फा.	भगः	अशुभम्	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	अधः	२०	मृगमांसम्
उ.फा.	अर्यमा	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर	ऊर्ध्वः	१८	शशकमांसम्
हस्त	सूर्यः	शुभम्	वैश्यः	ल.क्षि.	तिर्यक्	२१	साठी
चित्रा	त्वष्टा	शुभम्	कृषकः	मृ.मै.	तिर्यक्	२०	प्रियंगु.
स्वाती	वायुः	शुभम्	क्रूरजातिः	चं.च.	तिर्यक्	१४	अपूपम्
विशाखा	इन्द्राग्नि	अशुभम्	चाण्डालः	मि.सा.	अधः	१४	नानापक्षिणः
अनुराधा	मित्रः	शुभम्	शूद्रः	मृ.मै.	तिर्यक्	१०	सत्फलम्
ज्येष्ठ	इन्द्रः	शुभम्	कृषकः	दा.ती.	तिर्यक्	१४	कूर्ममांसम्
मूल	राक्षसः	क्षयः	क्रूराजातिः	दा.ती.	अधः	५६	सारिकमांसम्
पू.षा.	जलम्	धनहानिः	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	अधः	२४	गोधिकामांसम्
उ.षा.	विश्वदे.	हानिः	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर	ऊर्ध्वः	२०	शल्यमांसम्
श्रवण	विष्णु	वृद्धिः	चाण्डालः	च.च.	ऊर्ध्वः	१०	कृशरान्नम्
धनिष्ठ	वसवः	शुभम्	कृषकः	च.च.	ऊर्ध्वः	१०	मुद्गमोदकम्
शतभिषा	वरुणः	शुभम्	क्रूरजातिः	च.च.	ऊर्ध्वः	१८	यवपिष्टम्
पू.भा.	अजैकच.	अशुभम्	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	ऊर्ध्वः	१६	मत्स्यान्नम्
उ.भा.	अहिर्बु.	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर.	ऊर्ध्वः	२४	चित्रताम्
रेवती	पू.षा.	शुभम्	शूद्रः	मृ.मै.	तिर्यक्	२०	दध्योदनम्

नष्ट वस्तुज्ञानाय सुलोचनादिसंज्ञा

नक्षत्र	संज्ञा	दि.	लाभाऽलाभ	ता.	स्वरूपाणि
अश्विनी	मन्द	द.	यत्नलाभ	३	अश्वमुख
भरणी	मध्य	प.	दूरेश्रवण	३	योनिस्वरूपम्
कृत्तिका	सुलो.	उ.	अलाभ	६	क्षुरकाकृतिः
रोहिणी	अन्ध.	पू.	शीघ्रलाभ	५	शकटवत्
मृगशिरा	मन्द	द.	यत्नलाभ	३	मृगास्य
आर्द्रा	मध्य	प.	दूरेश्रवण	१	मणिसदृशम्
पुनर्वसु	सुलो.	उ.	अलाभ	४	गृहसदृशम्
पुष्य	अन्ध.	पू.	शीघ्रलाभ	३	बाणाकृतिः
आश्लेषा	मन्द	द.	यत्न लाभ	५	चक्राकारम्
मघा	मध्य	प.	दूरेश्रवण	५	गृहसदृशम्
पू.फा.	सुलो.	उ.	अलाभ	२	मञ्चकाकृतिः
उ.फा.	अन्ध	पू.	शीघ्र लाभ	२	खट्वाकारम्
हस्त	मन्द	द.	यत्न लाभ	५	हस्ताकारम्
चित्रा	मध्य	प.	दूरे श्रवण	१	मौक्तिकम्
स्वाती	सुलो	उ.	अलाभ	१	प्रवालाकारम्
विशाखा	अन्ध	पू.	शीघ्र लाभ	४	तोरणसमम्
अनुराधा	मन्द	द.	यत्न लाभ	४	बलिसदृशम्
ज्येष्ठा	मध्य	प.	दूरेश्रवण	३	कुण्डलाकृतिः
मूल	सुलो.	उ.	अलाभ	११	सिंहपुच्छवत्
पू.षा.	अन्ध	पू.	शीघ्र लाभ	२	गजदन्तम्
उ.षा.	मन्द	द.	यत्न लाभ	२	विमानसदृशम्
श्रवण	सुलोच.	प.	अलाभ	३	मञ्चकसदृशम्
धनिष्ठा	अन्ध	उ.	शीघ्रलाभ	४	मृदङ्गाकृतिः
शतभिषा	मन्द	पू.	यत्नलाभ	१०	वर्तुलम्
पू.भा.	मध्य	द.	यत्न लाभ	२	मञ्चकारम्
उ.भा.	सुलो.	प.	दूरे श्रवण	२	युग्मसदृशम्
रेवती	अन्ध	उ.	अ.लाभ	३२	मर्दलाकारम्

नक्षत्रस्य पादवशाच्चकष्टविलोकनचक्रम् ज्वरादि रोगोत्पत्तौ नक्षत्रस्य पादवशादत्र दिनसंख्या

दि.सं.	दानानि	१च	२च	३च	४च	जपार्थमन्त्राः
दि.९	भोजन	९	११	१०	२०	मृत्युञ्जयमन्त्रजपः
दि.११	गोऽन्नादि	०	८०	४०	११	यमायत्वेतिमन्त्रः
दि.९	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निमूर्धेतिमन्त्रः
दि.७	घृतदान	७	९	१८	३०	ब्रह्मयज्ञेतिमन्त्रः
मा.१	तिलदान	९	५	७	१०	इमंदेवेतिमन्त्रः
मृतिः	गोदान	०	१८	०	०	नमस्तेरुद्रमन्त्रः
दि.७	पित्तल	७	१५	२	२१	अदितिर्द्यौमन्त्रः
दि.७	तैलान्न	७	७	१०	२१	बृहस्पतेतिमन्त्रः
मृतिः	गोऽजानि	०	७	४१	०	नमोस्तुसर्पेतिमन्त्रः
दि.२०	वस्त्राज्य	१५	७	१७	२०	पितृभ्यइतिमन्त्रः
मृतिः	भोजन	०	१५	०	३०	भगप्रणेतिमन्त्रः
दि ७	अन्नदान	७	१४	७	६०	अर्थमर्णमन्त्रः
दि.१५	तिलदान	११	१७	१५	०	उदुर्यजातवमन्त्रः
दि.११	दुग्धदान	११	९	९	१६	त्वष्टातुर्येतिमन्त्रः
मृतिः	गो-घृत	६०	१७	३०	०	वायोरग्रेतिमन्त्रः
दि.१५	गो-स्वर्ण	१५	०	४	१३	इन्द्राग्निरितिमन्त्रः
स्थिरः	गो-घृत	६०	२२	३६	६०	नमोमित्रेतिमन्त्रः
मृतिः	तिलदानं	५९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रेतिमन्त्रः
दि.९	रोप्योपान	०	९	१५	६	मातापुत्रेतिमन्त्रः
मृतिः	गोमुक्ता	०	१५	२५	१०	आपोधर्मेतिमन्त्रः
मास१	भोजन	३०	२४	२६	१६	विश्वदेवेतिमन्त्रः
दि.११	श्रीफल	६०	२४	६	९	विष्णोरराटेतिमन्त्रः
दि.१५	अश्वान्न	१५	४	२०	२१	वसोःपवित्रेतिमन्त्रः
दि.११	भोजनान्न	०	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेतिमन्त्रः
मृतिः	भोजन	०	१२	२१	१८	अजैकचरणोक्तमन्त्रः
दि.७	अन्नदान	१०	१	९	१५	अहिर्बुध्न्येतिमन्त्रः
स्थिरः	वृषभदान	१८	१९	१९	२०	पूषान्तव्रतेतिमन्त्रः

अथ रोगार्त्तस्येष्टकालवशाद्बाधाज्ञानम्।

तिथिवारञ्च नक्षत्रं लग्नयामञ्च संयुतम्। वसुभिस्तु हरेद्भागं शेषे बाधा नियोजयेत्।। हये ७ ऽग्नौ ३ देवबाधा स्यात् पितरौ नेत्रदन्तिनः २।८ षट् चतुर्थे।। ६।४ मृतबाधा ग्रहाणामेकपञ्जके १।५।। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवमरणं वदेत्।। रामबाणरसाष्टौ च नन्दरुद्रश्च (३।५।६।८।९।११) जीवति। एक १ पक्षौ २ युगा ४ सप्तदशा, ७।१० अर्का १२ नात्र जीवति।। अन्यदपि राजमार्त्तण्डे।। वारर्क्षञ्चतिथिदिशा परिमिति संयोज्य नागैर्भजेल्लब्ध्वांकेनफलं च नाग ८ नयने २ दीर्घ पितृर्नान्यथा।। सप्ते राममिते ३ सुरस्य विदित मर्के ६ च वेदे ४ तथा। प्रेतस्यापि च खेचरस्य विदितं चन्द्रे १ बाणाधिके ५।। लब्धांकं त्रि ३ गुणं तथा वसुयुतं वेदेन गुण्यन्ततः। सप्तान्येष्वधिकं यया विधुमितं कौल्यञ्च दोषं वदेत् साम्यं वन्यभवं च राज कुलजं स्याच्छत्रुजं पंत्तिजं शून्ये व्योमभवं तथास्य विविधोपायश्च शान्तिं वदेत्। कौल्यं होमद्विजार्चनैः शुभकरं वाच्यं चतुष्कोणके। होमे वन्यभवे तिथिवरभर्वभोज्यश्च वस्त्रेण वा।। राज्ये तीर्थ पदे तयाप्यरिकृतेशक्तिक्रियादानतो गायत्री जपतोहि पंक्ति विषये आकाशजो दीपतः।। **सर्पदशने भेषजम्।।** गोमूत्रेनरमूत्रेर्वापुराणेन घृतेन वा। हरिद्रापानमात्रेण विषं हन्ति चराचरम्।। दशवर्षात्परं सर्पिः पुराणमिति कथ्यते। गोक्षीरे रजनीक्वाथं पिवेत्सर्वविषापहम्।।

सप्तमांश चक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.	अं.
१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	४ १७ ८
२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	८ ३४ १७
३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	१२ ५१ २५
४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	१७ ८ ३४
५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	२१ २५ ४२
६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ शु.	२५ ४२ ५१
७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	३० ०

अथात्र नवांशचक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.	क.
मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	३	२०
शु.	श.	गं.	सू.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	६	४०
बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	१०	०
सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	१३	२०
र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	१६	४०
बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	२०	०
शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	२३	२०
मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	२६	४०
गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	३०	०

द्वादशांश चक्रमिदम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.	अं.	कं.
मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	२	३०
शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	५	०
बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	७	३०
सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	१०	०
र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	१२	३०
बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	१५	०
शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	१७	३०
मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	२०	०
गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	२२	३०
श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	२५	०
श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	२७	३०
गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	३०	०

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ चैत्र शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं याम्यगोलः मेषार्कतः सौम्यगोलः बसन्तऋतुः।
दिनांक ९ - २३ अप्रैल सन् २०२४ ई.। (रा.चैत्र २० - वैशाख ३)

दि.मा. घ.	प.	चैत्र शु. ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ.+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
३१	१२	१	मंगल	३९	५५	रात	९	४४	रेवती	५	५९	दिन	८	९	वैधृति	२३	५०	दिन	३	१७	किं	१२	३८	बव	३९	५५	शुभ	९	१५	२६	२०	मेष	५	५९	५	४६	६	१४	७	२०	११	२५	२२	५२	५८	५२	-	०	७	४
३१	१४	२	बुध	३४	५९	रात	७	४५	अश्विनी भरणी	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	विष्कुंभ	१६	५४	दिन	१२	३०	बा	७	२७	को	३४	५९	मृत्यु	१०	१६	२७	२१				५	४५	६	१५	७	४२	११	२६	२१	४४	५८	५०	-	१	८	१२
३१	१७	३	गुरु	३०	५२	सायं	६	६	कृत्तिका	५७	५६	रात	४	५४	प्रीति	१०	३४	दिन	९	५८	ते	२	५६	गर व	[illegible]	[illegible]	लुम्बक	११	१७	२८	२२	वृष	१४	२१	५	४५	६	१५	८	५	११	२७	२०	३४	५८	४८	-	१	९	१९
३१	२१	४	शुक्र.	२७	४२	दिन	४	४९	रोहिणी	५६	५७	रात	४	३१	आयुष्मान	४	५५	दिन	७	४२	वि	२७	४२	बव	५१	२६	मित्र	१२	१८	२९	२३				५	४४	६	१६	८	२७	११	२८	१९	२२	५८	४५	-	१	१०	२५
३१	२५	५	शनि.	२५	३०	दिन	३	५५	मृगशिरा	५७	५	रात	४	३३	सौभाग्य शोभन	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	बा	२५	३०	को	५५	०	वज्र	१३	१९	३०	२४	मिथुन	२७	२	५	४३	६	१७	८	४९	११	२९	१८	७	५८	४३	-	२	११	२८
३१	३०	६	रवि.	२४	३१	दिन	३	३१	आर्द्रा	५८	२८	रात	५	६	अतिगण्ड	५३	१८	रात	३	२	ते	२४	३१	गर	५८	४१	ध्वांक्ष	१४	२०	१	२५				५	४३	६	१७	९	११	०	०	१६	५०	५८	४१	-	२	१२	२३
३१	३४	७	सोम	२४	५०	दिन	३	३८	पुनर्वसु	६०	०	स	म	स्त	सुकर्मा	५१	२१	रात	२	१४	व	२४	५०	वि	५५	४०	धूम्र	१५	२१	२	२६	कर्क	४५	३१	५	४२	६	१८	९	३२	०	१	१५	३१	५८	३९	-	२	१	१२
३१	३७	८	मंगल	२६	२९	दिन	४	१७	पुनर्वसु	१	१२	प्रातः	६	१०	धृति	५०	२८	रात	१	५२	बव	२६	२९	बा	५७	५२	स्थिर	१६	२२	३	२७				५	४१	६	१९	९	५४	०	२	१४	१०	५८	३६	-	२	१	५३
३१	४०	९	बुध	२९	१३	दिन	५	२२	पुष्य	५	३	दिन	७	४२	शूल	५०	२८	रात	१	५२	को	२९	१३	ते	६०	०	मातंग	१७	२३	४	२८				५	४०	६	२०	१०	१५	०	३	१२	४४	५८	३४	-	२	२	३०
३१	४४	१०	गुरु	३३	१	सायं	६	५६	श्लेषा	९	५६	दिन	९	३८	गण्ड	५१	१५	रात	२	१०	ते	१	११	गर	३३	१	अमृत	१८	२४	५	२९	सिंह	९	५६	५	४०	६	२०	१०	३६	०	४	११	१८	५८	३२	-	३	३	१
३१	४७	११	शुक्र.	३७	४४	रात	८	४५	मघा	१५	५२	दिन	१२	०	वृद्धि	५२	३०	रात	२	३९	व	५	२६	वि	३७	४४	काण	१९	२५	६	३०				५	३९	६	२१	१०	५७	०	५	९	५०	५८	३०	-	३	३	३०
३१	५०	१२	शनि.	४२	५९	रात	१०	५०	पूर्वाफा.	२२	१७	दिन	२	३४	ध्रुव	५४	५	रात	३	१७	बव	१०	२१	बा	४२	५९	लुम्बक	२०	२६	७	३१	कन्या	३९	०	५	३८	६	२२	११	१८	०	६	८	२०	५८	२७	-	३	२	५८
३१	५३	१३	रवि.	४८	१३	रात	१२	५५	उत्तराफा.	२८	५३	सायं	५	११	व्याघात	५५	४०	रात	३	५४	को	१५	३६	ते	४८	१३	मित्र	२१	२७	८	१				५	३८	६	२२	११	३८	०	७	६	४७	५८	२५	-	३	४	२५
३१	५६	१४	सोम	५२	५५	रात	२	४७	हस्त	३५	१५	रात	७	४३	हर्षण	५६	५०	रात	४	२१	गर	२०	३०	व	५२	५५	वज्र	२२	२८	९	२				५	३७	६	२३	११	५७	०	८	५	१२	५८	२३	-	४	४	५४
३१	५९	१५	मंगल	५७	५	रात	४	२६	चित्रा	४०	५५	रात	९	५८	वज्र	५७	३०	रात	४	३७	वि	२५	०	बव	५७	५	ध्वांक्ष	२३	२९	१०	३	तुला	८	५	५	३६	६	२४	१२	१३	०	९	३	३५	५८	२१	-	४	५	२५

मेषराशिः दिवा ८।९ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। चान्द्र नवसंवत्सर २०८१ विक्रमी, वासन्तिक नवरात्रश्च आरम्भः। शैलपुत्री तथा च नवगौरी यात्रा क्रमेण मुखनिर्मालिका(क)
चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.१५ जघन्या महर्घताकरम्। याम्यश्रृंगम् दुर्भिक्षं। ब्रह्मचारिणीदेवी, ज्येष्ठागौरीदर्शनपूजनञ्च। सिन्धारा द्वितीया २। झूलेलाल जयन्ती २, चेती चाँद। (ख)
वृषराशिः दिवा ११।२९ वादने। भद्रा ५६।३७ (रा.श.४।२४) उ. (स्वर्ग)। मु.सव्वाल १० हिजरी सन् १४४५। इदुल फितर (ईद)। चन्द्रघण्टादेवी सौभाग्यगौरी दर्शनपूजनञ्च।(ग)
भद्रा २७।४२ (दि.४।४९) या.। कुष्माण्डादेवी श्रृंगारगौरीयात्रादर्शनम्। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। पुष्पाञ्जली ४ (जैन)। (ङ) दिनस्य पूर्वार्धे संक्रान्ति जन्य पुण्यकालः।
मिथुनराशिः दि.४।३२ वादने। स्कन्दमाता, विशालाक्षी गौरी यात्रादर्शनम्। श्रीपंचमी ५। श्रीरामराज्य महोत्सवः। मीनावतारः ५ कल्यादिः ५ लक्ष्मी पूजनम्। ☉ सं.अश्विनी(घ)
कात्यायनी देवी ललितागौरी दर्शनपूजनञ्च। श्रीस्कन्दषष्ठी रवि षष्ठी ६ व्रतम् (चैती छठ)। श्रीस्कन्ददमनकोत्सवः। सौर वैशाखमासारम्भः। डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती।(ङ)
कर्कराशिः रात्रि ११।५४ वादने। भद्रा २४।५० (दि.३।३८) उ. ५५।४० (रा.३।५८) या. (स्वर्ग-मर्त्य)। कालरात्रि भवानी गौरी यात्रा दर्शनम् पूजनञ्च। बलिदानादिकञ्च महानिशा८।(च)
महाष्टमी ८ व्रतम्। महागौरीदेवी-मंगलागौरी यात्रा दर्शनम् पूजनञ्च। महानिशा (नवमी पूजा)। भवान्युत्पत्तिः। अन्नपूर्णापरिक्रमा २६।२९ (दि.४।१७) या.। अशोक(छ)
महानवमी ९ व्रतम्। श्रीरामनवमी ९ व्रतम्। सिद्धिदात्री देवी श्रीमहालक्ष्मी गौरीदर्शन पूजनञ्च। यावन्नवमी होमादिकञ्च दिवा (सायं) ५।२२ वादनम् यावत्। श्री रामावतारः९।(ज)
सिंहराशिः दिवा ९।३८ वादने। पारणा नवरात्र व्रतस्य प्रातरेव। 'दशम्यामेव नवरात्र व्रतीनाम् पारणा।' रवियोगःयावद्दिनम्। (ञ) ४२।५९ (रा.१०।५०) या.।
भद्रा ५।२६ (दि.७।४२) उ. ३७।४४ (रा.८।४५) या. (मर्त्य)। कामदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। श्रीविष्णु दोलोत्सवः सायं दोलाधिरूढयोः लक्ष्मी नारायण पूजयेत्।
कन्याराशिः रात्रि १।१४ वादने। श्री भीमचण्डी विन्ध्याचली देवी दर्शन यात्रा। मदन द्वादशी १२। श्रीविष्णुदमनकोत्सवः। शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्कर योगः २२।१७ (दि.२।३४)उ.(ञ)
प्रदोष व्रतम १३। श्रीमहावीर जयन्ती १३ (जैन)। श्रीअनंग त्रयोदशी १३ व्रतम्। मदन पूजा १३। राष्ट्रीय वैशाख मासारम्भः। सर्वार्थसिद्धियोगः २८।५३ (सा.५।११) या. तदुपरि(ट)
भद्रा ५२।५५ (रा.२।४७) उ. (पाताले)। (ट) रवि हस्त सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगौ। (ख) बालेन्दु व्रत २। बुधे-भद्रासिद्धयोगः ३४।५९ (रा.७।४५) या.।
तुलाराशिः दिवा ८।५० वादने। भद्रा २५।० (दि.३।३६) या.। स्नानदानव्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। चैत्री पूर्णिमा १५। श्रीहनुमज्जयन्ती १५ (दाक्षिणात्य)। काश्यां संकटमोचन(ठ)

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.५ शनौ-रात्रि ११।१९वादनात्परं खरमास उपरान्त मृगशिरा नक्षत्रे रेखा ७ लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (चं.दा.) तत्परं पंचेष्टाभावः।
ति.१० गुरौ-दिवा ९।३८वादनात्परं मघायां रेखा ७ दिवा लग्नं ३ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१५।। या लग्नं ४ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.२५ (भौ.दा.) वा लग्नं गोधूलिः वा रात्री लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि १० वा लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२(चं.दा.) वा लग्नं १२ पंचेष्टाभावः।
ति.११ शुक्रे-भद्रा दिवा ७।४९वादनात्पूर्व दिवा लग्नं पंचेष्टाभावः।
ति.१२ शनौ-दिवा २।३४ वादनात्परं उ.फा. रेखा ६ लग्नं गोधूलिः वा रात्री लग्नं ८ इ.६ ग्र.व. वि.१७ वा लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ रात्रि ३।५२ उपरान्त उ.फा. ३ चरणे राहुवेधः।
ति.१३ रवौ-दिवा १०।३१ वादनात्पर उ.फा. चतुर्थ चरणे रेखा ६ दिवा लग्न पंचेष्टाभावः। सायं ५।११ वादनात्परं हस्त नक्षत्र रेखा ७ लग्नं गोधूलिः वा रात्री लग्नं ८ इ.६ग्र.व.वि.१७ वा लग्नं वा ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०, वा लं.११ इष्टाः५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं १२ पंचेष्टाभावः।
ति.१४ सोमे-हस्त नक्षत्रे रेखा ७ दिवा लग्नं पंचेष्टाभावः वा लग्नं गोधूलिः रात्रि ७।४३ वादनम् यावत्।
ति.१५ भौमे-रात्रि [illegible]

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ म.	१२	२८	२९	१७	१०	१९	१७	२६	४६	३७	०	०	२७	३१	३५	२०	०	२४	५७	१६	१३	२९	११	११	२	४९	७४	६	१०	२०	२४	१५	६	१९	११	२१	२८	४३
२ बु.	०	१२	२१	२९	१०	२०	४	३	४६	३६	११	२९	५२	११	३७	३४	०	२५	१०	४५	१३	३०	११	१२	१६	५५	७४	६	१०	२०	३०	३४	६	१७	११	२१	२५	३२
३ गु.	[illegible]																																					
४ शु.	[illegible]																																					
५ श.	[illegible]																																					
६ र.	[illegible]																																					
७ सो.	[illegible]																																					
८ मं.	[illegible]																																					
९ बु.	[illegible]																																					
१० गु.	[illegible]																																					
११ शु.	४	१०	२८	५४	१०	२७	०	५०	४६	२६	११	२४	१०	३७	२८	४१	०	२७	१२	४४	१३	४२	[illegible]															
१२ श.	४	२२	३८	१३	१०	२७	४७	१६	४६	२६	११	२३	४१	५३	२५	४७	०	२७	२६	२५	१३	४३	११	२४	३७	१४	७४	०	१०	२१	३०	४७	५	४५	११	२०	५३	४४
१३ र.	५	४	३८	५६	१०	२८	३३	४२	४६	२३	११	२३	१६	९	२३	३८	०	२७	४०	८	१३	४३	११	२५	५१	१४	७३	५७	१०	२१	३६	३२	५	४३	११	२०	५०	३३
१४ सो.	५	१६	४५	११	१०	२९	२०	५	४६	२१	११	२२	५२	३१	२०	४५	०	२७	५३	५१	१३	४४	११	२७	५	११	७३	५७	१०	२१	४२	१५	५	४१	११	२०	४७	२२
१५ मं.	५	२८	३७	४१	११	०	६	२६	४६	२०	११	२२	३१	४६	२०	४२	०	२८	७	३५	१३	४४	११	२८	१९	८	७३	५७	१०	२१	४७	५६	५	३८	११	२०	४४	११

फलम्- संवत्सर का प्रथम दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा मंगल.९ अप्रैल २०२३ ई. वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण एवं पुनीत दिवस है। आज ही के दिन श्री ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी इसलिए आज के दिन को हम सनातनधर्मी महोत्सव के रूप में मनाते है। आज के दिन ही जो वार पड़ता है उसी को वर्ष का राजा मानते हैं। इस प्रकार मंगल वर्ष के राजा हुए हैं। गौर नवरात्र भी आज से शुरू हो जायेगा कलश स्थापन मध्यान में अभिजित मुहूर्त ११।३६ मिनट से १२।२४ के बीच में किया जायेगा, क्योंकि वैधृति नामक योग पड़ रहा है जो निषिद्ध है। विकल्प में वैधृति ३।१७ बजे के बाद से सूर्यास्त समय तक भी कलश स्थापन किया जा सकता है। प्रत्येक सनातनधर्मियों का घर तोरण आदि से सुसज्जित किये जाने का शास्त्रसम्मत विधान है। चैत्र नवरात्र में भगवती के साथ गौरी का भी दर्शन पूजन प्रतिदिन क्रमानुसार किया जायेगा। चैती छठ १४ अप्रैल रविवार को मनाई जायेगी एवं इनको भी डाला-छठ के विधान के अनुसार ही मनाये जाने का विधान है। अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि की सूर्य संक्रान्ति १३ अप्रैल दिन शनि. को रात ११।११ बजे से आयेगी। इसी को सतु संक्रान्ति अथवा सतुआ संक्रान्ति भी कहते हैं। इसी के साथ खरमास समाप्त हो जायेगा। मेष संक्रान्ति के दिन शनिवार पड़ने के कारण शनि इस वर्ष के मन्त्री हो गये। महाष्टमी व्रत का मान १६ अप्रैल मंगल. को होगा। घर-घर की जाने वाली नवमी की पूजा भी १६ अप्रैल मंगलवार को की जायेगी। इसे भवानी उत्पत्ति के साथ बसियउरा के रूप में भी मनाते हैं। महानवमी का व्रत १७ अप्रैल बुधवार को होगा। नवरात्र की समाप्ति से सम्बन्धित हवन पूजा नवमी तिथि पर्यन्त १७ अप्रैल बुधवार को सायं ५।२२ बजे तक किया जायेगा। रामावतार का महान पर्व श्रीराम नवमी सनातनियों के लिए विशेष महत्वपूर्ण होता है और इसका मान भी १७ अप्रैल बुधवार को होगा। सर्वत्र विशेषकर रामलला की जन्मस्थली अयोध्या में विशेष धूम-धाम शास्त्रीय एवं पारम्परिक विधान के अनुसार इसको मनाया जायेगा। सर्वत्र 'भए प्रकट कृपाला' की मधुस्वर लहरी मन कुछ राममय कर देगी। गोस्वामी तुलसीदास ने आज के दिन से ही श्रीरामचरित मानस की रचना प्रारम्भ की थी। इसके उपलक्ष्य में मानस जयन्ती मनायी जायेगी। पूर्ण नवरात्रि व्रत की पारणा दशमी तिथि में प्रातः १८ अप्रैल गुरुवार को की जायेगी। कामदा एकादशी व्रत का मान सबके लिए १९ अप्रैल शुक्र. को होगा। विन्ध्यवासिनी भवानी की यात्रा एवं दर्शन पूजन २० अप्रैल शनि. को किया जायेगा। प्रदोष का व्रत २१ अप्रैल रवि. को किया जायेगा। जैन जगत का सबसे महत्वपूर्ण एवं पवित्र पर्व महावीर जयन्ती २१ अप्रैल रवि. ●

पं.१ चैत्र शुक्ल ८ भौमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३३८१
अयनांशाः २४/१०/४८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	१०	११	०	११	१०	११	५
२	३	२४	२५	२६	१९	२१	२१	२१
[illegible]								



भौमादीनां चारः

भौमः-१ भौमे पूर्वाभाद्रपदे रात्रि २।१० वादने १४ सोमतः मीन राशौ रात्रि ३।५० वादने। बुधः-(वक्री) १ भौमतः मीन राशौ रात्रि १।५५ वादने। गुरुः-भरण्यां मेष राशौ ८ भौमतः कृत्तिकायां रात्रि १०।३० वादने। शुक्रः-मीन राशौ पूर्वाभाद्रपदे। शनिः-पू.भा.१ चरणे। राहुः-रेवत्याम् २ चरणे, केतुश्च-हस्ते ४ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

चैत्र शुक्ल

लग्नांत ति.वा.	१ मं. घं.	मि.	२ बु. घं.	मि.	३ गु. घं.	मि.	४ शु. घं.	मि.	५ श. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	६ र. घं.	मि.	७ सो. घं.	मि.	८ मं. घं.	मि.	९ बु. घं.	मि.	१० गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१३ र. घं.	मि.	१४ सो. घं.	मि.	१५ मं. घं.	मि.
मीन	५	५८	५	५५	५	५१	५	४८	५	४४	मेष	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५४	६	५०	६	४६
मेष	७	३९	७	३६	७	३३	७	२९	७	२५	वृष	९	१८	९	१४	९	११	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२
वृष	९	३५	९	३२	९	३०	९	२६	९	२२	मिथुन	११	३१	११	२७	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६
मिथुन	[illegible]										कर्क	[illegible]																			
कर्क	[illegible]										सिंह	[illegible]																			
सिंह	[illegible]										कन्या	[illegible]																			
कन्या	[illegible]										तुला	[illegible]																			
तुला	[illegible]										वृश्चिक	[illegible]																			
वृश्चिक	[illegible]										धनु	[illegible]																			
धनु	१	१२	१	९	१	५	१	२	१२	५८	मकर	२	३९	२	३५	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४
मकर	२	५७	२	५३	२	५०	२	४७	२	४३	कुम्भ	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	२५
कुम्भ	४	२८	४	२५	४	२२	४	१८	४	१५	मीन	५	३६	५	३२	५	२९	५	२५	५	२१	५	१८	५	१५	५	११	५	७	५	३

विविध मुहूर्त्ताः तिथि १ भौमे-रेवत्यां-अश्विन्यां पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं शल्यकर्म अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि २ बुधेः-भरण्यां धान्यच्छेदनं क्रयविक्रयः। तिथि ३ गुरौ-कृत्तिकायां-धान्यच्छेदन सामान्य क्रय-विक्रयः। तिथि ४ शुक्रे-भद्रात्परं रोहिण्यां नीलमादि रत्न कृष्णवस्त्र धारणं गर्भाधानं नववस्त्राभूषण धारणं कर्णमर्दनं, दक्षिण-पूर्व दिग् यात्रा। तिथि५ शनौः-मृगशिरायां नीलमादि रत्नकृष्ण वस्त्र धारण दक्षिण दिग् यात्रा। तिथि ६ रवौ-आर्द्रायाम् शस्त्रआदि निर्माणं उग्रकर्माचरणं। तिथि ७ सोमे-पुनर्वसौ भद्रापूर्व अन्नप्राशनं, आभूषण निर्माणं धारणं च द्विरागमनं ल.२, हलप्रवहणं बीजवपनं, शय्यासनाद्युपभोगं सर्वदेव प्रतिष्ठाजलाशयवाटिकारम्भ वाहन क्रय पश्चिम दिग् यात्रा। तिथि ८ भौमे-पुनर्वसौ पुष्ये च लालवस्त्र धारणं शल्यकर्म। तिथि ९ बुधे-पुष्ये रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। तिथि १० गुरौ-श्लेषायां विद्यारम्भः उपनयनं ल.३, धान्यच्छेदनं जलयन्त्रकर्म दिवा ९।३८ उपरान्त मघायां वधूप्रवेश ल.३ वा गोधूलि वरवरणं-कन्यावरणं शय्यासनाद्युपभोगं भूमिक्रयः। तिथि ११ शुक्रे-भद्रा दिवा ७।४९ वादात्पूर्व हलप्रवहणं बीजवपनं शय्यासनाद्युपभोगं भूमिक्रयः। तिथि १२शनौ-पू.फा. शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं कन्या चन्द्रे दक्षिणदिग् यात्रा। तिथि १३ रवौ-उ.फा. पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं वरवरणं कन्यावरणं विपणिव्यापारः लालवस्त्र धारणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं सर्वदेव प्रतिष्ठाः, जलाशयवाटिकारम्भ ल.२ वा ५ दक्षिणपूर्व दिग् यात्रा। ति.१४ सोमे-हस्त नक्षत्रे रोगविमुक्त स्नानं। ति.१५ भौमे-चित्रायां लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं हलप्रवहणं दिवा ८।५०वादनात्पर पश्चिम दिग् यात्रा।

पं.२ चैत्र शुक्ल १५ भौमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३३८८
अयनांशाः २४/१०/४९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	५	११	११	०	११	१०	११	५
९	२८	०	२२	२८	२८	२१	२०	२०
[illegible]								



राशिफलम्

मेष-धनागमः	तुला-शत्रु भयं
वृष-धनप्राप्तिः	वृश्चिक-पुत्रोन्नतिः
मिथुन-धनक्षयः	धनु-धनलाभः
कर्क-सुखहानि	मकर-अर्थलाभः
सिंह-धनप्राप्तिः	कुम्भ-धनप्राप्तिः
कन्या-शोकः	मीन-सुखं संकुलाः

(क) गौरी दर्शन पूजनञ्च। कलश स्थापनम् अभिजिन्मुहूर्त्तः दिवा ११।३६ वादनात्परं १२।२४ वादनम् यावत् ध्वजारोपणम्, पञ्चांगफलश्रवणम्। वर्षपति पूजनम्। नववर्षोत्सवः। सान्याङ्ग स्नानम् प्रपा (पौसरा) दानारम्भः। अद्य प्रातः कालात् 'पिंगल' नाम संवत्सरस्य पूजनम् विनियोगञ्च धार्मिककृत्ये प्रारम्भः। कल्यादिः १। युगादिः १। गुड़ी पड़वा (मराठा)। उगादि (द.भा.) तेलगुनव-[illegible] (ख) [illegible] (ग) [illegible] (घ) नवग्रह [illegible] खरमास समाप्तिः। [illegible] (ङ) [illegible] (च) [illegible] (छ) [illegible] (ज) मध्याह्ने कर्क लग्ने श्रीराम जन्म महोत्सवः सर्वत्र विशेषतो अयोध्यायाम्, श्रीराम जन्म भूमि राम लला दर्शनम्, सरयू स्नानम्। श्रीरामचरितमानस जयन्ती। स्वामी नारायण जयन्ती ९ (अक्षरधाम)। (ठ) मन्दिरे संगीत महोत्सवः। सर्वदेव-दमनकोत्सवः। मनवादिः १५। नवपद ओली समाप्तिः (जैन)। श्रीहरिकथा [illegible] (मधुरा)[illegible] पूर्व दिशा, सूर्योदयः।

● [illegible]

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ वैशाख कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः बसन्त ऋतुः। दि.२४ अप्रैल - ८ मई सन् २०२४ ई.। (रा. वैशाख ४ - १८)

पूर्वदिशायाम् शुक्रास्तः २९ अप्रैल २०२४ पश्चिम दिशायाम् गुरु अस्तः ६ मई २०२४

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. ३+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	
३२	१	१	बुध.	६०	०	स	म	स्त	स्वाती	४५	४२	रात	११	५३	सिद्धि	५७	२०	रात	४	३२	बा	२८	३५	को	६०	०	धूम्र	२४	१	११	४				५	३६	६	२४	१२	३९	०	१०	१	५६	५८	१९	-	४	६	५२	फसली वैशाख मासारम्भः। कच्छपावतारः१। युगादिः १। यावन्मासं प्रपा (पौसरा) धर्मघटादि दानम्, तुलसी पत्रेण श्रीविष्णु पूजनम्। गलन्तिकारम्भः। अश्वत्थ (पीपल) नीम्बमूले(क)
३२	५	१	गुरु.	०	४	प्रातः	५	३७	विशाखा	४९	२३	रात	१	२०	व्यतिपात	५६	१४	रात	४	५	को	०	४	ते	३१	२	प्रवर्धमान	२५	२	१२	५	वृश्चिक	३३	३०	५	३५	६	२५	१२	५९	०	११	०	१५	५८	१७	-	४	७	४९	वृश्चिकराशिः सायं ६।५९ वादने। सर्वार्थसिद्धियोगः ४९।२३ (रा.१।२०) उ.। (ख) शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः २।३४ (दि.६।३६) उ.।
३२	८	२	शुक्र.	२	१	दिन	६	२२	अनुराधा	५१	४८	रात	२	१७	वरीयान	५४	१०	रात	३	१४	गर	२	१	व	३२	१७	राक्षस	२६	३	१३	६				५	३४	६	२६	१३	१८	०	११	५८	३२	५८	१५	-	४	८	४९	भद्रा ३२।१७ (सा.६।२९) उ. (स्वर्ग)। आशा द्वितीया (आसादूज)। शुक्रे वृद्धत्वारम्भः रात्रि ११।२० वादनात्। सर्वार्थसिद्धियोगः ५१।४८ (रा.२।१७) या.।
३२	११	३	शनि.	२	३४	दिन	६	३६	ज्येष्ठा	५२	५५	रात	२	४३	परिघ	५१	५	रात	२	०	वि	२	३४	बव	३२	११	मुसल	२७	४	१४	७	धनु	५२	५५	५	३४	६	२६	१३	३८	०	१२	५६	४७	५८	१२	-	५	९	५१	धनुराशिः रात्रि २।४३ वादने। भद्रा २।३४ (दि.६।३६) या.। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.९।५१) वादने चन्द्रार्घ अर्घ्यम्। ☉भरणी नक्षत्रे रविः २४।२० (दि.३।१८)।(ख)
३२	१४	४/५	रवि.	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	मूल	५२	५१	रात	२	४१	शिव	४७	०	रात	१२	२१	बा	१	४८	को/ते	[illegible]	[illegible]	सिद्धि	२८	५	१५	८				५	३३	६	२७	१३	५७	०	१३	५४	५९	५८	१०	-	५	१०	४८	अनुसूया जयन्ती ४। सर्वार्थसिद्धियोगः ५२।५१ (रा.२।४१) या.। (ग) भौम-जया सिद्धयोगः ५२।४० (रा.२।३३) उ.।
३२	१८	६	सोम	५६	४४	रात	४	१४	पूर्वाषाढ़ा	५१	४०	रात	२	१२	सिद्ध	४२	५	रात	१०	२२	गर	२७	२३	व	५६	४४	उत्पात	२९	६	१६	९				५	३२	६	२८	१४	१६	०	१४	५३	९	५८	८	-	५	११	४४	भद्रा ५६।४४ (रा.४।१४)उ. (पाताले)। पूर्व दिशायाम् शुक्रास्तः रात्रि ११।२० वादने। दोष संघ विनाशकारियोगः ५१।४० (रा.२।१२) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ५६।४४(रा.४।१४)उ.।
३२	२१	७	मंगल	५२	४०	रात	२	३३	उत्तराषाढ़ा	४९	३९	रात	१	२३	साध्य	३६	३७	रात	८	२	वि	२४	४२	बव	५२	४०	मानस	३०	७	१७	१०	मकर	६	१०	५	३२	६	२८	१४	३४	०	१५	५१	१६	५८	६	-	५	१२	३४	मकरराशिः दिवा ८।० वादने। भद्रा २४।४२ (दि.३।२५) या.। गुरु अर्जुन देव जयन्ती। रवियोगः ४९।३९ (रा.१।२३) या.। शुभाशुभत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ४९।३९ (रा.१।२३)या.।(ग)
३२	२४	८	बुध	४७	५१	रात	१२	३९	श्रवण	४६	४२	रात	१२	१२	शुभ	२९	५३	सायं	५	२९	बा	२०	१५	को	४७	५१	छत्र	१	८	१८	११				५	३१	६	२९	१४	५३	०	१६	४९	२२	५८	४	-	५	१	१९	श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम् पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम्। बुधाष्टमी पर्वः सूर्यग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय।
३२	२७	९	गुरु	४२	२३	रात	१०	२८	धनिष्ठा	४३	१३	रात	१०	४७	शुक्ल	२२	५२	दिन	२	३९	ते	१४	३७	गर	४१	२३	श्रीवत्स	२	९	१९	१२	कुंभ	१५	१	५	३१	६	२९	१५	११	०	१७	४७	२६	५८	२	-	५	२	०	कुम्भराशिः दिवा ११।३१ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। चण्डिका नवमी ९। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४२।२३ (रा.१०।२८) या.।
३२	३०	१०	शुक्र	३६	३२	रात	८	७	शतभिषा	३९	१८	रात	९	१४	ब्रह्म	१५	३०	दिन	११	४२	व	८	५७	वि	३६	३२	सौम्य	३	१०	२०	१३				५	३०	६	३०	१५	२९	०	१८	४५	२८	५८	०	-	५	२	३६	भद्रा ८।५७ (दि.९।१५) उ. ३६।३२ (रा.८।७) या. (मर्त्य)। गुरु वार्द्धक्यारम्भः रात्रि ११।० वादनात्। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ३६।३२ (रा.८।७) उ.।
३२	३३	११	शनि.	३०	२७	दिन	५	४०	पूर्वाभाद्र.	३५	१३	रात	७	३४	ऐन्द्र	७	५५	दिन	८	४०	बव	३	२९	बा/कौ	[illegible]	[illegible]	कालदण्ड	४	११	२१	१४	मीन	२१	१२	५	२९	६	३१	१५	४६	०	१९	४३	२८	५७	५८	-	५	३	११	मीनराशिः दिवा १।५८ वादने। वरुथिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती ११। शुभाशुभत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ३०।२७ (दि.५।४०) उ. ३५।२३ (रा.७।३४)या.।
३२	३६	१२	रवि.	२४	२०	दिन	३	१३	उत्तराभाद्र.	३२	२	सायं	५	५३	वैधृति/विष्कम्भ	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	ते	२४	२०	गर	५१	२२	स्थिर	५	१२	२२	१५				५	२९	६	३१	१६	४	०	२०	४१	२६	५७	५६	-	५	३	४७	प्रदोष व्रतम् १२। सर्वार्थसिद्धियोगः ३१।२ (सा.५।५३) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २४।२० (दि.३।१३) उ.। (घ) यायि (मुद्दई) जयद् योगः १८।२४ (दि.१२।५०) या.।
३२	३९	१३	सोम.	१८	२४	दिन	१२	५०	रेवती	२७	६	दिन	४	१८	प्रीति	४५	१०	रात	११	३२	व	१८	२४	वि	४५	३८	मातंग	६	१३	२३	१६	मेष	२७	६	५	२८	६	३२	१६	२१	०	२१	३९	२२	५७	५४	-	५	४	२४	मेषराशिः दिवा ४।१८ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा १८।२४ (दि.१२।५०) उ. ४५।३८ (रा.११।४३) या. (मर्त्य-स्वर्ग)। मासशिवरात्रि व्रतम् १३। पश्चिम दिशायाम् गुरु अस्तः रात्रि ११।० वादनात्। (घ)
३२	४२	१४	मंगल	१२	५२	दिन	१०	३७	अश्विनी	२३	३५	दिन	२	५३	आयुष्य.	३८	१०	रात	८	४३	श	१२	५२	च.	४०	२०	अमृत	७	१४	२४	१७				५	२८	६	३२	१६	३८	०	२२	३७	१६	५७	५२	-	५	५	५	श्राद्धादौ अमावस्या ३०। रविन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती ७ मई। भौमाश्विनी-सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगो २३।३५ (दि.२।५३) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः २३।३५ (दि.२।५३) या.।
३२	४५	३०	बुध.	७	४९	दिन	८	३५	भरणी	२०	३९	दिन	१	४३	सौभाग्य	३१	४१	सायं	६	७	ना	७	४९	कि.	३५	४४	काण	८	१५	२५	१८	वृष	३५	१०	५	२७	६	३३	१६	५५	०	२३	३५	८	५७	५१	-	५	+	+	वृषराशिः रात्रि ७।३१ वादने। स्नानदानादौ अमावस्या ३० पुण्यतमा। सर्वार्थसिद्धियोगः २०।३९ (दि.१।४३) उ.। शुभवारान्वितदर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१ बुधे-स्वात्यां मृत्युबाणः।

ति.१ गुरौ-रात्रि १।२०वादनात्परं अनुराधा रेखा ८ लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (श.दा.) वा लग्नं १२ पंचेष्टाभावः।

ति.२ शुक्रे-भद्रा सायं ६।२९ वादनात्पूर्व अनुराधायां रेखा ८ दिवा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.६७ रात्रि ११।२० वादनात्परं गुरु वृद्धत्व दोष आरम्भः।

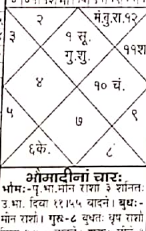
ततो विवाह लग्नाभावः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ बु.	६	११	०	२३	११	०	५२	४६	४६	१७	११	२२	२१	४	मा.४	३	०	२८	२१	१९	१३	४६	११	२९	३३	५	७३	५७	१०	२१	५३	३४	५	३६	११	२०	४१	०
१ गु.	६	२३	३६	४४	११	१	३९	३	४६	१५	११	२२	२५	७	१०	२४	०	२८	३५	५	१३	४९	०	०	४७	२	७३	५७	१०	२१	५९	१०	५	३३	११	२०	३७	५०
२ शु.	७	६	२८	१५	११	२	२५	१८	४६	११	११	२२	३५	३१	१५	३३	०	२८	४८	५४	१३	५०	०	२	०	५९	७३	५६	१०	२२	४	४३	५	३१	११	२०	३४	३१
३ श.	७	१९	३४	५०	११	३	११	२९	४६	९	११	२२	५१	४	१८	२२	०	२९	२	४४	१३	५०	०	३	१४	५६	७३	५५	१०	२२	१०	१४	५	२८	११	२०	३१	२८
४ र.	८	२	५५	११	११	३	५७	३८	४६	५	११	२३	९	२६	२२	३६	०	२९	१६	३४	१३	५२	०	४	२८	५१	७३	५५	१०	२२	१५	४२	५	२६	११	२०	२८	१७
६ सो.	८	१६	२९	४२	११	४	४३	४३	४६	०	११	२३	३२	२	२५	११	०	२९	३०	२६	१३	५३	०	५	४२	४६	७३	५५	१०	२२	२१	८	५	२३	११	२०	२५	६
७ मं.	८	२९	३	१४	११	५	२९	४३	४५	५५	११	२३	५७	२१	२८	४८	०	२९	४४	१९	१३	५५	०	६	५६	४१	७३	५५	१०	२२	२६	३१	५	२१	११	२०	२१	५५
८ बु.	९	१२	५९	४	११	६	१५	२८	४५	५३	११	२४	२६	५	३०	३१	०	२९	५८	१४	१३	५६	०	८	१०	३६	७३	५१	१०	२२	३१	५२	५	१९	११	२०	१८	४४
९ गु.	९	२७	१	४३	११	७	१	३१	४५	५१	११	२४	५६	३६	३३	१६	१	०	१२	१०	१३	५८	०	९	२४	२७	७३	५१	१०	२२	३७	११	५	१६	११	२०	१५	३३
१० शु.	१०	११	१०	३२	११	७	४७	२२	४५	४९	११	२५	२९	५२	३५	३८	१	०	२६	८	१४	०	०	१०	३८	१८	७३	५१	१०	२२	४२	२७	५	११	११	२०	१२	२२
११ श.	१०	२५	१९	२१	११	८	३३	११	४५	४६	११	२६	५	३०	३६	२४	१	०	४०	८	१४	३	०	११	५२	९	७३	५१	१०	२२	४७	३८	५	५	११	२०	९	११
१२ र.	११	९	२९	२२	११	९	१८	५७	४५	४२	११	२६	४१	४४	३८	११	१	०	५४	११	१४	३	०	१३	६	०	७३	५०	१०	२२	५२	४३	५	०	११	२०	६	०
१३ सो.	११	२३	३६	२०	११	१०	४	३९	४५	४०	११	२७	१९	५५	४१	९	१	१	८	१४	१४	५	०	१४	१९	५०	७३	५०	१०	२२	५७	४३	४	५८	११	२०	२	४९
१४ मं.	०	७	३८	१३	११	१०	५०	१९	४५	३५	११	२८	१	४	४२	२०	१	१	२२	१९	१४	६	०	१५	३३	४०	७३	५०	१०	२३	२	३७	४	५०	११	१९	५९	३८
३० बु.	०	२१	३४	५६	११	११	३५	५४	४५	३१	११	२८	४३	२४	४४	३७	१	१	३६	२५	१४	८	०	१६	५७	३०	७३	५०	१०	२३	७	२७	४	४५	११	१९	५६	२७

पं.३ वैशाख कृष्ण ८ बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३३९६ अयनांशाः २४/१०/४९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	११	११	०	०	१०	११	५
१६	१२	६	२४	२९	८	२२	२०	२०
४९	५९	१५	२६	५८	१०	३१	१८	१८
२२	४	३८	५	१४	३६	५२	४४	४४
५८	८७	४५	३०/३९	१३	७३	५	३	३
४	४५	५३	मा	५६	५१	११	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः-पू.भा.मीन राशौ ३ शनितः उ.भा. दिवा ११।५५ वादने। **बुधः**-मीन राशौ। **गुरु**-८ बुधतः वृष राशौ दिवा ९।५० वादने। **शुक्रः**-मीन १ बुधत, मेष राशौ दिवा ३।३० वादने। **शनिः**-पू.भा. १ चरणे कुम्भ राशौ। **राहुः**-रेवत्याम् २ चरणे केतुश्च-हस्त ४ चरणे १३ सोमतः राहुः-रेवत्याम् १ चरणे केतुश्च हस्त ३ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

वैशाख कृ.

लग्नांत ति.वा.	१ बु. घं.	मि.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	६ सो. घं.	मि.	७ मं. घं.	मि.	८ बु. घं.	मि.	९ गु. घं.	मि.	१० शु. घं.	मि.	११ श. घं.	मि.	१२ र. घं.	मि.	१३ सो. घं.	मि.	१४ मं. घं.	मि.	३० बु. घं.	मि.
मेष	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५१	५	४७
वृष	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३
मिथुन	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७
कर्क	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५
सिंह	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३३	२	२९
कन्या	५	३६	५	३२	५	२८	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
तुला	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	२	६	५८
वृश्चिक	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१९	९	१५
धनु	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२४	११	२०
मकर	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५
कुम्भ	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६
मीन	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४

पं.४ वैशाख कृष्ण ३० बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४०३ अयनांशाः २४/१०/४९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	११	११	१	०	१०	११	५
२३	२१	११	२८	१	१६	२३	१२	१९
३५	३५	३५	४३	३६	१३	७	५६	५६
८	५६	५४	२४	२५	३०	२७	२७	२७
५७	८७	४५	४४	१४	७३	४	३	३
५१	५६	३१	३७	८	५०	४५	११	११



(क) जलदानम् विद्यारम्भार्थ तिलक व्रतम्। तैलाभ्यङ्ग दैनिक स्नानम्। **गलन्तिका विशेषः-वसन्त-ग्रीष्मयोर्मध्ये यः पानीयं प्रयच्छति। पले पले सुवर्णस्य फलमाप्नोति मानवः। तथा-च-सर्वदानेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम्। तत्फलं समवाप्नोति माधवे जलदानतः।** मृत्युबाणः ५९।५० (रा.शे.५।३२)या.।

फलम्- प्रतिपदा तिथि की वृद्धि हो गई है किन्तु पंचमी तिथि २८ अप्रैल रविवार को क्षयवति है। इसलिए यह पक्ष १५ दिन का ही है। पक्ष के तीन बुधवार सामान्यतया शुभ फलकारक हैं। चैत्र शुक्ल पूर्णिमा से वैशाख शुक्ल पूर्णिमा तक प्रतिदिन प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्थान नदी या कुँआ, बावली, सरोवर अथवा अपने घर पर ही शुद्ध जल से स्नान करें। इसके अतिरिक्त **''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय''** या **'हरे राम हरे राम'** मन्त्र का यथा शक्ति जप करके एक बार भोजन करें। इकतीस दिन तक ऐसा क्रम बनाये रखने से अनेक प्रकार के रोग और दोष दूर होते हैं एवं प्रभाव तथा पुण्य में वृद्धि होती है। देव विग्रहों के ऊपर परम्परागत तरीके से जल-निक्षेप **गलन्तिका** कार्य प्रारम्भ हो जायेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत का मान २७ अप्रैल** शनिवार को होगा। चन्द्रोदय रात ९।५१ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **श्रीशीतलाष्टमी (बसियठरा)** का व्रत १ मई बुधवार को होगा। आज के दिन पूर्व रात्रि में की गई पूजा का बासी प्रसाद ग्रहण करने का पुण्यफलदायक विधान है। १ मई को बुधवार और अष्टमी तिथि के योग में **बुधाष्टमी** का पर्व मिल रहा है। इस योग में किया जाने वाला स्नान-दान सूर्य ग्रहण में किये गये स्नानदान के समतुल्य माना जाता है। **वरुथिनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिए ४ मई शनिवार को होगा। **प्रदोष का व्रत** ▮ ५ मई रविवार को सायं काल गोधूलि में त्रयोदशी तिथि मिलने के कारण होगा। **मास शिवरात्रि व्रत का मान ६ मई** सोम. को मनाया जायेगा। सोमवार दिन की मास शिवरात्रिशिव पूजन के लिए अत्यन्त पुण्य फलदायक होगी। अंग्रेजी तारीख के अनुसार रविन्द्रनाथ टैगोर की जयन्ती ७ मई मंगलवार को मनाई जायेगी। श्राद्ध के लिए अमावस्या ७ मई मंगलवार को मानी जायेगी। **स्नान दान के लिए अमावस्या का मान ८ मई** बुधवार को होगा। **भरणी नक्षत्र का सूर्य २७ अप्रैल** शनिवार को दिन में ३।१८ बजे से आयेगा। चावल, जौ, चना, मोठ, तुवर, अलसी, गुड़, घी एवं मादक द्रव्यों में तेजी का दौरा आयेगा। मनुष्यों में कोई बीमारी फैल सकती है। इस पक्ष की प्रमुख बात यह है कि **२९ अप्रैल २०२४ को पूर्व-दिशा में शुक्र का अस्त** हो जायेगा एवं ६ मई **सोम.** को **गुरु** भी पश्चिम दिशा में अस्त हो जायेगा। इसलिए उसके दो दिन पूर्व ही २६ मई शुक्रवार से विवाह आदि शुभकार्यों के लिए मुहूर्त का मिलना बन्द हो जायेगा। इन दो ग्रहों के एक साथ अस्त हो जाने के फलस्वरूप इस पक्ष में आँधी-तूफान, वर्षा इत्यादि के प्रबल योग बन रहे हैं।

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ बुधे**-स्वात्यां रात्रौ गर्भाधानं ल.१०, नामकरणं वरवरणं कन्यावरणं द्विरागमन ल.३ क्रय-विक्रय, विपणि-व्यापारः नववस्त्र धारणं दीक्षाग्रहण, हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं सर्वदेव प्रतिष्ठा पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १ गुरौ**-विशाखायां गवां क्रय विक्रयः शराधारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं, भूमिक्रयः नूतनवध्वांपाककर्म। **तिथि २ शुक्रे**-अनुराधायां-भद्रा सायं ६।२९ वादनात्पूर्व जातकर्म नामकरणन्नप्राशन शय्यासनाद्युपभोगः नववस्त्राभूषण धारण कर्णवेधः ल.२ वा ल.३, अक्षरारम्भ विद्यारम्भः ल.२ वा ३, उपनयनं ल.४ वधूप्रवेश द्विरागमनं ल.२ वा ३ गृहारम्भ ल.३ हलप्रवहण बीजवपनं सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः वाहन क्रय दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ३ शनौ**-ज्येष्ठायां भद्रा रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४/५ रवौ**-मूले पुंसवनं सीमन्तः विद्यारम्भः लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं ऋणमर्दनः धान्यरोपणः जलयंत्र कर्मः मुकदमाकार्य पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ६ सोमे**-पूर्वाषाढ़ायां-आ. प्रसूति स्नानं धान्यच्छेदनं जलयन्त्र कर्म उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ७ भौमे**-भद्रा सर्वदिग् दिवा ३/२५ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं पूर्वदिग् यात्रा। **तिथि ८ बुधे**-श्रवणे रिक्ता रात्रि १२।३९ वादनात्पूर्व क्रयविक्रय गवां क्रयविक्रयः आभूषण निर्माणं धारणं च औषधि सेवनं वाहन क्रय, दिग् शूलविहायसर्वदिग् गमनं। **तिथि९ गुरौ**-रिक्ता-धनिष्ठायां रोगं विमुक्त स्नानं। **तिथि १० शुक्रे**-शतभिषायांभद्रा दिवा ९।५ वादनात्पूर्व अन्नप्राशनं क्रय-विक्रयः आभूषण निर्माणं● धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यरोपणः वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः जलयंत्र कर्म, आवेदनपत्र लेखनं, दक्षिण दिग् यात्रा। भद्रा रात्रि ८।७ वादनात्परं गर्भाधानं। **तिथि ११ शनौ**-पूर्वाभाद्रपदे इष्टिका दहनं शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि १२ रवौ**-उत्तराभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं, इष्टिका निर्माणं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १३ सोमे**-रेवत्यां भद्रा दिवा १२।५० वादनात्पूर्व आवश्यके प्रसूतिस्नानं, जातकर्म अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः गवां क्रय विक्रयः नववस्त्राभूषणधारणं हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखन उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १४ भौमे**-रिक्ता व्याप्तिः तदुपरि मासान्तः।

राशिफल

राशि	फल
मेष-	स्थान परिवर्तनं
वृष-	हानिः पीड़ा
मिथुन-	वित्ताप्तिः
कर्क-	सौख्यं
सिंह-	पाप बुद्धिः
कन्या-	रोगभयं
तुला-	गमनम् हानिः
वृश्चिक-	रिपुनाशः
धनु-	दैन्यम् अर्थनाशः
मकर-	रोगं
कुम्भ-	सुखम्
मीन-	हानिः भयम्

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ वैशाख शुक्ल पक्ष:।

सौम्यायनं सौम्यगोल: बसन्त ऋतु:। वृषार्कत: ग्रीष्म ऋतु:। दि.९ - २३ मई २०२४ ई.। (रा.वैशाख १९ - ज्येष्ठ २)

पक्षेऽस्मिन् गुरु-शुक्र अस्त:

दि.मा. घ.	प.	वैशाख शु. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घ.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अ.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. ३ + अं.	क.	स्पष्ट सूर्य: रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
३२	४८	१	गुरु	३	३८	प्रात	६	५३	कृत्तिका	१८	३८	दिन	१२	५३	शोभन	२६	०	दिन	३	५०	बव	३	३८	बा	३१	५८	लुम्बक	९	१६	२६	१९				५	२६	६	३४	१७	११	०	२४	३२	५९	५७	४१	-	६	८	५	चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.४५ बृहती समर्घताकरम्। सप्तऋगम् समताकरम्। देवदामोदर तिथि (आसाम)। यात्राधाम निषिद्ध: यमघंट योग: १८।३८ (दि.१२।५३) या.।
३२	५१	२/३	शुक्र	[illegible]	[illegible]	प्रात	[illegible]	[illegible]	रोहिणी	१७	२५	दिन	१२	२३	अतिगण्ड	२१	१	दिन	१	४९	कौ	०	१७	तै/ग	[illegible]	[illegible]	मित्र	१०	२७	२७	२०	मिथुन	४७	२५	५	२६	६	३४	१७	२७	०	२५	३०	४८	५७	४७	-	६	९	१०	मिथुनराशि: रात्रि १२।२८ बादने। मु.जिल्काद ११ हिजरी सन् १४४५। श्री परशुराम जयन्ती ३। छत्रपति शिवाजी जयन्ती ३ (तिथि अनुसारेण)। अक्षय तृतीया ३। अद्यदानेन अक्षय फलम्। त्रेतायुगादि: ३, कल्पादि:३,(क)
३२	५३	४	शनि.	५६	५६	रात	४	११	मृगशिरा	१७	१८	दिन	१२	२०	सुकर्मा	१६	५७	दिन	१२	१२	ब	२७	२०	वि	५६	५६	वज्र	११	१८	२८	२१				५	२५	६	३५	१७	४३	०	२६	२८	३५	५७	४५	-	६	१०	२०	भद्रा २७।२० (दि.४।२१) उ. ५६।५६ (रा.४।११) या. (स्वर्ग)। वेनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। ⊙कृत्तिका नक्षत्रे रवि: १२।३० (दि.१०।१५)। रवियोग: यावद्दिनम्।
३२	५६	५	रवि.	५७	८	रात	४	१६	आर्द्रा	१८	२३	दिन	१२	४६	धृति	१३	५३	दिन	१०	५७	बव	२७	२	बा	५७	८	ध्वांक्ष	१२	२९	२९	२२				५	२५	६	३५	१७	५८	०	२७	२६	२०	५७	४३	-	६	११	३	आद्य-जगद् गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती ५। सूरदास जयन्ती ५। श्रीसोमनाथ प्रतिष्ठा दिवस:। रवियोग: १८।२३ (दि.१२।४६) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योग: १८।२३ (दि.१२।४६)उ.।
३२	५९	६	सोम	५८	४३	रात	४	५३	पुनर्वसु	२०	४८	दिन	१	४३	शूल	११	४८	दिन	१०	७	कौ	२८	५	तै	५८	४३	धूम्र	१३	२०	३०	२३	कर्क	५	१२	५	२४	६	३६	१८	१३	०	२८	२४	३	५७	४१	-	६	११	४८	कर्कराशि: दिवा ७।२९ बादने। श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती ६। चन्दन षष्ठी ६ (बंगाल)। सर्वार्थसिद्धियोग: २०।४८ (दि.१।४३) उ.। रवियोग: २०।४८ (दि.१।४३) उ.।
३३	१	७	मंगल	६०	०	स	म	स्त	पुष्य	२४	२६	दिन	३	१०	गण्ड	१०	४७	दिन	९	४२	गर	३०	१	व	६०	०	प्रवर्धमान	१४	२१	३१	२४				५	२४	६	३६	१८	२८	०	२९	२१	४४	५७	४०	-	६	१२	२७	श्रीगंगा सप्तमी ७। मध्याह्ने गंगोत्पत्तिः सर्वत्र गंगा पूजनम्। कमल सप्तमी ७। शर्करा ७। निम्ब सप्तमी ७। ⊙ सं.वृष राशौ रवि: ४०।५ (रा.९।२६) मु.१५ जघन्या। महापुण्यकालः पूर्वा १६ घटयः पुण्याः। गो, अन्न,(ख)
३३	४	७	बुध	१	२०	प्रात:	५	५५	श्लेषा	२९	११	दिन	५	३	वृद्धि	१०	३५	दिन	९	३७	व	१	२०	वि	३३	१३	राक्षस	१५	२२	१	२५	सिंह	२९	११	५	२३	६	३७	१८	४३	१	०	१९	२४	५७	३८	-	६	१	१	सिंह राशि: दिवा ५।३ बादने। भद्रा १।२० (प्रात: ५।५५) उ. ३३।१३ (सायं ५।४०) या. (मर्त्य)। सौर ज्येष्ठ मासारम्भ:। बुधे-भद्रा सिद्धयोग: १।२० (प्रात: ५।५५) या.।
३३	७	८	गुरु	५	७	दिन	७	२६	मघा	३४	५०	रात	७	१८	ध्रुव	११	१८	दिन	९	५३	बव	५	७	बा	३७	२४	मुसल	१६	२३	२	२६				५	२३	६	३७	१८	५७	१	१	१७	२	५७	३६	-	६	१	३१	श्रीदुर्गाष्टमी ८ व्रतम्, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी ८ व्रतम्। श्रीबगलामुखी जयन्ती ८। मध्याह्न व्यापिनी नवम्यां सीता नवमी ९। वैष्णवमतानुसरेण मध्याह्ने जानकी जन्मोत्सव:। दोषसंघ विनाशको रवियोग: ३४।५० (रा.७।१८) उ.।
३३	९	९	शुक्र	९	४२	दिन	९	२५	पूर्वाफा.	४१	११	रात	९	५१	व्याघात	१२	३२	दिन	१०	२३	कौ	९	४२	तै	४२	१३	सिद्धि	१७	२४	३	२७	कन्या	५७	५१	५	२३	६	३७	१९	११	१	२	१४	३८	५७	३५	-	६	२	०	कन्याराशि: रात्रि ४।३१ बादने। दोष संघ विनाशको रवियोग: यावद्दिनम्।
३३	१२	१०	शनि	१४	४८	दिन	११	२६	उत्तराफा.	४७	४६	रात	१२	२८	हर्षण	१४	८	दिन	११	०	गर	१४	४८	व	५२	२३	उत्पात	१८	२५	४	२८				५	२२	६	३८	१९	२४	१	३	१२	१३	५७	३३	-	६	२	२७	भद्रा ५२।२३ (रा.२।१९) उ. (पाताल)। दोष संघ विनाशको रवियोग: ४७।४६ (रा.१२।२८) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योग: २४।४४ (दि.११।६) उ.। यात्राधाम निषिद्ध यमघंट योग: ४७।४६ (रा.१२।२८) उ.।
३३	१४	११	रवि	१९	५०	दिन	१	१७	हस्त	५४	११	रात	३	२	वज्र	१५	४७	दिन	११	४०	वि	१९	५०	बव	५२	१२	मानस	१९	२६	५	२९				५	२१	६	३९	१९	३८	१	४	९	४६	५७	३१	-	६	२	५५	भद्रा १९।५० (दि.१।१७) या.। मोहिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। रवि-हस्त सर्वार्थामृत सिद्धियोग ५४।११ (रा.३।२) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योग: १९।५० (दि.१।१७) या.। शुभाशुभद्वय ग्रुपरुकर: द्विपुष्कर योग:५४।११ (रा.३।२)उ.
३३	१६	१२	सोम	२४	३५	दिन	३	११	चित्रा	६०	०	स	म	स्त	सिद्धि	१७	१०	दिन	१२	१२	बा	२४	३५	कौ	५६	३५	मुद्गर	२०	२७	६	३०	तुला	२७	१०	५	२१	६	३९	१९	५१	१	५	७	१७	५७	३०	-	६	३	२५	तुलाराशि: दिवा ४।१३ बादने। सोम प्रदोष व्रतम् १३। पृथ्वीपतिपूर्विवियम्। मधु सूदन द्वादशी १२। रुक्मिणी द्वादशी १२। (ग) उ.। मंगल-जया सिद्धयोग: २८।३६ (दि.४।४६) या.।
३३	१८	१३	मंगल	२८	३६	दिन	४	४६	चित्रा	०	५	प्रात	५	२२	व्यतिपात	१८	१	दिन	१२	३२	तै	२८	३६	गर	६०	०	ध्वांक्ष	२१	२८	७	३१				५	२०	६	४०	२०	३	१	६	४	४७	५७	२८	-	६	३	५८	प्रदोष व्यापिनी चतुर्दश्यां श्री नृसिंह चतुर्दशी १४ व्रतम्। प्रदोषसायं काले नृसिंहावतार:। अवतारी नृसिंहस्य प्रदोष समये द्विजा। पौराणिक अगस्त्यास्त: रात्रि शेष ४।५० बादने। दोष संघ विनाशको रवियोग: ०।५ (प्रात:५।२२)(ग)
३३	२१	१४	बुध.	३१	३३	दिन	५	५७	स्वाती	५	५	दिन	७	२२	वरीयान	१८	५	दिन	१२	३४	गर	०	४	व	३१	३३	धूम्र	२२	२९	८	१	वृश्चिक	५३	१	५	२०	६	४०	२०	१५	१	७	२	१५	५७	२७	-	६	४	३५	वृश्चिकराशि: रात्रि २।३२ बादने। भद्रा ३१।३३ (दि.५।५७) उ. (पाताले-स्वर्ग)। व्रताय पूर्णिमा १५। राष्ट्रीय ज्येष्ठमासारम्भ:। रवियोग: ५।५ (दि.७।२२) या.।
३३	२३	१५	गुरु	३३	२५	सायं	६	४१	विशाखा	८	५७	दिन	८	५४	परिघ	१७	१७	दिन	१२	१४	वि	२	२९	बव	३३	२५	प्रवर्धमान	२३	३०	९	२				५	१९	६	४१	२०	२७	१	७	५९	४२	५७	२५	-	५	+	+	स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। बुद्ध पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती १५। कूर्म जयन्ती १५। अद्य जलपूर्ण कुम्भ तिल घृत सुवर्णदानम्। काश्यां-हरिद्वार तथा च सर्वत्र गंगायाम् स्नानम्। गन्धेश्वरी पूजा (बंगाल)। पुष्करा(घ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ गु.	१	५	१८	३४	११	१२	२१	२५	४५	२६	११	२९	२८	१	४५	५०	१	१	५०	३३	१४	८	०	१८	१	२०	७३	५०	१०	२३	१२	१२	४	३८	११	१९	४३	५७
२ शु.	१	१८	५२	२६	११	१३	६	५१	४५	२२	०	०	१३	५१	४८	५५	१	२	४	४१	१४	८	०	१९	१५	१०	७३	५०	१०	२३	१६	५०	४	३२	११	१९	३९	४६
४ श.	२	३	१३	२२	११	१३	५२	१२	४५	१८	०	१	२	४३	५०	१२	१	२	१८	४९	१४	८	०	२०	२९	०	७३	४८	१०	२३	२१	२१	४	२५	११	१९	३६	३४
५ र.	२	१६	२१	४१	११	१४	३७	३०	४५	१६	०	१	५२	५८	५१	३४	१	२	३२	५७	१४	८	०	२१	४२	४८	७३	४८	१०	२३	२५	४७	४	२०	११	१९	३३	२४
६ सो.	२	२९	१२	२५	११	१५	२२	४६	४५	१५	०	२	४४	३२	५३	२३	१	२	४७	५	१४	८	०	२२	५६	३६	७३	४८	१०	२३	३०	७	४	१४	११	१९	३०	१३
७ मं.	३	११	४८	५४	११	१६	८	१	४५	१३	०	३	३७	५५	५०	४६	१	३	१	१३	१४	८	०	२४	१०	२४	७३	४८	१०	२३	३४	२१	४	७	११	१९	२७	३
७ बु.	३	२४	११	१५	११	१६	५३	१४	४५	१२	०	४	३१	४१	६३	२८	१	३	१५	२१	१४	८	०	२५	२४	१२	७३	४८	१०	२३	३८	२८	४	०	११	१९	२३	५२
८ गु.	४	६	१९	४१	११	१७	३८	२६	४५	१०	०	५	३९	९	६५	३१	१	३	२९	२९	१४	८	०	२६	३८	०	७३	४५	१०	२३	४२	२८	३	५२	११	१९	२०	४१
९ शु.	४	१८	२७	३२	११	१८	२३	३६	४५	९	०	६	४६	४०	६६	४४	१	३	४३	३७	१४	९	०	२७	५१	४५	७३	४५	१०	२३	४६	२०	३	४६	११	१९	१७	३०
१० श.	५	०	२९	५३	११	१९	८	४५	४५	७	०	८	३	२४	७०	५५	१	३	५७	४६	१४	९	०	२९	५	३०	७३	४५	१०	२३	५०	६	३	४२	११	१९	१४	१९
११ र.	५	१२	३७	२५	११	१९	५३	५२	४५	७	०	९	२४	१९	७४	४३	१	४	११	५५	१४	९	१	०	१९	१५	७३	४५	१०	२३	५३	४८	३	३७	११	१९	११	८
१२ सो.	५	२४	४७	२०	११	२०	३८	५९	४५	५	०	१०	४९	६	७८	३३	१	४	२६	४	१४	९	१	१	३३	०	७३	४५	१०	२३	५७	२५	३	३१	११	१९	७	५८
१३ मं.	६	६	५७	१८	११	२१	२४	४	४५	४	०	१२	१७	३९	८०	५२	१	४	४०	१३	१४	९	१	२	४६	४५	७३	४४	१०	२४	०	५६	३	२६	११	१९	४	४७
१४ बु.	६	१९	१७	२२	११	२२	९	८	४५	४	०	१३	४८	३१	९२	४५	१	४	५४	२२	१४	६	१	४	०	२९	७३	४४	१०	२४	४	२२	३	२२	११	१९	१	३६
१५ गु.	७	१	४९	१३	११	२२	५४	१२	४५	२	०	१५	२१	१६	९५	३९	१	५	८	३८	१४	६	१	५	१४	१३	७३	४४	१०	२४	७	४४	३	१९	११	१८	५८	२५

पं.५ वैशाख शुक्ल ८ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहा: अहर्गण: ३४११ अयनांशा: ३४/१०/५०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	११	०	१	०	१०	११	५
१	६	१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३	१९	१९
१७	१९	३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४२	२०	२०
२	४१	२६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	४१	४१
५७	७३०	४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	३	३
२६	३३	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५२	११	११



भौमादीनां चार:

भौम:-उ.भा.७भौमत: रेवत्यां रात्रि २।२०बादने। बुध:-१ गुरुत: मेषराशौ रात्रि १।३० बादने। गुरु-कृत्तिकायां वृष राशौ। शुक्र:-मेष राशौ१० शनित: वृष राशौ रात्रि २।४५ बादने। शनि:- पू.भा.१ चरणे २ शुक्रत: पू.भा.२ चरणे रात्रि १२।५०बादने। राहु:- रेवत्याम् १ चरणे। केतुश्च-हस्त ३ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

वैशाख शुक्ल

लग्नांत तिथि.वा.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	४ श. घं.	मि.	५ र. घं.	मि.	६ सो घं.	मि.	७ मं. घं.	मि.	लग्नांत तिथि.वा.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ सो घं.	मि.	१३ मं. घं.	मि.	१४ बु. घं.	मि.	१५ गु. घं.	मि.
मेष	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२१	वृष	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४
वृष	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	मिथुन	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८
मिथुन	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	९	३३	कर्क	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६
कर्क	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	सिंह	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३४	१	३०
सिंह	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	कन्या	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२
कन्या	४	३७	४	३३	४	२९	४	२६	४	२२	४	१८	तुला	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	३	५	५९
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
तुला	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	वृश्चिक	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	२०	८	१६
वृश्चिक	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	धनु	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२९	१०	२५	१०	२१
धनु	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	मकर	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६
मकर	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	कुम्भ	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७
कुम्भ	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१७	२	१३	मीन	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५
मीन	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४५	३	४१	मेष	५	१६	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४

पं.६ वैशाख शुक्ल १५ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहा: अहर्गण: ३४१८ अयनांशा: ३४/१०/५१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	११	०	१	१	१०	११	५
७	१	२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२४	१८	१८
५२	४९	५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	५८	५८
५२	१३	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४४	२५	२५
५७	७३	४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	३	३
२५	५३	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९	११	११



(क) हयग्रीव जयन्ती ३। श्री बद्री-केदार तीर्थयात्रा दिनम्। काश्यां त्रिलोचन यात्रा। **गोतमेश्वर महादेव** (काशी) जलधरी श्रृंगारारम्भ:। गौरी ३। जलकुम्भ छत्र, शर्कराव्यंजनादि दानम्। चन्दनेन श्रीविष्णु पूजनम्। चन्दन श्रृंगार (वृन्दावन)। **वर्षातप समापन** (जैन), मातंगी जयन्ती, सागरे-तीर्थे वा स्नानम् दानम् महत् फलम्। रवियोग: १७।२५ (दि.१२।२३) उ.। **(ख)** तिल दानं गोदावर्याम्-गंगायाम् च स्नानम्। **ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ:**। सर्वार्थसिद्धियोग: २४।२६ (दि.३।१०) उ.। रवियोग: २४।२६ (दि.३।१०)या.। **(घ)** देवी जयन्ती १५। सर्वार्थसिद्धियोग: ८।५७ (दि.८।५४) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योग: ८।५७ (दि.८।५४)उ.। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोग: ३३।२५(सा.६।४१)या.। वैशाख स्नान यम नियम संयम समाप्ति:।

विविध मुहूर्त्ता: **तिथि १ गुरौ**–कृत्तिकायां धान्यच्छेदनं दिवा १२।५३ वादनात्परं रोहिण्यां रात्रौ गर्भाधानं ल.९, प्रसूतिस्नानं, जातकर्म अन्नप्राशन, विपणिव्यापार:, हलप्रवहण बीजवपन, कणमर्दनं, शल्यकर्म धान्यरोपणं वृक्षारोपणं सेवारम्भ: शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि २ शुक्रे**– रोहिण्यां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म, अन्नप्राशन, विपणिव्यापार:, नववस्त्राभूषण धारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दन, धान्यरोपणं वृक्षारोपणं सेवारम्भ: शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोग, आवेदनपत्र लेखनं दिवा १२।२३ वादनात्परं मृगशिरायां रात्रौ गर्भाधानं ल.९ दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ४ शनौ**–मृगशिरायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ५ रवौ**– आर्द्रायाम् शस्त्र घटनं, उग्रकर्माचरणं। **तिथि ६ सोमे**-पुनर्वसौ-पुष्ये च जातकर्म नामकरणान्नप्राशनं विपणिव्यापार: आभूषण निर्माण धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं, सेवारम्भ: शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं उत्तर पश्चिम दिग् यात्रा औषधि निर्माणं औषधि सेवनं च, वाहन क्रय:। **तिथि ७ भौमे**- पुष्ये-पुंसवनं सीमन्त: लालवस्त्र धारणं, शल्यकर्म दिग् शूल विहाय सर्वादिग् गमनं। **तिथि ७ बुधे**-श्लेषायां भद्रा प्रात: ५।५५ वादनात्पूर्व जलयंत्र कर्ममुकदमा कार्यं भद्रा सायं ५।५५ वादनात्परं मघायां शय्यासनाद्युपभोग। **तिथि ८ गुरौ**-मघायां कणमर्दनं जलयंत्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं, भूमिक्रय: हलप्रवहणं बीजवपनं। **तिथि ९ शुक्रे**-रिक्ता दिवा ९।२५ वादनात्परं पूर्वाफाल्गुन्यां आ.प्रसूति स्नानं कणमर्दनं, जलयंत्र कर्म पूर्व दिग् यात्रा भूमिक्रय: रात्रि ९।५१ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां गर्भाधानं। **तिथि १० शनौ**-उत्तराफाल्गुन्यां कृष्ण वस्त्रधारणं। **तिथि ११ रवौ**-भद्रा दिवा १।१७ वादनात्परं पुंसवनं सीमन्त: प्रसूति स्नानं विपणिव्यापार: क्रय-विक्रय: नववस्त्रधारणं लालवस्त्र प्रवालं रत्न धारणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ: शस्त्रधारणं दत्तकपुत्रग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म वाहन क्रय:, दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १२ सोमे**-चित्रायां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं (त्रयोदश्यां)। ●

● विपणिव्यापार: गवां क्रय विक्रय: नववस्त्र धारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं सेवारम्भ: शय्यासनाद्युपभोग: दिवा ४।१३ वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३ भौमे**-चित्रा-स्वात्यां लालवस्त्र धारणं शल्यकर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १४ बुधे**-रिक्ता व्याप्ति:। **तिथि १५ गुरौ**-दिवा ८।५४ वादनात्परं अनुराधायां प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणि व्यापार: सेवारम्भ: आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म भूमिक्रय: दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं।

फलम्– यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। इसमें तृतीया तिथि का क्षय हो गया है किन्तु सप्तमी तिथि की वृद्धि हो गयी है। पक्ष के तीन गुरुवार सोना, पीतल, रूई कपड़ा, चावल एवं शक्कर में मन्दी लायेंगे। वैशाख शुक्ल पक्ष वर्ष का बड़ा ही पुनीत पक्ष माना जाता है। गुरुवार रोहिणी नक्षत्र का चन्द्र दर्शन बाजार में सस्ती का वातावरण पैदा करेगा, किन्तु मादक द्रव्यों में तेजी चलेगी। **भगवान परशुराम** की जयन्ती एवं **अक्षय तृतीया** का अत्यन्त पवित्र एवं पुण्यफलकारी पर्व क्षयवति तृतीया तिथि **१० मई शुक्रवार** को मनाया जायेगा। आज से ही श्रीबद्रीकेदारनाथ की तीर्थ यात्रा प्रारम्भ की जाती है। आज के दिन किसी भी प्रकार की सम्पत्ति का संचय करना अथवा खरीदना शुभ फलकारी एवं वृद्धिकारी माना जाता है। आज के दिन दिया गया किसी प्रकार का दान अक्षय फलकारी होता है। **आद्यजगद् गुरु शंकराचार्य की जयन्ती १२ मई** रविवार को परम्परा अनुसार धार्मिक समारोह के साथ मनाई जायेगी। **श्रीरामानुजाचार्य की जयन्ती १३ मई** सोमवार को मनाई जायेगी। **श्रीगंगा सप्तमी १४ मई** मंगलवार को मनाई जायेगी। ऐसा माना गया है की आज ही के दिन गंगा जी की उत्पत्ति हुई थी। इसमें मध्याह्न व्यापिनी सप्तमी तिथि ग्रहण की जाती है एवं मध्याह्न में ही इसका उत्सव मनाया जायेगा। **सीता नवमी** के लिए मध्याह्न समय नवमी तिथि मिलनी चाहिए इसलिए ■ इसका मान १६ मई गुरुवार को ही हो जायेगा। वैष्णवमत के अनुसार इससे सम्बन्धित उत्सव मनाया जायेगा। **मोहिनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिए १९ मई रविवार को होगा। पुत्र की कामना से **सोम प्रदोष २० मई** को इस लिए ही जायेगा क्योंकि प्रदोष काल में त्रयोदशी तिथि आज ही मिल रही है। **श्रीनृसिंह चतुर्दशी** के लिए सायं काल अथवा प्रदोषकाल में चतुर्दशी तिथि प्राप्त होनी चाहिए। अत: श्रीनृसिंह अवतार की लीला उत्सव २१ मई मंगलवार को मनाया जायेगा। **व्रत की पूर्णिमा** के लिए चन्द्रोदय के समय पूर्णिमा तिथि होनी चाहिये। इस नियम के अनुसार व्रत की पूर्णिमा २२ मई बुधवार को होगी। स्नान-दान के लिए **वैशाख पूर्णिमा** का मान तथा **बुद्ध पूर्णिमा बुद्ध जयन्ती के रूप में २३ मई** गुरुवार को मनायी जायेगी। बौद्ध जगत् का यह सबसे महत्वपूर्ण पर्व है। आज ही कूर्म जयन्ती भी मनाई जायेगी। **कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य ११ मई** शनिवार को दिन १०।१५ बजे से आवेगा। सफेद रंग की वस्तुओं इत्यादि फल पुष्प को क्षति पहुँचेगी। विद्वानों को पीड़ा पहुँचेगी। **वृष राशि की सूर्य संक्रान्ति १४ मई** मंगलवार को रात ९।२६ बजे आयेगी। मंगलवार की वृष संक्रान्ति दुर्भिक्ष कारक है। मोटे खाद्यानों के साथ किराना की वस्तुओं में तेजी का दौरा आयेगा।

राशिफल

मेष-	हानि:
वृष-	सुखं
मिथुन-	शत्रुभयं
कर्क-	रोगं
सिंह-	सुखार्थ:
कन्या-	दौर्बल्यं
तुला-	भयं
वृश्चिक-	रोगं
धनु-	सुखं
मकर-	सुखलाभ:
कुम्भ-	रोग शोकं
मीन-	पीड़ा

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्म ऋतुः। दि. २४ मई - ६ जून सन् २०२४ ई.। (रा.ज्येष्ठ ३ - १६)

पूर्व दिशायाम् गुरु उदयः ३-६-२०२४

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
३३	२५	१	शुक्र.	३३	५५	सायं	६	५३	अनुराधा	११	४०	दिन	९	५९	शिव	१५	३०	दिन	११	३१	बा	३	४०	को	३३	५५	राक्षस	२४	१	१०	३				५	१९	६	४१	२०	३९	१	८	५७	७	५७	२४	-	५	७	४१
३३	२७	२	शनि.	३३	८	सायं	६	३४	ज्येष्ठा	१३	६	दिन	१०	३२	सिद्ध	१२	४०	दिन	१०	२२	ते	३	३१	गर	३३	८	मुसल	२५	२	११	४	धनु	१३	६	५	१९	६	४१	२०	५०	१	९	५४	३१	५७	२३	-	५	८	४२
३३	२९	३	रवि	३१	७	दिन	५	४५	मूल	१३	१८	दिन	१०	३७	साध्य	८	५०	दिन	८	५०	व	२	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सिद्धि	२६	३	१२	५				५	१८	६	४२	२१	१	१	१०	५१	५४	५७	२१	-	५	९	४०
३३	३१	४	सोम.	२८	२	दिन	४	३१	पू.षा.	१२	१९	दिन	१०	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	बा	२८	२	को	५६	१	उत्पात	२७	४	१३	६	मकर	२६	५१	५	१८	६	४२	२१	११	१	११	४९	१५	५७	२०	-	५	१०	३२
३३	३३	५	मंगल	२४	०	दिन	२	५३	उ.षा.	१०	२८	दिन	९	२८	ब्रह्म	५२	२१	रात	२	१३	ते	२४	०	गर	५१	३२	मानस	२८	५	१४	७				५	१७	६	४३	२१	२१	१	१२	४६	३५	५७	१८	-	५	११	१८
३३	३५	६	बुध	१९	५	दिन	१२	५५	श्रवण	७	४४	दिन	८	२३	ऐन्द्र	४५	३१	रात	११	२९	व	१९	५	वि	४६	२०	छत्र	२९	६	१५	८	कुंभ	३६	२	५	१७	६	४३	२१	३१	१	१३	४३	५३	५७	१७	-	५	१२	०
३३	३६	७	गुरु.	१३	३५	दिन	१०	४३	धनिष्ठा	४	१९	दिन	७	०	वैधृति	३८	१८	रात	८	३५	बव	१३	३५	बा	४०	३७	श्रीवत्स	३०	७	१६	९				५	१७	६	४४	२१	४०	१	१४	४१	१०	५७	१६	-	५	१२	३५
३३	३८	८	शुक्र.	७	३९	दिन	८	२०	शतभिषा पूर्वाभाद्रपद	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	विष्कुंभ	३०	४३	दिन	५	३३	को	७	३९	तै	३४	३४	सौम्य	३१	८	१७	१०	मीन	४२	२५	५	१६	६	४४	२१	४९	१	१५	३८	२६	५७	१५	-	५	१	११
३३	४०	९/१०	शनि.	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	उत्तराभा.	५२	१३	रात	२	९	प्रीति	२३	४	दिन	२	३०	गर	१	३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धूम्र	१	९	१८	११				५	१६	६	४४	२१	५८	१	१६	३५	४१	५७	१३	-	५	१	४५
३३	४१	११	रवि.	४९	१९	रात	१२	५९	रेवती	४८	१३	रात	१२	२३	आयुष्मान	१५	३०	दिन	११	२७	बव	२२	२०	बा	४९	१९	प्रवर्धमान	२	१०	१९	१२	मेष	४८	१३	५	१५	६	४५	२२	६	१	१७	३२	५४	५७	१२	-	५	२	२१
३३	४३	१२	सोम.	४३	४२	रात	१०	४४	अश्विनी	४४	३७	रात	११	६	सौभाग्य	८	८	दिन	८	३०	को	१६	३०	तै	४३	४२	राक्षस	३	११	२०	१३				५	१५	६	४५	२२	१४	१	१८	३०	६	५७	११	-	४	३	०
३३	४४	१३	मंगल	३८	३५	रात	८	४१	भरणी	४१	३३	रात	९	५१	शोभन अतिगण्ड	[illegible]	[illegible]	प्रात	[illegible]	[illegible]	गर	११	८	व	३८	३५	मुसल	४	१२	२१	१४	वृष	५५	५९	५	१५	६	४५	२२	२१	१	१९	२७	१७	५७	१०	-	४	३	४१
३३	४५	१४	बुध.	३४	१४	सायं	६	५७	कृत्तिका	३९	१९	रात	८	५९	सुकर्मा	४८	४३	रात	१२	४४	वि	६	२५	श	३४	१४	सिद्धि	५	१३	२२	१५				५	१५	६	४५	२२	२८	१	२०	२४	२७	५७	९	-	४	४	३०
३३	४७	३०	गुरु.	३०	५०	दिन	५	३५	रोहिणी	३७	५१	रात	८	२२	धृति	४३	३८	रात	१०	४१	च	२	३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उत्पात	६	१४	२३	१६				५	१५	६	४५	२२	३५	१	२१	२१	३६	५७	८	-	४	+	+

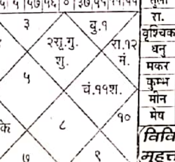
- १ शुक्र. — फसली ज्येष्ठमासारम्भः। ज्येष्ठ मासे पिष्टेन ब्रह्ममूर्ति स्थापयित्वा साविधि पूजनेन महत् फलम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ११।४० (दि.९।५९) या. शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ३३।५५ (सा.६।५३) या.।
- २ शनि. — **धनुराशिः** दिवा १०।३२ वादने। **देवर्षि नारद जयन्ती २। वीणा वादनं। ⊙ रोहिणी नक्षत्रे रविः** ६।१० (दि.७।४७)।
- ३ रवि — भद्रा २।८ (प्रातः ६।१९) उ. ३१।७ (सायं ५।४५) या. (पाताले)। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदय (रा.९।४०) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। सर्वार्थसिद्धियोगः १३।१८ (दि.१०।३७)या.।
- ४ सोम. — **मकरराशिः** दिवा ४।१२ वादने। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २८।२ (दि.४।३१) उ.।
- ५ मंगल — **ज्येष्ठ भौमः (बड़का मंगल)।** (ख) ४१।३३ (रा.९।५१) उ.। भौम-जया सिद्धयोगः ३८।३५ (रा.८।४१) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ४१।३३ (रा.९।५१) उ.।
- ६ बुध — **कुम्भराशिः** रात्रि ७।४२ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा १९।५ (दि.१२।५५) उ. ४६।२० (रा.११।४९) या. (पाताले-मर्त्ये)। दोषसंघ विनाशको रवियोगः ७।४४ (दि.८।२३)उ.।
- ७ गुरु. — यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४।१९ (दि.७।०) या.। दोष संघ विनाशको रवियोगः ४।१९ (दि.७।०) या.। (क) सर्वार्थसिद्धियोगः ४८।१३ (रा.१२।२३) उ.।
- ८ शुक्र. — **मीनराशिः** रात्रि १०।१४ वादने। **श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्** पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम। श्रीत्रिलोकनाथाष्टमी ८ (बंगाल)। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ०।२१ (प्रातः ५।२७) उ.७।३९ (दि.८।२०) या.।
- ९/१० शनि. — भद्रा २८।३० (दि.४।४०) उ. ५५।३१ (रा.३।२८) या. (मर्त्ये)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २।३० (प्रातः ५।५२) या.। शनि-रिक्ता समायोग २।३० प्रातः ५।५२ या.। **पूर्व दिशायाम् बुधास्तः।**
- ११ रवि. — **मेषराशिः** रात्रि १२।२३ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। **अचला (अपरा) एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** जलक्रीडा ११ (उड़ीसा)। **अपरासेवनाद्राजन्विपाप्मा भवति ध्रुवम्।** यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४८।१३ (रा.१२।२३)या.।(क)
- १२ सोम. — **पूर्वदिशायाम् गुरु उदयः** प्रातः ७।० वादने। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४४।३७ (दि.११।६) उ.।
- १३ मंगल — **वृषराशिः** रात्रि ३।३९ वादने। भद्रा ३८।३५ (रा.८।४१) उ. (स्वर्गे)। **भौम प्रदोष व्रतम् १३।** ऋणापकर्णाय श्रेयस्करम्। वट सावित्री व्रतारम्भः। **मासशिवरात्रि व्रतम् १३। ज्येष्ठ भौमः** (बड़का मंगल)। सर्वार्थसिद्धियोगः(ख)
- १४ बुध. — भद्रा ६।२५ (दि.७।४१) या.। वट सावित्री व्रतस्य द्वितीय दिनम्। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्।
- ३० गुरु. — **स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। वट सावित्री व्रतम् (बरगदाई) अमावस्या ३०। गुरु बालत्व समाप्तिः** प्रातः ७।० वादने। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ शु.	७	१४	३६	२५	११	२३	३९	१४	४५	२	०	१६	५६	५५	९८	२४	१	५	२२	३४	१४	६	१	६	२७	५७	७३	४४	१०	२४	११	३	३	१५	११	१८	५५	१४
२ श.	७	२७	४८	४६	११	२४	२४	१६	४५	०	०	१८	३५	१९	१०१	५४	१	५	३६	४०	१४	४	१	७	४१	४१	७३	४१	१०	२४	१४	१८	३	१२	११	१८	५२	४
३ र.	८	११	०	६	११	२५	९	१६	४५	०	०	२०	१७	१३	१०३	३८	१	५	५०	४४	१४	४	१	९	५५	२२	७३	४१	१०	२४	१७	३०	३	८	११	१८	४८	५३
४ सो.	८	२४	३८	१२	११	२५	५५	१६	४५	०	०	२२	०	५१	१०६	४२	१	६	४	४८	१४	३	१	१०	९	३	७३	४१	१०	२४	२०	३८	३	५	११	१८	४५	४२
५ मं.	९	८	२४	१६	११	२६	४०	१६	४४	५८	०	२३	४७	३३	१०८	५०	१	६	१८	५१	१४	१	१	११	२२	४४	७३	४१	१०	२४	२३	४३	३	२	११	१८	४२	३१
६ बु.	९	२२	५	१३	११	२७	२५	१४	४४	५८	०	२५	३६	२३	१११	२९	१	६	३२	५२	१४	१	१	१२	३६	२५	७३	४०	१०	२४	२६	४५	२	५८	११	१८	३९	२०
७ गु.	१०	६	५	५५	११	२८	१०	२२	४४	५७	०	२७	२७	५२	११३	४५	१	६	४६	५३	१४	०	१	१३	५०	५	७३	३७	१०	२४	२९	४३	२	५५	११	१८	३६	१०
८ शु.	१०	२०	११	२३	११	२८	५५	९	४४	५७	०	२९	२१	३७	११४	५६	१	७	०	५३	१४	०	१	१५	३	४२	७३	३७	१०	२४	३२	३८	२	५१	११	१८	३२	५९
९ श.	११	४	१९	३५	११	२९	४०	६	४४	५५	१	१	१६	३३	११६	२१	१	७	१४	५३	१४	०	१	१६	१७	१९	७३	३५	१०	२४	३५	२९	२	४५	११	१८	२९	४८
११ र.	११	१८	२७	२०	०	०	२५	२	४४	५५	१	३	१२	५४	११७	५७	१	७	२८	५३	१३	५८	१	१७	३०	५४	७३	३५	१०	२४	३८	१०	२	४०	११	१८	२६	३७
१२ सो.	०	२	३१	३२	०	१	९	५६	४४	५४	१	५	१०	५१	११९	३६	१	७	४२	५१	१३	५८	१	१८	४४	२९	७३	३५	१०	२४	४०	५४	२	३६	११	१८	२३	२६
१३ मं.	०	१६	२७	२५	०	१	५४	५०	४४	५१	१	७	१०	२७	१२०	२३	१	७	५६	४९	१३	५७	१	१९	५८	४	७३	३४	१०	२४	४३	३०	२	३१	११	१८	२०	१६
१४ बु.	१	०	९	४८	०	२	३९	४१	४४	५१	१	९	१०	५४	१२२	३०	१	८	१०	४६	१३	५७	१	२१	११	३८	७३	३४	१०	२४	४६	१	२	२८	११	१८	१७	५
३० गु.	१	१४	३७	१९	०	३	२४	३२	४४	४९	१	११	१३	२४	१२३	४६	१	८	२४	४३	१३	५५	१	२२	२५	१२	७३	३४	१०	२४	४८	२१	२	२४	११	१८	१३	५४

पं.७ ज्येष्ठ कृष्ण ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४२६ अयनांशाः २४/१०/५२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	११	०	१	१	१०	११	५
१५	२०	२८	२९	७	१५	२४	१८	१८
३८	११	५५	२१	०	३	३२	३२	३२
२६	२३	९	३७	५३	४२	३८	५९	५९
५७	८५१	४४	११४	१४	७३	२	३	३
१५	५	५७	५६	०	३७	५१	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः-रेवत्यां मीनराशौ ९ शनितः अश्विन्यां मेष राशौ रात ७।१५ वादने। **बुधः**-मेष राशौ ८ शुक्रतः वृष राशौ दिवा ३।१५ वादने। **गुरुः**-कृत्तिकायां वृष राशौ। **शुक्रः**-वृष राशौ। **शनिः**-पू.भा.२ चरणे कुम्भ राशौ। **राहुः**-रेवत्यां १ चरणे। **केतुश्च**-हस्त ३ चरणे।

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१शु. घं.	मि.	२श. घं.	मि.	३र. घं.	मि.	४सो. घं.	मि.	५मं. घं.	मि.	६बु. घं.	मि.	७गु. घं.	मि.	८शु. घं.	मि.	९श. घं.	मि.	११र. घं.	मि.	१२सो घं.	मि.	१३मं. घं.	मि.	१४बु. घं.	मि.	३०गु. घं.	मि.
वृष	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९
मिथुन	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३
कर्क	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२९	१०	२५	१०	२१
सिंह	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३९	१२	३५
कन्या	३	३८	३	३४	३	३०	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७
तुला	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृश्चिक	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२१
धनु	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	९	३४	९	३०	९	२६
मकर	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	११
कुम्भ	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२
मीन	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०
मेष	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५७	३	५३	३	४९

पं.८ ज्येष्ठ कृष्ण ३० गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४३२ अयनांशाः २४/१०/५३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	०	१	१	१	१०	११	५
२१	१४	३	११	८	२२	२४	१८	१८
२१	३७	२४	१३	२४	२५	४८	१३	१३
३६	१९	३२	२४	४३	१२	२१	५४	५४
५७	८२०	४४	१२३	१३	७३	२	३	३
८	५	४९	४६	५५	३४	२४	११	११



विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ शुक्रे**-दिवा ९।५९ वादनम् यावत् अनुराधायां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं, विपणिव्यापारः नववस्त्राभूषण धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगं दत्तक पुत्रग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि २ शनौ**- ज्येष्ठायां शस्त्रघटनं, उग्रकर्माचरणं। **तिथि ३ रवौ**-मूले भद्रापूर्व हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं जलयन्त्र कर्म मुकदमाकार्यः वृक्षारोपण, पूर्वदिग् यात्रा भद्रा सायं ५।४५ वादनात्परं पूर्वाषाढ़ायाम् प्रसूति स्नानं। **तिथि ४ सोमे**-पूर्वाषाढ़ायाम् रिक्ताव्याप्तिः। रिक्ता दिवा ४।३१ वादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरण, अन्नप्राशनं विपणि व्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहण बीजवपनं धान्यच्छेदनं वृक्षारोपणः नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं दिवा ४।२ वादनात्परं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ५ भौमे**-उत्तराषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नान, लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं श्रवण नक्षत्रे शल्यकर्म दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ६ बुधे**-भद्रा दिवा १२।५५ वादनात्पूर्व श्रवणे-धनिष्ठायां सप्तम्यां अन्नप्राशनं नामकरण क्रय-विक्रयः नववस्त्रधारण हलप्रवहण-बीजवपनं धान्यच्छेदनं, कणमर्दनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं वाहन क्रयः। रात्रौ ११।४९ वादनात्परं गर्भाधानं। **तिथि ७ गुरौ**-धनिष्ठायां प्रातः ७।० वादनम् ◉ यावत् प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं शतभिषायां क्रय विक्रयः नववस्त्र धारणं हलप्रवहण बीजवपनं धान्यरोपण वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः जलयन्त्रकर्म आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ८ शुक्रे**-पूर्वाभाद्रपदे धान्यच्छेदन धान्यरोपणं जलयन्त्र कर्म, मुकदमाकार्य भूमिक्रयः रात्रि १०।१४ वादनात्परं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ९ शनौ**-उत्तराभाद्रपदे रिक्तोत्तरे कृष्ण वस्त्र धारणशस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ११ रवौ**-रेवत्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं, वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ शस्त्रधारणं, आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं सेवारम्भः पूर्व दिग् यात्रा वाहन क्रयः। **तिथि १२ सोमे**-अश्विन्यां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः गवां क्रय विक्रयः आभूषण निर्माणं धारणं च सेवारम्भ शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं वाहन क्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १३ भौमे**-भरण्यां इष्टिका दहनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि १४ बुधे**-रोग विमुक्त स्नानं ततो **मासान्त दोषः**।

फलम्- यह पक्ष १४ दिन का ही है क्योंकि दशमी तिथि का क्षय हो गया है। सूचना प्रौद्योगिकी के जनक एवं बिना किसी वाहन के पूरे ब्रह्माण्ड में भ्रमण करने वाले आदि **गुरु देवर्षि नारद** की जयन्ती विविध समारोह एवं वीणा वादन के साथ २५ मई शनिवार को मनाई जायेगी। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत का मान २६ मई** रविवार को होगा। चन्द्रोदय रात ९।४० बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। जेठ के महीने में पड़ने वाले प्रत्येक मंगलवार को '**बड़का मंगल**' के रूप में मानने एवं मनाने का लौकिक विधान है। इस प्रकार पहला **बड़का मंगल २८ मई** को पड़ेगा। **श्रीशीतलाष्टमी व्रत का मान ३१ मई** शुक्रवार को होगा। इसे लोक भाषा में '**बसियटरा**' भी कहा जाता है। इसमें पूर्व रात्रि में की गई शीतलामाता की पूजा का बासी पक्वान्न प्रसाद स्वरूप ग्रहण किया जाता है। **अचला अथवा अपरा एकादशी का व्रत २ जून** रविवार को किया जायेगा। शास्त्र में कहा गया है कि जो व्यक्ति सक्षम-सामर्थ्य रखते हुए भी गरीबों असहायों की सेवा अथवा मदद नहीं करता वह पाप का भागी होता है। इस एकादशी का व्रत रखने से इस प्रकार के पाप कटते हैं। ऋण से छुटकारा पाने के लिये **भौम प्रदोष का व्रत ४ जून** को किया जायेगा। महानिशा में चतुर्दशी मिलने के कारण **मासशिवरात्रि का व्रत भी ४ जून** मंगलवार को होगा। **स्नानदान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या ६ जून** गुरुवार को होगी। **वट सावित्री का व्रत ६ जून गुरुवार** को होगा। इसे बरगदाई भी कहा जाता है। स्त्रियाँ इसे बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ करती हैं। शनि भगवान की उत्पत्ति ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को मानी गई है। जिससे हम **शनि जयन्ती** के रूप में शनि भगवान के विधिवत् पूजन-अर्चन के साथ मनाते हैं। इसका भी मान ६ जून गुरुवार को होगा। शनि ग्रह की शान्ति से सम्बन्धित अनुष्ठान इत्यादि के लिए इसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है। **रोहिणी नक्षत्र का सूर्य २५ मई** शनिवार को दिन ७।४७ बजे से आवेगा। चावल इत्यादि सभी प्रकार के खाद्यान्न अलसी सरसों गुड़, खांड, सुपारी, रुई, सूत, सन के भाव में तेजी आवेगी। चौपायों एवं जलचरों में कोई रोग फैलेगा। **अस्त चल रहा गुरु ३ जून को प्रातः ७।० बजे पूर्व दिशा में उदित** हो जायेगा किन्तु शुक्र अभी अस्त ही चलेगा इसलिये विवाहादि शुभ कार्यों के लिये मुहूर्त्त प्रारम्भ नहीं हो पायेंगे। कृष्ण पक्ष में तिथि का घटना शुभफलकारी माना जाता है। **गर्मी खूब** पड़ेगी। ३ जून के आसन्न आँधी-पानी के साथ वर्षा होने के योग प्राप्त हो रहे हैं।

राशिफल

राशि	फल
मेष-	हानिः
वृष-	स्थान हानिः
मिथुन-	पीड़ा भयम्
कर्क-	वित्ताप्तिः
सिंह-	सौख्यं
कन्या-	कुचेष्टा
तुला-	हानिः
वृश्चिक-	गमनम्
धनु-	रिपुनाशः
मकर-	दैन्यम्
कुम्भ-	अपमान
मीन-	सुखं

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्म ऋतुः। दि. ७ - २२ जून सन् २०२४ ई.। (रा.ज्येष्ठ १७ - आषाढ़ १)

(पक्षेऽस्मिन् शुक्र अस्तः)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
३३	४८	१	शुक्र	२८	२७	दिन	४	३७	मृगशिरा	३७	२९	रात	८	१४	शूल	३९	२५	रात	९	०	बव	२८	२७	वा	५७	५२
३३	४९	२	शनि.	२७	१७	दिन	४	९	आर्द्रा	३८	१८	रात	८	३३	गण्ड	३६	१०	रात	७	४२	को	२७	१७	तै	५७	२०
३३	५०	३	रवि.	२७	२३	दिन	४	११	पुनर्वसु	४०	२३	रात	९	२४	वृद्धि	३३	५५	सायं	६	४८	गर	२७	२३	व	५८	६
३३	५१	४	सोम.	२८	४९	दिन	४	४६	पुष्य	४३	४५	रात	१०	४४	ध्रुव	३२	४३	सायं	६	१९	वि	२८	४९	बव	६०	०
३३	५२	५	मंगल.	३१	१८	सायं	५	४५	श्लेषा	४८	१३	रात	१२	३०	व्याघात	३२	२२	सायं	६	१०	बव	०	३	बा	३१	१८
३३	५३	६	बुध.	३५	१	रात	७	१३	मघा	५३	४५	रात	२	४३	हर्षण	३२	५५	सायं	६	२३	को	३	१०	तै	३५	१
३३	५४	७	गुरु.	३९	२८	रात	१	०	पूर्वाफा.	५९	५४	रात	५	११	वज्र	३४	६	सायं	६	५१	गर	७	१४	व	३९	२८
३३	५४	८	शुक्र.	४४	२६	रात	१०	५९	उत्तराफा.	६०	०	स	म	स्त	सिद्धि	३५	४०	रात	७	२९	वि	११	५७	बव	४४	२६
३३	५५	९	शनि.	४९	२९	रात	१	०	उत्तराफा.	६	२६	दिन	७	४८	व्यतिपात	३७	२२	रात	८	१०	बा	१६	२८	को	४८	२९
३३	५५	१०	रवि	५४	१२	रात	२	५४	हस्त	१२	५४	दिन	१०	२२	वरीयान	३८	५०	रात	८	४५	तै	२१	२१	गर	५४	१२
३३	५६	११	सोम.	५८	११	रात	४	२९	चित्रा	१८	५३	दिन	१२	४७	परिघ	३९	५०	रात	९	९	व	२६	११	वि	५८	११
३३	५६	१२	मंगल	६०	०	स	म	स्त	स्वाती	२४	६	दिन	२	५१	शिव	४०	४	रात	९	१५	बव	२९	२४	बा	६०	०
३३	५६	१२	बुध	०	५७	प्रातः	५	४०	विशाखा	२८	१३	दिन	४	३०	सिद्ध	३९	२७	रात	९	०	बा	०	५७	को	३१	५९
३३	५७	१३	गुरु	३	२	दिन	६	२६	अनुराधा	३१	११	दिन	५	४१	साध्य	३७	५०	रात	८	२१	तै	३	२	गर	३३	१६
३३	५७	१४	शुक्र	३	३१	दिन	६	३८	ज्येष्ठा	३२	५२	सायं	६	२२	शुभ	३५	१६	रात	७	१९	व	३	३१	वि	३३	७
३३	५७	१५	शनि	२	४४	दिन	६	१८	मूल	३३	१९	सायं	६	३३	शुक्ल	३१	४०	सायं	५	५३	बव	२	४४	बा	३१	४५

ति.	औदायिक योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
१	मानस	७	१५	२४	१७	मिथुन	७	४२	५	१४	६	४६	२२	४१	१	२२	१८	४४	५७	७	-	३	७	५५
२	मुद्गर	८	१६	२५	१८				५	१४	६	४६	२२	४७	१	२३	१५	५१	५७	६	-	३	८	५१
३	ध्वज	९	१७	२६	१९	कर्क	२४	५३	५	१४	६	४६	२२	५३	१	२४	१२	५७	५७	५	-	३	९	४०
४	धाता	१०	१८	२७	२०				५	१४	६	४६	२२	५८	१	२५	१०	२	५७	४	-	३	१०	२२
५	आनन्द	११	१९	२८	२१	सिंह	४८	१३	५	१४	६	४६	२३	२	१	२६	७	६	५७	३	-	३	१०	५९
६	चर	१२	२०	२९	२२				५	१३	६	४७	२३	६	१	२७	४	९	५७	३	-	३	११	३०
७	गद	१३	२१	३०	२३				५	१३	६	४७	२३	११	१	२८	१	१२	५७	२	-	२	१२	०
८	शुभ	१४	२२	३१	२४	कन्या	१६	३४	५	१३	६	४७	२३	१४	१	२८	५८	१४	५७	१	-	२	१२	२८
९	उत्पात	१५	२३	३२	२५				५	१३	६	४७	२३	१७	१	२९	५५	१५	५७	०	-	२	१३	५५
१०	मानस	१६	२४	१	२६	तुला	४५	५६	५	१३	६	४७	२३	१९	२	०	५२	१५	५७	०	-	१	१	२४
११	मुद्गर	१७	२५	२	२७				५	१३	६	४७	२३	२२	२	१	४९	१५	५६	५९	-	१	१	५६
१२	ध्वज	१८	२६	३	२८				५	१३	६	४७	२३	२३	२	२	४६	१४	५६	५८	-	१	२	३२
१२	धाता	१९	२७	४	२९	वृश्चिक	१२	१२	५	१३	६	४७	२३	२५	२	३	४३	१२	५६	५८	-	१	३	१२
१३	आनन्द	२०	२८	५	३०				५	१३	६	४७	२३	२६	२	४	४०	१०	५६	५७	-	१	४	०
१४	चर	२१	२९	६	३१	धनु	३२	५२	५	१३	६	४७	२३	२६	२	५	३७	७	५६	५७	-	१	४	५६
१५	गद	२२	३०	७	१				५	१३	६	४७	२३	२६	२	६	३४	४	५६	५६	-	०	+	+

- १ मिथुनराशिः दिवा ८।१९ वादने। चन्द्र ◡दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। **करवीर १ व्रतम्।** काश्यां दशाश्वमेधे-हरिद्वारे अन्यत्र गंगा नद्यां तीर्थे वा नियमित १० दिनानि यावत् स्नानारम्भः। वृद्धिक्रमेण(क)
- २ मु.जिलहिज १२ हिजरी सन् १४४५। सोपपदा वेदारम्भानध्यायः। ⊙मृगशिरा (मृगडाह) नक्षत्रे रविः ४।५ (दि.६।५२)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३८।१८ (रा.८।३३)उ.।
- ३ कर्कराशिः दिवा ३।११ वादने। भद्रा ५८।६ (रा.४।२८) उ. (मर्त्ये)। रम्भातृतीया ३। महाराणा प्रताप जयन्ती ३। राजस्थाने विशेषतो प्रचलितं। मेला हल्दी घाटी (राजस्थान)। सर्वार्थसिद्धियोगः ४०।२३ (रा.९।२४)उ.।(ख)
- ४ भद्रा २८।४९ (दि.४।४६) या.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। गुरु अर्जुनदेव बलिदान दिवस ४। उमा चतुर्थी ४ (बंगाल-उड़ीसा)। सर्वार्थसिद्धियोगः ४३।४५ (रा.१०।४४) या.। दोषसंघ विनाशको रवियोगः ४३।४५(ग)
- ५ सिंहराशिः रात्रि १२।३० वादने। ज्येष्ठ भौमः (बड़का मंगल)। सर्वार्थसिद्धियोगः ४८।१३ (रा.१२।३०) या.। रवियोगः ४८।१३ (रा.१२।३०) उ.। श्रुति पंचमी ५ (जैन)। महादेव विवाह (उड़ीसा)।
- ६ स्कन्द षष्ठी ६ व्रतम्। अरण्य षष्ठी। शीतला षष्ठी (उड़ीसा)। दोष संघ विनाशकोरवियोगः ५३।४५ (रा.२।४३) या.। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ३५।१ (रा.७।१३) उ.। (च) जयद् योगः २४।६ (दि.२।५१) उ.।
- ७ भद्रा ३९।२८ (रा.१।०) उ. (मर्त्ये)। (ख) यायि (मुद्दई) जयद् योगः २७।२३ (दि.४।११) या.। (ग) (रा.१०।४४) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४३।४५ (रा.१०।४४) उ.।
- ८ कन्याराशिः दिवा ११।५१ वादने। भद्रा ११।५७ (दि.१०।०) या.। श्री दुर्गाष्टमी ८ व्रतम्। अष्टम्यां शुक्ला देव्याः पूजनम्। धूमावती जयन्ती ८। मेलाक्षीर भवानी (कश्मीर)।
- ९ उमाब्रह्माणि पूजा व्रतम् च नवम्यां। महेश नवमी (माहेश्वरी समाज)। ⊙सं.मिथुनराशौ रविः ५।१८ (दि.७।२०)। मु.४५ वृहती समर्घता करम्। पराः १६ घट्यः पुण्याः वस्त्र-अन्न दानम् मन्दाकिन्यां स्नानम्। दोषसंघ(घ)
- १० तुलाराशिः रात्रि ११।३५ वादने। श्रीगंगा दशहरा १० व्रतम् (हरतेदश पापानि)। वृष लग्ने श्रीगंगावतरणम्। सेतुबन्ध रामेश्वर प्रतिष्ठा दिनम्। गायत्री जयन्ती। काश्यां दशाश्वमेधे हरिद्वारे वा सर्वत्र गंगायाम् स्नानम्(छ)
- ११ भद्रा २६।१२ (दि.३।४२) उ. ५८।११ (रा.शे.४।२९) या. (पाताले)। निर्जला एकादशी ११ व्रतम् स्मार्त्तानाम्। इयमेव भीमसेनी एकादशी। शालिग्राम पूजनोत्सवः। काशी विश्वेश्वराय कलशयात्रा। अद्य शर्करा(ङ)
- १२ वैष्णवानामेकादशी व्रतम्। त्रिविक्रम पूजा। चम्पक द्वादशी (उड़ीसा, बंगाल)। मेला खाटू श्याम (राजस्थान)। सुपार्श्वनाथ जयन्ती १२। शुभाशुभेत्रयगुण्यकरः त्रिपुष्कर योगः २४।६ (दि.२।५१) उ.। स्थायी (मुद्दालेह)(च)
- १२ वृश्चिकराशिः दिवा १०।६ वादने। प्रदोष व्रतम् १२। दक्षिणात्य वटसावित्री व्रतारम्भः दिनत्रयं यावत्। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ०।५७ (प्रातः ५।४०) या.। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो २८।१३ (दि.४।३०) उ.।
- १३ दक्षिणात्य वट सावित्री व्रतस्य द्वितीय दिनम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ३१।११ (दि.५।४१) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३।२ (दि.६।२६) या.। रवियोगः ३१।११ (सायं ५।४१) या.।
- १४ धनुराशिः सायं ६।२२ वादने। भद्रा ३।३१ (दि.६।३८) उ. ३३।७ (सायं ६।२८) या. (स्वर्गे)। व्रताय पूर्णिमा १५। दक्षिणात्यवट सावित्री व्रतम् १५। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ३।३१ (दि.६।३८) या.।
- १५ स्नानदानादौ पूर्णिमा १५। संत कबीर जयन्ती १५। मन्वादिः १५। जलयात्रा १५। भगवान जगन्नाथ जलाभिषेक स्नानम् च। देव स्नान पूर्णिमा १५ (उड़ीसा)। बिल्वत्रिरात्रारम्भः। ⊙ आर्द्रा नक्षत्रे रविः ६।१८ (दि.७।४४)।(ज)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ शु.	१	२८	१	१२	०	४	१	२१	४४	४५	१	१३	१७	१०	१२५	२२	१	८	३८	३८	१३	५३	१	२३	३८	४६	७३	३४	१०	२४	५०	५३	२	१६	११	१८	१०	४३
२ श.	२	११	११	४७	०	४	५४	६	४४	४२	१	१५	२२	३२	१२७	३८	१	८	५२	३१	१३	५१	१	२४	५२	२०	७३	३४	१०	२४	५३	९	२	८	११	१८	७	३२
३ र.	२	२४	६	१५	०	५	३८	४८	४४	४२	१	१७	३०	१०	१२८	११	१	९	६	२२	१३	५०	१	२६	५	५४	७३	३४	१०	२४	५५	१७	२	१	११	१८	४	२१
४ सो.	३	६	४६	२०	०	६	२३	३०	४४	४०	१	१९	३८	२१	१२८	५३	१	९	२०	१२	१३	५०	१	२७	१९	२८	७३	३४	१०	२४	५७	१८	१	५७	११	१८	१	११
५ मं.	३	१९	५४	११	०	७	८	१०	४४	३७	१	२१	४७	१४	१२९	१९	१	९	३४	२	१३	४८	१	२८	३३	२	७३	३४	१०	२४	५९	१५	१	५३	११	१७	५८	०
६ बु.	४	२	८	२१	०	७	५२	४७	४४	३७	१	२३	५६	३३	१२९	३५	१	९	४७	५०	१३	४८	१	२९	४६	३६	७३	३४	१०	२५	१	८	१	४८	११	१७	५४	४९
७ गु.	४	१४	१४	४२	०	८	३७	२४	४४	३६	१	२६	६	८	१२९	५८	१	१०	१	३८	१३	४५	२	१	०	१०	७३	३४	१०	२५	२	५६	१	४४	११	१७	५१	३८
८ शु.	४	२६	१८	३५	०	९	२२	०	४४	३४	१	२८	१६	६	१३०	१८	१	१०	१५	२३	१३	४४	२	२	१३	४४	७३	३४	१०	२५	४	४०	१	३९	११	१७	४८	२८
९ श.	५	८	२२	१७	०	१०	६	३४	४४	३४	२	०	२६	२४	१३०	३१	१	१०	२९	७	१३	४२	२	३	२७	१८	७३	३४	१०	२५	६	१९	१	३४	११	१७	४५	१७
१० र.	५	२०	२५	३९	०	१०	५१	८	४४	३०	२	२	३६	५५	१३०	५९	१	१०	४२	४९	१३	३९	२	४	४०	५२	७३	३४	१०	२५	७	५३	१	२६	११	१७	४२	६
११ सो.	६	२	३३	३७	०	११	३५	३८	४४	२८	२	४	४७	५४	१३१	४८	१	१०	५६	२८	१३	३७	२	५	५४	२६	७३	३६	१०	२५	९	१९	१	१९	११	१७	३८	५५
१२ मं.	६	१४	५३	२०	०	१२	२०	६	४४	२५	२	६	५९	४२	१३१	५	१	११	१०	५	१३	३६	२	७	८	२	७३	३६	१०	२५	१०	३८	१	१३	११	१७	३५	४४
१२ बु.	६	२७	२४	५१	०	१३	४	३१	४४	२३	२	९	१०	४७	१३०	३९	१	११	२३	४१	१३	३४	२	८	२१	३८	७३	४०	१०	२५	११	५१	१	५	११	१७	३२	३३
१३ गु.	७	१०	८	४५	०	१३	४८	५४	४४	२०	२	११	२१	२६	१२८	११	१	११	३७	१५	१३	३१	२	९	३५	१८	७३	४०	१०	२५	१२	५६	०	१०	११	१७	२९	२३
१४ शु.	७	२३	८	१९	०	१४	३३	१४	४४	१६	२	१३	२९	३७	१२५	२९	१	११	५०	४६	१३	२९	२	१०	४९	५८	७३	४०	१०	२५	१३	४६	०	२४	११	१७	२६	१२
१५ श.	८	६	१३	१५	०	१५	१७	३०	४४	१०	२	१५	३५	६	१२३	१६	१	१२	४	१५	१३	२७	२	१२	२	३८	७३	४०	१०	२५	१४	२०	०	२८	११	१७	२३	१

पं.९ ज्येष्ठ शु.८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४४०
अयनांशाः २४/१०/५५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	०	१	१	२	१०	११	५
२८	२६	९	२८	१०	२	२५	१७	१७
५८	१८	२२	१६	५५	१३	४	४८	४८
१४	३५	०	६	२३	४४	४०	२८	२८
५७	७२०	४४	१३०	१३	७३	१	३	३
०	५५	३४	१८	४४	३४	३९	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः- अश्विन्यां मेष राशौ १२ युक्तः भरण्यां दिवा ४।३० वादने। बुधः- वृषराशौ ८ शुक्तः मिथुने रात्रि २।५५ वादने। गुरुः- कृत्तिकायां वृषराशौ ६ युक्तः रोहिण्यां रात्रि ४।३० वादने। शुक्रः- वृषराशौ ६ युक्तः मिथुने दिवा १०।३० वादने। शनि- पू.भा.२ चरणे कुम्भ राशौ। राहुः- रेवती १ चरणे। केतुरुच- हस्त ३ चरणे।

ज्येष्ठ शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

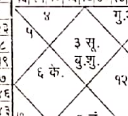
लग्नांत ति.वा.	१ शु. घं.	मि.	२ श. घं.	मि.	३ र. घं.	मि.	४ सो घं.	मि.	५ मं. घं.	मि.	६ बु. घं.	मि.	७ गु. घं.	मि.	८ शु. घं.	मि.	९ श. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	१० र. घं.	मि.	११ सो. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१२ बु. घं.	मि.	१३ गु. घं.	मि.	१४ शु. घं.	मि.	१५ श. घं.	मि.
वृष	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१३	मिथुन	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०
मिथुन	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३६	७	३२	७	२८	कर्क	९	४१	९	३७	९	३३	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८
कर्क	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	सिंह	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	४०	११	३६	११	३२
सिंह	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	कन्या	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४
कन्या	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	तुला	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	५	४	१
तुला	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	वृश्चिक	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२२	६	१८
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृश्चिक	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	२	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	धनु	८	४६	८	४२	८	३८	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३
धनु	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	मकर	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८
मकर	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४४	१०	४०	१०	३६	कुम्भ	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९
कुम्भ	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	मीन	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	७
मीन	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	मेष	३	९	३	५	३	१	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६
मेष	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	वृष	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४७	४	४३

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ शुक्रे–मृगशिरायां रात्रि ८।१४ वादनम् यावत् गर्भाधानं आ.प्रकृति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं (द्वितीयायां), विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं भूमि क्रयः औषधि निर्माणं सेवनं च वाहन क्रयः पूर्व दिग् दिवा ८।१९ वादनात् परं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि २ शनौ**–आर्द्रायाम् शस्त्र निर्माणं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ३ रवौ**–पुनर्वसौ-पुंसवनं सीमन्तः लालवस्त्र प्रवालरत्नधारणं शस्त्रधारणं वाहन क्रयः दिवा ३।११ वादनात्परं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ४ सोमे**–रिक्ता दिवा ४।४६ वादनात्परं पुष्ये-जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशन, विपणिव्यापारः, आभूषण निर्माणं हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं, वाहन क्रयः, दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ५ भौमे**–श्लेषायां उग्रकर्माचरणं। **तिथि ६ बुधे**–मघायां कणमर्दनं, धान्यच्छेदन, शय्यासनाद्युपभोग (सप्तम्यां), हलप्रवहणं बीजवपनं। **तिथि ७ गुरौ**–पूर्वाफाल्गुन्यां भद्रा रात्रि १।० वादनात्पूर्व-प्रकृति स्नानं, कणमर्दनं जलयन्त्र कर्म शय्यासनाद्युपभोग, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ८ शुक्रे**–उत्तराफाल्गुन्यां भद्रा दिवा १०।० वादनात्परं जातकर्म नामकरणं विपणिव्यापारः नववस्त्र धारणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ९ शनौ**–उत्तराफाल्गुन्यां हस्त नक्षत्रे रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १० रवौ**–हस्त नक्षत्रे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नान विपणि व्यापारः नृत्यगीतवाद्य कलारम्भः शस्त्रधारणं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदन लेखनं, इष्टिका निर्माण, शल्यकर्म दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ११ सोमे**–भद्रा दिवा ३।४२ वादनात्पूर्व चित्रायां स्वात्यां जातकर्म नामकरणं विपणि व्यापारः आभूषण निर्माणं, हलप्रवहण, वृक्षारोपण सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदनपत्र लेखनं औषधि निर्माण वाहन क्रयः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १२ भौमे**–स्वात्यां, प्रसूतिस्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, शल्यकर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १२ बुधे**–विशाखायां नववस्त्र धारणं गवां क्रय विक्रयः दिवा ४।३० वादनात्परं अनुराधायां रात्रौ गर्भाधानं, जातकर्म अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः, नववस्त्र धारणं, वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १३ गुरौ**–अनुराधायां रिक्ता दिवा ६।२६ वादनात्पूर्व प्रकृति स्नानं जातकर्म नामकरणान्न प्राशन, विपणि व्यापारः नववस्त्र धारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दन वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भ शस्त्रधारण शय्यासनाद्युपभोग दत्तक पुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म वाहन क्रय दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १४ शुक्रे**–ज्येष्ठायां रिक्ता भद्रा व्याप्तिः। **तिथि १५ शनौ**–मूले शस्त्र निर्माणं उग्रकर्माचरणं।

पं.१० ज्येष्ठ शु.१५ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४४८
अयनांशाः २४/१०/५६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	०	२	१	२	१०	११	५
६	६	१५	१५	१२	१२	२५	१७	१७
३४	१३	१७	३५	४	२	१४	२३	२३
४	१५	३०	६	१५	३८	२०	१	१
५६	७१२	४४	१२३	१३	७३	०	३	३
५६	२५	१०	१६	२७	४०	२८	११	१५



(क) गंगा स्तोत्रस्य नित्य पाठारम्भः। **ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे प्राप्य प्रतिपदं तिथिं। दशाश्वमेधके स्नात्वा मुच्यते सर्व पातकैः।– काशीखण्डे।** शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः २८।२७ (दि.४।३७) या.। (घ) विनाशको रवियोगः ६।२६ (दि.७।४८) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४९।२९ (रा.१।०) या.। शनि-रिक्ता समयोगे सिद्धयोगः ४९।२९ (रा.१।०) या.। यात्रायाम् निषिद्धःयमघंटयोगः ६।२६ (दि.७।४८) उ.। (छ) गंगा स्तोत्रस्य पाठ समाप्तिः। **काश्यां गोतमेश्वर जलधरी श्रृंगार समाप्तिः। सौर आषाढ़ मासारम्भः।** सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगो १२।५४ (दि.१०।२२) या.। रवियोगः यावद्दिनम्। (ङ) युतं जल कुम्भ धेनुदानम्। **दानमन्त्र–देव देव हृषीकेश संसारार्णव तारकः। उदकुम्भ प्रदानेन यास्यामि हरि मन्दिरम्।** रुक्मिणी विवाह (उड़ीसा)। देवविवाहः। रवियोगः १८।५३ (दि.१२।४७) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १८।५३ (दि.१२।४७) उ. ५८।११ (रा. शे.४।३०) या.। (ज) रवौ-गु.सू. चं. योगो चातक वाहनं वह्नि नाड़ी तदीशो भौमः सामान्य वृष्टियोगः। **राष्ट्रीय आषाढ़ मासारम्भः।**

◼ इसी को **भीमसेनी एकादशी** भी कहते हैं। आज के दिन काशी की प्रसिद्ध कलश यात्रा दशाश्वमेध घाट से निकलकर काशी विश्वेश्वर भोले बाबा के दरबार तक जायेगी और कलश में संचित देश भर की पवित्र नदियों के जल से बाबा का अभिषेक किया जायेगा। **प्रदोष का व्रत १९ जून** बुधवार को किया जायेगा। **व्रत के लिये पूर्णिमा का मान २१ जून** शुक्रवार को होगा जबकि स्नान-दान सहित **ज्येष्ठ पूर्णिमा, सन्त कबीर जयन्ती २२ जून** शनिवार को होगी। आज ही भगवान जगन्नाथ का जलाभिषेक (स्नान) सहित कराया जायेगा। इसे **देव स्नान पूर्णिमा** भी कहते हैं। **मृगशिरा नक्षत्र का सूर्य ८ जून** शनिवार को दिन ६।५२ बजे से आयेगा। इसमें उमस भरी गर्मी से जनता त्रस्त हो जायेगी। **मिथुन राशि की सूर्य संक्रान्ति १५ जून** शनिवार को दिन ७।२० बजे से आयेगी। **आर्द्रा नक्षत्र** का सूर्य भी इसी पक्ष के अन्तिम दिन **२२ जनवरी** शनिवार दिन ७।४४ बजे से आयेगा। नक्षत्र और राशि तीनों का प्रवेश शनिवार के ही दिन पड़ना भीषण गर्मी की ओर संकेत कर रहा है। वर्षा सम्भवतः नहीं प्रारम्भ हो पायेगी। कुल मिलाकर ये तीन शुक्रवार एवं तीन शनिवार शुभाशुभफलकारक है। कुछ दैवी-प्राकृतिक दुर्घटना घटकर धनजन को क्षति पहुँचा सकती है।

राशिफल

मेष-	पीड़ा भयम्	कर्क-	सुखम्	वृश्चिक-	सुखार्थ
वृष-	रोगं	सिंह-	रोगं	धनु-	रोगं
मिथुन-	सुख प्राप्तिः	कन्या-	भयं	मकर-	शत्रु भयं
		तुला-	दौर्बल्यं	कुम्भ-	सुखम्
				मीन-	नेत्र कष्टं

फलम्– द्वादशी तिथि की वृद्धि हो जाने के कारण यह पक्ष १६ दिन का हो गया है। **मृगशिरा नक्षत्र मिथुन राशि** का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव सम चलेगा एवं सुभिक्ष कारक भी है। **गंगा दशहरा** से सम्बन्धित गंगा-स्नान एवं गंगा स्तोत्र का पाठ ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा ७ जून शुक्रवार से प्रारम्भ हो जायेगा। इसकी वृद्धि क्रम अर्थात् प्रतिदिन एक-एक पाठ बढ़ाते जाते हैं। क्षत्रिय कुल शिरोमणि एवं भारतीय इतिहास के गौरव महाराणा प्रताप की जयन्ती ९ जून रविवार को मनाई जायेगी। राजस्थान के हल्दी घाटी का मेला उत्सव सजेगा। **गंगा दशहरा** का परम पुनीत पर्व **१६ जून** रविवार को मनाया जायेगा। आज के दिन गंगा स्नान करने से विशेष पुण्यफल की प्राप्ति होती है एवं दस प्रकार के पाप (तीन कायिक, ४ वाचिक एवं ३ मानसिक) सभी कट जाते हैं। इसी के साथ विगत १० दिनों से चला आ रहा गंगा स्नान एवं गंगा स्तोत्र का पाठ समाप्त हो जायेगा। काशी एवं हरिद्वार का गंगा स्नान विशेष पुण्यफल कारक माना गया है। आज ही के दिन भगवान राम ने भगवान शिव की स्थापना **'रामेश्वरम'** में की थी। गायत्री जयन्ती भी आज ही मनाई जायेगी। वर्ष भर की सबसे कठिन एकादशी माने जाने वाली **निर्जला एकादशी का व्रत १७ जून** सोम. को किया जायेगा।◼

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ आषाढ़ कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्मऋतुः। दि.२३ जून - ५ जुलाई सन् २०२४ ई.। (रा.आषाढ़ २ - १४)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. ३+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
३३	५७	१/२	रवि.	०/५६	३६/५७	प्रातः	५/४	३२/४८	पूर्वाषाढ़ा	३२	३४	दिन	६	१४	ब्रह्म	२७	६	दिन	४	३	को	०	४६	ते/गर	२/५६	५९/५७	शुभ	२३	१	८	२	मकर	४७	११	५	१३	६	४७	२३	२६	२	७	३१	०	५६	५६	-	०	८	२६
३३	५७	३	सोम	५४	३८	रात	२	४०	उत्तराषाढ़ा	३०	५०	दिन	५	३३	ऐन्द्र	२१	४५	दिन	१	५५	व	२५	४७	वि	५४	३८	मृत्यु	२४	२	९	३				५	१३	६	४७	२३	२५	२	८	२७	५६	५६	५६	-	०	९	१५
३३	५६	४	मंगल	४८	४८	रात	१२	४४	श्रवण	२८	१५	दिन	४	३१	वैधृति	१५	४०	दिन	११	२९	बव	२१	४३	बा	४८	४८	लुम्बक	२५	३	१०	४	कुम्भ	५६	४०	५	१३	६	४७	२३	२४	२	९	२४	५२	५६	५५	+	१	१०	०
३३	५६	५	बुध	४३	१९	रात	१०	३३	धनिष्ठा	२४	५१	दिन	३	१६	विष्कुम्भ	९	०	दिन	८	४९	को	१६	३	ते	४३	१९	मित्र	२६	४	११	५				५	१३	६	४७	२३	२३	२	१०	२१	४७	५६	५५	+	१	१०	३७
३३	५६	६	गुरु.	३७	२२	रात	८	१०	शतभिषा	२१	११	दिन	१	४१	प्रीति/आयुष्मान	०/५२	४०/३४	प्रातः	५/१	५१/५३	गर	१०	२१	व	३७	२२	वज्र	२७	५	१२	६				५	१३	६	४७	२३	१९	२	११	१८	४२	५६	५५	+	१	११	१३
३३	५५	७	शुक्र.	३१	१२	दिन	५	४२	पूर्वाभाद	१७	६	दिन	१२	३	सौभाग्य	४६	४५	रात	११	५५	वि	४	१७	बव/बा	३१/५८	१३/५	ध्वांक्ष	२८	६	१३	७	मीन	३	९	५	१३	६	४७	२३	११	२	१२	१५	३७	५६	५५	+	२	११	४७
३३	५५	८	शनि.	२४	५८	दिन	३	१२	उत्तराभाद्र	१२	५४	दिन	१०	२३	शोभन	३९	५	रात	८	२१	कौ	२४	५८	तै	५१	५६	धूम	२९	७	१४	८				५	१३	६	४७	२३	१६	२	१३	१२	३२	५६	५५	+	२	१२	२१
३३	५४	९	रवि	१८	५४	दिन	१२	४७	रेवती	८	५१	दिन	८	४६	अतिगण्ड	३१	३७	रात	५	५२	गर	१८	५४	व	४६	४	प्रवर्धमान	३०	८	१५	९	मेष	८	५१	५	१३	६	४७	२३	१३	२	१४	९	२६	५६	५४	+	२	१२	५८
३३	५३	१०	सोम.	१३	१३	दिन	१०	३०	अश्विनी	५	८	दिन	७	१७	सुकर्मा	२४	३०	रात	३	१	वि	१३	१३	बव	४०	३६	राक्षस	१	९	१६	१०				५	१३	६	४७	२३	९	२	१५	६	२०	५६	५४	+	२	१	३८
३३	५३	११	मंगल.	८	०	दिन	८	२६	भरणी/कृत्तिका	१/५७	५६/३०	प्रातः	५/४	५१/५९	धृति	१७	५१	दिन	१२	२२	बा	८	०	कौ	३५	४९	मुसल	२	१०	१७	११	वृष	१६	२०	५	१३	६	४७	२३	५	२	१६	३	१४	५६	५४	+	२	२	२३
३३	५२	१२	बुध.	३	३८	दिन	६	४१	रोहिणी	५७	४७	रात	४	२१	शूल	११	५४	दिन	१०	०	तै	३	३८	गर	३३	५६	शुभ	३	११	१८	१२				५	१४	६	४६	२३	१	२	१७	०	८	५६	५४	+	२	३	१३
३३	५१	१३/१४	गुरु.	०/५७	४/३०	प्रातः	५/४	३६/१६	मृगशिरा	५७	८	रात	४	५	गण्ड	६	३८	दिन	७	५३	व	०	४	वि/श	३८/५७	५७/३०	मृत्यु	४	१२	१९	१३	मिथुन	२७	२८	५	१४	६	४६	२२	५६	२	१७	५७	२	५६	५४	+	२	४	१०
३३	५०	३०	शुक्र.	५६	१५	रात	३	४४	आर्द्रा	५७	४१	रात	४	१९	वृद्धि/ध्रुव	२/५६	१३/३३	प्रातः	६/४	७/४४	चं.	२६	५४	ना	५६	१५	पद्म	५	१३	२०	१४				५	१४	६	४६	२२	५१	२	१८	५३	५६	५६	५४	+	३	५	१०

- (१) **मकरराशिः** रात्रि १२।५ वादने। **गुरुहर गोविन्द सिंह जयन्ती १।** 'आषाढ़मासे प्रथमे च पक्षेनिरभ्रे दृष्टे रवि मण्डले च। विद्युन्नगर्जत्यथनवमघामासद्वयं तत्र न वर्षणम् स्यात्।' सर्वार्थसिद्धियोगः ३२।३४ (दि.६।१४) उ.।(क)
- (३) भद्रा २५।४७ (दि.३।३२) उ. ५४।३८ (रा.२।४०) या. (पाताले)। सर्वार्थाऽमृतसिद्धि योगो ३०।५० (दि.५।३३) उ.। यांय (मुद्दइ) जयद् योगः ३०।५० (दि.५।३३) या.। **पश्चिम दिशायाम् बुधोदयः।**
- (४) **कुम्भराशिः** रात्रि ३।५३ वादने। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। **अंगारकी संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदय (रा.१०।०) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। स्थायी (मुद्दालह) जयद् योगः २८।१५ (दि.४।३१) या.। **आर्द्रा २(ख)**
- (५) कुलाकुलगणः दुर्लभ सन्धिकर योगः ४३।१९ (रा.१०।३३) उ.।
- (६) भद्रा ३७।२२ (रा.८।१०) उ. (मर्त्ये)। दोषसंघ विनाशको रवियोगः २१।११ (दि.१।४१) उ.।
- (७) **मीन राशिः** दिवा ६।५६ वादने। भद्रा ४।१७ (प्रातः ६।५६)या.। **पश्चिम दिशायाम् शुक्रोदयः** सायं ५।० वादने। दोषसंघ विनाशकारवियोगः १७।६ (दि.१२।३) या.। **(ख) चरणे रविः** रात्रि ७।४१ वादने।
- (८) **श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्** पर्युषितान्नपानादिकमत्रांविहितम्। (वसियउरा-बसौड़ा)। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः २४।५८ (दि.३।१२) उ.। याय (मुद्दइ) जयद् योगः २४।५८ (दि.३।१२) उ.। **आर्द्रा ३ चरणे रविः** दिवा८।२०वादने।
- (९) **मेषराशिः** दिवा ८।४६ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा ४६।४ (रा.११।३८) उ. (स्वर्गे)। सर्वार्थसिद्धियोगः ८।५१ (दि.८।४६) उ.। यांय (मुद्दइ) जयद् योगः ८।५१ (दि.८।४६)या.।
- (१०) भद्रा १३।१३ (दि.१०।३०) या.। **शुक्र बालत्व निवृत्तिः** सायं ५।० वादने। यायि (मुद्दई) जयद योगः १३।१३ (दि.१०।३०) उ.।
- (११) **वृषराशिः** दिवा ११।४६ वादने। **योगिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** कुष्ठादिरोग निवृत्ति कामनया। सर्वार्थसिद्धियोगः १।५६ (प्रातः ५।५१) उ. ५७।३० (रा.शे.४।५९) या.। **आर्द्रा ४ चरणे रविः** रात्रि ८।२५ वादने।
- (१२) **प्रदोष व्रतम् १२।** सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। बुध-भद्रा सिद्धयोगः ३।३८ (प्रातः ६।४१) या.।
- (१३/१४) **मिथुनराशिः** दिवा ४।१३ वादने। भद्रा ०।४ (प्रातः ५।१६) उ. २८।४९ (दि.४।४६) या. (स्वर्गे)। **मास शिवरात्रि व्रतम् १३।**
- (३०) **स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा।** शुभवारान्विता दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्। (क) शुभाशुभे त्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ३२।३४ (सायं ६।१४) उ. ५६।५७ (रा.शे.४।१८) या.।

> *विश्व शस्त्र अर्थात् त्रयोदश दिन पक्षः। पक्षास्यमध्ये द्वितिपतेतातदाभवेद्रौरवकालयोगः। पक्षे विनष्टे सकलं विनष्ट मित्याहुराचार्य वराःसमस्ताः। -ज्योतिर्निबन्धे।*

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ र.	८	१९	४२	११	०	१६	१	४०	४४	२	२	१७	३८	२२	१२२	९	१	१२	१७	४२	१३	२४	२	१३	१६	१८	७३	४०	१०	२५	१४	४८	०	२०	११	१७	११	५०
३ सो.	९	३	२३	५५	०	१६	४५	४२	४३	५५	२	१९	४०	३१	१२०	४०	१	१२	३१	६	१३	२२	२	१४	२९	५८	७३	४०	१०	२५	१५	८	०	१५	११	१७	१६	३९
४ मं.	९	१७	१३	४१	०	१७	२९	३७	४३	५०	२	२१	४१	११	११९	३४	१	१२	४४	२७	१३	१७	२	१५	४३	३८	७३	४०	१०	२५	१५	२३	०	१०	११	१७	१३	२९
५ बु.	१०	१	१३	२४	०	१८	१३	२७	४३	४६	२	२३	४०	४५	११७	२५	१	१२	५७	४४	१३	१५	२	१६	५७	१८	७३	४०	१०	२५	१५	३३	०	८	११	१७	१०	१८
६ गु.	१०	१५	१९	२०	०	१८	५७	१३	४३	४०	२	२५	२८	१०	११६	४३	१	१३	१०	५९	१३	११	२	१८	१०	५८	७३	४०	१०	२५	१५	४१	०	५	११	१७	७	७
७ शु.	१०	२९	२८	५६	०	१९	४०	५३	४३	३५	२	२७	३४	५३	११४	१८	१	१३	२४	१०	१३	९	२	१९	२४	३८	७३	४०	१०	२५	१५	४६	०	२	११	१७	३	५६
८ श.	११	१३	३६	४८	०	२०	२४	२८	४३	३०	२	२९	२९	११	१११	३५	१	१३	३७	१९	१३	६	२	२०	३८	१८	७३	४०	१०	२५	१५	४८	०व.	५	११	१७	०	४६
९ र.	११	२७	४४	१५	०	२१	७	५८	४३	२२	३	१	२१	४६	१०९	४४	१	१३	५०	२५	१३	४	२	२१	५२	५८	७३	४०	१०	२५	१५	४३	०	११	११	१६	५७	३५
१० सो.	०	११	५२	५	०	२१	५१	२०	४३	१३	३	३	११	३०	१०७	२९	१	१४	३	२९	१३	१	२	२३	६	३८	७३	४०	१०	२५	१५	३२	०	१६	११	१६	५४	२४
११ मं.	०	२५	४८	५४	०	२२	३४	३३	४३	३	३	४	५८	५९	१०६	४३	१	१४	१६	३०	१२	५७	२	२४	२०	१८	७३	४०	१०	२५	१५	१६	०	२५	११	१६	५१	१३
१२ बु.	१	९	२०	२१	०	२३	१७	३६	४२	५३	३	६	४५	४२	१०४	२२	१	१४	२९	२७	१२	५३	२	२५	३३	५८	७३	४१	१०	२५	१४	५१	०	३३	११	१६	४८	२
१३ गु.	१	२२	४८	१४	०	२४	०	२९	४२	४५	३	८	३०	४	१०३	५१	१	१४	४२	२०	१२	५१	२	२६	४७	३९	७३	४१	१०	२५	१४	१८	०	४२	११	१६	४४	५१
३० शु.	२	७	१२	४६	०	२४	४३	१४	४२	४०	३	१०	१३	५५	१०२	३७	१	१४	५५	११	१२	४६	२	२८	१	२०	७३	४१	१०	२५	१३	३६	०	५०	११	१६	४१	४१

फलम्– पक्षारम्भ में द्वितीया तिथि का क्षय हो गया है एवं चतुर्दशी तिथि का भी क्षय हो गया है। **इस प्रकार यह पक्ष १३ दिन** का ही है। शास्त्रों में इसे **विश्वघस्र पक्ष** कहते हैं तथा यह बड़ा ही अशुभफलकारी माना गया है। इस पक्ष में यद्यपि कि **२८ जून को पश्चिम दिशा** में शुक्रोदय हो जायेगा किन्तु १३ दिन का पक्ष होने से विवाहादि शुभ कार्यों के लिये मुहूर्त्त प्रारम्भ नहीं हो पायेंगे। ऐसा माना गया है कि आषाढ़ महीने के पहले पखवारे (पक्ष) में ही बादल-वर्षा तथा विद्युत गर्जना हो जानी चाहिए नहीं तो आगामी दो महीनों तक वर्षा का अभाव रहता है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत का मान २५ जून** मंगलवार को है; चन्द्रोदय रात १०।० बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **मंगलवार की गणेश चतुर्थी** अङ्गारकी रूप में विशेष पुण्य फलदायिनी मानी जाती है। **श्रीशीतलाष्टमी का व्रत (वसियउरा) २९ जून** शनिवार को होगा। इसमें बासी पक्वान्न प्रसाद स्वरूप ग्रहण करने का पुण्यफलदायक विधान है। इसी के साथ विगत ४ महीनों से चला आ रहा यह व्रत पूजन इस वर्ष के लिये समाप्त हो जायेगा। **योगिनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिये २ जुलाई मंगलवार को है। इस एकादशी का व्रत रखकर भगवान पुण्डरीकाक्ष का विधिवत पूजन कर उनके ऊपर चढ़ाये गये जल से शरीर का मार्जन (मालिश) कर लिया जाये तो कुष्ठादि जैसे असाध्य चर्म रोगों का भी शमन होता है। इसका उल्लेख मार्कण्डे ऋषि ने हेम माली-कुबेर से सम्बन्धित कथा में बताया है। **प्रदोष का व्रत ३ जुलाई** बुधवार को किया जायेगा। **मास शिवरात्रि व्रत** का मान ४ जुलाई गुरुवार को होगा। **स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या ५ जुलाई** शुक्रवार को होगी। यद्यपि की शुक्रवार की अमावस्या शुभफल कारक है किन्तु १३ दिन का पक्ष होने से देश समाज एवं विश्व के सम्मुख अनेक प्रकार की विपरीत परिस्थितियाँ पैदा हो सकती है। सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में चल रहा है। २८ जून के आसपास तेज हवा के साथ अच्छी वृष्टि हो जाने की सम्भावना है। या तो इस पक्ष में बहुत पानी बरस जायेगा या सूखा ही पड़ जायेगा; क्योंकि यह पक्ष १३ दिन का है। दैनिक उपभोग में आने वाली वस्तुओं का भाव एकाएक बढ़ जायेगा। फल, दूध, छेना इत्यादि का भाव आसमान छूने लगेगा। सब्जियों का भाव भी बढ़ जायेगा।

पं.११ आषाढ कृष्ण ८ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४५५ अयनांशाः २४/१०/५७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	०	२	१	२	१०	११	५
१३	१३	२०	२९	१३	२०	२५	१७	१७
१२	३६	२४	२९	३७	३८	१५	०	०
३२	४८	२८	११	१९	१८	४८	४६	४६
५६	८६०	४३	११२/३५	१३	७३	०	३	३
५४	१०	३०	व	६	४०	५	११	११



ओमादीनां चारः
भौमः-भरण्यां मेष राशौ। **बुधः**-(वक्री) मिथुने। **गुरुः**-रोहिण्यां वृष राशौ। **शुक्रः**-मिथुने। **शनिः**-पू.भा. २ चरणे कुम्भ राशौ। **९ रवितः वक्री राहुः**-ति.३० शुक्रतः उ.भा.४ चरणे। **केतुश्च**-हस्त २ चरणे।

आषाढ़ कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत तिवा	१र. घं.	मि.	३सो. घं.	मि.	४मं. घं.	मि.	५बु. घं.	मि.	६गु. घं.	मि.	७शु. घं.	मि.	८श. घं.	मि.	९र. घं.	मि.	१०सो. घं.	मि.	११मं. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	३०शु. घं.	मि.
मिथुन	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९
कर्क	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३५	८	३१	८	२७
सिंह	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४१
कन्या	१	४०	१	३६	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३
तुला	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	१०
वृश्चिक	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२७
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
धनु	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	४०	७	३६	७	३२
मकर	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४५	९	४१	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७
कुम्भ	११	३५	११	३१	११	२७	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८
मीन	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६
मेष	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५५
वृष	४	३९	४	३३	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१

पं.१२ आषाढ कृष्ण ३० शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४६१ अयनांशाः २४/१०/५८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	०	३	१	२	१०	११	५
१८	७	२४	१०	१४	२८	२५	१६	१६
५३	१२	४३	१३	५५	१	१३	४१	४१
५६	४६	१४	५५	११	२०	३६	४१	४१
५६	७९३	४२	१०६/३७	१२	७३	०व	३	३
५४	३५	४०	व	४६	४१	५०	११	११



विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १/२ रवौ**–पूर्वाषाढ़ायाम्-पुंसवनं सीमन्तः, प्रसूति स्नान धान्यच्छेदनं, जलयन्त्र कर्म मुकदर्मा कार्य इष्टिकादहनं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ३ सोमे**–भद्रा दिवा ३।३२ वादनात्पूर्व उत्तराषाढ़ायाम् आव. प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं, बीजवपनं धान्यच्छेदनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ सेवारम्भ, शय्यसानाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं औषधि निर्माण वाहन क्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ४ भौमे**–श्रवणे रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ५ बुधे**–धनिष्ठायां-नामकरणं अन्नप्राशन नववस्त्र धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ६ गुरौ**–शतभिषायां जातकर्म नामकरणं धान्यच्छेदनं गवां क्रय विक्रयः, धान्यरोपणं, औषधिसेवनं, शल्यकर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ७ शुक्रे**–भद्रा प्रातः ६।५६ वादनात्परं पूर्वाभाद्रपदे आ.प्रसूति स्नानं, धान्यच्छेदनं, धान्यरोपणं जलयंत्र कर्म, मुकदमा कार्यः भूमिक्रयः मीन चन्द्रे उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ८ शनौ**–उत्तराभाद्रपदे कृष्ण वस्त्र धारणं उत्तरदिग् यात्रा। **तिथि ९ रवौ**–रिक्ता दिवा १२।४७ वादनात्परं अश्विन्यां प्रसूति स्नानं, विपणिव्यापारः, लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं बीजवपनं रत्नधारणं दत्तक पुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म वाहन क्रयःदिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १० सोमे**–भद्रा दिवा १०।३० वादनात्परं भरण्यां मुहूर्त्ताभावः। **तिथि ११ भौमे**–भरण्यां कृत्तिकायां शस्त्र घटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि १२ बुधेः**–रोहिणयां जातकर्म अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं कणमर्दनं धान्यरोपणं वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं पूर्व-दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १३ गुरौ**–भद्रा रिक्ता व्याप्तिः **तत्परं मासान्तः।**

राशिफल

- मेष- शत्रुनाशः
- वृष- सुखं धनप्राप्तिः
- मिथुन- सुखम् अर्थलाभ
- कर्क- कष्टं
- सिंह- सुखलाभ
- कन्या- कष्टं
- तुला- सुख लाभः
- वृश्चिक-धर्माचरणं
- धनु- सुख प्राप्तिः
- मकर- धर्माचरणं
- कुम्भ- लाभकरः
- मीन- धनागमः

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ आषाढ़ शुक्ल पक्षः।

ग्रीष्मऋतुः। कर्कार्कतः याम्यायंन वर्षा ऋतुः। दिनांक ६ – २१ जुलाई सन् २०२४ ई.। (रा.आषाढ़ १५-३०)

दि.मा.		ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योग	अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. अं.	क.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं.		चन्द्रास्त घं.	मि.
३३	४९	१	शनि	५६	१३	रात	३	४३	पुनर्वसु	५९	२८	रात	५	१	व्याघात	५६	२०	रात	३	४६	किं	२६	२१	बव	५६	१३	छत्र	६	१४	२१	१५	कर्क	४८	३	५	१४	६	४६	२२	४५	२	१९	५०	५०	५६	५४	+	३	७	३३
३३	४८	२	रवि	५७	२७	रात	४	१४	पुष्य	६०	०	स	म	स्त	हर्षण	५४	५५	रात	३	१३	बा	२६	५०	कौ	५७	२७	श्रीवत्स	७	१५	२२	१६				५	१४	६	४६	२२	३९	२	२०	४७	४४	५६	५५	+	३	८	१७
३३	४६	३	सोम	५९	४८	रात	५	१०	पुष्य	६	३३	प्रातः	६	१७	वज्र	५४	२३	रात	३	०	तै	२८	३७	गर	५९	४८	धाता	८	१६	२३	१७				५	१५	६	४५	२२	३३	२	२१	४४	३९	५६	५५	+	३	८	५५
३३	४५	४	मंगल	६०	०	स	म	स्त	श्लेषा	६	४४	दिन	७	५७	सिद्धि	५४	४८	रात	३	१०	व	३१	३९	वि	६०	०	आनन्द	९	१७	२४	१८	सिंह	६	४४	५	१५	६	४५	२२	२६	२	२२	४१	३४	५६	५५	+	३	९	२९
३३	४४	४	बुध	३	३०	दिन	६	३९	मघा	११	५९	दिन	१०	३	व्यतिपात	५५	५०	रात	३	३५	वि	३	३०	बव	३५	४१	चर	१०	१८	२५	१९				५	१५	६	४५	२२	१९	२	२३	३८	२९	५६	५५	+	३	९	५९
३३	४३	५	गुरु	७	५२	दिन	८	२५	पूर्वाफा.	१८	२	दिन	१२	३८	वरीयान	५७	२२	रात	४	१३	बा	७	५२	कौ	४०	२५	गद	११	१९	२६	२०	कन्या	३४	४२	५	१५	६	४५	२२	११	२	२४	३५	२४	५६	५५	+	३	१०	२८
३३	४२	६	शुक्र.	१२	५७	दिन	१०	२७	उत्तराफा.	२४	३२	दिन	३	५	परिघ	५९	५	रात	४	५४	तै	१२	५७	गर	४५	२४	शुभ	१२	२०	२७	२१				५	१६	६	४४	२२	२	२	२५	३२	१९	५६	५६	+	३	१०	५५
३३	४०	७	शनि.	१७	५२	दिन	१२	२५	हस्त	३१	२	दिन	५	४१	शिव	६०	०	स	म	स्त	व	१७	५२	वि	५०	१४	मृत्यु	१३	२१	२८	२२				५	१६	६	४४	२१	५५	२	२६	२९	१५	५६	५६	+	४	११	२४
३३	३८	८	रवि.	२२	३१	दिन	२	१९	चित्रा	३७	८	रात	८	८	शिव	०	३५	प्रातः	५	३२	बव	२२	३१	बा	५४	३७	पद्म	१४	२२	२९	२३	तुला	४	८	५	१६	६	४४	२१	४६	२	२७	२६	१०	५६	५७	+	४	११	५३
३३	३६	९	सोम.	२६	३८	दिन	३	५७	स्वाती	४२	३१	रात	१०	१८	सिद्ध	१	३८	प्रातः	५	५६	कौ	२६	३८	तै	५८	८	छत्र	१५	२३	३०	२४				५	१७	६	४३	२१	३७	२	२८	२३	७	५६	५७	+	४	१२	२७
३३	३४	१०	मंगल	२९	३०	दिन	५	४	विशाखा	४६	५५	रात	१२	३	साध्य	२	३	दिन	६	६	गर	२९	३७	व	६०	०	श्रीवत्स	१६	२४	३१	२५	वृश्चिक	३०	५०	५	१७	६	४३	२१	२८	२	२९	२०	४	५६	५८	+	४	१	५
३३	३३	११	बुध.	३१	३४	दिन	५	५६	अनुराधा	५०	१०	रात	१	२२	शुभ	१	३२	दिन	५	५५	व	०	३५	वि	३१	३४	सौम्य	१७	२५	१	२६				५	१७	६	४३	२१	१८	३	०	१७	२	५६	५८	+	४	१	४१
३३	३२	१२	गुरु.	३२	११	सायं	६	१०	ज्येष्ठा	५२	७	रात	२	९	शुक्ल/ब्रह्म	[illegible]		प्रातः			बव	१	५२	बा	३२	११	कालदण्ड	१८	२६	२	२७	धनु	५२	७	५	१८	६	४२	२१	८	३	१	१४	०	५६	५९	+	४	२	४१
३३	२९	१३	शुक्र.	३२	२८	सायं	५	५३	मूल	५२	४८	रात	२	२५	ऐन्द्र	५४	११	रात	३	२५	कौ	१	४९	तै	३१	[illegible]	स्थिर	१९	२७	३	२८				५	१८	६	४२	२०	५८	३	२	१०	५९	५६	५९	+	४	३	४१
३३	२७	१४	शनि	२९	३४	दिन	५	९	पूर्वाषाढा	५२	१९	रात	२	१५	वैधृति	४९	५५	रात	१	१७	गर	०	३१	वि. श.	[illegible]	[illegible]	मातंग	२०	२८	४	२९				५	१९	६	४१	२०	४७	३	३	७	५८	५७	०	+	४	४	४७
३३	२५	१५	रवि.	२६	३२	दिन	३	५६	उत्तराषा.	५०	४४	रात	१	३७	विष्कुंभ	४४	४१	रात	११	११	बव	२६	३२	वा	५४	३२	अमृत	२१	२९	५	३०	मकर	६	५७	५	१९	६	४१	२०	३६	३	४	४	५८	५७	१	+	४	+	+

कर्कराशिः रात्रि १०।५२ वादने। गुप्तनवरात्रारम्भः। ⊙पुनर्वसु नक्षत्रे रविः९।५४(दि.९।१६)। स्त्री–स्त्री, चन्द्र-चन्द्र योगो अश्ववाहनं नीरा नाड़ी तदीशो शुक्रः मेघाडम्बरेण सामान्य(क)

चन्द्र◡ दर्शनम् मु.३० सामा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। रथयात्रा २। श्रीराम (जगन्नाथ) कृष्ण बलराम-सुभद्रा रथोत्सवः सर्वत्र विशेषतो जगन्नाथपुर्याम्। काश्यां, श्रीधाम(ख)

मु.मुहर्रम १ हिजरी सन् १४४६। सर्वार्थसिद्धियोगः २।३३ (प्रातः ६।१७) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २।३३ (प्रातः ६।१७) उ. ५९।४८ (रा.५।१०) या.।

सिंहराशिः दिवा ७।५७ वादने। भद्रा ३१।३९ (सायं ५।५५) उ. (मर्त्य)। अंगारकी वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ६।४४ (दि.७।५७) या.। स्थायी(ग)

भद्रा ३।३० (दि.६।३९) या.। रवियोगः ११।५९ (दि.१०।३) या.। (क) वृष्टियोगः। त्रिपुष्करयोगः ५६।१३ (रा.३।४३) उ. ५९।२८ (रा.शे.५।१) या.।

कन्याराशिः रात्रि ७।८ वादने। रवियोगः १८।२ (दि.१२।२८) उ.। गुरौ पूर्णा सिद्धयोगः ७।५२ (दि.८।२५) या.। (घ) (दि.५।४१) या.। पुनर्वसु ३ चरणे रविः दिवा १।५२ वादने।

श्रीस्कन्दषष्ठी ६ व्रतम्। कार्तिकेय पूजनम्। कर्दम षष्ठी ६ (बंगाल)। रवियोगः २४।३२ (दि.३।५) या.। शुक्र–नन्दा सिद्धयोगः १२।५७ (दि.१०।२७) या.।

भद्रा १७।५२ (दि.१२।२५) उ. ५०।१४ (रा.१।२२) या. (पाताले)। विवस्वान्व्रत सप्तमी ७। सूर्य पूजनम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १७।५२ (दि.१२।२५) या.। यमघट योगः ३१।२(घ)

तुलाराशिः प्रातः ६।५५ वादने। महिषघ्नी व्रतं ८ (देवी भागवत)। मृत्युबाणः ३५।४० (रा.७।३६) उ.। रवियोगः ३७।८ (रा.८।८) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३७।८ (रा.८।८)उ.।

कन्दर्प नवमी ९। भड्डली नवमी ९। ऐन्द्री पूजन ९ (भविष्योत्तर पुराण।) मृत्युबाणः ३९।१ (रा.८।५३) या.। रवियोगः यावद्दिनम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २६।३८ (दि.३।५७) या.।

वृश्चिकराशिः सायं ५।३७ वादने। गिरिजा पूजा १०। मन्वादिः १०। सोपपदा १० वेदारम्भानध्यायः। आशा दशमी १०। उल्टारथ-पुनर्यात्रा (पुरी-उड़ीसा)।⊙सं.कर्क राशौ,(ङ)

भद्रा ०।३५ (प्रातः ५।३१) उ. ३१।३४ (दि.५।५६) या. (स्वर्ग)। श्रीहरिशयनी एकादशी ११ व्रतम सर्वेषाम्। रात्रौ श्री विष्णु पूजनम् शयनोत्सवःच। चातुर्मास्य व्रतारम्भः। (च)

धनुराशिः रात्रि २।९ वादने। प्रदोष व्रतम् १२। चातुर्मास यम नियम संयमारम्भः। शाक् त्याग व्रतारम्भः। वामन पूजा यज्ञ फल प्राप्ति हेतवः। वासुदेव द्वादशी १२।

रवियोगः ५२।४८ (रा.२।२५) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ५२।४८ (रा.२।२५) उ.।

भद्रा २९।३४ (दि.५।९) उ. ५८।४ (रा.शे. ४।३३) या. (पाताल)। व्रताय पूर्णिमा १५, शिवशयनोत्सवः १५ (प्रदोषे)। अम्बिका व्रत १४। चौमासी १४ (जैन), शिवशयन चतुर्दशी(छ)

मकर राशिः दिवा ८।६ वादने। स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। गुरु पूर्णिमा १५। व्यास पूर्णिमा १५। गुरु व्यासयोः पूजनम्। आषाढ़ी पूर्णिमा १५। सायं काले(ज)

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.४ भौमे–दिवा ७।५७ वादनात्परं मघायां रेखा ९ दिवा लग्नं ४ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ वा ल.८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०।। सायं ५।५५ वादनात्परं भद्राव्याप्तिः। ति.४ बुधे–भद्रा प्रातः ६।३९ वादनात्परं मघायां आ.दिवा लग्नं ४ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५। ति.५ गुरौ-दिवा १२।२८ वादनात्परं उ.फा. रेखा ९ दिवा लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०।। वा लग्नं गोधूलि वा रात्रौ लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं २ पंचेष्टाभावः। ति.६ शुक्रे–उ.फा. रेखा ९ दिवा लग्नं ४ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं ८ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५।। दिवा ३।५ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे रेखा ७ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं१ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं २ पंचेष्टाभावः। ति.७ शनौ-हस्त नक्षत्रे रेखा ७ दिवा लग्नं ४ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ दिवा १२।२५ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः। तिथि ८ रवौ–रात्रि ८।८ वादनात्परं स्वात्यां मृत्युबाणः। ति.९ सोमे–मृत्युबाण रात्रि ८।५३ वादनात्परं स्वात्यां पंचेष्टलग्नाभावः। तत्परं कर्क संक्रान्तिः हरिशयनः। विवाह मुहूर्त्ताभावः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	श.	२	२०	१२	१७	०	२५	२५	५४	४२	३६	३	११	५६	३२	९७	५१	१	१५	७	५७	१२	४०	२	२९	१५	१	७३	४१	१०	२५	१२	४६	०	५६	११	१६	३८	३०
२	र.	३	२	५६	४७	०	२६	८	३०	४२	३०	३	१३	३४	२३	९३	२०	१	१५	२०	३७	१२	३७	३	०	२८	४२	७३	४१	१०	२५	११	५०	१	०	११	१६	३५	२०
३	सो.	३	१६	४०	३२	०	२६	५१	०	४२	२२	३	१५	७	४३	९०	३५	१	१५	३३	१४	१२	३२	३	१	४२	२३	७३	४१	१०	२५	१०	५०	१	५	११	१६	३२	८
४	मं.	३	२९	१०	५५	०	२७	३३	२२	४२	१३	३	१६	३८	१८	८६	२२	१	१५	४५	४६	१२	२८	३	२	५६	४	७३	४१	१०	२५	९	४५	१	११	११	१६	२८	५७
४	बु.	४	११	२७	१९	०	२८	१५	३५	४२	५	३	१८	४	४०	८३	४६	१	१५	५८	१४	१२	२५	३	४	९	४५	७३	४१	१०	२५	८	३४	१	१५	११	१६	२५	४६
५	गु.	४	२३	३५	१६	०	२८	५७	४०	४२	०	३	१९	२८	२६	७९	३१	१	१६	१०	३९	१२	२१	३	५	२३	२६	७३	४१	१०	२५	७	१९	१	२०	११	१६	२२	३५
६	शु.	५	५	३७	३९	०	२९	३९	४०	४१	५५	३	२०	४७	५७	७५	४४	१	१६	२३	०	१२	१९	३	६	३७	७	७३	४१	१०	२५	५	५९	१	२३	११	१६	१९	२४
७	श.	५	१७	३९	२१	१	०	२१	३५	४१	५१	३	२२	३	४१	७३	५६	१	१६	३५	१९	१२	१६	३	७	५०	४८	७३	४१	१०	२५	४	३६	१	२७	११	१६	१६	१३
८	र.	५	२९	४७	१५	१	१	३	२६	४१	४५	३	२३	१७	३७	७१	३२	१	१६	४७	३५	१२	११	३	९	४	२९	७३	४१	१०	२५	३	९	१	३०	११	१६	१३	२
९	सो.	६	११	१०	२६	१	१	४५	११	४१	४०	३	२४	२९	९	६९	२९	१	१६	५९	४६	१२	७	३	१०	१८	१०	७३	४१	१०	२५	१	३९	१	३५	११	१६	९	५१
१०	मं.	६	२३	१३	२०	१	२	२६	५१	४१	३६	३	२५	३८	३८	६७	४७	१	१७	११	५३	१२	३	३	११	३१	५१	७३	४१	१०	२५	०	४	१	४१	११	१६	६	४०
११	बु.	७	५	५६	१९	१	३	८	२७	४१	३१	३	२६	४६	२५	६५	५५	१	१७	२३	५६	११	५८	३	१२	४५	३२	७३	४२	१०	२४	५८	२३	१	४७	११	१६	३	३०
१२	गु.	७	१८	५२	२४	१	३	४९	५८	४१	२८	३	२७	५२	२०	६४	१२	१	१७	३५	५४	११	५५	३	१३	५९	१४	७३	४२	१०	२४	५६	३६	१	५२	११	१६	०	१९
१३	शु.	८	२	४	१६	१	४	३१	२६	४१	२५	३	२८	५६	३२	६३	३७	१	१७	४७	४९	११	५१	३	१५	१२	५६	७३	४२	१०	२४	५४	४४	१	५६	११	१५	५७	८
१४	श.	८	१५	२८	३५	१	५	१२	५१	४१	२३	४	०	०	९	६३	३	१	१७	५९	४०	११	४७	३	१६	२६	३८	७३	४२	१०	२४	५२	४८	२	१	११	१५	५३	५७
१५	र.	८	२८	५४	४०	१	५	५४	१४	४१	२१	४	१	३	१२	६२	३९	१	१८	११	२७	११	४२	३	१७	४०	२०	७३	४२	१०	२४	५०	४७	२	६	११	१५	५०	४६

पं.१३ आषाढ़ शुक्ल ८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४७० अयनांशाः २४/१०/५९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	१	३	१	३	१०	११	५
२७	२९	१	२३	१६	९	२५	१६	१६
२६	४७	३	१७	४७	४	३	१३	१३
१०	१५	२६	३७	३५	२९	९	२	२
५६	७४९	४१	७१	१२	७३	०	३	३
५७	२५	४५	३२	११	४१	१	११	११

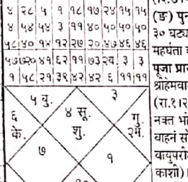


आषाढ़ शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत तिथि.वा.	१श. घं.	मि.	२र. घं.	मि.	३सो. घं.	मि.	४मं. घं.	मि.	४बु. घं.	मि.	५गु. घं.	मि.	६शु. घं.	मि.	७श. घं.	मि.	८र. घं.	मि.	९सो घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	लग्नांत तिथि.वा.	११बु. घं.	मि.	१२गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	१४श. घं.	मि.	१५र. घं.	मि.
मिथुन	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२५	कर्क	७	३९	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४
कर्क	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	सिंह	९	५३	९	४९	९	४६	९	४२	९	३८
सिंह	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	कन्या	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०
कन्या	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	तुला	२	२२	२	१८	२	१४	२	११	२	७
तुला	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	वृश्चिक	४	३९	४	३५	४	३१	४	२८	४	२४
वृश्चिक	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	धनु	६	४४	६	४०	६	३७	६	३३	६	२९
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
धनु	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	मकर	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४
मकर	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	कुम्भ	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५
कुम्भ	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	मीन	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३
मीन	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७	११	३३	मेष	१	७	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२
मेष	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	वृष	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४९
वृष	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	मिथुन	५	१९	५	१४	५	१०	५	६	५	२

पं.१४ आषाढ़ शुक्ल१५ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४७७ अयनांशाः २४/११/०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	८	१	४	१	३	१०	११	५
४	२८	५	१	१८	१७	२४	१५	१५
४	५४	५४	३	११	४०	५०	५०	५०
५८	४०	१४	१२	२७	२०	४७	४६	४६
५७	७२०	४१	६२	११	७३	२व.	३	३
१	५८	२१	३९	४२	४२	६	११	११



(ख) वृन्दावन तथा सर्वत्र रथारुण जगन्नाथ बलराम सुभद्रा पूजनम् रथाकर्षणन् महत् फलम्। उक्तं च- 'रथस्थं ये प्रपश्यन्ति न तेषां जायते विपत्।' मनोरथ द्वितीया २ (बंगाल)। रवि-पुष्य सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। (ग) (मुद्दालेह) जयद् योगः ६।४४ (दि.७।५७) उ.। रवियोगः ६।४४ (दि.७।५७) या.। पुनर्वसु २ चरणे रविः रात्रि ९।३९ वादने। (ङ) पुनर्वसो ४ चरणे रविः ४२।३६ (रा.१०।२२)। मु.४५ बृहती समर्घता करन्। पूर्वा १६ वा ३० घट्यः पुण्याः। निरयण याम्यायनं, (दक्षिणायणे सूर्यः)। वर्षा ऋतुः प्रारम्भः। वर्ष विश्वा ८ महर्घता करम्। गंगायाम् मन्दाकिन्यां स्नानम्, गोघृत दानम्। दैत्यानाम् दिनम् देवानां च रात्रिः। मनसा पूजा प्रारम्भः (झारखण्ड-बंगाल)। कर्क केश निकृन्तनम् वर्ज्यम्। (च) अन्न सोपवासं निशिघटोपरि श्रीहेमवासुदेव पूजनम् पर दिने दानम् च। सौर श्रावण मासारम्भः। सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगो ५०।१० (रा.१।२२) या.। (छ) १४ (उड़ीसा)। कोकिला व्रतम् १५। कोकिला रुपी शिवायाः प्रत्यहं पूजनम्। नक्त भोजनद्यारम्भः।⊙पुष्य नक्षत्रे रविः १३।१० (दि.१०।३५)। स्त्री–पु. चन्द्र–चन्द्र योगो मेष वाहनं सोम्यानाड़ी तदीशो गुरुः मेघाडम्बरेण सामान्य वृष्टियोगः। (ज) सर्व धान्यानाम् अधिवासनम्। वायुपरीक्षण। गो गोमयेन गृहगोठनम्। आषाढ़ी योगः। बौद्धधर्म चक्र प्रवर्तन दिवसः (सारनाथ-काशी)। मन्वादिः। कर्णघण्टा (काश्यां) कनखलयोः (हरिद्वारे) स्नानम्। फूल बंगला महोत्सवः समाप्ति (वृन्दावन)। सर्वार्थसिद्धियोगः ५०।४४ (रा.१।३७) या.।

फलम्– चतुर्थी तिथि की वृद्धि हो जाने के कारण यह पक्ष १६ दिन का है। रविवार-पुष्य नक्षत्र का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव को स्थिर रखेगा। जगत के नाथ जगन्नाथ जी की उत्सव-आराधना का परम पुनीत पर्व रथयात्रा ७ जुलाई रविवार को मनाया जायेगा। बीमारी के बाद स्वस्थ होकर भाई बलराम-बहन सुभद्रा के साथ रथ पर सवार होकर भ्रमण पर निकलते हैं। इस पर्व में भगवान के दर्शन पूजन एवं रथ को खींचने पर तथा उसमें सहायता करने वाले पर कोई कष्ट नहीं आता। श्री हरिशयनी एकादशी व्रत का मान सबके लिये १७ जुलाई बुधवार को होगा। सृष्टि के समस्त जीव-जगत के पालनकर्ता श्री हरि विष्णु को विधिवत् पूजित कर शयन करा दिया जाता है। भगवान के शयन अवधि चातुर्मास में विवाहादि मांगलिक कार्य स्थगित हो जाते हैं। साधु-सन्त एक जगह स्थिर होकर भजन-कीर्तन प्रवचन इत्यादि धार्मिक कार्य करते हैं। प्रदोष [illegible]

भौमादीनां चारः

[illegible]

विविध मुहूर्त्ताः

तिथि १ शनौ–पुनर्वसौ कृष्णवस्त्र धारणं उपकर्माचरणं पश्चिम दिग् यात्रा। तिथि २ रवौ–पुष्ये पुंसवनं सीमन्तः विद्यारम्भः, उपनयनं ल.४ वा ६ विपणि व्यापार, लालवस्त्र प्रवालरत्नधारण, जलयंत्रकर्म, शस्त्रधारण, दत्तकपुत्र ग्रहण, आवेदनपत्रलेखन, इष्टिका निर्माण, वृक्षारोपणं, सर्व देव प्रतिष्ठा ल.६ सेवारम्भ, वाहन क्रय दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि ३ सोमे– [illegible] पूर्व दिग् यात्रा। तिथि ५ गुरौ–पूर्वाफाल्गुन्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं विद्यारम्भ, उपनयनं ल.४ वा ६ जलयंत्र कर्म, भूमिक्रय: दिवा १२।२८ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां जातकर्म-नामकरणं अन्नप्राशनं वरवरणं-कन्यावरणं, वधूप्रवेशः विपणिव्यापार नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं, चूल्ही स्थापनं वृक्षारोपणं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं, इष्टिकानिर्माणं, सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशय वाटिकारम्भः ल.६ पूर्व दिग् यात्रा। तिथि ६ शुक्रे–उत्तराफाल्गुन्यां जातकर्म अन्नप्राशन, कर्णवेधः [illegible] वधूप्रवेश ल. गोधूलि चौलमुण्डनं, विपणिव्यापारः नववस्त्र धारणं, [illegible] नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, सेवारम्भ शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, [illegible] तिथि ७ शनौ–भद्रा दिवा १२।२५ वादनात्पूर्वं [illegible] वादनात्पूर्वं चित्रायां विपणि व्यापारः लालवस्त्र धारणं बीजवपनं [illegible] निर्माणं वाहन क्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। तिथि ९ सोमे– [illegible]

□ फल में बादलों के प्रबल घेराव के साथ जुलाई के प्रथम सप्ताह में अच्छी वृष्टि की सम्भावना बन रही है। पुष्य नक्षत्र का सूर्य २० जुलाई शनि. को दिन १०।३५ बजे से आवेगा। इसमें भी सामान्य से अच्छी वृष्टि की सम्भावना बन रही है। पक्ष के तीन शनिवार एवं तीन रविवार अशुभ फलकारक है। देश में कुछ हिस्सों में वर्षा का बिल्कुल ही अभाव हो जायगा। दैवी-प्राकृतिक दुर्घटनायें घटेगी। महँगाई बढ़ जायेगी। उमस भरी भीषण गर्मी एवं तीक्ष्ण सूर्य की किरणों से तरह-तरह की बीमारी फैलेगी।

● शय्यासनाद्युपभोगं रात्रौ गर्भाधानं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। ति.१२ गुरौ–ज्येष्ठायां नामकरणं, अक्षरारम्भः, गवां क्रय विक्रयः कर्णमर्दन, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, शस्त्रधारणं मुकदमा कार्य, इष्टिका निर्माण, शल्यकर्म नूतनवध्वा पाककर्म। ति.१३ शुक्रे–मूले नामकरणं कर्णमर्दनं, [illegible] मुकदमा कार्य भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। ति.१४ शनौ– [illegible] ति.१५ रवौ-उत्तराषाढ़ायाम् प्रसूति स्नानं विपणिव्यापारः [illegible] नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, शस्त्रधारणं आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका [illegible]

राशिफल

राशि	फल
मेष-	सुख श्रीप्राप्तिः
वृष-	शत्रुभयं
मिथुन-	धनलाभः
कर्क-	बन्धनभयम्
सिंह-	शोकः हानिः
कन्या-	अर्थागम
तुला-	सुखोभोगं
वृश्चिक-	रोगहानिः
धनु-	धनादिः लाभः
मकर-	विग्रहः
कुम्भ-	अलाभकरः
मीन-	रोगं शोकं

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ श्रावण कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं सौम्य गोलः वर्षा ऋतुः।

दिनांक २२ जुलाई - ४ अगस्त सन् २०२४ ई.। (रा. आषाढ़ ३१ - श्रावण १३)

दि.मा.		श्रावण कृ. तिथि							नक्षत्र						योग						करण						औदायिका	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		र.क्रां. उ +		स्पष्ट सूर्यः				गति		रे.अं.		चन्द्रोदय		
घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	अं.	फ.	सो.	रा.	राशि	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
३३	२३	१	सोम	२२	३२	दिन	२	२०	श्रवण	४८	२५	रात	१२	४१	प्रीति	३८	४५	रात	८	४९	को	२२	३२	तै	५०	७	सिद्धि	२२	१	६	३१				५	९	६	४१	२०	२४	३	५	१	५९	५७	२	+	४	७	५३	फसली श्रावण मासारम्भः। 'श्रावण वर्जयच्छाकम्।' मासपर्यन्तम् श्रीकाशी विश्वनाथाय नित्य गंगाजल विल्व पत्रार्पणम् पार्थिवार्चनम् च। **श्रावण सोमवार व्रत**। प्रदोष व्रत वदस्य विधिः। सायं उमामहेश्वर पूजनम्। चन्द्रोदय(क)
३३	२१	२	मंगल.	१७	४३	दिन	१२	२५	धनिष्ठा	४५	१६	रात	११	२६	आयुष्मान	३२	८	सायं	६	११	गर	१७	४३	व	४५	१	उत्पात	२३	२	७	१	कुंभ	१६	५०	५	२०	६	४०	२०	१२	३	५	५९	१	५७	२	+	४	८	३५	कुम्भराशिः दिवा १२।४ वादने। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। भद्रा ४५।१ (रा.११।२०) उ. (मर्त्य)। **भौमव्रतम् दुर्गा यात्रा हनुमत् दर्शनम्। राष्ट्रीय श्रावण मासारम्भः**। शुभाशुभद्वयगुणवकरः द्विपुष्करयोगः २७।४३ (दि.१२।२५) या. (उ)
३३	१९	३	बुध	१२	१८	दिन	१०	१६	शतभिषा	४१	३४	रात	९	५९	सौभाग्य	२५	०	दिन	३	१	वि	१२	१८	बव	३९	२०	मानस	२४	३	८	२				५	२०	६	४०	२०	०	३	६	५६	३	५७	३	+	४	९	१३	भद्रा १२।१८ (दि.१०।१६) या.। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्**। चन्द्रोदये (रा.९।१३) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। **(ख) पुष्य नक्षत्रे २ चरणे रविः रात्रि १०।१० वादने।**
३३	१६	४	गुरु.	६	२३	दिन	७	५४	पूर्वाभाद्र	३७	३२	रात	८	२२	शोभन	१७	३२	दिन	१२	२२	बा	६	२३	को	३३	१८	मुद्गर	२५	४	९	३	मीन	२३	३३	५	२१	६	३९	१९	४७	३	७	५३	६	५७	४	+	४	९	४८	मीनराशिः दिवा २।४६ वादने। गुरो-पूर्णा सिद्धयोगः ६।२३ (दि.७।५४) उ.। याथि (मुदई) जयद् योगः ३७।३२ (रा.८।२२) उ.। **(ग) चरणे रविः** दिवा ११।२ वादने।
३३	१४	५/६	शुक्र.	०/५३	१४/४७	प्रातः	५/२	२७/१८	उत्तराभाद्र	३३	१८	सायं	६	४२	अतिगण्ड	९	५५	दिन	९	२०	तै	०	१४	गर/व	२७/५३	०/४७	ध्वज	२६	५	१०	४				५	२१	६	३९	१९	३५	३	८	५०	१०	५७	४	+	४	१०	२२	भद्रा ५३।४७ (रा.२।५८) उ. (मर्त्य)। नाग पंचमी (मरुस्थल)। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ३३।१८ (सायं ६।४२) उ.। शुक्र-नन्दा सिद्धयोगः ०।१४ (प्रातः ५।२७) उ.। रवियोगः ३३।१८ (सायं ६।४२) उ.।
३३	१२	७	शनि.	४८	१०	रात	१२	३७	रेवती	२९	१२	दिन	५	३	सुकर्मा/धृति	२/५२	१३/३१	प्रातः	६/३	२५/१८	वि	२०	५९	बव	४८	१०	धाता	२७	६	११	५	मेष	२९	१२	५	२२	६	३८	१९	२२	३	९	४७	१४	५७	५	+	४	१०	५८	मेषराशिः दिवा ५।३ (सायं) वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा २०।५९ (दि.१।४६) या.। **शीतला सप्तमी ७**। रवियोगः २१।१२ (दि.५।३) या.। याथि (मुदई) जयद् योगः २१।१२ (दि.५।३) या.। **पुष्य नक्षत्रे ३(ग)**
३३	९	८	रवि.	४२	१३	रात	१०	१५	अश्विनी	२५	२२	दिन	३	३१	शूल	४७	३०	रात	१२	२२	बा	१५	१२	कौ	४२	१३	आनन्द	२८	७	१२	६				५	२२	६	३८	१९	८	३	१०	४४	१९	५७	६	+	४	११	३७	**कालाष्टमी ८** रात्रौ पूजनम्। मंगला गौरी पूजनम्। मन्वादि ८। सर्वार्थसिद्धियोगः २५।२२ (दि.३।३१) या.।
३३	७	९	सोम.	३७	०	रात	८	११	भरणी	२१	५९	दिन	२	११	गण्ड	४०	४२	रात	९	४०	तै	९	३६	गर	३७	०	चर	२९	८	१३	७	वृष	३६	२०	५	२३	६	३७	१८	५४	३	११	४१	२५	५७	७	+	४	१२	२०	वृषराशिः रात्रि ७।५५ वादने। **श्रावण सोमवार व्रतम्**। प्रदोष व्रत वदस्य विधिः। सायं उमामहेश्वर पूजनम्। याथि (मुदई) जयद् योगः २१।५९ (दि.२।११) या.।
३३	४	१०	मंगल.	३२	३३	सा	६	२५	कृत्तिका	१९	१७	दिन	१	७	वृद्धि	३४	३३	रात	७	१३	व	४	४६	वि	३२	३३	गद	३०	९	१४	८				५	२३	६	३७	१८	४०	३	१२	३८	३२	५७	८	+	४	१	८	भद्रा ४।४६ (दि.७।१७) उ. ३२।३३ (सायं ६।२५) या.। **भौमव्रतम्, दुर्गा यात्रा, हनुमद्दर्शनम्।** सर्वार्थसिद्धियोगः १९।१७ (दि.१।७) या.। **पुष्य नक्षत्रे ४ चरणे रविः** रात्रि १०।३५ वादने।
३३	२	११	बुध.	२८	५५	दिन	४	५८	रोहिणी	१७	२५	दिन	१२	२२	ध्रुव	२९	६	सायं	५	२	बव	०	४४	बा/कौ	२८/५३	५५/३८	शुभ	३१	१०	१५	९	मिथुन	४७	०	५	२४	६	३६	१८	२५	३	१३	३५	४०	५७	९	+	४	२	२	मिथुनराशिः रात्रि १२।१२ वादने। **कामदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** सर्वार्थसिद्धियोगः यावाद्दिनम्। बुध-भद्रा सिद्धयोगः २८।५५ (दि.४।५८) उ.।
३२	५९	१२	गुरु.	२६	२१	दिन	३	५७	मृगशिरा	१६	३१	दिन	१२	१	व्याघात	२४	२८	दिन	३	१२	तै	२६	२१	गर	५५	३९	मृत्यु	१	११	१६	१०				५	२४	६	३६	१८	११	३	१४	३२	४९	५७	१०	+	४	३	१	**प्रदोष व्रतम् १२।** (घ) जयद् योगः २६।१ (दि.३।५०) उ.। पाप वारान्वित दर्श दुर्भिक्ष च भयम्।
३२	५६	१३	शुक्र.	२४	५८	दिन	३	२४	आर्द्रा	१६	४५	दिन	१२	७	हर्षण	२०	४६	दिन	१	४३	व	२४	५८	वि	५४	५४	पद्म	२	१२	१७	११				५	२५	६	३५	१७	५६	३	१५	२९	५९	५७	११	+	४	४	०	भद्रा २४।५८ (दि.३।२४) उ. ५४।५४ (रा.३।२३) या. (स्वर्ग)। **मासशिवरात्रि व्रतम् १३।** सर्वार्थसिद्धियोगः १६।४५ (दि.१२।७) उ.।
३२	५४	१४	शनि.	२४	५०	दिन	३	२२	पुनर्वसु	१८	१३	दिन	१२	४३	वज्र	१८	५	दिन	१२	४०	श	२४	५०	च	५५	२५	छत्र	३	१३	१८	१२	कर्क	२	५५	५	२५	६	३५	१७	४०	३	१६	२७	१०	५७	१३	+	४	५	०	कर्कराशि प्रातः ६।३५ वादने।⊙श्लेषा नक्षत्रे रविः दि.१०।५९। स्त्री-स्त्री, चन्द्र योगी, खरवाहनं नीरा नाड़ी तदीशो शुक्रः मेघाडम्बरेण-वायुवेगेन सामान्य वृष्टियोगः। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः २४।५० (दि.३।२२)या.।
३२	५१	३०	रवि.	२६	१	दिन	३	५०	पुष्य	२०	५९	दिन	१	४९	सिद्धि	१६	२५	दिन	१२	०	ना	२६	१	किं	५७	११	श्रीवत्स	४	१४	१९	१३				५	२६	६	३४	१७	२५	३	१७	२४	२३	५७	१४	+	४	+	+	**स्नानदानश्राद्धादौ अमा पुण्यतमा ३०। हरियाली अमावस्या ३०। पिठोरा व्रतम् ३०।** मन्वादिः ३०। **स्वामी अखण्डानन्द जयन्ती ३०।** रवि-पुष्य सर्वार्थसिद्धियोगः २०।५९ (दि.१।४९) या.। याथि (मुदई)(घ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.		स्पष्ट सोम				स्पष्ट मंगल				गति		स्पष्ट बुध				गति		स्पष्ट गुरु				गति		स्पष्ट शुक्र				गति		स्पष्ट शनि				गति (वक्री)		स्पष्ट राहु			
		रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.
१	सो.	९	१२	४२	१८	१	६	३५	३५	४१	२०	४	२	५	५१	६२	०	१	१८	२३	९	११	३९	३	१८	५४	२	७३	४०	१०	२४	४८	४१	२	१०	११	१५	४७	३५
२	मं.	९	२६	४०	३४	१	७	१६	५५	४१	१६	४	३	७	५१	६१	४३	१	१८	३४	४८	११	३५	३	२०	७	४२	७३	४०	१०	२४	४६	३१	२	१५	११	१५	४४	२४
३	बु.	१०	१०	४४	२६	१	७	५८	११	४१	१०	४	४	९	३४	६०	५०	१	१८	४६	२३	११	३०	३	२१	२१	२२	७३	४०	१०	२४	४४	१६	२	१९	११	१५	४१	१३
४	गु.	१०	२४	५२	३१	१	८	३९	२१	४१	७	४	५	१०	२४	४९	४८	१	१८	५७	५३	११	२६	३	२२	३५	२	७३	४०	१०	२४	४१	५७	२	२६	११	१५	३८	३
५	शु.	११	८	३	५६	१	९	२०	२८	४१	५	४	६	०	१२	४६	३५	१	१९	९	१९	११	२०	३	२३	४८	४२	७३	३७	१०	२४	३९	३१	२	३२	११	१५	३४	५२
७	श.	११	२२	१३	४७	१	१०	१	३३	४१	२	४	६	४६	४७	४०	२४	१	१९	२०	३९	११	१२	३	२५	२	११	७३	३७	१०	२४	३६	५९	२	४०	११	१५	३१	४१
८	र.	०	७	१९	५६	१	१०	४२	३५	४०	५५	४	७	२७	११	३६	१०	१	१९	३१	५१	११	३	३	२६	१५	५६	७३	३७	१०	२४	३४	१९	२	४७	११	१५	२८	३०
९	सो.	०	२१	१९	३४	१	११	२३	३०	४०	५०	४	८	३	२१	२९	३३	१	१९	४२	५४	१०	५७	३	२७	२९	३३	७३	३७	१०	२४	३१	३२	२	५५	११	१५	२५	१९
१०	मं.	१	४	५५	४६	१	१२	४	२०	४०	४२	४	८	३२	५४	२५	१८	१	१९	५३	५१	१०	५०	३	२८	४३	१०	७३	३७	१०	२४	२८	३७	३	१	११	१५	२२	८
११	बु.	१	१८	३९	१९	१	१२	४५	२	४०	३६	४	८	५८	१२	२०	४०	१	२०	४	४१	१०	४२	३	२९	५६	४७	७३	३७	१०	२४	२५	३६	३	५	११	१५	१८	५७
१२	गु.	२	२	८	१५	१	१३	२५	३८	४०	२७	४	९	१८	५२	१६	१६	१	२०	१५	२३	१०	३६	४	१	१०	२४	७३	३५	१०	२४	२२	३१	३	८	११	१५	१५	४७
१३	शु.	२	१५	३१	४४	१	१४	६	५	४०	१८	४	९	३५	८	१०	४६	१	२०	२५	५९	१०	३१	४	२	२३	५९	७३	३५	१०	२४	१९	२३	३	१२	११	१५	१२	३६
१४	श.	२	२९	३३	४	१	१४	४६	२३	४०	१०	४	९	४५	५४	६	२५	१	२०	३६	३०	१०	२५	४	३	३७	३४	७३	३५	१०	२४	१६	११	३	१५	११	१५	९	२५
३०	र.	३	१२	१९	२६	१	१५	२६	३३	४०	५	४	९	५२	१९	व.४	५०	१	२०	४६	५५	१०	२१	४	४	५१	९	७३	३५	१०	२४	१२	५६	३	१७	११	१५	६	१५

फलम्– इस वर्ष सावन मास की शुरुआत ही सोमवार से हो रही है। सावन का प्रत्येक सोमवार शिवाराधना के लिये विशेष पुण्यफलदायक होता है। षष्ठी तिथि का क्षय हो गया है जिससे यह पक्ष १४ दिन का ही है। सावन के महीने में प्रतिदिन भोले-शंकर भगवान को जल चढ़ाकर बेलपत्र अर्पण करने से उनकी विशेष अनुकम्पा प्राप्त होती है। चातुर्मास प्रारम्भ होने के बाद यह पहला महीना आता है। इसमें चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया तिथि में **अशून्य शयन का व्रत** किया जाता है। शास्त्र में कहा गया है कि इस व्रत को करने से पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन अक्षुण अर्थात् लम्बी अवधि तक बना रहता है। इसका मान **२२ जुलाई** सोमवार को होगा। चन्द्रोदय रात ७।५३ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। सर्वविदित है कि सावन का महीना देवाधिदेव भगवान शिव का अत्यन्त प्रिय महीना है। इसकी व्याख्या विद्वान-मनीषी साधु-सन्त अनेक प्रकार से करते हैं। देश भर में विशेष कर उत्तर भारत में काँवरिये गंगा स्नान कर कॉवर में लटकते पात्र में गंगा जल भरकर बाबा भोलेनाथ का जलाभिषेक करते है। काँवारियों के **'बोल बम्'** उद्घोष से □

पं.१५ श्रावण कृ.८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४८४ अयनांशाः २४/११/२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	१	४	१	३	१०	११	५
१०	७	१०	७	१९	२६	२४	१५	१५
४४	१९	४२	२७	३१	१५	३४	२८	२८
११	५६	३५	११	५१	५६	१९	३०	३०
५७	८५१	४०	३६	११	७३	२ ४७ व	३	३
६	५	५५	१०	३	३७		११	११



भौमादीनां चारः
भौमः-कृत्तिकायां वृषराशौ५शुक्रतः रोहिण्यां रात्रि ३।५५। **बुधः**-मघायां सिंह राशौ३० रवितः व्रकी। **गुरुः**-रोहिण्यां वृषराशौ। **शुक्रः**-कर्क राशौ ११ बुधतः सिंह राशौ प्रातः ८।१०वादने। **शनिः**-(वक्री) पू.भा. २ चरणे। **राहुः**-उ.भा. ४चरणे। **केतुश्च** हस्त २ चरणे।

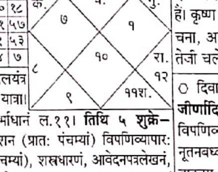
श्रावण कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१सोम		२ मं.		३ बु.		४ गु.		५ शु.		७ श.		८ र.		९ सो		१० मं.		११बु.		१२गु.		१३शु.		१४श.		३०र.	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
कर्क	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०	६	३७	६	३३	६	२९
सिंह	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४७	८	४३
कन्या	११	४६	११	४२	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५
तुला	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	१२
वृश्चिक	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२९
धनु	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१	५	३८	५	३४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मकर	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९
कुम्भ	९	४१	९	३७	९	३३	९	२९	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०
मीन	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८
मेष	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	५	१२	१	११	५७
वृष	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३
मिथुन	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४३	४	२९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ सोमे–**श्रवणे रात्रौ गर्भाधानं, अन्नप्राशनं (द्वितीयायां) क्रय-विक्रयः दीक्षाग्रहणं (द्वितीयायां), आभूषण निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदन, शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं नूतनवध्वपाककर्म औषधि निर्माणं वाहन क्रयः श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। रात्रि १२।४१ वादनात्परं धनिष्ठायां **गृहारम्भः ल.२। तिथि २ भौमे–**धनिष्ठायां प्रसूतिस्नानं, लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं हलप्रवहणं दत्तक पुत्र ग्रहणं कुम्भ चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ३ बुधे–**भद्रा दिवा १०।१६ वादनात्परं रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ गुरौ–**रिक्ता दिवा ७।५४ वादनात्परं पूर्वाभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, दीक्षाग्रहणं, धान्यच्छेदनं, चूल्ही स्थापनं जलयंत्र कर्म, मुकदमा कार्य, भूमिक्रयः उत्तर दिग् यात्रा। रात्रि ८।२२ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे गर्भाधानं ल.११। **तिथि ५ शुक्रे–**उत्तराभाद्रपदे जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशन (प्रातः पंचम्यां) विपणिव्यापारः नववस्त्र धारण, दीक्षग्रहणं सेवारम्भः (प्रातः पंचम्यां), शस्त्रधारणं, आवेदनपत्रलेखनं, वृक्षारोपण उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ७ शनौ–**रेवत्यां भद्रा दिवा १।४६ वादनात्परं कृष्ण वस्त्र धारणं सायं ५।३ वादनात्पूर्व उत्तरदिग् यात्रा। **तिथि ८ रवौ–**प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं शल्यकर्म शस्त्रधारणं, दत्तक पुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं वाहन क्रयः इष्टिका निर्माणं, शल्यकर्म अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग्यात्रा। **तिथि ९ सोमे–**भरण्यां रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १० भौमे–**भद्रा○

पं.१६ श्रावण कृ.३० रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४९१ अयनांशाः २४/११/३

र.	सा.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	१	४	१	४	१०	११	५
१७	१२	१५	९	२०	४	२४	१५	१५
२४	१९	२६	५२	४६	५१	१२	६	६
२३	२६	३३	१२	५५	९	५६	१५	१५
५७	७६३	४०	४ ५० व	१०	७३	३ १७ व	३	३
१४	४८	५		२१	३५		११	११



(क) व्यापिनी द्वितीयायाम् **अशून्यशयन २ व्रतम्।** चन्द्रोदय (रा.७।५३) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। चातुर्मासे विधेयम्। श्रीलक्ष्मी युतं विष्णु पर्यंके पूजनादक्षयदाम्पत्य सुख प्राप्ति हेतवः। **प्रार्थना मन्त्रः–**"पत्नी भर्तृवियोगञ्च भर्ता भार्या समुद्भवम्। नानुवन्ति यथा दुःखं दाम्पत्यानि तथा कुरु।" सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ४८।२५ (रा.१२।४१) या.।

□ वातवरण शिवमय हो जाता है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत का मान २४ जुलाई** बुधवार को होगा। चन्द्रोदय रात ९।१३ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। कृष्ण पक्ष की **शीतला सप्तमी २७ जुलाई** शनिवार को पड़ेगी। **योगिनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिये ३१ जुलाई बुधवार को होगा। **प्रदोष का व्रत १ अगस्त** गुरुवार को किया जायेगा। सावन की **मास शिवरात्रि शिव पूजन** में विशेष महत्वपूर्ण होती है, इसका मान **२ अगस्त शुक्रवार** को होगा। स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित **अमावस्या ४ अगस्त** रविवार को है। सावन की अमावस्या को **हरियाली अमावस्या** भी कहते हैं। **श्लेषा नक्षत्र का सूर्य ३ अगस्त** शनिवार को दिन १०।५९ बजे से आयेगा। बादलों के प्रबल घेराव के साथ सामान्य से अच्छी वृष्टि होने के योग प्राप्त हो रहे हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि का घटना शुभ है किन्तु रविवार की अमावस्या दुर्भिक्षकारक है। गर्मी बहुत पड़ेगी। गेहूँ, चना, अलसी तिल तेल, गुड़, शेयर बाजार में तेजी का रुख बनेगा। मादक द्रव्यों में तेजी चलेगी। देश के उत्तरी हिमालयी क्षेत्र में वर्षा-भूस्खलन से क्षति पहुँचेगी।

○ दिवा ७।१७ वादनात्पूर्व कृत्तिकायां उग्रकर्माचरणं। **तिथि ११ बुधे–**रोहिण्यां मृगभे **जीर्णादिगृहप्रवेशः ल.६ वा ८,** गर्भाधानं रात्रौ लग्न ११ जातकर्म, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापार दीक्षाग्रहणं चूल्ही स्थापनं, वृक्षारोपणं सेवारम्भ, शय्यासनाद्युपभोगं नूतनवध्वा पाककर्म, पूर्व-दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १२ गुरौ–**मृगशिरायां दिवा १२।१ वादनम् यावत् **जीर्णादिगृह प्रवेशः ल.६** पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशनं (ति.दा.) विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं, चूल्हीस्थापनं वृक्षारोपणं शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदनपत्र लेखनं भूमिक्रयः नूतनवध्वा पाककर्म पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३ शुक्रे–**आर्द्रा उपरान्त पुनर्वसौ भद्रा-रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १४ शनौ–**रिक्ता व्याप्तिः **ततो मासान्तः।**

राशिफल

मेष-	रोगभयम्
वृष-	सुखम् श्री
मिथुन-	हानिः भयम्
कर्क-	स्थान हानिः
सिंह-	द्रव्यनाशः
कन्या-	वित्ताप्तिः
तुला-	सौख्यं
वृश्चिक-	पाप वृद्धिः
धनु-	रोग भयम्
मकर-	गमनम् हानिः
कुम्भ-	रिपुनाशः
मीन-	दैन्यम्

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ श्रावण शुक्ल पक्षः

यास्यायनं सौम्यगोलः वर्षाऋतुः। दिनांक ५ - १९ अगस्त सन् २०२४ ई. (रा.श्रावण १४ - २८)

दि.मा. घ. प.	ति. वार	तिथि घ. प.	दि. घं. मि.	नक्षत्र	घ. प.	दि. घं. मि.	योग	घ. प.	दि. घं. मि.	करण क. घ. प.	क. घ. प.	औदायिका योगा	तारीखें अं. फ. सो. रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि घ. प.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	र.क्रां. उ + अं. क.	स्पष्ट सूर्यः रा. अं. क. वि.	गति क. वि.	रे.अं. घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.	
३२ ४८	१ सोम.	२८ २१	दिन ४ ४७	श्लेषा	२४ ५४	दिन ३ २४	व्यतिपात	१५ ४२	दिन ११ ४३	बव २८ २१	बा ६० ०	सौम्य	५ १५ २० १४	सिंह २४ ५४	५ २६	६ ३४	१७ १०	३ १८ २१ ३७	५७ १५	+ ४	७ २९	सिंहराशि दिवा ३।२४ वादने। चन्द्र ◡दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। श्रीविष्णु शिवात्मिकाभिषेकारम्भः। **श्रावण सोमवार व्रतम्।** प्रदोष व्रत वदस्य विधिः सायं उमामाहेश्वर पूजनम्। यायि (मुद्दई)(क)
३२ ४५	२ मंगल	३१ ५२	सायं ६ ११	मघा	२९ ५६	दिन ५ २४	वरीयान	१५ ५५	दिन ११ ४८	बा ० ७	को ३१ ५२	कालदण्ड	६ १६ २१ १५		५ २६	६ ३४	१६ ५३	३ १९ १८ ५२	५७ १६	+ ४	८ ०	मु.सफर २ हिजरी सन् १४४६। **धर्मसम्राट स्वामी करपात्रि जयन्ती २। भौमव्रतम् दुर्गा** यात्रा, हनुमद्दर्शनम्। श्रृंगार व्रतम २ (सिंधारा)। रोटकं व्रतं। भौमे-जया सिद्धयोगः ३१।५२ (सा.६।११) उ.। **श्लेषा नक्षत्रे(ख)**
३२ ४३	३ बुध.	३६ १२	रात ७ ५६	पूर्वाफा.	३५ ४९	रात ७ ४८	परिघ	१६ ५०	दिन १२ १२	तै ४ ५	गर ३६ १२	स्थिर	७ १७ २२ १६	कन्या ५२ २६	५ २७	६ ३३	१६ ३६	३ २० १६ ८	५७ १७	+ ४	८ २९	कन्याराशिः राशिः २।२५ वादने। मधुश्रवा तृतीया ३ (पश्चिमे प्रसिद्धः)। **हरियाली तीज ३।श्रावणी तीज ३।कजरी तीज३।स्वर्ण गौरी व्रतम्** ३ ठकुराईन जयन्ती सुकृत व्रतम् ३। रवियोगः ३५।४९(रा.७।४८) उ.।
३२ ४०	४ गुरु.	४१ ९	रात ९ ५६	उत्तराफा.	४२ १२	रात १० २०	शिव	१८ ११	दिन १२ ४४	व ८ ५०	वि ४१ ९	मातंग	८ १८ २३ १७		५ २७	६ ३३	१६ १९	३ २१ १३ २५	५७ १९	+ ४	८ ५६	भद्रा ८।५० (दि.८।५९) उ. ४१।९ (रा.९।५६) या. (पाताले)। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** रवियोगः ४२।१२ (रा.१०।२०) या.। यायि (मुद्दई) जयद योगः ४१।९ (रा.९।५६) उ.। गुरौ-पूर्णासिद्धयोगः ४१।९(रा.९।५६)उ.।
३२ ३७	५ शुक्र	४६ १५	रात ११ ५९	हस्त	४८ ४४	रात १२ ५८	सिद्ध	११ ५०	दिन १ २५	बव १३ ४३	बा ४६ १५	अमृत	९ १९ २४ १८		५ २८	६ ३२	१६ २	३ २२ १० ४४	५७ २०	+ ४	९ २४	**श्रीनागपंचमी ५।** "नागानामानन्दकरी।" भौत्यादौ लिखिता मृण्मयादि नागा पूज्याः। तक्षक पूजा ५। काश्यां नागकूप यात्रा शास्त्र चर्चा च। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ४६।१५ (रा.११।५९) उ.। **श्लेषा नक्षत्रे ३ चरणे रविः (ग)**
३२ ३४	६ शनि	५१ १	रात १ ५४	चित्रा	५४ ५७	रात ३ २९	साध्य	२१ २१	दिन २ २	को १८ ३८	तै ५१ १	काण	१० २० २५ १९	तुला २१ ५५	५ २९	६ ३१	१५ ४५	३ २३ ८ ४	५७ २२	+ ४	९ ५३	**तुलाराशिः** दिवा २।१५ वादने। **कल्कि जयन्ती ६।** सायंकाले कल्कि अवतरणोत्सवः। सर्वार्थसिद्धियोगः ५४।५७ (रा.३।२९) उ.। रवियोगः ५४।५७ (रा.३।२९) या.। शुभाशुभ द्वयगुण्यकरः द्विपुष्कर योगः ५१।१ (रा.१।५४)(घ)
३२ ३१	७ रवि	५५ ८	रात ३ ३३	स्वाती	६० ०	स म स्त	शुभ	२२ ३०	दिन २ ३०	गर २३ ४	व ५५ ८	लुम्बक	११ २१ २६ २०		५ २९	६ ३१	१५ २८	३ २४ ५ २६	५७ २३	+ ४	१० २४	भद्रा ५५।८ (रा.३।३३) उ. (पाताले)। **शीतला सप्तमी ७। गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती७। मोक्ष सप्तमी** (जैन)। **भानु सप्तमी पर्वः सूर्यग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय।** यायि (मुद्दई) जयद योगः ५५।८ (रा.३।३३)या.।
३२ २८	८ सोम	५८ १९	रात ४ ५१	स्वाती	० ३३	प्रातः ५ ४४	शुक्ल	२३ ०	दिन २ ४३	वि २६ ४३	बव ५८ १९	छत्र	१२ २२ २७ २१	वृश्चिक ४९ ०	५ ३०	६ ३०	१५ १०	३ २५ २ ४९	५७ २४	+ ४	११ ०	**वृश्चिकराशिः** रात्रि १।६ वादने। भद्रा २६।४३ (दि.४।११) या.। **श्रावण सोमवार व्रतम्।** प्रदोष व्रत वदस्य विधिः सायं उमामाहेश्वर पूजनम्। **श्रीदुर्गाष्टमी ८ व्रतम्।** **(ख) २ चरणे रविः** रात्रि १०।१९ वादने।
३२ २५	९ मंगल	६० ०	स म स्त	विशाखा	५ १०	दिन ७ ३५	ब्रह्म	२२ ४०	दिन २ ३५	बा २१ २१	को ६० ०	श्रीवत्स	१३ २३ २८ २२		५ ३०	६ ३०	१४ ५२	३ २६ ० १३	५७ २६	+ ४	११ ४०	**भौमव्रतम् दुर्गा** यात्रा, हनुमद्दर्शनम्। **कौमारी व्रतम् ९।** रवियोगः ५।१० (दि.७।३५) उ.। **श्लेषा नक्षत्रे ४ चरणे रविः** रात्रि १।३५ वादने। (ग) दिवा ९।२८ वादने। रवियोगः ४८।४४ (रा.१२।५८) उ.।
३२ २२	९ बुध.	० २२	प्रातः ५ ४१	अनुरा.	८ ४१	दिन ९ ०	ऐन्द्र	११ ३०	दिन २ ८	को ० २२	तै ३० ४४	सौम्य	१४ २४ २९ २३		५ ३१	६ २९	१४ ३४	३ २६ ५७ ३९	५७ २७	+ ३	१२ २८	सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ८।४१ (दि.९।०) या.। रवियोगः यावद्दिनम्। (ङ) विविध आयोजनम् राष्ट्रगानं च। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः १।६ (प्रातः ६।०) या.।
३२ १८	१० गुरु.	१ ६	प्रातः ६ ०	ज्येष्ठा	१० ५४	दिन ९ ५५	वैधृति	१९ १२	दिन १ १४	गर १ ६	व ३० ४९	कालदण्ड	१५ २५ ३० २४	धनु १० ५४	५ ३२	६ २८	१४ १५	३ २७ ५५ ६	५७ २९	+ ३	१ २३	**धनुराशिः** दिवा ९।५५ वादने। भद्रा ३०।४९ (सायं ५।५२) उ. (पाताले)। **पुत्रदा एकादशी ११ व्रतम् स्मार्त्तानाम्।** झूलनयात्रा प्रारम्भः। **भारतीय स्वतन्त्रता दिवसः** राजधानी दिल्ली सहित सम्पूर्ण भारत वर्षे ध्वजारोहणम्(ङ)
३२ १५	११/१२ शुक्र.	[illegible]	प्रातः [illegible]	मूल	११ ५०	दिन १० १७	विषकुम्भ	१६ ०	दिन ११ ५७	वि ० ३२	[illegible]	स्थिर	१६ २६ ३१ २५		५ ३३	६ २७	१३ ५६	३ २८ ५२ ३५	५७ ३०	+ २	२ २६	भद्रा० ।३२(प्रातः ५।४६) या.। **पारणा स्मार्त्तानाम् एकादशी व्रतस्यः** प्रातः ५।४६ वादनात्परं। **वैष्णवानामेकादशीव्रतम्।** श्री शिवपवित्रारोपणम्। दधित्याग व्रतारम्भः न तु तक्रादीनाम् त्यागः। वृद्ध द्वादशी १२। शाक दानम्।
३२ १२	१३ शनि.	५५ ५०	रात ३ ५४	पूर्वाषाढ़ा	११ ३६	दिन १० १३	प्रीति	११ ४२	दिन ११ १५	को २७ १	तै ५५ ५०	मातंग	१७ २७ ३२ २६	मकर २६ १७	५ ३३	६ २७	१३ ३८	३ २९ ५० ५	५७ ३२	+ २	३ ३३	**मकरराशिः** दिवा ४।४ वादने। **शनि प्रदोष व्रतम् १३** पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। ⊙ **सं.मघा नक्षत्रे सिंह राशौ रविः** ११।४ (दि.१०।१)। मु.३० समा समताकरम्। पूर्वा पराः १६ घट्यः-पुण्याः छत्र सुवर्णदानम् गंगायाम् स्नानम्।(च)
३२ ९	१४ रवि.	५१ ५६	रात २ २१	उत्तराषा.	१० १६	दिन ९ ४१	आयुष्मान	६ ३५	दिन ८ १३	गर २३ ५३	व ५१ ५६	अमृत	१८ २८ १ २७		५ ३४	६ २६	१३ १८	४ ० ४७ ३७	५७ ३४	+ २	४ ४२	भद्रा ५१।५६ (रा.२।२१) उ. (पाताले)। श्रीविष्णु पवित्रारोपणम्। **सौर भाद्रपद मासारम्भः।** सर्वार्थसिद्धियोगः १०।१६ (दि.९।४१) या.। रवियोगः १०।१६ (दि.९।४१) उ.। (घ) उ. ५४।५७ (रा.३।२९) या.।
३२ ६	१५ सोम.	४७ १३	रात १२ २८	श्रवण	८ ५	दिन ८ ४९	सौभाग्य शोभन	[illegible]	प्रात [illegible]	वि १९ ३४	बव ४७ १३	सिद्धि	१९ २९ २ २८	कुम्भ ३६ ३५	५ ३५	६ २५	१२ ५९	४ १ ४५ ११	५७ ३५	+ २	+ +	**कुम्भराशिः** रात्रि ८।१३ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा १९।३४ (दि.१।२५) या.। **स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। भद्रा दिवा १।२५ वादनात्परं रक्षाबन्धनम्। श्रावणी उपाकर्मः। संस्कृत दिवसः।(छ)**

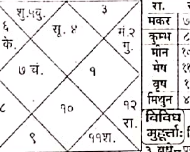
सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा. अ. क. वि.	स्पष्ट मंगल रा. अ.क. वि.	गति	स्पष्ट बुध रा. अ. क. वि.	गति वक्री	स्पष्ट गुरु रा. अ. क. वि.	गति	स्पष्ट शुक्र रा. अ. क. वि.	गति	स्पष्ट शनि रा. अ. क. वि.	गति वक्री	स्पष्ट राहु रा. अ. क. वि.
१ सो.	३ २४ ५२ १	१ १६ ६ ३८	४० ०	४ ९ ४७ २९	७ २२	१ २० ५७ १६	१० १५	४ ६ ४ ४४	७३ ३५	१० २४ ९ ३९	३ २०	११ १५ ३ ४
२ मं.	४ ७ १२ ४२	१ १६ ४६ ३८	३९ ५४	४ ९ ४० ७	१० ३७	१ २१ ७ ३२	१० १०	४ ७ १८ १९	७३ ३५	१० २४ ६ १९	३ २५	११ १४ ५९ ५४
३ बु.	४ १९ २२ ५६	१ १७ २६ ३२	३९ ५०	४ ९ २९ ३०	१४ ५६	१ २१ १७ ४१	१० २	४ ८ ३१ ५४	७३ ३५	१० २४ २ ५४	३ २९	११ १४ ५६ ४३
४ गु.	५ १ २४ १८	१ १८ ६ २२	३९ ४५	४ ९ १६ ३४	१७ ४४	१ २१ २७ ४३	९ ५५	४ ९ ४५ २९	७३ ३५	१० २३ ५९ २५	३ ३४	११ १४ ५३ ३२
५ शु.	५ १३ २६ ४७	१ १८ ४६ ७	३९ ३८	४ ८ ५६ ५०	१९ २१	१ २१ ३७ ३८	९ ४८	४ १० ५९ ४	७३ ३३	१० २३ ५५ ५१	३ ३७	११ १४ ५० २१
६ श.	५ २५ २९ ५६	१ १९ २५ ४५	३९ ३२	४ ८ ३७ २९	२० २६	१ २१ ४७ २६	९ ४०	४ १२ १२ ३७	७३ ३३	१० २३ ५२ १४	३ ४०	११ १४ ४७ १०
७ र.	६ ७ ४३ १४	१ २० ५ १७	३९ २८	४ ८ १७ ३	२३ ४२	१ २१ ५७ ६	९ ३५	४ १३ २६ १०	७३ ३३	१० २३ ४८ ३४	३ ४३	११ १४ ४४ ०
८ सो.	६ १९ ५७ ४०	१ २० ४४ ४५	३९ २३	४ ७ ५३ २१	२८ ३०	१ २२ ६ ४१	९ २८	४ १४ ३९ ४३	७३ ३३	१० २३ ४४ ५१	३ ४५	११ १४ ४० ४९
९ मं.	७ २ १३ २८	१ २१ २४ ८	३९ २०	४ ७ २४ ५१	३० ४८	१ २२ १६ ९	९ २०	४ १५ ५३ १६	७३ ३३	१० २३ ४१ ६	३ ४८	११ १४ ३७ ३८
९ बु.	७ १४ ५१ २०	१ २२ ३ २८	३९ १५	४ ६ ५४ ३	३५ २५	१ २२ २५ २९	९ ११	४ १७ ६ ४९	७३ ३१	१० २३ ३७ १८	३ ५०	११ १४ ३४ २७
१० गु.	७ २७ ४४ १८	१ २२ ४२ ४३	३९ ७	४ ६ १८ ३८	४२ ४०	१ २२ ३४ ४०	९ १	४ १८ २० २०	७३ ३०	१० २३ ३३ २८	३ ५१	११ १४ ३१ १६
११ शु.	८ १० ५२ ५६	१ २३ २१ ५०	३९ ०	४ ५ ३५ ५८	५० २४	१ २२ ४३ ४१	८ ५३	४ १९ ३३ ५०	७३ ३०	१० २३ २९ ३७	३ ५३	११ १४ २८ ५
१३ श.	८ २४ १४ १७	१ २४ ० ५०	३८ ५४	४ ४ ४५ ३४	५८ ४६	१ २२ ५२ ३४	८ ४३	४ २० ४७ २०	७३ ३०	१० २३ २५ ४८	३ ५६	११ १४ २४ ५५
१४ र.	९ ७ ५० ५५	१ २४ ३९ ४४	३८ ५०	४ ३ ४६ ३८	६५ ४१	१ २३ १ २०	८ ३८	४ २२ ० ५०	७३ २८	१० २३ २१ ४८	४ ०	११ १४ २१ ४४
१५ सो.	९ २१ २६ १६	१ २५ १८ ३४	३८ ४५	४ २ ४० ५७	६१ ५०	१ २३ ९ ५८	८ २९	४ २३ १४ १८	७३ २८	१० २३ १७ ४८	४ ३	११ १४ १८ ३३

फलम्– नवमी तिथि की वृद्धि हो गई है तथा द्वादशी तिथि का क्षय भी हो गया है, इस प्रकार पक्ष १५ दिन का ही है। **मघा नक्षत्र सिंह राशि का चन्द्र दर्शन** मु.३० बाजार भाव को स्थिर बनाये रखेगा किन्तु मादक द्रव्यों में तेजी का रुख चलेगा। सनातन धर्म-ध्वजा को ऊँचाई देने वाले एवं हिन्दू धर्म के अप्रतिम पुरोधा **धर्म सम्राट स्वामी करपात्रि जी** की जयन्ती श्रावण शुक्ल द्वितीया तदनुसार **६ अगस्त** मंगलवार को मनाई जायेगी। काशी नगरी में सर्वत्र विशेषकर करपात्रि पीठ में विशेष आयोजन किये जायेंगे। **हरियाली तीज, कजरी तीज, श्रावणी तीज** एवं **मधुश्रवा तृतीया** तथा पश्चिमी प्रदेशों में विख्यात् ठकुराईन तीज, **स्वर्ण गौरी व्रत ७ अगस्त** बुधवार को मनाया जायेगा। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत ८ अगस्त** गुरुवार को होगी। **नाग पंचमी का प्रसिद्ध पर्व ९ अगस्त** शुक्रवार को मनाया जायेगा। नाग (सर्प) जाति के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव प्रदर्शित करते हुए दूध-लावा चढ़ाकर उनकी पूजा की जाती है। सर्प जाति की भी पूजा करना एवं उनको महिमा मण्डित करते हुए देव तुल्य मानना केवल सनातन धर्म की उदात्त भाव परम्परा में ही सम्भव है। यह बल, पौरुष-ज्ञान-तर्कशक्ति के परीक्षण का भी पर्व है। काशी के नाग कूप पर शास्त्रार्थ की गौरव शाली विद्वत् विमर्श का आयोजन सम्पन्न होगा। कल्कि जयन्ती १० अगस्त शनिवार को मनाई जायेगी। **शुक्ल पक्ष की शीतला सप्तमी** एवं 'श्रावण शुक्ल सप्तमी' **गोस्वामी तुलसीदास** ○

पं.१७ श्रावण शु.८ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३४९९ अयनांशाः २४/११/४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	१	४	१	४	१०	११	५
२५	१९	२०	७	२२	१४	२३	१४	१४
२	५७	४४	५३	६	३९	४४	४०	४०
४९	४०	४५	२१	४१	४३	५१	४९	४९
५७	३१	३९	२८/३०	९	७३	३	३	३
२४	६	२३	व	२८	३३	४५	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः-रोहिण्यां वृष राशौ १० गुरुतः मृगशिरायां राशि शेष४।३० वादने। **बुधः**-(वक्री) सिंहराशौ **गुरुः**-रोहिण्यां वृषराशौ। **शुक्र**-सिंह राशौ। **शनिः**-(वक्री) पू.भा.२ चरणे १४ रवितः वक्रगत्या पू.भा. १ चरणे। **राहुः**-उ.भा.४ चरण **केतुश्च**- हस्त २ चरणे।

श्रावण शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

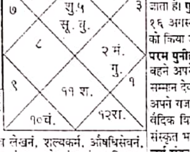
लग्नांत ति.वा.	१ सो. घं. मि.	२ मं. घं. मि.	३ बु. घं. मि.	४ गु. घं. मि.	५ शु. घं. मि.	६ श. घं. मि.	७ र. घं. मि.	८ सो. घं. मि.	९ मं. घं. मि.	९ बु. घं. मि.	१० गु. घं. मि.	११ शु. घं. मि.	१३ श. घं. मि.	लग्नांत ति.वा.	१४ र. घं. मि.	१५ सो. घं. मि.
कर्क	६ २५	६ २१	६ १७	६ १३	६ ९	६ ४	६ ०	५ ५६	५ ५२	५ ४७	५ ४३	५ ३९	५ ३५	सिंह	७ ४८	७ ४४
सिंह	८ ३९	८ ३५	८ ३१	८ २७	८ २३	८ १९	८ १५	८ ११	८ ७	८ ३	७ ५९	७ ५५	७ ५१	कन्या	१० ०	९ ५६
कन्या	१० ५१	१० ४७	१० ४३	१० ४०	१० ३६	१० ३२	१० २८	१० २४	१० २०	१० १६	१० १२	१० ८	१० ४	तुला	१२ १६	१२ १२
तुला	१ ८	१ ४	१ ०	१२ ५६	१२ ५२	१२ ४८	१२ ४४	१२ ४०	१२ ३६	१२ ३२	१२ २८	१२ २४	१२ २०	वृश्चिक	२ ३३	२ ३०
वृश्चिक	३ २५	३ २१	३ १७	३ १३	३ ९	३ ५	३ १	२ ५७	२ ५३	२ ४९	२ ४५	२ ४१	२ ३७	धनु	४ ३९	४ ३५
धनु	५ ३०	५ २६	५ २२	५ १८	५ १४	५ १०	५ ६	५ २	४ ५८	४ ५४	४ ५०	४ ४६	४ ४२	मकर	६ २४	६ २०
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
मकर	७ १५	७ ११	७ ७	७ ३	६ ५९	६ ५५	६ ५२	६ ४८	६ ४४	६ ४०	६ ३६	६ ३२	६ २८	कुम्भ	७ ५५	७ ५१
कुम्भ	८ ४६	८ ४२	८ ३८	८ ३४	८ ३०	८ २७	८ २३	८ १९	८ १५	८ ११	८ ७	८ ३	७ ५९	मीन	९ २३	९ १९
मीन	१० १४	१० १०	१० ६	१० २	९ ५९	९ ५५	९ ५१	९ ४७	९ ४३	९ ३९	९ ३५	९ ३१	९ २७	मेष	११ २	१० ५८
मेष	११ ५३	११ ४९	११ ४५	११ ४१	११ ३७	११ ३३	११ २९	११ २५	११ २१	११ १७	११ १३	११ ९	११ ६	वृष	१२ ५८	१२ ५४
वृष	१ ५०	१ ४६	१ ४२	१ ३८	१ ३४	१ ३०	१ २६	१ २२	१ १८	१ १४	१ १०	१ ६	१ २	मिथुन	३ १२	३ ८
मिथुन	४ ३	३ ५९	३ ५५	३ ५१	३ ४७	३ ४४	३ ४०	३ ३६	३ ३२	३ २८	३ २४	३ २०	३ १६	कर्क	५ ३०	५ २६

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ सोमे**–श्लेषायां-धान्यच्छेदनं, जलयन्त्र कर्म। **तिथि २ भौमे**–मघायां कणमर्दनं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ३ बुधे**–पूर्वाफाल्गुन्यां दीक्षाग्रहणं, जलयन्त्रकर्म शय्यासनाद्युपभोगं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ४ गुरौ**–भद्रा दिवा ८।५९ वादनात्पूर्व उत्तराफाल्गुन्यां रोग विमुक्त स्नानं भद्रा रात्रि ९।५६ वादनात्परं गर्भाधानं प्रसूतिस्नानं पुंसवनं सीमन्तः जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणि-व्यापारः दीक्षाग्रहणं **चूल्हीस्थापनं** नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ५ शुक्रे**–हस्त नक्षत्रे रात्रौ गर्भाधानं आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं, आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, दत्तक पुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं वाहन क्रयः, हस्त नक्षत्रे दिग् शूल, विहाय सर्व दिग् गमनं। रात्रि १२।५८ वादनात्परं चित्रायां **जीर्णादि गृहप्रवेशः। तिथि ६ शनौ**–चित्रायां कृष्ण वस्त्र धारणं शस्त्र घटनं **आ.जीर्णादि गृहप्रवेशः ल.५** (ति.दा.)। **तिथि ७ रवौ**–स्वात्यां-प्रसूति स्नानं, दीक्षाग्रहणं, लालवस्त्रधारणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं, शल्यकर्म, औषधिसेवनं, वाहन क्रयः, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ८ सोमे**–दिवा ४।११ वादनात्परं विशाखायां, धान्यरोपणं गवां क्रयविक्रयः। **तिथि ९ भौमे**–विशाखा उपरान्त अनुराधायां रोगविमुक्त स्नानं। **तिथि ९ बुधे**–रिक्ता प्रातः ५।४१ वादनात्परं अनुराधायां दिवा ३।० वादनम् यावत् जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १० गुरौ**–ज्येष्ठायां नामकरणं, गवां क्रय-विक्रयः कणमर्दन नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः शस्त्रधारणं, मुकदमा कार्य इष्टिकानिर्माण दिवा ९।५५ वादनात्परं मूले भद्रा (सा.५।५२) वादनात्पूर्व नामकरणं, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, कणमर्दनं धान्यरोपणं जलयन्त्र कर्म, मुकदमा कार्य, भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ११/१२ शुक्रे**–भद्रा प्रातः ५।४६ वादनात्परं मूले-नामकरणं, दीक्षाग्रहणं जलप्रवहणं बीजवपनं, कणमर्दनं धान्यरोपणं, वृक्षारोपणं जलयंत्र कर्म, मुकदमाकार्य भूमिक्रयः □

□ उत्तरदिग् यात्रा। **तिथि १३ शनौ**–पू.षा. इष्टिका दहनं दिवा १०।१३ वादनात्परं उ.षा. **कृष्णवस्त्र** धारणं, **गृहारम्भः जीर्णादि गृहप्रवेश ल.८** (भौ.दा.)। **तिथि १४ रवौ**–उ.षा. श्रवणे रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १५ सोमे**–भद्रा दिवा १।२५ वादनात्परं धनिष्ठायां आ.प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं, दीक्षाग्रहण आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं, बीजवपनं, नृत्यगीतकलारम्भः आवेदन पत्र लेखनं, **गृहारम्भ-जीर्णादिगृहप्रवेशः ल.८** दक्षिण दिग् यात्रा कुम्भ चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा।

पं.२२ श्रावण शु.१५ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५०६ अयनांशाः २४/११/५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	१	४	१	४	१०	११	५
१	२१	२५	२	२३	२३	२३	१४	१४
४५	२६	१८	४०	९	१४	१७	१८	१८
११	१६	३४	५७	५८	१८	४८	३३	३३
५७	८०	३८	६१/५०	८	७३	४/३	३	३
३५	४५	४५	व	२९	२८	व	११	११



(क) जयद योगः २४।५४ (दि ३।२४) या.। **पश्चिम दिशायाम् बुधास्तः।** (च) स्त्री-पु. चं.-चन्द्र योगो गन्डूक वाहनं जला नाड़ी नवीशो गुरुः सुवृष्टियोगः। **मनसा देवी पूजा समाप्तिः** (बंगाल-झारखण्ड)। आरंद्रंट त्रयोदशी १३ (उड़ीसा)। यायि (मुद्दई) जयद योगः ११।३६ (दि.१०।१३) उ. ५५।५० (रा.३।५४) या.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः ५५।५० (रा.३।५४) उ.। **(छ) श्रावण सोमवार व्रतम्।** प्रदोष व्रत वदस्य विधिः सायं उमामाहेश्वर पूजनम्। सर्वदेव पवित्रारोपणम्। झूलन यात्रा समाप्तिः। अमरनाथ यात्रा दर्शन पूजनञ्च। ऋषि तर्पणम्। ओणम् (केरल)। विभिन्न वैदिकानाम स्व परम्परानुसारेण उपाकर्म विधेयम्। हयग्रीव जयन्ती १५। सायंकाले काश्यां नंदेनी स्थित मन्दिरे पूजनम् दर्शनम् च। सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगो ८।५ (दि.८।४९) या.। रवियोगः ८।५ (दि.८।४९) या.। यायि (मुद्दई) जयद योगः ८।५ (दि.८।४९) उ.।

○ **की जयन्ती ११ अगस्त** रविवार को मनाई जायेगी। **भानु सप्तमी** (रविवार-सप्तमी तिथि) का पर्व ११ अगस्त को मनाया जायेगा। इसमें किया गया स्नान-दान सूर्य ग्रहण में किये गये स्नान-दान के बराबर माना जाता है। **पुत्रदा एकादशी व्रत** का मान स्मार्त गृहस्थों के लिये **१५ अगस्त** गुरुवार को होगा जबकि वैष्णवजन १६ अगस्त शुक्रवार को एकादशी का व्रत करेंगे। पुत्र की कामना से **शनि प्रदोष व्रत** का मान १७ अगस्त को किया जायेगा। **स्नान दान एवं व्रत सहित श्रावणी पूर्णिमा १९ अगस्त** सोम. को होगी। **रक्षाबन्धन का परम पुनीत पर्व भी आज ही १९ अगस्त** सोमवार को मनाया जायेगा। **भद्रा दिन में १।२५ बजे** के बाद बहनें अपने भाईयों की कलाई में राखी बाँधकर तथा भाई अपनी बहन को उपहार सम्मान देकर एक दूसरे के प्रति अपने परस्पर स्नेह भाव को प्रदर्शित करेंगे। विप्रजन अपने यजमानों को रक्षा सूत्र बाँधकर उचित दक्षिणा प्राप्त करेंगे। **श्रावणी उपाकर्म** वैदिक विप्र अपनी-अपनी परम्परा के अनुसार करेंगे। **संस्कृत, दिवस** मनाकर संस्कृत भाषा के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करेंगे। **मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि की सूर्य संक्रान्ति १७ अगस्त** शनि. को दिन में १०।१ बजे से आयेगी। इसमें अच्छी वृष्टि होने की सम्भावना बन रही है। पक्ष के तीन सोमवार शुभफलकारक हैं।

राशिफल

मेष-	हानिः
वृष-	भयम् पीड़ा
मिथुन-	रोगं
कर्क-	लाभं
सिंह-	सुखं
कन्या-	रोगं
तुला-	पाप वृद्धिः
वृश्चिक-	दौर्बल्यं
धनु-	सुखार्थ लाभः
मकर-	रोगं हानिः
कुम्भ-	शत्रु कष्टं
मीन-	सुखं श्रीप्राप्तिः

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ भाद्रपद कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षाऋतुः। दि.२० अगस्त - ३ सितम्बर
सन् २०२४ ई. (रा.श्रावण २९ - भाद्रपद १२)

दि.मा. घ. प.	भाद्रपद कृ. तिथि ति. वार	घ.	प.	दि.	घं. मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं. मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं. मि.	करण क. घ. प.	क. घ. प.	औदायिका योगा	तारीखें अं. फ. सो. रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि घ. प.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	र.क्रा. उ + अं. क.	स्पष्ट सूर्यः रा. अं. क. वि.	गति क. वि.	रे.अं. घं. मि.	चन्द्रोदय घं. मि.	विशेष
३२ ३	१ मंगल	४१	५०	रात	१० १९	धनिष्ठा	५	४	दिन	७ ३७	अतिगण्ड	४७	२	रात	१२ २५	वा १४ ३०	का ४१ ५०	उत्पात	२० १ ३ २९		५ ३५	६ २५	१२ ३९	४ २ ४२ ४६	५७ ३७	+ १	७ ७	'भाद्रपदे दधि त्यजेत् न तु तक्रादीनाम् त्यागः।' मघा नक्षत्रे २ चरणे रविः १०।० वादने।
३१ ५९	२ बुध	३६	४	रात	८ ३	[illegible]			प्रातः		सुकर्मा	३९	३४	रात	९ २७	तै ८ ५७	गर ३६ ४	मानस	२१ २ ४ ३०	मीन ४३ ३१	५ ३६	६ २४	१२ २०	४ ३ ४० २३	५७ ३९	+ १	७ ४५	मीनराशिः रात्रि ११।० वादने। अशून्यशयन व्रतम् २। चन्द्रोदये (रा.७।४५) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। भीमचण्डी विन्ध्याचली देव्योर्जयन्ती २। कज्जली निमित्तकं रात्रि जागरणम् (रतजगा)। कुलाकुलगणःदुर्लभ सन्धिकर(क)
३१ ५६	३ गुरु	२९	५१	सायं	५ ३३	उत्तराभाद्र	५३	१५	रात	२ ५५	धृति	३१	५६	सायं	६ २३	व २ ५७	[illegible]	छत्र	२२ ३ ५ ३१		५ ३६	६ २३	१२ ०	४ ४ ३८ २	५७ ४०	+ १	८ २०	भद्रा २।५७ (प्रातः ६।४८) उ. २९।५१ (सा.५।३३) या. (मर्त्ये)। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ (बहुला) व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.८।२०) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। कज्जली ३ (कजरी)। गो पूजा ३। तीजड़ी (सिन्धी)। विशालाक्षी(ख)
३१ ५३	४ शुक्र.	२३	४१	दिन	३ ६	रेवती	४९	७	रात	१ १७	शूल	२४	१०	दिन	३ १८	बा २३ ४१	कौ ५० ३८	श्रीवत्स	२३ ४ ६ १	मेष ४९ ७	५ ३७	६ २३	११ ३९	४ ५ ३५ ४२	५७ ४२	+ १	८ ५७	मेषराशिः रात्रि १।१७ वादने, पंचक (पचखा) समाप्तिः। राष्ट्रीय भाद्रपद मासारम्भः। सर्वार्थामृतसिद्धियोगः ४९।७ (रा.१।१७) या.। तदुपरि सर्वार्थसिद्धियोगः।
३१ ४९	५ शनि.	१७	३६	दिन	१२ ४१	अश्विनी	४५	९	रात	११ ४२	गण्ड	१६	३३	दिन	१२ १६	तै १७ ३६	गर ४४ ४४	सौम्य	२४ ५ ७ २		५ ३८	६ २२	११ १९	४ ६ ३३ २६	५७ ४४	+ १	९ ३६	कोकिला पञ्चमी ५ (जैन)। रक्षा पंचमी ५। भ्रातृ पंचमी ५। चन्द्र षष्ठी ६ व्रतम् चन्द्रोदये (रा.९।३६) वादने। चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या। रवियोगः ४५।९ (रा.११।४२) उ.। मघा नक्षत्रे ३ चरणे रविः दिवा ८।४५वादने।
३१ ४६	६ रवि.	११	५२	दिन	१० २४	भरणी	४१	३८	रात	१० १८	वृद्धि	९	१२	दिन	९ २०	व ११ ५२	वि ३९ १७	कालदण्ड	२५ ६ ८ ३	वृष ५५ ५५	५ ३९	६ २१	१० ५९	४ ७ ३१ ९	५७ ४६	+ १	१० २८	वृषराशिः रात्रि ४।१ वादने। भद्रा ११।५२ (दि.१०।२४) उ. ३९।१७ (रा.९।२२) या. (स्वर्ग)। हलषष्ठी (ललही छठ) ६ व्रतम्। सा सप्तमी यूर्तेति दिवादसः। निर्णयामृत। शीतला सप्तमी ७। तत्र पूर्वा ग्राह्येति(ग)
३१ ४२	७ सोम.	६	४१	दिन	८ २०	कृत्तिका	३८	४३	रात	९ १०	ध्रुव			प्रातः		बव ६ ४१	बा ३३ ५७	स्थिर	२६ ७ ९ ४		५ ४०	६ २०	१० ३८	४ ८ २८ ५५	५७ ४८	+ ०	११ ५	अर्धरात्रौ रोहिणी नक्षत्र युता अष्टमी तिथौ श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतम् स्मार्त्तानाम्। जयन्ती योग कृष्णावतारः ८। चन्द्रोदय (रा.११।५) वादने। दूर्वाष्टमी ८ व्रतम्। पूर्वविद्धा तु कर्त्तव्या। सर्वार्थसिद्धियोगः ३८।४३ (रा.९।१०)उ.।(घ)
३१ ३९	८ मंगल			प्रातः		रोहिणी	३६	४३	रात	८ २३	हर्षण	५०	१३	रात	१ ४६	कौ २ १३	[illegible]	मातंग	२७ ८ १० ५		५ ४०	६ २०	१० १७	४ ९ २६ ४३	५७ ४९	- ०	११ ५८	श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतम् ८ वैष्णवानाम्। गोकुलाष्टमी ८। (औदयिक रोहिणी मतावलम्बिनां)। मघा नक्षत्रे ४ चरणे रविः रात्रि ७।५६ वादने। गोगा नवमी ९ व्रतम्। (घ) पूर्व दिशायाम् बुधोदयः।
३१ ३६	१० बुध.	५५	३८	रात	४ ०	मृगशिरा	३५	३१	रात	७ ५४	वज्र	४५	२२	रात	११ ५०	व २६ ४०	वि ५५ ३८	अमृत	२८ ९ ११ ६	मिथुन ६ ८	५ ४१	६ १९	९ ५६	४ १० २४ ३२	५७ ५१	- ०	१२ ५५	मिथुनराशिः दिवा ८।८ वादने। भद्रा २६।४० (दि.४।२१) उ. ५५।३८ (रा.३।५६) या. (स्वर्ग)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३५।३१ (रा.७।५४) या.। कुलाकुलगणः दुर्लभसन्धिकर योगः ३५।३१ (रा.७।५४) उ. ५५।३८ (रा.४।०)या.।
३१ ३२	११ गुरु.	५४	३४	रात	३ ३२	आर्द्रा	३५	२८	रात	७ ५३	सिद्धि	४१	२४	रात	१० १६	बव २५ १६	बा ५४ ३४	काण	२९ १० १२ ७		५ ४२	६ १८	९ ३५	४ ११ २२ २३	५७ ५३	- ०	१ ५४	जया एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। "अजेति नाम्ना विख्याता सर्वपाप प्रणाशिनी।" पर्युषण पर्वारम्भः (जैन)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३५।२८ (रा.७।५३) उ.। (ङ) समायोग सिद्धयोगः ५५।३४ (रा.३।५७) उ.।
३१ २९	१२ शुक्र.	५४	२४	रात	३ २९	पुनर्वसु	३६	३६	रात	८ २१	व्यतिपात	३८	३०	रात	९ ७	कौ २४ २९	तै ५४ २४	लुम्बक	३० ११ १३ ८	कर्क २१ १९	५ ४२	६ १८	९ १४	४ १२ २० १६	५७ ५५	- ०	२ ५३	कर्कराशिः दिवा २।१४ वादने। गोवत्स द्वादशी १२। (बछवारस)। अघोर द्वादशी १२। सर्वार्थसिद्धियोगः ३६।३६ (रा.८।२१) या.। स्थायी (मुहालेह) जयद योगः ३६।३६ (रा.८।२१) उ.।
३१ २५	१३ शनि.	५५	३४	रात	३ ५७	पुष्य	३९	१	रात	९ २०	वरीयान	३६	२०	रात	८ ११	गर २४ ५९	व ५५ ३४	मित्र	३१ १२ १४ ९		५ ४३	६ १७	८ ५२	४ १३ १८ ११	५७ ५७	- १	३ ५१	भद्रा ५५।३४ (रा.३।५७) उ. (मर्त्ये)। शनि प्रदोष व्रतम् १३ पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। ☉पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे रविः ३।३० (प्रातः ६।४३)। स्त्री-स्त्री, सूर्य-चन्द्र योगो नागवाहनं जलानाडी तदोशो बुधः सुवृष्टयोगः। शनि-रिक्ता(ड)
३१ २२	१४ रवि.	५७	५५	रात	४ ५८	श्लेषा	४२	४२	रात	१० ४८	परिघ	३५	३१	रात	७ ५६	वि २६ ४४	श. ५७ ५५	वज्र	१ १३ १५ १०	सिंह ४२ ४२	५ ४४	६ १६	८ ३१	४ १४ १६ ८	५७ ५९	- १	४ ४६	सिंहराशिः रात्रि १०।४८ वादने। भद्रा २६।४४ (दि.४।२५) या.। मासशिवरात्रि व्रतम् १४। अघोर चतुर्दशी १४। अघोराचार्य अवतरणोत्सवः। 'अघः पापात्रक्षति इति अघोरः।' यमघंटयोगः ४२।४२ (रा.१०।४८)उ.।
३१ १८	३० सोम	६०	०	स	म स्त	मघा	४७	२९	रात	१२ ४५	शिव	३५	२६	रात	७ ५५	च. २९ ४०	ना ६० ०	ध्वांक्ष	२ १४ १६ ११		५ ४४	६ १६	८ ९	४ १५ १४ ७	५८ १	- २	५ ३९	स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। पिठोरी अमावस्या ३०। सोमवती अमावस्या ३०। कुशोत्पाटिनी अमावस्या ३०। ॐ फट्कार इति मन्त्रेण कुशाग्रहणम्। अत्र कुशानयन विधिः-शुचिर्भूत्वा शुचादेश(च)
३१ १५	३० मंगल.	१	२५	दिन	६ ०	पूर्वाफाल्गुनी	५३	७	रात	३ १	सिद्ध	३६	८	रात	८ १३	ना १ २५	कि ३३ ३५	धूम्र	३ १५ १७ १२		५ ४५	६ १५	७ ४७	४ १६ १२ ८	५८ ३	- ३	+ +	स्नानदानानादौ ३०। भौमवती अमावस्या ३०। अमायांच यदावारो भवेद् भूमि सुतस्यवै। गंगायाम् यदि लभ्येत् कोटि सूर्य ग्रहे समा। पापवारान्विते देशे दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्। ☉ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे २ चरणे रविःसायं५वादने।

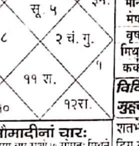
सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा. अ. क. वि.	स्पष्ट मंगल रा. अ. क. वि.	गति	स्पष्ट बुध रा. अ. क. वि.	गति वक्री	स्पष्ट गुरु रा. अ. क. वि.	गति	स्पष्ट शुक्र रा. अ. क. वि.	गति	स्पष्ट शनि रा. अ. क. वि.	गति वक्री	स्पष्ट राहु रा. अ. क. वि.
१ म.	१० ६ २२ ४७	१ २५ ५७ १९	३८ ३९	४ १ ३९ ७	५५ ३९	१ २३ १८ २७	८ १९	४ २४ २० ४६	७३ २८	१० २३ १३ ४५	४ ४	११ १४ १५ २२
२ बु.	१० २२ २४ २५	१ २६ ३५ ५८	३८ ३४	४ ० ४३ २८	५० २८	१ २३ २६ ४६	८ ११	४ २५ ४१ १४	७३ २८	१० २३ ९ ४१	४ ६	११ १४ १२ ११
३ गु.	११ ५ २९ १९	१ २७ १४ ३२	३८ २६	३ २९ ५३ ०	४६ १८	१ २३ ३४ ५७	८ २	४ २६ ५४ ४२	७३ २८	१० २३ ५ ३५	४ ९	११ १४ ९ ०
४ शु.	११ १९ ३८ ५६	१ २७ ५२ ५८	३८ २०	३ २९ ६ ४२	३० ३५	१ २३ ४२ ५९	७ ५४	४ २८ ८ १०	७३ २८	१० २३ १ २६	४ ११	११ १४ ५ ५०
५ श.	० ३ ४७ ५०	१ २८ ३१ १८	३८ १२	३ २८ ३६ ७	२६ ५	१ २३ ५० ५३	७ ४५	४ २९ २१ ३८	७३ २५	१० २२ ५७ १५	४ १४	११ १४ २ ३९
६ र.	० १७ ४९ २४	१ २९ ९ ३०	३८ ६	३ २८ १० २	२० ३७	१ २३ ५८ ३८	७ ३८	५ ० ३५ ३	७३ २५	१० २२ ५३ १	४ १६	११ १३ ५९ २८
७ सो.	१ १ ४४ १२	१ २९ ४७ ३६	३७ ५८	३ २७ ४९ २५	१५ ११	१ २४ ६ १६	७ ३०	५ १ ४८ २८	७३ २५	१० २२ ४८ ४५	४ १९	११ १३ ५६ १७
८ मं.	१ १५ २८ ३५	२ ० २५ ३४	३७ ३१	३ २७ ३४ १४	७ ५४	१ २४ १३ ४६	७ २२	५ ३ १ ५३	७३ २५	१० २२ ४४ २६	४ २१	११ १३ ५३ ६
१० बु.	१ २९ २ ५५	२ १ ३ ५	३७ २४	३ २७ २६ २०	४मा २५	१ २४ २१ ७	७ ११	५ ४ १५ १८	७३ २५	१० २२ ४० ५	४ २३	११ १३ ४९ ५५
११ गु.	२ १२ २२ २६	२ १ ४० २९	३७ १६	३ २७ ३० ४५	९ ४२	१ २४ २८ १८	७ ०	५ ५ २८ ४३	७३ २५	१० २२ ३५ ४२	४ २५	११ १३ ४६ ४४
१२ शु.	२ २५ २९ २४	२ २ १७ ४५	३७ ७	३ २७ ४० २७	१३ ३४	१ २४ ३५ १८	६ ५१	५ ६ ४२ ८	७३ २५	१० २२ ३१ १७	४ २८	११ १३ ४३ ३३
१३ श.	३ ८ १९ २०	२ २ ५४ ५२	३६ ५९	३ २७ ५४ २	१६ ४९	१ २४ ४२ ९	६ ४२	५ ७ ५५ ३३	७३ २३	१० २२ २६ ४९	४ ३०	११ १३ ४० २२
१४ र.	३ २० ५६ १६	२ ३ ३१ ५१	३६ ५२	३ २८ १० ५०	२१ ३६	१ २४ ४८ ५१	६ ३५	५ ९ ८ ५६	७३ २३	१० २२ २२ १९	४ ३२	११ १३ ३७ ११
३० सो.	४ ३ १८ २४	२ ४ ८ ४३	३६ ४८	३ २८ ३२ २६	२१ ४४	१ २४ ५५ २६	६ ३०	५ १० २२ १९	७३ २०	१० २२ १७ ४७	४ ३२	११ १३ ३४ ०
३० मं.	४ १५ ३२ ४७	२ ४ ४५ ३१	३६ ४२	३ २९ २ ४०	३१ २७	१ २५ १ ५६	६ २५	५ ११ ३५ ३९	७३ २०	१० २२ १३ १५	४ ३२	११ १३ ३० ५०

फलम्– नवमी तिथि का क्षय हो गया है किन्तु अमावस्या तिथि की वृद्धि भी हो गई है, इस प्रकार यह पक्ष १५ दिन का ही है। ऐसा माना गया है कि भादों के महीने में सजाव दही नहीं खाना चाहिए किन्तु मट्ठे का सेवन किया जा सकता है। चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया तिथि में **अशून्य शयन का व्रत २१ अगस्त** बुधवार को किया जायेगा। **भीमचण्डी विन्ध्याचली देवी** की जयन्ती एवं **कजरी का रतजगा २१ अगस्त** बुधवार को मनाया जायेगा। **कज्जली का प्रसिद्ध त्यौहार २२ अगस्त** गुरुवार को मनाया जायेगा। मीरजापुर जनपद एवं समीपस्थ में कजरी गायन-दंगल अपने पारम्परिक स्वरूप में मनाया जायेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी (बहुला)** का मान भी २२ अगस्त गुरुवार को है, चन्द्रोदय रात ८।२० बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **बहुला चतुर्थी** में आज के दिन गाय के दूध एवं उससे निर्मित खाद्य सामग्री का सेवन नहीं करना चाहिए। पुत्र की दीर्घायु की कामना से **हल षष्ठी (ललही छठ) का व्रत पूजन २५ अगस्त** रविवार को किया जायेगा। २६ अगस्त सोमवार दिन में **८।२० बजे से अष्टमी तिथि** लग जायेगी एवं **रोहिणी नक्षत्र** भी रात ९।१० बजे से प्रारम्भ हो जायेगी; इस प्रकार अर्धरात्रि में अष्टमी तिथि रोहिणी नक्षत्र एवं साथ ही सोमवार का दिन मिल जाने से जयन्ती योग का उत्तम अवसर प्राप्त हो रहा है। अतः आज ही **श्रीकृष्णजन्माष्टमी** ▪

पं.१९ भाद्रपद कृष्ण ८ मंगल सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५१४
अयनांशाः २४/११/६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	२	३	१	५	१०	११	५
९	१५	०	२६	२४	३	२२	१३	१३
२६	२८	२५	३४	१३	१	४४	५३	५३
४३	३५	३४	१४	३६	५३	२६	६	६
५७	८२८	३७	[illegible]	७	१७३	[illegible]	३	३
४९	३४	३५	[illegible]	२५	२५	[illegible]	११	११



भौमादीनां चारः
भौमः–मृग.वृष राशौ ७ गोमतः मिथुने दिवा८।१०वादने। बुधः-(वक्री) ति.२ बुधतः वक्रगत्या कर्क राशौ दिवा३।३० वादने। १० बुधतः मार्गी। गुरुः-वृषे २ भौमतः मृगशिरायां दिवा१२।३०वादने। शुक्रः-सिंह राशौ ५ शनितः कन्या राशौ रात्रि ७।३०वादने। शनि-(वक्री) पू.भा.१चरणे कुम्भ राशौ। राहुः-उ.भा.४ चरणे केतुश्च-हस्त २ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

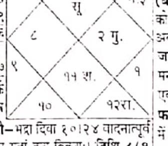
भाद्रपद कृष्ण

लग्नांत ति.वा.	१मं. घं. मि.	२बु. घं. मि.	३गु. घं. मि.	४शु. घं. मि.	५श. घं. मि.	६र. घं. मि.	७सो. घं. मि.	८मं. घं. मि.	१०बु. घं. मि.	११गु. घं. मि.	१२शु. घं. मि.	१३श. घं. मि.	१४र. घं. मि.	३०सो. घं. मि.	३०मं. घं. मि.
सिंह	७ ४०	७ ३६	७ ३२	७ २८	७ २४	७ २०	७ १६	७ १२	७ ८	७ ४	७ ०	६ ५६	६ ५२	६ ४९	६ ४५
कन्या	९ ५२	९ ४८	९ ४४	९ ४१	९ ३६	९ ३३	९ २९	९ २५	९ २१	९ १७	९ १३	९ ९	९ ५	९ १	८ ५७
तुला	१२ ९	१२ ५	१२ १	११ ५७	११ ५३	११ ४९	११ ४५	११ ४१	११ ३७	११ ३३	११ २९	११ २५	११ २१	११ १८	११ १४
वृश्चिक	२ २६	२ २२	२ १८	२ १४	२ १०	२ ६	२ २	१ ५८	१ ५४	१ ५०	१ ४६	१ ४२	१ ३८	१ ३४	१ ३२
धनु	४ ३१	४ २७	४ २३	४ १९	४ १५	४ ११	४ ७	४ ३	३ ५९	३ ५५	३ ५१	३ ४८	३ ४४	३ ४०	३ ३६
मकर	६ १६	६ १२	६ ८	६ ४	६ ०	५ ५६	५ ५३	५ ४९	५ ४५	५ ४१	५ ३७	५ ३३	५ २९	५ २५	५ २२
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
कुम्भ	७ ४७	७ ४३	७ ३९	७ ३५	७ ३२	७ २८	७ २४	७ २०	७ १६	७ १२	७ ८	७ ४	७ ०	६ ५६	६ ५२
मीन	९ १५	९ ११	९ ७	९ ३	९ ०	८ ५६	८ ५२	८ ४८	८ ४४	८ ४०	८ ३६	८ ३२	८ २८	८ २४	८ २०
मेष	१० ५४	१० ५०	१० ४६	१० ४२	१० ३८	१० ३४	१० ३०	१० २६	१० २२	१० १८	१० १४	१० १०	१० ६	१० ३	९ ५९
वृष	१२ ५१	१२ ४७	१२ ४३	१२ ३९	१२ ३५	१२ ३१	१२ २७	१२ २३	१२ १९	१२ १५	१२ ११	१२ ७	१२ ३	११ ५९	११ ५६
मिथुन	३ ४	३ ०	२ ५६	२ ५२	२ ४८	२ ४५	२ ४१	२ ३७	२ ३३	२ २९	२ २५	२ २१	२ १७	२ १३	२ ९
कर्क	५ २२	५ १८	५ १४	५ १०	५ ६	५ २	४ ५८	४ ५४	४ ५०	४ ४६	४ ४२	४ ३९	४ ३५	४ ३१	४ २७

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ भौमे**–धनिष्ठायां प्रसूति स्नानं, लालवस्त्र धारणं, हलप्रवहणं, दत्तक पुत्रग्रहण पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि २ बुधे**–शतभि-पूर्वाभाद्रपदे, धान्यच्छेदनं, जलयंत्र कर्म मुकदमा कार्य पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ३ गुरौ**–भद्रा प्रातः ६।४८ वादनात्पूर्व उ.भा. पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशन विपणिव्यापारः नववस्त्र धारणं, हलप्रवहणं बीजवपन धान्यच्छेदनं वृक्षारोपण नृत्यगीत-वाद्यकलारम्भं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं। **तिथि ४ शुक्रे**–रिक्ता दिवा ३।६ वादनात्परं रेवत्यां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म, अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः गवां क्रय विक्रयः नववस्त्र भूषण धारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शास्त्र धारणं शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदनपत्र लेखनं, नूतनवाधा-पाकर्क वाहनक्रयः उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ५ शनौ**–अश्विन्यां कृष्ण वस्त्र धारणं अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ६ रवौ**–भद्रा दिवा १०।२४ वादनात्पूर्वं भरण्यां इष्टिका दहनं। **तिथि ७ सोमे**–कृत्तिकायां धान्यच्छेदन गवां क्रय विक्रयः। **तिथि ८/९ भौमे**–रोहिण्यां रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि १० बुधे**–मृगशिरायां दिवा ४।२१ वादनात्पूर्वं मृगशिरे नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः, हलप्रवहण बीजवपनं धान्यच्छेदनं सेवारम्भ शय्या-सनाद्युपभोगं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ११ गुरौ**–आर्द्रायाम् - धान्यच्छेदनं, मुकदमाकार्यं। **तिथि १२ शुक्रे**–पुनर्वसौ नामकरणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहण बीजवपन, शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं भूमिक्रयः, वाहनक्रयः दक्षिण दिग् यात्रा कर्क चन्द्रे उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १३ शनौ**–पुष्ये नीलमादिरत्न कृष्ण वस्त्र धारणं शस्त्रघटनं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तत्परं रिक्ता मासान्तः।

पं.२० भाद्रपद कृ. ३० सोमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५२१
अयनांशाः २४/११/७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	२	३	१	५	१०	११	५
१५	१४	४	२९	२५	११	२२	१३	१३
१२	३२	४५	२	९	३१	१३	३०	३०
८	४७	३१	५०	५५	३९	१५	५०	५०
५८	३२	३६	३९	८	१३	४४	३	३
३	९	३२	२७	२५	२०	३२	११	११



(ख) यात्रा ३। तीज व्रतः (जैन)। बहुलायाः-या पालयन्त्यनाथांश्च परपुत्रान् स्वपुत्रवत्। ता धन्यास्ताः कृतार्थाश्च तास्त्रियः लोकमातरः इति मंत्रेण गो पूजनम्। (ग) हेमाद्री। निर्णयसिन्धु। शुभाशुभ त्रय गुणकरः विपुष्करयोगः ४१।३८ (रा.१०।१८) उ.। रवियोगः ४१।३८ (रा.१०।१८) या.। (च) स्थित्वा पूर्वोत्तर मुखः। ओंकारेणैवमन्त्रेण कुशान् स्पृष्ट्वा द्विजोत्तमः।' **कुशोत्पाटन मन्त्रः** ॐ कुशाग्रे वसते रुद्रकुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान् मे देहि मेदिनी।' इति। **सोमवती अमायां**– अश्वत्थ मूले प्रणिधाय विष्णुं गम्भुञ्च सम्यग्विधिवत्प्रचारैः। प्रदक्षिणा भीष्ट फलादि द्रव्यैः स्त्रीभिर्विधेया पति सौख्य वृद्ध्यैः। इति मंत्रेण अश्वत्थ (पीपल) मलस्य १०८ परिक्रमा कार्या।

▪ का व्रत जन्मोत्सव मना लिया जाना पुण्यफलकारी होगा। **औदयिक अष्टमी एवं रोहिणी नक्षत्र** का संयोग **२७ अगस्त** मंगलवार को प्राप्त हो रहा है अतः कुछ विशिष्ट वैष्णवजन २७ अगस्त मंगलवार को भी **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** मनायेंगे। **जया एकादशी व्रत** का मान सबके लिये २९ अगस्त गुरुवार को होगा। **गोवत्स द्वादशी (बछवारस) ३० अगस्त** शुक्रवार को मनायी जायेगी। पुत्र की कामना से **शनि प्रदोष** का व्रत ३१ अगस्त को किया जायेगा। **मास शिवरात्रि व्रत का मान १ सितम्बर** रविवार को होगा। **सन्त अघोराचार्य** का अवतरणोत्सव मनाया जायेगा। **काशी के क्रीं कुण्ड** एवं पड़ाव तथा सबसे बढ़कर **सन्त कीनाराम की जन्मस्थली** चन्दौली (वाराणसी) जनपद के **रामगढ़ नामक** गाँव में विशेष समारोह मनाया जायेगा। **स्नानदान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या** एवं साथ ही **सोमवती अमावस्या** का योग **२ सितम्बर** को मिल रहा है। **'ॐ हूँ फट्कार'** मन्त्रोच्चार के साथ उखाड़ा गया कुशा पूजनादि कार्य में वर्ष भर प्रयोग में लाया जायेगा। **सोमवती अमावस्या** में अश्वत्थ (पीपल) वृक्ष में भगवान विष्णु का निवास मानते हुए सौभाग्यवती स्त्रियाँ विधिवत् पूजन कर विहित मंत्र **अश्वत्थ मूले ... ...** उच्चारण के साथ पीपल वृक्ष की १०८ परिक्रमा करेंगी। **पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का सूर्य ३१ अगस्त** शनिवार को प्रातः ६।४३ बजे से आवेगा। इसमें अच्छी वृष्टि के योग हैं। अमावस्या तिथि की वृद्धि हो जाने से **भौमवती अमावस्या** का योग भी **३ सितम्बर** को मिल रहा है; इसमें गंगा स्नान अत्यन्त पुण्यफलदायक माना गया है।

राशिफल

राशि	फल
मेष-	अर्थनाशः
वृष-	रोगं हर्षः
मिथुन-	सुखम्
कर्क-	हानिः भयम्
सिंह-	स्थान हानिः
कन्या-	द्रव्यनाशः
तुला-	वित्तप्तिः
वृश्चिक-	सौख्यं
धनु-	पापवृद्धिः
मकर-	रोग भयं
कुम्भ-	गमनम्
मीन-	रिपुनाशः

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ भाद्रपद शुक्लपक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षाऋतुः। कन्यार्कतः शरद् ऋतुः। दि.४ - १८
सितम्बर सन् २०२४ ई.। (राष्ट्रीय भाद्रपद १३ - २७)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	भाद्रपद शु. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
३१	११	१	बुध	५	४६	दिन	८	४	उत्तराफा.	५९	२४	रात	५	३२	साध्य	३७	२२	रात	८	४३	बव	५	४६	बा	३८	१६	प्रवर्धमान	४	१६	१८	१३	कन्या	९	४५	५	४६	६	१४	७	२५	४	१७	१०	११	५८	५	-	३	६	५८	कन्याराशिः दिवा ९।४० वादने। चन्द्र ◡दर्शनम् मु.४५ वृहतां समर्घताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। महत्तमाख्य शिवव्रतम् १। महावीर जन्म वांचन १। वुध-भद्रा सिद्धयोगः ५।४६ (दि.८।४) उ.।
३१	८	२	गुरु	१०	४४	दिन	१०	४	हस्त	६०	०	स	म	स्त	शुभ	३८	५५	रात	९	२१	कौ	१०	४४	तै	४३	१८	राक्षस	५	१७	१९	१४				५	४६	६	१४	७	३	४	१८	८	१६	५८	७	-	३	७	२६	मु.रवि-उल-अव्वल ३ हिजरी सन् १४४६। श्रीशंकरदेव तिथि २ (आसाम)। वाराहवतारः ३ (अपराह्ने)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १०।४४ (दि.१०।४) उ.। (ख) रात्रि शेष ४।५० वादने।
३१	४	३	शुक्र	१५	५२	दिन	१२	८	हस्त	५	५५	दिन	८	९	शुक्ल	४०	२६	रात	९	५७	गर	१५	५२	व	४८	१७	अमृत	६	१८	२०	१५	तुला	३९	१०	५	४७	६	१३	६	४१	४	१९	६	२३	५८	९	-	४	७	५५	तुलाराशिः रात्रि ९।२७ वादने। भद्रा ४८।१७ (रा.१।६) उ. (पाताले)। हरितालिका व्रतम् (तीज) स्त्रीणां नित्यंकाम्यञ्च। वृहद्गौरी व्रतम् ३। गौरी तृतीया ३ (उड़ीसा)। 'आलीभिर्हरितायस्मात् तस्यात् सा हरितालिका।'(क)
३१	०	४	शनि.	२०	४२	दिन	२	५	चित्रा	१२	१७	दिन	१०	४३	ब्रह्म	४१	३८	रात	१०	२७	वि	२०	४२	बव	५२	५०	काण	७	१९	२१	१६				५	४८	६	१२	६	१८	४	२०	४	३२	५८	११	-	४	८	२५	भद्रा २०।४२ (दि.२।५) या.। वैनायकी वरद् श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। गणेशोत्सव प्रारम्भः। कपर्दीश्वर ४। जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष)। सरस्वती पूजा (उड़ीसा)। सौभाग्य चतुर्थी (बंगाल)। पौराणिक अगस्त्योदयः(ख)
३०	५७	५	रवि.	२४	५८	दिन	३	४८	स्वाती	१८	०	दिन	१	०	ऐन्द्र	४२	१५	रात	१०	४२	बा	२४	५८	कौ	५५	३६	लुम्बक	८	२०	२२	१७				५	४९	६	११	५	५६	४	२१	२	४३	५८	१३	-	४	८	५८	श्री ऋषि पञ्चमी ५ व्रतम्। मध्यान्हे सप्तर्षिपूजनम्। स्वर्णमयी प्रतिमा सप्तर्षीणि सम्पूज्य ब्राह्मणाय निवेदयेत्। सांवत्सरी पञ्चमी (जैन) विविध महोत्सवः। रक्षा पञ्चमी (बंगाल)। गुरु पञ्चमी (उड़ीसा)। रवियोगः १८।०(दि.१।०)उ.।
३०	५३	६	सोम.	२८	१४	दिन	५	७	विशाखा	२२	५२	दिन	२	५८	वैधृति	४२	३	रात	१०	३८	तै	२८	१४	गर	६०	०	मित्र	९	२१	२३	१८	वृश्चिक	६	४१	५	४९	६	११	५	३३	४	२२	०	५६	५८	१५	-	५	९	३६	वृश्चिकराशि दिवा ८।२९ वादने। लोलार्क षष्ठी ६ व्रतम्। पुत्रार्थिनाम काश्यां भदैनी स्थित लोलार्क कुण्डे स्नानम् विधेयम्। स्वामी कार्तिकेयदर्शनेन (अद्य) ब्रह्महत्यादि पापैस्तुमुच्यते। सूर्याय अर्घ्यम्: ललिता षष्ठी (ग)
३०	५०	७	मंगल	३०	२५	सायं	६	०	अनुराधा	२६	३८	दिन	४	२९	विष्कुम्भ	४१	०	रात	१०	१४	गर	१	३०	व	३०	२५	वज्र	१०	२२	२४	१९				५	५०	६	१०	५	११	४	२२	५९	११	५८	१८	-	५	१०	२०	भद्रा ३०।२५ (सा.६।०) उ. (स्वर्गे)। अनुराधायां ज्येष्ठा देव्याः आवाहनम्। मुक्ता भरण सप्तमी ७। सन्तान पूजा ७। अपराजिता पूजा ७। फल सप्तमी ७। ललिता सप्तमी (बंगाल-उड़ीसा)। दुबड़ी सप्तमी ७। महालक्ष्मी(घ)
३०	४६	८	बुध.	३१	१७	सायं	६	२२	ज्येष्ठा	२९	१	सायं	५	३१	प्रीति	३८	५७	रात	९	२६	वि	०	५३	बव	३१	१७	ध्वांक्ष	११	२३	२५	२०	धनु	२९	९	५	५१	६	९	४	४८	४	२३	५७	२९	५८	२०	-	५	११	१०	धनुराशिः सायं ५।३१ वादने। भद्रा ०।५३ (प्रा.६।१२) या.। श्रीराधाष्टमी ८ व्रतम् राधारानी महाभिषेक (वृन्दावन)। काश्यां लक्ष्मी कुण्डे स्नानम् महालक्ष्मी व्रत पूजन काश्यां सोरहिया मेला च आरम्भः। षोडष (१६) दिनानि(ङ)
३०	४२	९	गुरु	३०	५२	सायं	६	१२	मूल	३०	२३	सायं	६	१	आयुष्मान	३५	५०	रात	८	११	बा	१	४	कौ	३०	५२	धूम्र	१२	२४	२६	२१				५	५१	६	९	४	२५	४	२४	५५	४९	५८	२२	-	६	१२	८	श्रीचन्द्र नवमी ९ श्रीचन्द्र जयन्ती। नन्दा नवमी ९। अदुःख नवमी ९। तल नवमी (बंगाल-उड़ीसा)। मूले ज्येष्ठा देवी विसर्जनम्। रवियोगः यावदिनम्। (छ) महारविवार व्रतम्। दुग्ध त्याग व्रतारम्भः दधि दानम्।
३०	३९	१०	शुक्र.	२९	१२	दिन	५	३३	पूर्वाषा.	३०	२७	सायं	६	३	सौभाग्य	३१	४६	सायं	६	३४	तै	०	२	गर व	[illegible]	[illegible]	प्रवर्धमान	१३	२५	२७	२२	मकर	४५	११	५	५२	६	८	४	२	४	२५	५४	११	५८	२४	-	६	१	१२	मकरराशिः रात्रि ११।५६ वादने। भद्रा ५७।४७ (रा.४।५८) उ. (पाताले)। दशावतार १० व्रतम्। ⊙उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे रविः ४७।५० (रा.११।४४)। स्त्री-पु. सू. चं. योगो अश्व वाहनं मीरा नाड़ी तदीशा शुक्रः(च)
३०	३५	११	शनि.	२६	२३	दिन	४	२६	उत्तराषा.	२९	११	सायं	५	३७	शोभन	२६	४५	दिन	४	३५	वि	२६	२३	बव	५३	५९	राक्षस	१४	२६	२८	२३				५	५३	६	७	३	३९	४	२६	५२	२५	५८	२६	-	६	२	१९	भद्रा २६।२३ (दि.४।२६) या.। पद्माएकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। कर्मा एकादशी ११ (बिहार-झारखण्ड)। डोलग्यारस (म.प्र.) ओणम् केरल। जलझूलनी ११। सायंकाले द्वादशी तिथि श्रवणयोगे विष्णुश्रृंखलयोगः।
३०	३२	१२	रवि.	२२	३६	दिन	२	५६	श्रवण	२७	२०	दिन	४	५०	अतिगण्ड	२०	५७	दिन	२	४	बा	२२	३६	कौ	५०	१५	गद	१५	२७	२९	२४	कुम्भ	५५	५६	५	५४	६	६	३	१६	४	२७	५१	०	५८	२९	-	७	३	२७	कुम्भराशि रात्रि ४।१६ वादने। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। प्रदोष व्रतम् १२। पारणा एकादशी व्रतश्च दिवा १० वादने। श्रवणद्वादशी १२। वामनद्वादशी। वामन जयन्ती १२ मध्यान्हे वामनावतारः। शाक्र ध्वजोत्थापनम्।(छ)
३०	२८	१३	सोम.	१७	५७	दिन	१	६	धनिष्ठा	२४	३०	दिन	३	४३	सुकर्मा	१४	३०	दिन	१२	४३	तै	१७	५७	गर	४५	१९	शुभ	१६	२८	३०	२५				५	५४	६	६	२	५३	४	२८	४९	२९	५८	३१	-	७	४	३४	मु.पर्व बारावफात। रवियोग २४।३० (दि.३।४३) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १७।५७ (दि.१।६) या.। (च) सुवृष्टियोगः। रवियोगः ३०।२७ (सा.६।३) या.। शुक्र-नन्दा सिद्धयोगः २९।१२ (दि.५।३३) उ.।
३०	२४	१४	मंगल	१२	४०	दिन	११	०	शतभिषा	२१	०	दिन	२	२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	व	१२	४०	वि	३९	४६	मृत्यु	१७	२९	३१	२६				५	५५	६	५	२	३०	४	२९	४८	०	५८	३३	-	७	५	४१	भद्रा १२।४० (दि.११।०) उ. ३९।४६ (रा.९।४९) या. (मर्त्ये)। व्रताय पूर्णिमा १५। अनन्त चतुर्दशी १४ व्रतम्। मध्यान्हे अनन्त भगवान पूजनम् कथा श्रवणम् अनन्त धारणम् च। अद्य मृदु भोजन कार्यम्। श्रीशिवपरिवर्तनोत्सवः।(ज)
३०	२१	१५	बुध.	६	५३	दिन	८	४१	पूर्वाभाद्र	१७	२	दिन	१२	४५	गण्ड	५२	१६	रात	२	५०	बव	६	५३	बा	३३	५१	पद्म	१८	३०	१	२७	मीन	३	१	५	५६	६	४	२	७	५	०	४६	३३	५८	३५	-	८	+	+	मीनराशिः दिवा ७।८ वादने। स्नानदानादौ पूर्णिमा १५। सन्ध्या पूजा १५। लोकपाल पूजनम्। महालयारम्भः। सौर आश्विन मासारम्भः। प्रतिपद श्राद्धम्। पितृपक्षस्य तर्पणादि प्रारम्भः। पूर्वदिशायाम् वुधास्तः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१ बु.	४	२७	४३	३०	२	५	२२	१३	३६	३५	३	२९	४१	३७	५०	१८	१	२५	८	२१	६	१६	५	१२	४८	५९	७३	२०	१०	२२	८	४३	४	२३	११	१३	२७	३९
२ गु.	५	९	४५	६	२	५	५८	४८	३६	२७	४	०	३१	५५	६७	४१	१	२५	१४	३७	६	८	५	१४	२	१९	७३	२०	१०	२२	४	१०	४	३५	११	१३	२४	२९
३ शु.	५	२१	४७	१२	२	६	३५	१५	३६	२०	४	१	३१	३६	७१	५७	१	२५	२०	४५	५	५८	५	१५	१५	३१	७३	२०	१०	२१	५९	३५	४	३५	११	१३	२१	१८
४ श.	६	३	५१	४८	२	७	११	३५	३६	११	४	२	५१	३३	७६	३५	१	२५	२६	४३	५	५०	५	१६	२८	५१	७३	१८	१०	२१	५५	०	४	३६	११	१३	१८	८
५ र.	६	१६	२	४१	२	७	४७	४६	३६	१	४	४	८	८	८१	५३	१	२५	३२	३३	५	४४	५	१७	४१	४७	७३	१८	१०	२१	५०	२४	४	३६	११	१३	१४	५७
६ सो.	६	२८	२४	१५	२	८	२३	४७	३५	५१	४	५	२८	१	८४	४०	१	२५	३८	१७	५	३४	५	१८	५५	३५	७३	१८	१०	२१	४५	४८	४	३६	११	१३	११	४६
७ मं.	७	११	२	५६	२	८	५९	३८	३५	४०	४	६	५२	४१	८९	३१	१	२५	४३	५१	५	२५	५	२०	८	५३	७३	१८	१०	२१	४१	१२	४	३४	११	१३	८	३५
८ बु.	७	२३	५२	४	२	९	३५	१८	३५	२९	४	८	२२	१२	९२	५३	१	२५	४९	१६	५	१४	५	२१	२२	११	७३	१५	१०	२१	३६	३८	४	३४	११	१३	५	२४
९ गु.	८	६	५८	३५	२	१०	१०	४७	३५	१७	४	९	५५	५	९७	४०	१	२५	५४	३०	५	२	५	२२	३५	२६	७३	१५	१०	२१	३२	४	४	३४	११	१३	२	१३
१० शु.	८	२०	१८	२८	२	१०	४६	४	३५	४	४	११	३२	४५	१००	३७	१	२५	५९	३२	४	५०	५	२३	४८	४१	७३	१५	१०	२१	२७	३०	४	३२	११	१२	५९	२
११ श.	९	३	५२	५४	२	११	२१	८	३४	५६	४	१३	१३	२२	१०५	२७	१	२६	४	२२	४	४१	५	२५	१	५६	७३	१५	१०	२१	२२	५८	४	३२	११	१२	५५	५२
१२ र.	९	१७	२८	५६	२	११	५६	४	३४	४४	४	१४	५८	४९	१०७	१०	१	२६	९	३	४	३४	५	२६	१५	११	७३	१५	१०	२१	१८	२६	४	३०	११	१२	५२	४१
१३ सो.	१०	१	२२	१९	२	१२	३०	४८	३४	३०	४	१६	४५	५९	१०७	५२	१	२६	१३	३७	४	२७	५	२७	२८	२६	७३	१५	१०	२१	१३	५६	४	२९	११	१२	४९	३०
१४ मं.	१०	१५	२४	४४	२	१३	५	१८	३४	२५	४	१८	३३	५१	१०८	३६	१	२६	१८	४	४	२१	५	२८	४१	४१	७३	१३	१०	२१	९	२७	४	२७	११	१२	४६	२०
१५ बु.	१०	२९	३२	१८	२	१३	३९	३३	३४	०	४	२०	२२	२७	१०९	१५	१	२६	२२	२५	४	१३	५	२९	५४	५४	७३	१३	१०	२१	५	०	४	२७	११	१२	४३	९

फलम्– बुधवार उ.फा. नक्षत्र एवं कन्या राशि का चन्द्रदर्शन मु.४५ सुभिक्ष एवं सस्ती का वातावरण। यह पक्ष पूरे १५ दिन का है; पक्ष के तीन बुधवार घी, गुड़, आदि रसीले पदार्थों में तेजी लायेंगे। रुई एवं चाँदी में घटा-बढ़ी चलेगी। स्त्री जाति का वर्ष भर का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध व्रत पर्व हरितालिका तीज ६ सितम्बर शुक्रवार को होगा। सौभाग्यवती महिलाएँ अपने सौभाग्य को अक्षुण्ण बनाये रखने तथा कन्यायें भावी जीवन के सुखी दाम्पत्य जीवन को प्राप्त करने के लिए इस व्रत पर्व को तपस्या की तरह निर्जल निराहाररहकर पूर्ण करती हैं। ढेलहिया चौथ एवं चन्द्रपूजा का मान भी आज ही चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी तिथि में हो जायेगा। आज के दिन न चाहने पर भी अनजाने में चन्द्रमा को देख लेने से दोष लग जाता है एवं कोई न कोई अपयश-कलंक अनावश्यक रूप से लग जाता है। इसकी शान्ति के लिये "सिंह प्रसेन ..." मन्त्र का जप कर श्रीमद्भागवत् से स्यमन्तक मणि की कथा सुनकर दोष शान्ति कर लेनी चाहिए। वैनायकी वरद् गणेश चतुर्थी का मान ७ सितम्बर शनिवार होगा। देशव्यापी गणेश उत्सव प्रारम्भ हो जायेगा। श्री ऋषि पंचमी व्रत पर्व ८ सितम्बर रविवार को मनाया जायेगा। सप्त ऋषियों की स्वर्ण आदि प्रतिमा का पूजन कर सुयोग्य ब्राह्मण का दान कर देने का पुण्यफलदायक विधान है। सन्तान प्राप्ति की कामना से किया जाने वाला लोलार्क षष्ठी का व्रत एवं पूजन तथा काशी के लोलार्ककुण्ड का स्नान ९ सितम्बर सोमवार को सम्पन्न होगा। आज के दिन स्वामी कार्तिकेय का दर्शन करने से ब्रह्म हत्या जैसे पापों से मुक्ति मिलती है। महालक्ष्मी व्रत का पूजन अनुष्ठान चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी तिथि में १० सितम्बर मंगलवार से प्रारम्भ हो जायेगा। पद्मा एकादशी व्रत का मान सबके लिये १४ सितम्बर शनिवार को होगा।□

पं.२१ भाद्रपद शु.८ बुध सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५२९ अयनांशाः २४/११/८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	२	४	१	५	१०	११	५
२३	२३	९	८	२५	२१	२१	१३	१३
५७	५२	३५	२२	४९	२२	३६	५	५
२१	४	१८	१२	१६	११	३८	२४	२४
५८	७६६	३५	९२	५	७३	४ ३४	३	३
२०	३४	२९	५३	१४	१५	व	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः-मिथुन वृष राशौ ३ शुक्रतः आर्द्रायाम् दिवा १०।३० वादने। बुधः-१ बुधतः सिंह राशौ रात्रि ७।१० वादने। गुरुः-मृग. वृष राशौ। शुक्रः-कन्या राशौ १५ बुधतः तुला राशौ दि.८।३० वादने। शनिः-(वक्री) पू. भा. १ चरणे कुम्भ राशौ। राहुः-३ शुक्रतः उ.भा.३ चरणे केतुश्च-हस्त १ चरणे।

भाद्रपद शु. दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ बु. घं.	मि.	२ गु. घं.	मि.	३ शु. घं.	मि.	४ श. घं.	मि.	५ र. घं.	मि.	६ सो. घं.	मि.	७ मं. घं.	मि.	८ बु. घं.	मि.	९ गु. घं.	मि.	१० शु. घं.	मि.	११ श. घं.	मि.	१२ र. घं.	मि.	१३ सो. घं.	मि.	१४ मं. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	१५ बु. घं.	मि.
सिंह	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	कन्या	७	५८
कन्या	८	५३	८	४९	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२	तुला	१०	२५
तुला	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१९	वृश्चिक	१२	३२
वृश्चिक	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	४०	१२	३६	धनु	२	३७
धनु	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	मकर	४	२२
मकर	५	१७	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	कुम्भ	५	५३
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.	
कुम्भ	६	४८	६	४४	६	४०	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	मीन	७	२१
मीन	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	मेष	९	०
मेष	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	१२	९	८	९	४	वृष	१०	५७
वृष	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	मिथुन	१	१०
मिथुन	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	कर्क	३	२८
कर्क	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	सिंह	५	४२

विविध मुहूर्त्ताः तिथि १ बुधे–उत्तराफाल्गुन्यां- रात्रौ गर्भाधानं ल.२, जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशन, विपणिव्यापारः, नववस्त्र धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं कणमर्दनं चूल्हीस्थापनं, वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगं, पूर्व दिग् यात्रा। तिथि २ गुरौ–हस्त नक्षत्रे गर्भाधानं रात्रौ लग्नं २, पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः गवां क्रय विक्रयः नववस्त्र धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, दत्तक पुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं, दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि ३ शुक्रे–रिक्ता दिवा १२।८ वादनात्पूर्व हस्त नक्षत्रे आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विक्रयां च विपणि व्यापारः गवां क्रय-विक्रयः नववस्त्र धारणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं, वाहन क्रयः हस्त नक्षत्रे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि ४ शनौ–रिक्ता भद्रा दिवा २।५ वादनात्परं स्वात्यां कृष्णवस्त्र धारणं शस्त्र निर्माण, पूर्व दिग् यात्रा। तिथि ५ रवौ–स्वात्यां प्रसूति स्नानं, लालवस्त्र धारणं बीजवपनं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म दक्षिण दिग् यात्रा। तिथि ६ सोमे–विशाखा दिवा २।५८ वादनात्परं अनुराधायां आ. प्रसूतिस्नानं जातकर्म नामकरणं विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं, कणमर्दनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं वाहन क्रय दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। रात्रि १०।३८ वादनात्परं गर्भाधानं। तिथि ७ भौमे–अनुराधायां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवालरत्नधारणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि ८ बुधे–ज्येष्ठायां भद्रा प्रातः ६।१२ वादनात्परं नामकरण कणमर्दनं। तिथि ९ गुरौ–मूले रोग विमुक्त स्नानं। तिथि १० शुक्रे–पूर्वाषाढ़ायाम् आ.प्रसूति स्नानं धान्यस्थापनं जलयंत्रकर्म, मुकदमा कार्यं भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। तिथि ११ शनौ–भद्रा दिवा ४।२६ वपादनात्परं उत्तराषाढ़ायाम् श्रवणे कृष्ण वस्त्र धारणं श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि १२ रवौ–श्रवणे पुंसवनं सीमन्त प्रसूतिस्नान ○ (धनिष्ठायां) लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं, शल्यकर्म, शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि १३ सोमे–धनिष्ठायां आ.प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, आवेदनपत्र लेखनं, पश्चिम दिग् यात्रा। तिथि १४ भौमे–शतभिषायां रोग विमुक्त स्नानं। तिथि १५ बुधे–पूर्वाभाद्रपदे धान्यच्छेदनं जलयंत्र कर्म, भूकदना कार्य।

पं.२२ भाद्रपद शु.१५ बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५३६ अयनांशाः २४/११/९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	२	४	१	५	१०	११	५
०	२२	१३	२०	२६	२२	२१	१२	१२
४६	३२	३९	२२	२२	५४	५	४३	४३
३३	१८	३३	२७	२१	५४	०	९	९
५८	८०८	३४	१०९	४	७३	४ २७	३	३
३५	८	०	१५	१३	१३	व	११	११



(क) चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थ्यां ढेलहिया चौथ ४ अद्य चन्द्रदर्शन निषिद्धम् चन्द्रास्त (रा.७।५५) वादने। चन्द्र पूजा (बिहार)। चन्द्रदृष्टे सति स्यमन्तकस्य कथा श्रवणम्। "सिंह प्रसेनमवधीत्सिंहो जाम्बवताहतः। सुकुमारक मारोदीस्तव ह्येषु स्यमन्तकः" दोष शान्त्यर्थं इति मंत्र जपनीयः। रवियोगः ५।५५ (दि.८।९) उ.। पूर्वाफाल्गुनी ३ चरणे रविः रात्रि ४।४५ वादने। (ग) (गुर्जर प्रसिद्धम्)। स्कन्द षष्ठी ६। सर्वार्थसिद्धियोगः २२।५२ (दि.२।५८) उ.। रवियोगः २२।५२ (दि.२।५८) या.। (घ) व्रत-पूजन-स्थापना आरम्भः (चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टम्यां)। पूर्वाफाल्गुनी ४ चरणे रविः दिवा २।१४ वादने। (ङ) यावत्। ज्येष्ठायां ज्येष्ठा देवी पूजनम्। बुधाष्टमी पर्वः सूर्यग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय। रवियोगः यमघंट योगश्च २९।९ (सा.५।३१) उ.। (ज) कदली व्रतम् १४। गणपति विसर्जनम्। काश्यां रामनगर रामलीला प्रारम्भः।⊙सं.उ.फा. २ चरणे कन्या राशौ रविः २३।२४ (दि.११।९०)। मु.१५ जघन्या। पूर्वाः पराः १६ घट्यः पुण्याः। गृहवस्त्रदानम् गोदावर्याम् स्नानम्। शरद् ऋतुः प्रारम्भः। श्रीविश्वकर्मा पूजा। नान्दी मातामह श्राद्धम्। प्रोष्ठपदि श्राद्धम्।

□ जिसे बिहार-झारखण्ड में पद्मा एकादशी डोलग्यारस कहा जाता है। महारविवार का व्रत १५ सितम्बर को किया जायेगा। प्रदोष का व्रत, श्रवण द्वादशी एवं वामन द्वादशी का मान भी १५ सितम्बर रविवार को होगा। अनन्त चतुर्दशी व्रत एवं पूजन का मान १७ सितम्बर मंगलवार को होगा। इसमें मीठा प्रसाद भगवान को नैवेद्य के रूप में अर्पित कर अनन्त व्रत की कथा सुनना पुण्यफल कारी होता है। भगवान को चढ़ाया हुआ मीठा प्रसाद-पक्वान प्रसाद स्वरूप ग्रहण करना चाहिए। व्रत के लिये पूर्णिमा का मान १७ सितम्बर मंगलवार को होगा एवं आज ही सृष्टि के आद्य शिल्पी भगवान विश्वकर्मा की जयन्ती भी मनाई जायेगी। स्नानदान की पूर्णिमा १८ सितम्बर बुधवार को होगी एवं आज ही मध्याह्न काल में प्रतिपदा तिथि मिल जाने के कारण प्रतिपदा के श्राद्ध सहित महालयारम्भ भी हो जायेगा। उ.फा नक्षत्र का सूर्य १३ सितम्बर शुक्रवार की रात १२।४४ बजे से आवेगा। इसमें अच्छी वृष्टि के योग मिल रहे हैं। कन्या राशि की सूर्य संक्रान्ति १७ सितम्बर मंगलवार को दिन ११।१७ बजे से आवेगी। इसका फल महंगी कारक है। पक्षान्त १८ सितम्बर के आसन्न वर्षा होने के योग हैं।

राशिफल

मेष-	शत्रुपीड़ा
वृष-	पुत्रोन्नति
मिथुन-	धनागमं
कर्क-	अर्थागम
सिंह-	धनप्राप्तिः
कन्या-	शत्रुनाशः
तुला-	अर्थ प्राप्तिः
वृश्चिक-	धनागमः
धनु-	धर्माचरणं
मकर-	सुखलाभः
कुम्भ-	मनदः
मीन-	शोकः

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ आश्विन कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः शरद् ऋतुः। दि.१९ सितम्बर - २ अक्टूबर सन् २०२४ ई. (रा.भाद्रपद २८ - आश्विन १०)

दि.मा. घ.	प.	आश्विन कृ. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.
३०	१७	१/२	गुरु	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	उत्तराभाद्र	१२	५२	दिन	११	६	वृद्ध	४४	३०	रात	११	४५	को	०	५०	तै	[illegible]	[illegible]
३०	१३	३	शुक्र.	४८	४१	रात	१	२६	रेवती	८	३९	दिन	९	२६	ध्रुव	३६	३५	रात	८	३७	व	२१	४१	वि	४८	४१
३०	१०	४	शनि.	४३	०	रात	११	११	अश्विनी	४	३६	दिन	७	५०	व्याघात	२९	१५	सायं	५	४१	बव	१५	५१	बा	४३	०
३०	६	५	रवि.	३७	५१	रात	९	७	भरणी कृत्तिका	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	हर्षण	२२	७	दिन	२	५०	को	१०	२५	तै	३७	५१
३०	२	६	सोम	३३	२७	रात	७	२३	रोहिणी	५५	३८	रात	४	१६	वज्र	१५	३२	दिन	१२	१३	गर	५	३४	व	३३	२७
२९	५९	७	मंगल	२९	५०	सायं	५	५७	मृगशिरा	५४	१२	रात	३	४२	सिद्धि	९	४०	दिन	९	५३	वि	१	१२	बव बा	[illegible]	[illegible]
२९	५५	८	बुध.	२७	१६	दिन	४	५६	आर्द्रा	५३	५१	रात	३	३४	व्यतिपात	४	३०	दिन	७	५०	को	२७	१६	तै	५६	३४
२९	५१	९	गुरु	२५	५३	दिन	४	२५	पुनर्वसु	५४	४८	रात	३	५७	वरीयान परिघ	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	गर	२५	५३	व	५५	५०
२९	४८	१०	शुक्र.	२५	४८	दिन	४	२२	पुष्य	५६	५१	रात	४	४७	शिव	५४	३५	रात	३	५३	वि	२५	४८	बव	५६	२३
२९	४४	११	शनि	२६	५९	दिन	४	५२	श्लेषा	६०	०	स	म	स्त	सिद्ध	५३	२२	रात	३	२५	बा	२६	५९	को	५८	११
२९	४०	१२	रवि	२९	२३	सायं	५	५०	श्लेषा	०	१५	प्रातः	६	१०	साध्य	५२	५५	रात	३	१५	तै	२९	२३	गर	६०	०
२९	३६	१३	सोम.	३२	५५	रात	७	१५	मघा	४	४५	दिन	७	५९	शुभ	५३	२५	रात	३	२७	गर	१	९	व	३२	५५
२९	३३	१४	मंगल	३७	२४	रात	९	३	पूर्वाफा.	१०	१७	दिन	१०	१२	शुक्ल	५४	३०	रात	३	५४	वि	५	१०	श	३७	२४
२९	२९	३०	बुध.	४२	२४	रात	११	५	उत्तराफा.	१६	२७	दिन	१२	४०	ब्रह्म	५५	५२	रात	४	२८	च	९	५४	ना	४२	२४

ति.	औदायिक योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ + अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
१/२	छत्र	१९	१	२	२८				५	५७	६	३	१	४४	५	१	४५	९	५८	३७	-	८	६	५१
३	श्रीवत्स	२०	२	३	२९	मेष	८	३९	५	५७	६	३	१	२१	५	२	४३	४६	५८	४०	-	८	७	३०
४	सौम्य	२१	३	४	३०				५	५८	६	२	०	५७	५	३	४२	२६	५८	४२	-	९	८	१२
५	कालदण्ड	२२	४	५	३१	वृष	१५	१२	५	५९	६	१	०	३४	५	४	४१	८	५८	४४	-	९	८	५९
६	प्रवर्धमान	२३	५	६	१				६	०	६	०	०	१०	५	५	३९	५२	५८	४७	-	१०	९	५०
७	राक्षस	२४	६	७	२	मिथुन	२४	५५	६	०	६	०	[illegible]	१२	५	६	३८	३९	५८	४९	-	१०	१०	४८
८	मुसल	२५	७	८	३				६	१	५	५९	०	३६	५	७	३७	२७	५८	५१	-	१०	११	४८
९	सिद्धि	२६	८	९	४	कर्क	३९	३०	६	२	५	५८	०	५९	५	८	३६	१८	५८	५३	-	१०	१२	४७
१०	उत्पात	२७	९	१०	५				६	२	५	५८	१	२३	५	९	३५	११	५८	५६	-	११	१	४६
११	मानस	२८	१०	११	६				६	३	५	५७	१	४६	५	१०	३४	८	५८	५८	-	११	२	४०
१२	वज्र	२९	११	१२	७	सिंह	०	१५	६	४	५	५६	२	९	५	११	३३	६	५९	१	-	१२	३	३५
१३	ध्वांक्ष	३०	१२	१३	८				६	५	५	५५	२	३२	५	१२	३२	७	५९	३	-	१२	४	२६
१४	धूम्र	१	१३	१४	९	कन्या	२६	५०	६	५	५	५५	२	५६	५	१३	३१	१०	५९	५	-	१३	५	१६
३०	प्रवर्धमान	२	१४	१५	१०				६	६	५	५४	३	१९	५	१४	३०	१५	५९	७	-	१३	६	६

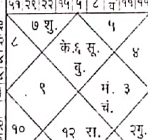
- फसली आश्विनमासारम्भः। फसली नववर्ष १४३२ प्रारम्भः। दुग्धमाश्विन्यां त्यजत्। **द्वितीया श्राद्धम्। क्षमा वाणी (जैन)।** अशून्यशयन व्रतम् २। चन्द्रोदय (रा.६।५१) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। **पितृपक्षे विशेषः(क)**
- **मेषराशिः** दिवा ९।२६ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा २१।४१ (दि.२।३७) उ. ४८।४१ (रा.१।२६) या. (स्वर्ग)। **तृतीया श्राद्धम्।** सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ८।३९ (दि.९।२६) या.।(ख)
- **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदय (रा.८।१२) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। **भरणी श्रान्द्धम्। चतुर्थी श्रान्द्धम्।** भरणी पितृपक्षेतु महती परिकीर्तिता। अस्यां श्राद्धं कृतं येन स गया श्राद्धकृत्भवेत। शनि रिक्ता समायोग(ग)
- **वृषराशिः** दिवा १२।४ वादने। **पञ्चमी श्राद्धम्।** चन्द्रषष्ठी ६ व्रतं (चन्द्रोदय व्यापिन्यां) (रा.९।७) वादनत्परं चन्द्राय अर्घ्यम्। यायिजयद् योग (मुद्दई) ०।५८ (प्रातः ६।२२) या.।
- भद्रा ३३।२७ (रा.७।२३) उ. (स्वर्ग)। **षष्ठी श्राद्धम्। राष्ट्रीय आश्विन मासारम्भः।** सर्वार्थसिद्धियोगः ५५।३८ (रा.४।१६) या.। तदुपरि सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगो। रवियोगः ५५।३८ (रा.४।१६) या.।
- **मिथुनराशिः** दिवा ३।५८ वादने। भद्रा १।१२ (प्रातः ६।२९) या.। **सप्तमी श्राद्धम्। उ.फा. ४ चरणे रविः** प्रातः ६।३० वादने। चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टम्यां **महालक्ष्मी पूजन-अनुष्ठान समाप्तिः।** लक्ष्मी व्रतं चाभ्युदित(घ)
- **जीवत्पुत्रिका व्रतम् ८। जीमूतवाहन पूजनम्। अष्टमी श्राद्धम्। गया मध्याष्टमी श्राद्धम्। काश्यां लक्ष्मी कुण्डे स्नानं-दर्शन पूजनं, सोरहिया मेला समाप्तिः। बुधष्टमी पर्वः** सूर्यग्रहण सान्निभम् स्नानदानाद्
- **कर्कराशिः** रात्रि १।५० वादने। भद्रा ५५।५० (रा.४।२२) उ. (मर्त्य)। **पारणा जीवत्पुत्रिका व्रतस्य प्रातरेव। मातृनवमी श्राद्धम् ९।** सौभाग्यवती स्त्रीणाम्ऽपि अद्येव श्राद्धम्। **अन्वष्टका श्राद्धम्।** सर्वार्थसिद्धियोगः(ङ)
- भद्रा २५।४८ (दि.४।२२) या.। **दशमी श्राद्धम्। ⊙हस्त नक्षत्रे रविः** दिवा ४।१० वादने। स्त्री-स्त्री सु-चन्द्र योगो चातक वाहने जलानाड़ी तदोशो बुधः वायु योगेन सामान्य वृष्टियोगः।
- **इन्दिरा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। एकादशी श्राद्धम्।** यायी (मुद्दई) जयद् योगः २६।५९ (दि.४।५२) या.। (ङ) ५४।४८ (रा.३।५७) या.। तदुपरि गुरु-पुष्य सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो। यायि जयद् योगः २५।५३ (दि.४।२५)या.।
- **सिंहराशिः** प्रातः ६।१० वादने। **द्वादशी श्राद्धम्।** साधुयति वैष्णवानाम्ऽपि अद्येव श्राद्धम्। **मघा श्राद्धम्।** यमघंट योगः ०।१५ (प्रातः ६।१०) उ.। (ग)सिद्धयोगः ४३।० (रा.११।११) या.। यायि जयद् योगः ४३।० (रा.११।११)उ.।
- भद्रा ३२।५५(रा.७।१५) उ.(मर्त्य)। **सोम प्रदोष व्रतम् १३ पुत्रार्थिभिर्विधियम्। त्रयोदशी श्राद्धम्। मासशिवरात्रि व्रतम् १३।** गजच्छाया योगः ४।४५ (दि.७।५९) या.। **हस्त नक्षत्रे २ चरणे रविः** रात्रि १।२३ वादने।
- **कन्याराशिः** दिवा ४।४९ वादने। भद्रा ५।१० (दि.८।९) या.। **चतुर्दशी श्राद्धम्।** शस्त्रादिहतानाम् श्राद्धम्। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः १०।१७ (दि.१०।१२) या.। (ख) उ.फा. ३ चरणे रविः रात्रि ९ वादने।
- **स्नानदान श्राद्धादो अमा ३० पुण्यतमा। सर्वपेतृ अमावस्या ३०। पितृविसर्जनम् ३०। महालया ३०।** अज्ञाततिथिनाम्ऽपि अद्येव श्राद्धम्। **श्रीमहाविष्णु प्रीत्यर्थ ब्राह्मण भोजनम्।** गजच्छायायोगः दिवा १२।४०(च)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ गु.	११	१३	४०	३२	२	१४	१३	३३	३३	४४	४	२२	११	४२	१०९	३८	१	२६	२६	३८	४	२	६	१	८	७	७३	१०	१०	२१	०	३३	४	२६	११	१२	३९	५८
३ शु.	११	२७	५०	१२	२	१४	४७	१७	३३	२९	४	२४	१	२०	११०	४५	१	२६	३०	४०	३	५१	६	२	२१	१७	७३	१०	१०	२०	५५	७	४	२४	११	१२	३६	४८
४ श.	०	११	५८	४२	२	१५	२०	४६	३३	१५	४	२५	५२	५	१११	२०	१	२६	३४	३१	३	४२	६	३	३४	२७	७३	१०	१०	२०	५०	४३	४	२१	११	१२	३३	३७
५ र.	०	२६	२	४	२	१५	५४	१	३३	१	४	२७	४३	२५	१११	४३	१	२६	३८	१३	३	३४	६	४	४७	३७	७३	१०	१०	२०	४६	२२	४	२१	११	१२	३०	२६
६ सो.	१	९	३८	१५	२	१६	२७	२	३२	५३	४	२९	३५	८	११२	३०	१	२६	४१	४७	३	२४	६	६	०	४७	७३	८	१०	२०	४२	१	४	२०	११	१२	२७	१५
७ मं.	१	२३	१४	४४	२	१६	५९	५५	३२	४०	५	१	२७	३८	११२	१	१	२६	४५	११	३	१५	६	७	१३	५५	७३	८	१०	२०	३७	४१	४	१८	११	१२	२४	४
८ बु.	२	६	३६	३७	२	१७	३२	३५	३२	२२	५	३	१९	३९	१११	१५	१	२६	४८	२६	३	५	६	८	२७	३	७३	८	१०	२०	३३	२३	४	१५	११	१२	२०	५३
९ गु.	२	१९	४६	१४	२	१८	४	५७	३२	६	५	५	१०	५४	११०	४४	१	२६	५१	३१	२	५०	६	९	४०	११	७३	८	१०	२०	२९	८	४	१३	११	१२	१७	४२
१० शु.	३	२	४१	४७	२	१८	३७	३	३१	५४	५	७	१	३८	१०९	२६	१	२६	५४	२१	२	३८	६	१०	५३	१९	७३	५	१०	२०	२४	५५	४	११	११	१२	१४	३४
११ श.	३	१५	२५	२५	२	१९	८	५७	३१	४२	५	८	५१	४	१०८	३३	१	२६	५६	५९	२	२५	६	१२	६	२४	७३	४	१०	२०	२०	४४	४	८	११	१२	११	२४
१२ र.	३	२९	५०	११	२	१९	४०	३६	३१	३४	५	१०	३९	३७	१०७	४०	१	२६	५९	२४	२	१३	६	१३	१९	२८	७३	४	१०	२०	१६	३६	४	३	११	१२	८	१३
१३ सो.	४	११	१४	२०	२	२०	१२	१३	३१	२६	५	१२	२७	१७	१०६	२९	१	२७	१	३७	२	३	६	१४	३२	३२	७३	४	१०	२०	१२	३३	३	५८	११	१२	५	२
१४ मं.	४	२४	३४	२५	२	२०	४३	३९	३१	१८	५	१४	१३	४६	१०५	२२	१	२७	३	३०	१	५५	६	१५	४५	३६	७३	४	१०	२०	८	३५	३	५४	११	१२	१	५२
३० बु.	५	६	४०	२१	२	२१	१४	५७	३१	९	५	१५	५८	५८	१०४	३६	१	२७	५	२५	१	३०	६	१६	५८	४०	७३	२	१०	२०	४	४१	३	४९	११	११	५८	४१

पं.२३ आश्विन कृ.८ बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५४३ अयनांशाः २४/११/१०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	२	५	१	६	१०	११	५
७	६	१७	३	२६	८	२०	१२	१२
३७	३६	३२	१९	४८	२७	३३	२०	२०
२७	३०	३५	३९	२६	३	२३	५३	५३
५८	८०५	३२	१११	३	७३	४ १५	३	३
५१	२९	२२	१५	५	८	व	११	११



भौमादीनां चारः

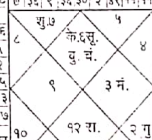
भौमः-आर्द्रायाम् मिथुने १२ शनितः पुनर्वसौ रात्रि १०।३० वादने। **बुधः**-सिंह राशौ ६ रवितः कन्या राशौ दिवा ९।३० वादने। **गुरुः**-मृगशिरायां वृष राशौ। **शुक्रः**-तुला राशौ। **शनिः**-(वक्री) पू.भा.१ चरणे कुम्भ राशौ। **राहुः**-उ.भा. ३ चरणे। केतुश्च-हस्त १ चरणे।

शुद्ध आश्विन कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ गु. घं.	मि.	३ शु. घं.	मि.	४ श. घं.	मि.	५ र. घं.	मि.	६ सो घं.	मि.	७ मं. घं.	मि.	८ बु. घं.	मि.	९ गु. घं.	मि.	१० शु. घं.	मि.	११ श. घं.	मि.	१२ र. घं.	मि.	१३ सो. घं.	मि.	१४ मं. घं.	मि.	३० बु. घं.	मि.
कन्या	७	५४	७	५०	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३
तुला	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२४	९	२०
वृश्चिक	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४१	११	३७
धनु	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२
मकर	४	१८	४	१४	४	१०	४	६	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७
कुम्भ	५	४९	५	४५	५	४१	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मीन	७	१७	७	१३	७	९	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६
मेष	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१७	८	१३	८	९	८	५
वृष	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	२
मिथुन	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५
कर्क	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३
सिंह	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५५	४	५१	४	४७

पं.२४ आश्विन कृ.३० बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५५० अयनांशाः २४/११/११

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	२	५	१	६	१०	११	५
१५	६	२१	१५	२७	१६	२०	११	११
३०	४०	१३	५८	५	५८	४	५८	५८
१५	२१	५७	५८	२५	४०	४१	४१	४१
५९	७२८	३१	१०८	१	७३	३	३	३
७	३६	२	३६	३०	२	४९	११	११



(क) सूर्य कन्यागते श्राद्धं यो न कुर्याद् गृहाश्रमी। धनपुत्राः कुतस्तस्य पितृनिश्वास पीडनात्। **तथा च**- यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपिवासरे। तस्य संवत्सरं यावत् सन्तृप्ताः पितरो ध्रुवम्। सर्वार्थसिद्धियोगः १२।५२ (दि.११।६) उ.। **(घ) शशांके।** शुभाशुभेद्वय गुण्यकरः द्विपुष्करयोगः २९।५० (सा.५।५७) या. भौमे-जया सिद्धयोगः २९।५० (सा.५।५७) उ.। स्थायी जयद् योगः २९।५० सा.५।५७) उ. ५४।१२ (रा.३।४२) या.। यमघंटयोगः ५४।१२ (रा.३।४२) उ.। (च) वादनात्परं। **महात्मा गान्धी लाल बहादुर शास्त्रीश्च जयन्ती।** सर्वार्थसिद्धियोगः १६।२७ (दि.१२।४०) उ.। शुभवारान्विते दर्शं सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।

फलम्- द्वितीया तिथि का क्षय हो जाने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। पितरों को समर्पित आश्विन कृष्ण पक्ष को 'पितृपक्ष' के रूप जाना माना जाता है। इस पक्ष में अपने पितरों का श्राद्ध-तर्पण कर उनकी आत्मा को तृप्त करना प्रत्येक सनातन धर्मी के लिये अनिवार्य है। श्राद्ध-तर्पण के मन्त्रों से हम अपने पितरों के श्राद्ध सहित समस्त गतात्मा जीवजगत को भी तृप्त करते हैं। पितृपक्ष में श्राद्ध तो अपने स्व.पिता की मृत्यु तिथि को अथवा तिथि ज्ञात न होने पर अमावस्या तिथि को करना चाहिए किन्तु **'देव ऋषि मनुष्य तर्पण'** तो पूरे पक्ष भर करना चाहिए। देव कार्य से भी ज्यादा महत्वपूर्ण पितरों का श्राद्ध तर्पण माना जाता है। **'देव कार्यादपि सदापितृकार्य विशिष्यते।' चन्द्रोदय** व्यापिनी द्वितीया तिथि में **अशून्यशयन का व्रत १९ सितम्बर** गुरुवार को किया जायेगा। चन्द्रोदय रात ६।५१ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत का मान २१ सितम्बर** शनिवार को किया जायेगा, **चन्द्रोदय** रात्रि ८।१२ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। अर्ध रात्रि में चन्द्रोदय समय अष्टमी तिथि मिलने के कारण विगत १६ दिन से चला आ रहा **महालक्ष्मी व्रत**-पूजन का अनुष्ठान २४ सितम्बर मंगलवार को विधिवत् हवन-पूजन कर समाप्त हो जायेगा। **जीवत्पुत्रिका व्रत** मातायें अपने पुत्र की दीर्घायु की कामना से २५ सितम्बर बुधवार को करेंगी। वाराणसी (काशी)के **लक्ष्मीकुण्ड का सोरहिया मेला** एवं दर्शन पूजन भी २५ सितम्बर बुधवार को ▯ समाप्त हो जायेगा। **जीवत्पुत्रिका व्रत की पारण २६ सितम्बर** गुरुवार को प्रातःकाल किया जायेगा। **मातृनवमी २६ सितम्बर** गुरुवार को सौभाग्यवती मृतका माताओं का श्राद्ध किया जायेगा। **इन्दिरा एकादशी व्रत** का मान २८ सितम्बर शनिवार को होगा। पुत्र की कामना से **सोम प्रदोष का व्रत ३० सितम्बर** को किया जायेगा। **मासशिवरात्रि का व्रत** भी आज ही **३० सितम्बर** को होगा। **सोमवार-प्रदोष एवं मासशिवरात्रि** व्रत शिवपूजन में विशेष पुण्यफलकारी होगा। **स्नानदान एवं श्राद्ध** सहित **अमावस्या, सर्वपैतृ अमावस्या-पितृविसर्जन** का **पुण्यफल कारी** श्राद्ध २ अक्टूबर बुधवार को होगा। ब्राह्मणों को श्रीमहाविष्णु का रूप मानते हुए उनको भोजन कराना श्रद्धा-पूर्वक दान करने से परिवार में सुख-शान्ति बनी रहती है तथा वंश वृद्धि होती है। हर सनातन धर्मी को इस पुनीत कार्य को अवश्य ही करना चाहिए। **हस्त नक्षत्र का सूर्य २७ सितम्बर** शुक्रवार को दिन ४।१० बजे से आवेगा। इसमें वायुवेग के साथ सामान्य वृष्टि होने के योग मिल रहे हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि घटना शुभफलकारी होता है। अमावस्या को चतुर्ग्रही योग उपद्रव करायेगा। समुद्री तूफान इत्यादि की सम्भावना बन सकती है।

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १/२गुरौ**-उत्तरभाद्रपदे-पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं, जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं, वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदनपत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं, उत्तरदिग् यात्रा। **तिथि ३ शुक्रे**-रेवत्यां-अश्विन्यां भद्रा दिवा २।३७ वादनात्पूर्वं आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशन विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं, सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, दत्तक पुत्र ग्रहणं आवेदनपत्र लेखनं वाहनक्रयः अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ४ शनौ**-अश्विन्यां-भरण्यां रिक्ता व्याप्तिः।

तिथि ५ रवौ-भरण्यां कृत्तिकायां-धान्यच्छेदन इष्टिका दहनं। **तिथि ६ सोमेः**-रोहिण्यां भद्रा रात्रि ७।२३वादनात्पूर्वं आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म विपणिव्यापारः गवां क्रयविक्रयः, आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं वाहन क्रयः, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ७ भौमे**-भद्रा प्रातः ६।२९ वादनात्परं मृगशिरायां पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं शल्यकर्म दक्षिण दिग् पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ८ बुधे**-आर्द्रायाम् - मुकदमा कार्य। **तिथि ९ गुरौ**-पुनर्वसौ रोगविमुक्त स्नानं। **तिथि १० शुक्रे**-पुष्ये भद्रा दिवा ४।२२ वादनात्परं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः गवां क्रय विक्रयः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः जलयंत्र कर्म शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, दत्तकपुत्रग्रहणं आवेदन पत्र ● लेखनं, सेवारम्भः वाहनक्रयः दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ११ शनौ**-श्लेषायां-शस्त्र निर्माणं उग्रकर्माचरण। **ति.१२ रवौ**-मघायां शस्त्र निर्माणं धान्यच्छेदन, इष्टिका दहनं। **तिथि १३ सोमे**-मघा पू.फा.जलयंत्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं। **ति.१४ भौमे**-भद्रा रिक्ता व्याप्तिः। **तत्परं मासान्तः।**

राशिफल

मेष-	रिपुनाशः
वृष-	दैन्यम् हानिः
मिथुन-	रोगं हानिः
कर्क-	सुखम् श्रीः
सिंह-	हानिः भयम्
कन्या-	स्थान परिवर्तनः
तुला-	भयम् पीड़ा
वृश्चिक-	वित्ताप्तिः
धनु-	कर्म सिद्धिः
मकर-	पाप बुद्धिः
कुम्भ-	रोगभयं
मीन-	गमनम् हानिः

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ आश्विन शुक्ल पक्षः।

याम्यायनं सौम्यगोलः तुलार्कतः याम्य गोलः। शरद् ऋतुः दि.३ - सन्तोष मिश्रः
१७ अक्टूबर सन् २०२४ ई. (रा.आश्विन ११ - २५)   sm75

दि.मा. घ. प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योगा	अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
२९ २५	१	गुरु.	४७	३८	रात	१	९	हस्त	२२	५८	दिन	३	१७	ऐन्द्र	५७	२४	रात	५	४	किं	१५	१	बव	४७	३८	राक्षस	३	१५	१६	११	तुला	५६	१०	६	६	५	५४	३	४३	५	१५	२१	२२	५९	१०	-	१३	५	५८
२९ २२	२	शुक्र.	५२	३५	रात	३	९	चित्रा	२९	२२	सायं	५	५२	वैधृति	५८	३७	रात	५	३४	बा	१९	५५	को	५२	१३	मुसल	४	१६	१७	१२				६	७	५	५३	४	६	५	१६	२८	३३	५९	१२	-	१४	६	२७
२९ १८	३	शनि	५६	५३	रात	४	५३	स्वाती	३५	१५	रात	८	१४	विष्कुम्भ	५९	२१	रात	५	५३	तै	२४	३३	गर	५६	५३	सिद्धि	५	१७	१८	१३				६	८	५	५२	४	२९	५	१७	२७	४५	५९	१४	-	१४	७	०
२९ १४	४	रवि.	६०	०	स	म	स्त	विशाखा	४०	२३	रात	१०	१९	प्रीति	५९	२०	रात	५	५३	व	२८	३३	वि	६०	०	उत्पात	६	१८	१९	१४	वृश्चिक	२४	१०	६	८	५	५२	४	५२	५	१८	२६	५९	५९	१७	-	१४	७	३५
२९ ११	४	सोम.	०	१३	प्रातः	६	१५	अनुराधा	४४	२४	रात	११	५५	आयुष्मान	५८	२८	रात	५	३४	वि	०	१३	बव	३०	५२	मानस	७	१९	२०	१५				६	९	५	५१	५	१५	५	१९	२६	१६	५९	१९	-	१४	८	२७
२९ ७	५	मंगल.	२	३१	दिन	७	१०	ज्येष्ठा	४७	१४	रात	१	५	सौभाग्य	५६	३६	रात	४	४९	बा	२	३१	को	३३	१	मुद्गर	८	२०	२१	१६	धनु	४७	१४	६	१०	५	५०	५	३८	५	२०	२५	३५	५९	२२	-	१४	९	४
२९ ३	६	बुध.	३	३०	दिन	७	३६	मूल	४८	५०	रात	१	४४	शोभन	५३	४०	रात	३	४०	तै	३	३०	गर	३३	२०	ध्वज	९	२१	२२	१७				६	११	५	४९	६	१	५	२१	२४	५७	५९	२४	-	१५	९	५८
२९ ०	७	गुरु	३	११	दिन	७	२९	पूर्वाषाढ़ा	४९	११	रात	१	५३	अतिगण्ड	४९	४३	रात	२	५	व	३	११	वि	३२	२४	धाता	१०	२२	२३	१८				६	१२	५	४८	६	२४	५	२२	२४	२१	५९	२६	-	१५	१०	५८
२८ ५६	[illegible]	शुक्र.	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	उत्तराषा.	४८	२२	रात	१	३४	सुकर्मा	४४	५२	रात	१२	९	बव	१	३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आनन्द	११	२३	२४	१९	मकर	४	०	६	१३	५	४७	६	४६	५	२३	२३	४७	५९	२८	-	१५	१२	१
२८ ५२	१०	शनि.	५५	१२	रात	४	१९	श्रवण	४६	३३	रात	१२	५१	धृति	३९	१२	रात	९	५४	तै	२६	१५	गर	५५	१२	स्थिर	१२	२४	२५	२०				६	१३	५	४७	७	९	५	२४	२३	१५	५९	२२	-	१५	१	७
२८ ४९	११	रवि.	५०	३८	रात	२	३०	धनिष्ठा	४३	५२	रात	११	४८	शूल	३२	४८	रात	७	२२	व	२२	५५	वि	५०	३८	मातंग	१३	२५	२६	२१	कुम्भ	१५	१५	६	१४	५	४६	७	३२	५	२५	२२	४६	५९	३३	-	१६	२	१२
२८ ४५	१२	सोम	४५	२६	रात	१२	२४	शतभि	४०	३२	रात	१०	२८	गण्ड	२५	५२	दिन	४	३५	बव	१८	२	बा	४५	२६	अमृत	१४	२६	२७	२२				६	१५	५	४५	७	५४	५	२६	२२	१९	५९	३५	-	१६	३	१८
२८ ४२	१३	मंगल	३९	४८	रात	१०	१०	पूर्वाभाद्र	३६	४२	रात	८	५७	वृद्धि	१८	२५	दिन	१	३७	को	१२	३७	तै	३९	४८	काण	१५	२७	२८	२३	मीन	२२	४८	६	१६	५	४४	८	१६	५	२७	२१	५४	५९	३८	-	१७	४	२३
२८ ३८	१४	बुध.	३३	४७	रात	७	४७	उत्तराभाद्र	३२	३५	रात	७	१९	ध्रुव	१०	४३	दिन	१०	३४	गर	६	४८	व	३३	४७	लुम्बक	१६	२८	२९	२४				६	१६	५	४४	८	३९	५	२८	२१	३२	५९	४०	-	१७	५	३०
२८ ३४	१५	गुरु.	२७	४३	सायं	५	२२	रेवती	२८	२२	सायं	५	३८	व्याघात हर्षण	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	वि	०	४५	बव बा	[illegible]	[illegible]	मित्र	१७	२९	३०	२५	मेष	२८	२२	६	१७	५	४३	९	१	५	२९	२१	१२	५९	४२	-	१७	+	+

- तुलाराशिः रात्रि ४।३४ वादने। शारदीय नवरात्रारम्भः, प्रथमं शैलपुत्री दर्शनम्। कलशस्थापनं यावद्दिनम्। दुर्गा सप्तशती पाठारम्भः, ध्वजारोपणम्। केश संस्कार द्रव्याणि प्रद्यात्प्रतिपदिने। महाराजा अग्रसेन(क)
- चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.१५ जघन्या फलम् महर्घताकरम्। सौम्यश्रृंगम् सुभिक्षं। द्वितीयं ब्रह्मचारिणी देवी दर्शनम्। 'पट्टडोरं द्वितीयायांकेशसंयम हेतवे।' हस्त नक्षत्रे ३ चरणे रविः दिवा १०।१५ वादने। (ग) (रा.१०।१९)वा.।
- मु.रवि-उस्सानी ४ हिजरी सन् १४४६। तृतीयं चन्द्रघण्टा देवी दर्शनम्। 'दर्पणञ्च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा।' सिन्दूर तृतीया ३। सर्वार्थसिद्धियोगः ३५।१५ (रा.८।१४) वा.। रवियोगः ३५।१५ (रा.८।१४) उ.।(ख)
- वृश्चिक राशिः दिवा ३।४८ वादने। भद्रा २८।३३ (सा.५।३३) उ. (स्वर्ग)। चतुर्थकं कूष्माण्डा देवी दर्शनम्। 'मधुपर्कं चतुर्थ्यां तु तिलकं नेत्र मण्डनम्।' वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। रथोत्सव चतुर्थी ४। रवियोगः४०।२३(ग)
- भद्रा ०।१३ (प्रातः ६।१५) वा.। पंचम स्कन्दमातादर्शनम्। 'पञ्चम्यामङ्गरागञ्च शक्त्यालंकरणानि च।' उपांग ललिता व्रतम् ५। महाराष्ट्रे प्रसिद्धम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ४४।२४ (रा.११।५५) वा.। यायि (मुद्दई) जयद(घ)
- धनुराशिः रात्रि १।५ वादने। दिवा ७।१० वादनात्परं षष्ठ्यां-षष्ठं कात्यायनी देवी दर्शनम्। 'षष्ठ्यांबिल्वतरौबोधं सायं सन्ध्यासुकारयेत्।' ज्येष्ठा नक्षत्र युता षष्ठ्यां बिल्वाभिमंत्रणम् देवी बोधनं,आमंत्रण अधिवासनं च। (ङ)
- दिवा ७।३६ वादनात्परं सप्तम्यां-सप्तमं कालरात्रि दर्शनम्। 'सप्तम्यां प्रातरानीय गृहमध्ये प्रपूजयेत्।' मूलस्थाद्य पादे देवी आवाहनं। मूल नक्षत्र युता सप्तम्यां पत्रिका प्रवेशनम् (सरस्वत्या आवाहनं), दुर्गापूजा पण्डाल(च)
- भद्रा ३।११ (दि.७।२९) उ. ३२।२४ (रा.७।१०) वा. (पाताले)। दिवा ७।२९ वादनात्परं अष्टमं महागौरी दर्शनम्। उपोषणमथाष्टम्यामात्मशक्त्यानुपूजनम्। अन्नपूर्णा परिक्रमा ३।११ (दि.७।२९) उ.। महानिशापूजा(छ)
- मकरराशिः दिवा ७।४१ वादने। महाष्टमी ८ व्रतम्। महानवमी व्रतम्ऽपि अद्यैव। क्षयवती नवम्यां-नवमं सिद्धिदात्री देवी दर्शनम्। नवम्यामुग्रचण्डायाः पूजां कुर्याद् बलिं तथा। पूजा पण्डाले सन्धि पूजा प्रातः(ज)
- विजया दशमी १०। पारणा नवरात्र व्रतानां प्रातरेव। शमी पूजनम् १०। अपराजिता पूजा १०। जयन्ती ग्रहणम्। नीलकंठदर्शनम् सीमोल्लंघनम् विजय यात्रा। श्रवणे सरस्वती विसर्जनम्। दुर्गाप्रतिमा विसर्जनम्। सम्पूज्य प्रेषणं(झ)
- कुम्भराशिः दिवा १२।२० वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा २२।५५ (दि.३।२५) उ. ५०।३८ (रा.२।३०) वा. (मर्त्ये)। पापांकुशा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। काश्यां नाटी ईमली नामक स्थाने भरतमिलापः।(ञ)
- पद्मनाभ द्वादशी १२। द्वादश्यामब्दुग्धदानम् द्विदलत्याग व्रतारम्भः। (ञ) रवियोगः ४३।५२ (रा.११।४८) वा.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४३।५२ (रा.११।४८) वा.।
- मीनराशिः दिवा ३।२२ वादने। भौम प्रदोष व्रतम् १३। ऋणापकर्णाय श्रेयस्करम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ३६।४२ (रा.८।५७) उ.। रवियोगः ३६।४२ (रा.८।५७) उ.। भौमे जय सिद्धयोगः ३९।४८ (रा.१०।१०) वा.।
- भद्रा ३२।४७ (रा.७।४७) उ. (मर्त्ये)। व्रताय पूर्णिमा १५। कोजागरी पूर्णिमा १५। अद्य रात्रौ लक्ष्मी कुबेरादि पूजनम्। अहोरात्रि घृतदीप प्रज्वलितम्। धन ऐश्वर्य प्राप्ति हेतवः। लक्ष्मी पूजा लखी पूजा (बंगाल)। निशीथे(ट)
- मेषराशिः सायं ५।३८ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा ०।४५ (प्रातः ६।३५) वा.। स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। शरद् पूर्णिमा १५। महर्षि वाल्मीकि जयन्ती १५। पराशर जयन्ती १५। कौमुदी(ठ)

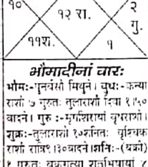
सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ गु.	५	१८	४३	५२	२	२२	४६	६	३०	५१	५	१७	४३	३४	१०३	५४	१	२७	६	५५	१	५	६	१८	११	४२	७३	०	१०	२०	०	५२	३	४४	११	११	५५	३०
२ शु.	६	०	४७	२०	२	२२	३६	५७	३०	३५	५	१९	२७	२८	१०२	२६	१	२७	८	०	०	४५	६	१९	२४	४२	७२	५७	१०	१९	५७	८	३	४०	११	११	५२	१९
३ श.	६	१२	५७	४	२	२२	४७	३२	३०	२०	५	२१	१	५४	१००	५८	१	२७	८	४५	०	३०	६	२०	३७	३१	७२	५५	१०	१९	५३	२८	३	४०	११	११	४९	८
४ र.	६	२५	१६	४३	२	२३	१७	५२	३०	११	५	२२	५०	१२	१००	२२	१	२७	९	१५	०	१८	६	२१	५०	३४	७२	५५	१०	१९	४९	४८	३	३७	११	११	४५	५८
४ सो.	७	७	४८	१४	२	२३	४८	३	३०	०	५	२४	३१	१३	९९	३९	१	२७	९	३३	०	५	६	२३	३	२९	७२	५१	१०	१९	४६	११	३	३३	११	११	४२	४७
५ मं.	७	२०	३४	२७	२	२४	१८	३	२९	४५	५	२६	१०	५२	९९	०	१	२७	९	३८	व.०	१०	६	२४	१६	२०	७२	५१	१०	१९	४२	३८	३	२६	११	११	३९	३६
६ बु.	८	३	३७	१३	२	२४	४७	४८	२९	२९	५	२७	४९	५२	९८	४६	१	२७	९	२८	०	३३	६	२५	२९	११	७२	५०	१०	१९	३९	१२	३	२२	११	११	३६	२५
७ गु.	८	१६	५३	२२	२	२५	१७	३७	२९	११	५	२९	२८	३८	९७	५५	१	२७	८	५५	०	५३	६	२६	४२	१	७२	४८	१०	१९	३५	५२	३	१६	११	११	३३	१४
८ शु.	८	२९	३	५०	२	२५	४६	२८	२८	५५	६	१	६	३३	९७	१५	१	२७	८	२	१	२०	६	२७	५४	४९	७२	४८	१०	१९	३२	३५	३	१२	११	११	३०	३
१० श.	९	१२	४५	३८	२	२६	१५	२३	२८	४८	६	२	४३	४८	९६	५०	१	२७	६	४२	१	३८	६	२९	७	३६	७२	४५	१०	१९	२९	२३	३	१०	११	११	२६	५२
११ र.	१०	२६	३५	४५	२	२६	४४	११	२८	२१	६	४	२०	३८	९६	२४	१	२७	५	४	१	५२	७	०	२०	२२	७२	४५	१०	१९	२६	१३	३	७	११	११	२३	४१
१२ सो.	१०	१०	३५	३८	२	२७	१२	४२	२८	१६	६	५	५७	२	९५	४९	१	२७	३	१२	२	०	७	१	३३	७	७२	४३	१०	१९	२३	६	३	२	११	११	२०	३०
१३ मं.	११	२४	४१	१९	२	२७	४०	५८	२८	२	६	७	३२	५१	९५	५	१	२७	१	१२	२	६	७	२	४५	५०	७२	४३	१०	१९	२०	४	२	५७	११	११	१७	१९
१४ बु.	११	८	५०	५३	२	२८	९	०	२७	४१	६	९	७	५६	९४	५२	१	२६	५९	६	२	१३	७	३	५८	३३	७२	४०	१०	१९	१७	७	२	५३	११	११	१४	८
१५ गु.	११	२३	१०	२६	२	२८	३६	४१	२७	२०	६	१०	४२	४८	९४	२६	१	२६	५६	५३	२	२१	७	५	११	१३	७२	४०	१०	१९	१४	१४	२	४८	११	११	१०	५८

फलम्– इस पक्ष में चतुर्थी तिथि की वृद्धि हो गई है किन्तु नवमी तिथि का क्षय भी हो गया है, इस प्रकार पक्ष पूरे १५ दिन का है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में आदि महाशक्ति भगवती दुर्गा के नव रूपों का क्रमशः महोत्सव के साथ पूजन-अर्चन करने के लिये तथा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम-रावण के युद्ध से न्याय पर अन्याय के विजय का पखवारा है। इसे हम **शारदीय नवरात्र** के रूप मानते हुए प्रतिपदा को घर-घर में कलश स्थापित कर अथवा अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुरूप अन्य रूप से पूजन कर दुर्गा सप्तशती का पाठ-अनुष्ठान कर मनाते हैं। **शारदीय नवरात्र का कलश स्थापन प्रतिपदा तिथि गुरुवार ३ अक्टूबर** गुरुवार को दिन में ३।१७ बजे तक किसी भी समय किया जा जाता है। नवरात्र में दुर्गा सप्तशती का पाठ स्वयं करना अथवा ब्राह्मण पुरोहित द्वारा कराना परम पुण्यफलकारी एवं शुभफलकारी होता है। घर-परिवार में सुख शान्ति बनी रहती है। रावण पर विजय प्राप्त करने के लिये भगवान राम द्वारा की गई शक्ति पूजा पर आधारित **सप्तमी तिथि** में पूजा-पण्डालों में **देवी प्रतिमाओं की स्थापना ९ अक्टूबर** बुधवार को षष्ठी तिथि दिन प्रातः ७।३६ के उपरान्त सप्तमी तिथि एवं मूल नक्षत्र में कर ली जायेगा। इस वर्ष देवी का आगमन नौका (नाव) पर हो रहा है जिसका फल शुभफलकारी एवं सौख्यकारी है। रात्रि कालीन अष्टमी तिथि की पूजा १० अक्टूबर गुरुवार की महानिशा में की जायेगी। **महाष्टमी एवं महानवमी** दोनों के व्रत का मान ११ अक्टूबर शुक्रवार को होगा। पूजा पण्डालों में सन्धि पूजन ११ अक्टूबर शुक्रवार को प्रातः ६।२८ से ७।१६ बजे के बीच की ☐

पं.२५ आश्विन शु.८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५५९ अयनांशाः २४/११/१२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	२	६	१	६	१०	११	५
२३	२१	२५	१	२७	२७	१९	११	११
२३	३	४६	६	८	५४	३२	३०	३०
४७	५०	२८	३३	२	४९	३५	३	३
५९	८११	२८	९७	१४	७२	३	३	[illegible]
२८	४९	५५	११	२०	४८	१२	११	११



भौमादीनां चारः
भौमः-पुनर्वसौ मिथुने। बुधः-कन्या राशौ ७ गुरुतः तुलाराशौ दिवा ११।५० वादने। गुरु :-मृगशिरायां वृषराशौ। शुक्रः-तुलाराशौ १७शनितः वृश्चिक राशौ रात्रि९।३०वादने।शनिः-(वक्री) १ गुरुतः वक्रगत्या शतभिषायां ४ चरणे दिवा ९।५० वादने राहुः-उ.भा.३ चरणे। केतुश्च हस्त १ चरणे।

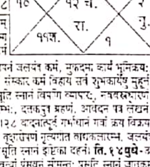
आश्विन कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३श. घं.	मि.	४र. घं.	मि.	४सो. घं.	मि.	५मं. घं.	मि.	६बु. घं.	मि.	७गु. घं.	मि.	८शु. घं.	मि.	१०श. घं.	मि.	११र. घं.	मि.	१२सो. घं.	मि.	१३मं. घं.	मि.	१४बु. घं.	मि.	१५गु. घं.	मि.
कन्या	६	५९	६	५५	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०	६	३६	६	३२	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३
तुला	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३६	८	३२	८	२८	८	२५	८	२१
वृश्चिक	११	३३	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४६	१०	४२	१०	३८
धनु	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३
मकर	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८
कुम्भ	४	५४	४	५०	४	४६	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३	३	५९
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मीन	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७
मेष	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१८	७	१४	७	१०	७	६
वृष	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	३
मिथुन	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६
कर्क	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४
सिंह	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३	४	०	३	५६	३	५२	३	४८

विविध मुहूर्त्ताः तिथि १ गुरौ–हस्त नक्षत्रे पुंसवनं सीमन्तः प्रभृति स्नानं जातकर्म नामकरणं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, सेवारम्भः शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं, शल्यकर्म, वाहनक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। तिथि २ शुक्रे–चित्रायां जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्र धारणं, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपण सेवारम्भ शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं वाहन क्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। तिथि ३ शनौ–स्वात्यां कृष्णवस्त्र धारणं पश्चिम दिग् यात्रा। तिथि ४ रवौ–भद्रापूर्व विशाखायां रिक्तायां रोग विमुक्तस्नानं। तिथि ४ सोमे–तिथ्य प्रातः ६।१५ वादनात्परं अनुराधायां रात्रौ गर्भाधानं ल.२, आ.प्रभृति स्नानं, जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणि व्यापारः दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन लेखनं वाहन क्रयः अनुराधायां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि ५ भौमे–ज्येष्ठायां रास घटनं शल्यकर्म उपर्णाचरणं। तिथि ६ बुधे–मूले नामकरणं, दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं जलयन्त्र कर्म, मुकदमाकार्य पूर्व दिग् यात्रा। तिथि ७ गुरौ–भद्रा दिवा ७।२९ वादनात्पूर्वं पूर्वाषाढायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रभृति स्नानं, दीक्षाग्रहणं धान्यच्छेदनं जलयंत्रकर्म मुकदमा कार्यं, पूर्व दिग् यात्रा। तिथि ८/९ शुक्रे– उ.षा. आ.प्रभृति स्नानं जातकर्म नामकरणं, विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं, धान्यस्थापनं जलयंत्र कर्म, मुकदमा कार्य भूमिक्रयः, पूर्व दिग् यात्रा। ति.१० शनौ–दशम्यां श्रवण योगे 'स्वयं सिद्ध मुहूर्त' संस्कार कर्म विहाय सर्व शुभकार्येषु मुहूर्तः निर्धनम्। ति.११ रवौ–भद्रा दिवा ३।२५ वादनात्पूर्वं धनिष्ठायां प्रसूति स्नानं विपणि व्यापारः, नववस्त्रधारणं, दीक्षाग्रहणं लालवस्त्रधारणं बीजवपनं, धान्यच्छेदन नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं, वाहन क्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। तिथि १२ सोमे–शतभिषायां रात्रि १०।२८ वादनात्पूर्वं गर्भाधानं गवां क्रय विक्रयः दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यरोपणं वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ, जलयंत्र कर्म, आवेदनपत्र लेखनं पश्चिम दिग् यात्रा। ति.१३ भौमे–पू.भा.-प्रसूति स्नानं इष्टिका दहनं। ति.१४बुधे-उ.भा.रिक्ता भद्रा व्याप्तिः। ति.१५ गुरौ-भद्रा प्रातः ६।३५ वादनात्परं रेवत्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रभृति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः गवां क्रय विक्रयः नववस्त्र धारण कुलदेवता प्रतिष्ठा, हलप्रवहणं बीजवपनं शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं भूमिक्रयः नूतनवधू पाककर्म, वाहन क्रयः उत्तरदिग् यात्रा।

पं.२६ आश्विन शु.१५ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५६५ अयनांशाः २४/११/१३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	२	६	१	७	१०	११	५
२९	२३	२८	१०	२६	५	१९	११	११
२१	१०	३६	४२	५६	११	१४	१०	१०
१२	२६	४१	४८	५३	१३	१४	५८	५८
५९	८४१	२७	९४	२६	७२	२ ४८ व	३	३
४२	४५	२०	२६	२१	४०	[illegible]	११	११



(क) जयन्ती १ दौहित्र कर्तृक मातामह (नाना) श्राद्धम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २२।५८ (दि.३।१७) वा.। (ख) यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३५।१५ (रा.८।१४) वा.। (घ) योगः ०।१३ (प्रातः ६।१५) उ. ४४।२४ (रा.११।५५) वा.। रवियोगः ४४।२४ (रा.११।५५) उ.। (ङ) हस्त नक्षत्रे ४ चरणे रविः रात्रि ११।५५ वादने। (च) देवी स्थापना। नौकायां देवी आगमनं फलं–सौख्यकारकं (शुभम्)। (छ) (अष्टम्यां)। ओली प्रारम्भ (जैन)। ☉चित्रा नक्षत्रे रविः ५६।० (रात्रि ४।२६)। स्त्री-पु. सू.-चं. योगौ खरवाहनं नीरा नाड़ी तदेशो शुक्रः मेघाडम्बरेण वायुवेगेन वृष्टियोगः। (ज) ६।२८ वादनात्परं ७।१६ वादनम् यावत्। अन्नपूर्णापरिक्रमा १।३७ (प्रातः ६।५२) वा.। यावन्नवमी होमादिकञ्च। रात्रि शेष ५।४७ वादनम् यावत्। मन्वादिः ९। सर्वार्थसिद्धियोगः ४८।२२ (रा.१।३४) वा.। (झ) कुर्यादिरम्यां शावरोत्सवे। राज्ञां छत्राभिषेकं। चरणायुध (मुर्गा) वाहने देवी गमनं फलं विकलता अर्थात् अशान्तिः। बौद्धावतारः १०। जगद्गुरु माधवाचार्य जयन्ती १०। खत्री दिवसः। सर्वार्थसिद्धियोगः ४६।३३ (रा.१२।५१) वा.। रवियोगः ४६।३३ (रा.१२।५१) उ.। (ट) वरदा लक्ष्मीः को जागर्तीति भाषिणी। तस्मै वित्तं प्रदास्यामि अक्षैः क्रीडां करोतियः। रवियोगः ३२।३५ (रा.७।१९) वा.। (ठ) महोत्सवः, रास पूर्णिमा (ब्रजभूमि)। नवपद ओली समाप्ति (जैन)। ☉सं.तुला राशौ रविः ३८।५५ (रा.९।५१)। मु.३० समा समताकरम्। पूर्वाः परा १६ वा २० घट्यः पुण्याः। दीप तिल गोऽन्न दानं गोदावर्याम् स्नानम्। याम्य गोलः। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। कार्तिक स्नानदान व्रत नियम संयमारम्भः।

☐ आगे चाहिए नवरात्र सम्बन्धी नव दिनों से चला आ रहा दुर्गा सप्तशती के पाठ के समापन सम्बन्धी हवन-पूजन ११।१२ अक्टूबर की भोर में ५।४७ बजे तक किसी भी समय किया जा सकता है। पूर्ण **नवरात्र व्रत की पारणा १२ अक्टूबर** शनिवार को प्रातःकाल किया जायेगा। **विजया दशमी का महान पर्व १२ अक्टूबर** शनिवार को मनाया जायेगा। श्रवण नक्षत्र में **दुर्गा प्रतिमाओं का विसर्जन** आज ही कर लिया जाना चाहिए। **पापांकुशा एकादशी व्रत** का मान सबके लिए **१३ अक्टूबर रविवार** को होगा। आज काशी में नाटी इमली की विश्वप्रसिद्ध **भरत-मिलाप** की रामलीला काशी राज की गौरवपूर्ण उपस्थिति एवं काशी के यादव बन्धुओं की परम्परागत सहभागिता के साथ भावपूर्ण वातावरण में सम्पन्न होगी। ऋण से छुटकारा पाने के लिये **भौमप्रदोष व्रत १५ अक्टूबर** को किया जायेगा। व्रत सहित **पूर्णिमा एवं कोजागरी पूर्णिमा** का मान १६ अक्टूबर बुधवार को ही हो जायेगा, क्योंकि कोजागरी पूर्णिमा के लिये रात्रि व्यापिनी पूर्णिमा होनी चाहिए। आज की रात शुद्ध दूध में घी शर्करा युक्त निर्मित खीर को पूर्ण चन्द्रमा की अमृतमय चाँदनी में रख दिया जाता है और प्रसाद स्वरूप ग्रहण किया जायेगा। इस अमृत वर्षा से सिक्त खीर में अनेक रोगों को दूर करने की शक्ति होती है। **स्नान दान की पूर्णिमा तथा वाल्मीकि जयन्ती, शरद् पूर्णिमा १७ अक्टूबर** गुरुवार को मनाई जायेगी। **चित्रा नक्षत्र का सूर्य १० अक्टूबर** गुरुवार की रात्रि ४।२६ बजे से आयेगा। इसमें वायुवेग के साथ सामान्य वृष्टि होने के योग हैं। **तुला नक्षत्र की सूर्य संक्रान्ति पक्षान्त १७ अक्टूबर** गुरुवार की रात ९।५१ बजे से आयेगी। यह पक्ष कुल मिलाकर सामान्यतया शुभफलकारक है।

राशिफल

राशि	फल
मेष-	सुखं
वृष-	हानिः
मिथुन-	पीड़ा भयम्
कर्क-	रोगे-शोकं
सिंह-	लाभ सुखं
कन्या-	शोकं
तुला-	रोगं
वृश्चिक-	पापवृद्धिः
धनु-	दौर्बल्यं
मकर-	सुखलाभः
कुम्भ-	रोगं हानिः
मीन-	शत्रुभयं

शर्मा 17-01-24

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ कार्तिक कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः शरद् ऋतुः। दि.१८ अक्टूबर - १ नवम्बर सन् २०२४ ई.। (रा.आश्विन २६ - कार्तिक १०)

दि.मा. घ. प.	कार्तिक कृ. ति.	वार	तिथि घ. प.	तिथि दि. घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्र घ. प.	नक्षत्र दि. घं. मि.	योग	योग घ. प.	योग दि. घं. मि.	करण क. घ. प.	करण क. घ. प.	औदायिक योगा	तारीखें अं. फ. सो. रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि घ. प.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	र.क्रा.द. अं. क.	स्पष्ट सूर्यः रा. अं. क. वि.	गति क. वि.	रे.अं. घं. मि.	चन्द्रोदय घं. मि.	
२८ ३१	१	शुक्र.	२१ ४६	दिन ३ ०	अश्विनी	२४ १७	दिन ४ १	वज्र	४७ २५	रात १ १६	कौ २१ ४६	तै ४८ ५८	वज्र	१८ १ १ २६		६ १८	५ ४२	९ २३	६ ० २० ५४	५९ ४५	- १८	६ २	फसली कार्तिक मासारम्भः। आकाशदीपारम्भः। धर्मशास्त्रायुर्वेद मतेन द्विदल (दाल) तक्रश्च (मट्ठा) कार्तिकेत्यजेत्। अशून्यशयन २ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.६।२) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। अर्घ्य मन्त्र-"गगनांगण संदीप(ङ)
२८ २७	२	शनि.	१६ १०	दिन १२ ४७	भरणी	२० ३२	दिन २ ३१	सिद्धि	४० ५	रात १० ३१	गर १६ १०	व ४३ ३७	ध्वांक्ष	१९ २ २ २७	वृष ३४ ४५	६ १९	५ ४१	९ ४५	६ १ २० ३९	५९ ४७	- १८	६ ४८	वृषराशिः रात्रि ८।१३ वादने। भद्रा ४३।३७ (रा.११।४६) उ. (स्वर्ग)। यायि (मुदई) जयद् योगः १६।१० (दि.१२।४७) उ. २०।३२ (दि.२।३१) या.।
२८ २४	३	रवि.	११ ४	दिन १० ४६	कृत्तिका	१७ १७	दिन १ १५	व्यतिपात	३३ १८	रात ७ ३९	वि ११ ४	बव ३८ ५२	धूम्र	२० ३ ३ २८		६ १९	५ ४१	१० ७	६ २ २० २६	५९ ४९	- १८	७ ४०	भद्रा ११।४ (दि.१०।४६) या.। संकष्टी श्रीगणेश करक चतुर्थी (करवा चौथ) ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.७।४०) वादने। चन्द्राय अर्घ्यम्। (घ) 'गोक्षीरं गोघृतं दधि तक्रं च वर्जयेत्।'
२८ २०	४	सोम	६ ४१	दिन ९ ०	रोहिणी	१४ ५०	दिन १२ १६	वरीयान	२७ ८	सायं ५ ११	बा ६ ४१	कौ ३४ ५६	प्रवर्धमान	२१ ४ ४ २९	मिथुन ४४ ०	६ २०	५ ४०	१० २८	६ ३ २० १५	५९ ५१	- १८	८ ३६	मिथुन राशिः रात्रि ११।५६ वादने। ललिता चतुर्थी ४ व्रतम्। दशरथ पूजा ४। सर्वार्थसिद्धियोगः १४।५० (दि.१२।१६) या.। तदुपरि सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो यावद्दिनम्।
२८ १७	५	मंगल.	३ ११	दिन ७ ३७	मृगशिरा	१३ ११	दिन ११ ३७	परिघ	२१ ४०	दिन ३ १	तै ३ ११	गर ३१ ५६	राक्षस	२२ ५ ५ ३०		६ २१	५ ३९	१० ४९	६ ४ २० ६	५९ ५३	- १८	९ ३७	दीपसंघ विनाशकारीयोगः १३।११ (दि.११।३७) उ.। यात्रायाम् निषिद्धः यमघंट योगः १३।११ (दि.११।३७) उ.। (ख) बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ०।४२ (प्रातः ६।३९) उ. ५८।४३ (रा.शे.६।८) या.।
२८ १३	६ ७	बुध.	० ४२ / ५८ ४३	प्रातः [illegible]	आर्द्रा	१२ ३३	दिन ११ २३	शिव	१७ ३	दिन १ ११	व ० ४२	वि/बव [illegible]	मुसल	२३ ६ ६ १	कर्क ५८ ०	६ २२	५ ३८	११ ११	६ ५ १९ ५९	५९ ५६	- १८	१० ३८	कर्कराशिः रात्रि शेष ५।३४ वादने। भद्रा ०।४२ (प्रा.६।३९) उ. २९।४२ (सा.६।१५) या. (स्वर्ग)। राष्ट्रीय कार्तिक मासारम्भः। कुलाकुलगणः दुर्लभ सन्धिकर योगः ०।४२ (प्रातः ६।३९) या.। रवियोगः २२।३३ (दि.११।३३)या. (छ)
२८ १०	८	गुरु.	५९ २३	रात ६ ८	पुनर्वसु	१३ ७	दिन ११ ३८	सिद्ध	१३ २५	दिन ११ ४५	बा २९ ३	कौ ५९ २३	सिद्धि	२४ ७ ७ २		६ २३	५ ३७	११ ३२	६ ६ १९ ५५	५९ ५८	- १८	११ ३८	अहोई अष्टमी ८ व्रतम्। चन्द्रोदय (रा.११।३८) वादने। राधाष्टमी ८ व्रतम्। राधा जयन्ती। अरुणोदये मथुरायाम् राधाकुण्ड स्नानम्। कराष्टमी ८। महाराष्ट्र प्रसिद्धः। ⊙ स्वाती नक्षत्रे रविः २०।१० (दि.२।२७)। (ग)
२८ ६	९	शुक्र.	६० ०	स म स्त	पुष्य	१४ ५६	दिन १२ २१	साध्य	१० ४५	दिन १० ४१	तै ३० १	गर ६० ०	उत्पात	२५ ८ ८ ३		६ २४	५ ३६	११ ५३	६ ७ १९ ५३	६० ०	- १८	१२ ३६	(क) क्षीराब्धिमथनोद्भव। भाभासितादिगाभोगरमानुजनमोऽस्तुते।" सर्वार्थसिद्धियोगः २४।१७ (दि.७।१) या.। सौर कार्तिक मासारम्भः।
२८ ३	९	शनि.	० ४०	प्रातः ६ ४०	श्लेषा	१८ १	दिन १ ३६	शुभ	९ १०	दिन १० ४	गर ० ४०	व ३१ ५६	मानस	२६ ९ ९ ४	सिंह १८ १	६ २४	५ ३६	१२ १३	६ ८ १९ ५३	६० २	- १८	१ ३०	सिंहराशिः दिवा १।३६ वादने। भद्रा ३१।५६ (रा.७।१०) उ. (मर्त्य)। शनि-रिक्ता समायोगं ०।४० (प्रातः ६।४०) या.। यायि (मुदई) जयद् योगः ०।४० (प्रातः ६।४०) या.।
२७ ५९	१०	रवि.	३ १२	दिन ७ ४२	मघा	२२ १३	दिन ३ १८	शुक्ल	८ २५	दिन ९ ४७	वि ३ १२	बव ३५ २	मुद्गर	२७ १० १० ५		६ २५	५ ३५	१२ ३४	६ ९ १९ ५५	६० ४	- १८	२ २२	भद्रा ३।१२ (दि.७।४२) या.। यात्रायाम् निषिद्धयमघंट योगः २२।१३ (दि.३।१८) या.। कार्तिक सकलं मासं नित्यस्नायी जितेन्द्रियः। जपन हविष्य मुकछान्त सर्व पापैः प्रमुच्यते।
२७ ५६	११	सोम	६ ५२	दिन ९ १०	पूर्वाफा.	२७ २८	सायं ५ २४	ब्रह्म	८ ३०	दिन ९ ४९	बा ६ ५२	कौ ३९ ७	ध्वज	२८ ११ ११ ६	कन्या ४४ १	६ २५	५ ३५	१२ ५४	६ १० १९ ५९	६० ६	- १८	३ २२	कन्याराशिः रात्रि १२।१ वादने। रम्भा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। रमा ११। गोवत्स द्वादशी १२। (सा प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या)। सवत्सा यशस्विनीगांपूजयेत्। प्रदोषे-सायं काले गोवत्स क्रीडनम् अलंकरणञ्च। (च)
२७ ५३	१२	मंगल	११ २३	दिन १० ५९	उत्तराफा.	३३ २९	रात ७ ४९	ऐन्द्र	९ २२	दिन १० ११	तै ११ २३	गर ४३ ५७	धाता	२९ १२ १२ ७		६ २५	५ ३५	१३ १४	६ ११ २० ५	६० ९	- १८	४ २	भौम प्रदोष १२ व्रतम्। ऋणापकर्णाय श्रेयस्करम्। प्रदोष व्यापिनी त्रयोदश्यां धनत्रयोदशी (धनतेरस) १३। धन्वन्तरि जयन्ती १३। प्रदोषे अपमृत्यु निवारणार्थं गृहात् बहिः तिल तैलस्य दक्षिणाभिमुख यमाय दीपदानम्।(ङ)
२७ ४९	१३	बुध.	१६ ३२	दिन १ ४	हस्त	४० ०	रात १० २७	वैधृति	१० ४०	दिन १० ४३	व १६ ३२	वि ४९ १२	आनन्द	३० १३ १३ ८		६ २६	५ ३४	१३ ३४	६ १२ २० १४	६० ११	- १८	४ ५३	भद्रा १६।३२ (दि.१।४) उ. ४९।१२ (रा.२।७) या. (पाताले)। मासशिवरात्रि व्रतम् १३। नरक चतुर्दशी १४। हनुमज्जयन्ती १४। सायंकाले मेष लग्ने हनुमज्जन्म। सायं नरकोद्देशेन चतुर्वर्ति युक्त दीपदानम् यम तर्पणम्।(च)
२७ ४६	१४	गुरु.	२१ ५१	दिन ३ ११	चित्रा	४६ २७	रात १ २	विष्कुंभ	१२ ५	दिन ११ १७	श २१ ५१	च ५४ २१	चर	३१ १४ १४ ९	तुला १३ १५	६ २७	५ ३३	१३ ५४	६ १३ २० २५	६० १३	- १८	५ ४५	तुलाराशिः दिवा ११।४५ वादने। प्रातरेव हनुमद्दर्शनम्। प्रदोष-रात्रि व्यापिनी अमावस्या दीपावली ३०। सायं शिवादीनां भवनेषु मठेषु देवायतनादौ दीपदानम्। प्रदोषे लक्ष्मी गणेश कुबेरादि पूजनम्। निशीथे महानिशा(ज)
२७ ४३	३०	शुक्र.	२६ ५१	सायं ५ १२	स्वाती	५२ ३१	रात ३ २८	प्रीति	१३ २०	दिन ११ ४८	ना २६ ५१	किं ५९ ३	गद	१ १५ १५ १०		६ २८	५ ३२	१४ १३	६ १४ २० ३८	६० १५	- १८	+	+ स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। महावीर स्वामी निर्वाण दिवसः (जैन)। शुभावारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा. अ. क. वि.	स्पष्ट मंगल रा. अ. क. वि.	गति	स्पष्ट बुध रा. अ. क. वि.	गति मार्गी	स्पष्ट गुरु रा. अ. क. वि.	गति वक्री	स्पष्ट शुक्र रा. अ. क. वि.	गति	स्पष्ट शनि रा. अ. क. वि.	गति वक्री	स्पष्ट राहु रा. अ. क. वि.
१ शु.	० ७ १८ २०	२ २९ ४ २	२६ ५८	६ १२ १७ १४	१४ ०	१ २६ ५४ ३२	२ २९	७ ६ २३ ५३	७२ ३८	१० १९ ११ २६	२ ४२	११ ११ ७ ४७
२ श.	० २१ २३ ४४	२ २९ ३० ५९	२६ २८	६ १३ ५१ १४	१३ ४८	१ २६ ५२ ३	२ ३५	७ ७ ३६ ३१	७२ ३५	१० १९ ८ ४४	२ ३६	११ ११ ४ ३५
३ र.	१ ५ २२ १९	२ २९ ५७ २७	२६ ६	६ १५ २५ २	१३ ८	१ २६ ४९ २८	२ ४३	७ ८ ४९ ६	७२ ३५	१० १९ ६ ८	२ ३१	११ ११ १ २४
४ सो.	१ १९ ११ ४१	३ ० २३ ३३	२५ ५१	६ १६ ५८ १०	१२ ४९	१ २६ ४६ ४५	२ ५०	७ १० १ ४१	७२ ३५	१० १९ ३ ३७	२ २५	११ १० ५८ १३
५ मं.	२ २ ४३ १४	३ ० ४९ २४	२५ ३२	६ १८ ३० ५९	१२ ११	१ २६ ४३ ५५	२ ५९	७ ११ १४ १६	७२ ३३	१० १९ १ १२	२ २०	११ १० ५५ ३
६ बु.	२ १७ ७ ५२	३ १ १४ ५६	२५ ११	६ २० ३ १०	११ ५३	१ २६ ४० ५६	३ ६	७ १२ २६ ४९	७२ ३३	१० १८ ५८ ५२	२ १२	११ १० ५१ ५२
८ गु.	३ ० ३१ ५६	३ १ ४० ७	२४ ५५	६ २१ ३५ ३	११ ३	१ २६ ३७ ५०	३ ११	७ १३ ३९ २२	७२ ३३	१० १८ ५६ ४०	२ ५	११ १० ४८ ४१
९ शु.	३ १३ १७ ४४	३ २ ५ २	२४ ३८	६ २३ ६ ६	१० ४४	१ २६ ३४ ३९	३ १८	७ १४ ५१ ५५	७२ ३३	१० १८ ५४ ३५	२ ०	११ १० ४५ ३०
९ श.	३ २६ १ १९	३ २ २९ ४०	२४ १०	६ २४ ३६ ५०	१० १२	१ २६ ३१ २१	३ २६	७ १६ ४ २८	७२ ३१	१० १८ ५२ ३५	१ ५६	११ १० ४२ १९
१० र.	४ ८ ३१ २७	३ २ ५३ ५०	२३ ५२	६ २६ ७ २	८८ ३३	१ २६ २७ ५५	३ ३१	७ १७ १६ ५९	७२ ३०	१० १८ ५० ३९	१ ५१	११ १० ३९ ९
११ सो.	४ २० ४८ १४	३ ३ १७ ४२	२३ २८	६ २७ ३५ ३५	८७ ४१	१ २६ २४ २४	३ ३७	७ १८ २९ २९	७२ २०	१० १८ ४८ ४८	१ ४५	११ १० ३५ ५८
१२ मं.	५ २ ५६ १२	३ ३ ४१ १०	२३ ६	६ २९ ३ १६	८६ ५५	१ २६ २० ४७	३ ४५	७ १९ ४१ ४९	७२ १६	१० १८ ४७ ३	१ ३९	११ १० ३५ ४८
१३ बु.	५ १४ ५८ ५	३ ४ ४ १६	२२ ३६	७ ० ३० ११	८६ २३	१ २६ १७ २	३ ५१	७ २० ५४ ५	७२ १३	१० १८ ४५ २४	१ ३२	११ १० २९ ३७
१४ गु.	५ २७ ० ५४	३ ४ २६ ५२	२२ १३	७ [illegible] ५६ ३४	८५ ४७	१ २६ १३ ११	३ ५८	७ २२ ६ १८	७२ १०	१० १८ ४३ ५२	१ २५	११ १० २६ २६
३० शु.	६ ९ ८ २१	३ ४ ४९ ५	२१ ३८	७ ३ २२ २१	८५ ९	१ २६ ९ १३	४ १५	७ २३ १८ २८	७२ ९	१० १८ ४१ ३७	१ १९	११ १० २३ १५

फलम्– इस पक्ष में सप्तमी तिथि का क्षय हो गया है एवं नवमी तिथि की वृद्धि भी हो गई है, इस प्रकार पक्ष १५ दिन का ही है। **अशून्यशयन का व्रत** चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया **१८ अक्टूबर** शुक्रवार को किया जायेगा; चन्द्रोदय रात ६।२ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा और इसी के साथ चातुर्मास में किये जाने वाले इस व्रत का समापन भी हो जायेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत** तथा अत्यन्त प्रचलित **करक चतुर्थी (करवा चौथ) व्रत-पर्व २० अक्टूबर** रविवार को मनाया जायेगा। चन्द्रोदय के गणितागत सायं ७।४० बजे के बाद चन्द्रमा के दर्शन हो जाने पर अर्घ्य देकर तथा करवा चतुर्थी से सम्बन्धित पूजन कर इसे विधिवत् सम्पन्न किया जायेगा। काशी के अत्यन्त **प्रसिद्ध नक्कटैया** की **राम लीला** चमत्कार पूर्ण प्रदर्शन एवं विभिन्न लागों के निकालने के प्रदर्शन के साथ सम्पन्न होगी। **अहोई अष्टमी** का व्रत पर्व २४ अक्टूबर गुरुवार को है एवं आज ही राधा जयन्ती भी मनाई जायेगी। मथुरा के राधाकुण्ड में अरुणोदय समय स्नान किया जायेगा। **रम्भा एकादशी व्रत** का मान सबके लिये २८ अक्टूबर सोमवार को होगा एवं आज ही प्रदोषकाल में द्वादशी तिथि मिलने के कारण **गोवत्स द्वादशी** मनाई जायेगी। आज के दिन गाय के दूध से बनी किसी खाद्य-सामग्री का सेवन नही करना चाहिए। **ऋण से छुटकारा** पाने के लिये भौम **प्रदोष** ○

पं.२७ कार्तिक कृ.८ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५७२ अयनांशाः २४/११/१४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	३	६	१	७	१०	११	५
६	०	१	२१	२६	१३	१८	१०	१०
११	२१	४०	३५	३७	३२	५६	४८	४८
५५	५६	७	३	५०	२२	४०	४१	४१
५९	७९	२३	९१	३	७२	२४	३	३
५८	१९	५५	३	११	३३	५	११	११

८ शु. — ६ के. — ७ सू. बु. — ९ — ५ — १० — मं. ४ चं. — ११ श. — १ — ३ — रा.१२ — २ गु.

भौमादीनां चारः-
भौमः-पुनर्वसौ मिथुने। ३ रवितः कर्क राशौ दिवा१।१५ वादने। बुधः-तुला राशौ १२ भौमतः वृश्चिक राशौ रात्रि१२।१० वादने। गुरुः-मृगशिरायां वृष राशौ। शुक्रः-वृश्चिक राशौ। शनिः-(वक्री) शतभिषायां ४ चरणे कुम्भ राशौ। राहुः-उ.भा. ३ चरणे। केतुश्च-हस्त १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१शु. घं. मि.	२श. घं. मि.	३र. घं. मि.	४सो. घं. मि.	५मं. घं. मि.	६बु. घं. मि.	८गु. घं. मि.	९शु. घं. मि.	९श. घं. मि.	१०र. घं. मि.	११सो. घं. मि.	१२मं. घं. मि.	१३बु. घं. मि.	१४गु. घं. मि.	३०शु. घं. मि.
तुला	८ १७	८ १३	८ ९	८ ५	८ १	७ ५७	७ ५३	७ ४९	७ ४५	७ ४१	७ ३७	७ ३३	७ २९	७ २६	७ २२
वृश्चिक	१० ३४	१० ३०	१० २६	१० २२	१० १८	१० १४	१० १०	१० ६	१० २	९ ५८	९ ५४	९ ५०	९ ४७	९ ४३	९ ४०
धनु	१२ ३९	१२ ३५	१२ ३१	१२ २७	१२ २३	१२ १९	१२ १५	१२ ११	१२ ७	१२ ३	१२ ०	११ ५६	११ ५२	११ ४८	११ ४४
मकर	२ २४	२ २०	२ १६	२ १२	२ ८	२ ५	२ १	१ ५७	१ ५३	१ ४९	१ ४५	१ ४१	१ ३७	१ ३३	१ २९
कुम्भ	३ ५५	३ ५१	३ ४७	३ ४४	३ ४०	३ ३६	३ ३२	३ २८	३ २४	३ २०	३ १६	३ १२	३ ८	३ ४	३ ०
मीन	५ २३	५ १९	५ १५	५ ११	५ ८	५ ४	५ ०	४ ५६	४ ५२	४ ४८	४ ४४	४ ४०	४ ३६	४ ३२	४ २८
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
मेष	७ २	६ ५८	६ ५४	६ ५०	६ ४६	६ ४२	६ ३८	६ ३४	६ ३०	६ २६	६ २२	६ १९	६ १५	६ ११	६ ७
वृष	८ ५९	८ ५५	८ ५१	८ ४७	८ ४३	८ ३९	८ ३५	८ ३१	८ २७	८ २३	८ १९	८ १५	८ ११	८ ८	८ ४
मिथुन	११ १२	११ ८	११ ४	११ ०	१० ५७	१० ५३	१० ४९	१० ४५	१० ४१	१० ३७	१० ३३	१० २९	१० २५	१० २१	१० १७
कर्क	१ ३०	१ २६	१ २२	१ १८	१ १४	१ १०	१ ६	१ २	१२ ५८	१२ ५४	१२ ५१	१२ ४७	१२ ४३	१२ ३९	१२ ३५
सिंह	३ ४४	३ ४०	३ ३६	३ ३२	३ २८	३ २४	३ २०	३ १६	३ १२	३ ८	३ ४	३ १	२ ५७	२ ५३	२ ४९
कन्या	५ ५६	५ ५३	५ ४९	५ ४५	५ ४१	५ ३७	५ ३३	५ २९	५ २५	५ २१	५ १७	५ १३	५ ९	५ ५	५ १

विविध मुहूर्ताः तिथि १ शुक्रे–अश्विन्यां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशनं (द्वितीयायां) विपणि व्यापारः गवां क्रय-विक्रयः, नववस्त्र धारणं, दीक्षाग्रहणं (द्वितीयायां), आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं, सेवारम्भः शस्त्रधरणं, शय्यासनाद्युपभोगं, दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं, वाहन क्रयः अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि २ शनौ**–भरण्यां इष्टिका दहनं शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ३ रवौ**–भद्रा रिक्ता व्याप्ति। **तिथि ४ सोमे**–रिक्तोत्तरे रोहिण्यां आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म, अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं कणमर्दनं, नूतनगृहेस्थानं, वृक्षारोपणं, सेवारम्भः शस्त्रधारणं, नूतनवध्वापाककर्म वृष चन्द्रे दक्षिणदिग् यात्रा। **तिथि ५ भौमे**–मृगशिरायां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूतिस्नानं लालवस्त्र धारणं, शल्यकर्म पश्चिम दिग् यात्रा, आर्द्रायाम् उग्रकर्माचरणं। **तिथि ६ बुधे**–भद्रात्परं सायं पुनर्वसौ नामकरणं गवांक्रय विक्रयः नववस्त्रधारणं दीक्षाग्रहणं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ८ गुरौ**–पुनर्वसौ पुंसवनं सीमन्तः नामकरणं तदुपरि पुष्य नक्षत्रे गुरु-पुष्य योगे जातकर्म, विपणिव्यापारः गवां क्रयविक्रयः दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं, सेवारम्भः जलयन्त्रकर्म, शल्यकर्म भूमिक्रय, नूतनवध्वापाककर्म औषधिसेवनं वाहनक्रयः शल्यकर्मः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ९ शुक्रे**–पुष्ये रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ९ शनौ**–श्लेषायां रिक्तोत्तरे शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि १० रवौ**–भद्रात्परं मघायां इष्टिकारणं, धान्यच्छेदनं शस्त्रघटनं जलयंत्रकर्म। **तिथि ११ सोमे**–पूर्वाफाल्गुन्यां आ.प्रसूति स्नानं, दीक्षाग्रहणं धान्यच्छेदनं, कर्णमर्दनं जीर्णादिगृहप्रवेशः ○

पं.२८ कार्तिक कृ.३०शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५८० अयनांशाः २४/११/१६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	३	७	१	७	१०	१०	५
१४	९	४	३	२६	२३	१८	१०	१०
२०	८	४९	२२	९	१८	४१	२३	२३
३८	२१	५	२१	१३	२८	२०	१५	१५
६०	७५	२१	८५	४	७२	१	३	३
५५	३३	३८	९	५५	२	११	११	११

बु.८शु. — के. ६ — चं.७ सू. — ९ — ५ — १० — ४ मं. — ११रा. श. — १ — ३ — १२ — २ गु.

(ग) स्त्री-स्त्री सूर्य चन्द्र योगो मण्डूक वाहनं जलानाड़ी तदीशो बुधः वृष्टियोगः। सर्वार्थसिद्धियोगः १३।७ (दि.११।३८) या. तदुपरि गुरु-पुष्य सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगो। (ङ) **काश्यां गौतमेश्वर जयन्ती १३। गोत्रिरात्रियमपंचकारम्भः**। कामेश्वरी जयन्ती १३। शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ११।२३ (दि.१०।५९)या.। भौमे-जया सिद्धयोगः ११।२३ (दि.१०।५९) उ.। (च) प्रातः (रात्रिशेषे) साभ्यङ्ग स्नानम्। माष पत्रस्य शाकभोजनम्। चन्द्रोदये तिल तैलेन स्नानम् रोगहरम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ४०।० (रा.१०।२७)या.। **पश्चिम दिशायाम् बुधोदयः**। (छ) **पूजा, महाकाली पूजा** (बंगाल)। शेष रात्रौ दरिद्र निस्सारणम्। गोत्रिरात्रि व्रत समाप्तिः।

○ **का व्रत २९ अक्टूबर** को किया जायेगा। **धन्वन्तरि जयन्ती** एवं **धन त्रयोदशी** का प्रसिद्ध पर्व २९ अक्टूबर मंगलवार को प्रदोष व्यापिनी त्रयोदशी तिथि में सम्पन्न होगा। धन-ऐश्वर्य में वृद्धि की कामना से आज महालक्ष्मी का विधिवत् पूजन सायंकाल स्थिर **वृष लग्न ६।१९ से ८।१५** के मध्य किया जायेगा। **मासशिवरात्रि का व्रत ३० अक्टूबर** बुधवार को होगा। **नरक चतुर्दशी** सहित **हनुमज्जयन्ती** ३० अक्टूबर बुधवार को मनाई जायेगी। सायं मेष लग्न में हनुमान जी का जन्मोत्सव मनाया जायेगा। दूसरे दिन अर्थात् दीपावली को प्रातः काल तक हनुमान जी का दर्शन अवश्य कर लेना चाहिए। **प्रदोष** एवं रात्रि में अमावस्या तिथि मिलने के कारण **दीपावली** का परम पवित्र पर्व **३१ अक्टूबर** गुरुवार को मनाया जायेगा। शेष रात्रि (भोर) में सूप बजाकर दरिद्र का निस्सारण एवं लक्ष्मी का पदार्पण कराया जायेगा। दीपावली पूजन के लिये के तीन मुहूर्त दिये जा रहे हैं- १. दिन में व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के लिये **१।३३ बजे से ३।४ बजे के बीच, २. प्रदोष काल का सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त वृष स्थिर लग्न ६।११ से ८।८ बजे के मध्य** एवं, ३. महानिशा में तांत्रिक पूजा मंत्र सिद्धि इत्यादि के लिये सिंह **स्थिर लग्न १२।३९ से २।५३** बजे के मध्य। स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या १नवम्बर शुक्रवार को होगी। **स्वाती नक्षत्र का सूर्य २४ अक्टूबर** गुरुवार को दिन २।२७ बजे से आवेगा। ३० अक्टूबर के आसपास मौसम में बादल बदली बूँदा-बाँदी के योग मिल रहे हैं। गुरुवार की दीपावली देश एवं समाज तथा व्यवसाय जगत में उन्नति कारक है। पक्ष के तीन शुक्रवार एवं शुक्रवार की अमावस्या भी शुभफलकारक है।

○ ल.६ रात्रौ उत्तराफाल्गुन्यां गर्भाधानं ल.२ उत्तरदिग् यात्रा। **तिथि १२ भौमे**–उत्तराफाल्गुन्यां प्रसूति स्नानं लालवस्त्रधारणं धान्यच्छेदनं कणमर्दनं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १३ बुधे**–भद्रा पूर्वे हस्त नक्षत्रे जातकर्म, नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं,वाहनक्रयः पूर्व दिग् शूल यात्रा। **ति.१४ गुरौ**–चित्रायां रोग-विमुक्त स्नानं। **तत्परं मासान्तः**।

राशिफल
मेष- धनप्र
वृष- शोक
मिथुन- शत्रुभय
कर्क- पुत्रोन्नति
सिंह- चिन्ता
कन्या- अपमान
तुला- धन प्राप्ति
वृश्चिक- शत्रुभय
धनु- धनलाभ
मकर- दुःख
कुम्भ- धर्मवृद्धि
मीन- सुखलाभ

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ कार्तिक शुक्ल पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः शरद् ऋतुः।

दि.२ – १५ नवम्बर सन् २०२४ ई. (रा.कार्तिक ११ - २४)

दि.मा.	कार्तिक शु. तिथि							नक्षत्र						योग						करण						औदायिका	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		र.क्रा.द.-		स्पष्ट सूर्यः				गति		रे.अं.		चन्द्रास्त	
घ. प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगा	अं.	फ.	सो.	रा.	राशि	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.
२७ ४०	१	शनि.	३१	१६	रात	६	५९	विशाखा	५७	५१	रात	५	३७	आयुष्मान	१४	१५	दिन	१२	११	बव	३१	१६	बा	६०	०	शुभ	२	१६	१६	११	वृश्चिक	४१	३२	६	२८	५	३२	१४	३३	६	१५	२०	५३	६०	१७	-	१८	६	१६
२७ ३६	२	रवि.	३४	४२	रात	८	२२	अनुराधा	६०	०	स	म	स्त	सौभाग्य	१४	२०	दिन	१२	१३	बा	२	५९	कौ	२४	४२	मृत्यु	३	१७	१७	१२				६	२९	५	३१	१४	५२	६	१६	२१	१०	६०	१९	-	१८	७	२
२७ ३३	३	सोम	३६	५८	रात	९	१७	अनुराधा	२	८	प्रातः	७	२१	शोभन	१३	३४	दिन	११	५६	तै	५	५०	गर	३६	५८	मानस	४	१८	१८	१३				६	२९	५	३१	१५	१०	६	१७	२१	२९	६०	२१	-	१८	७	५४
२७ ३०	४	मंगल	३८	०	रात	९	४१	ज्येष्ठा	५	१८	दिन	८	३७	अतिगण्ड	११	५५	दिन	११	१६	व	७	२१	वि	३८	०	मुद्गर	५	१९	१९	१४	धनु	५	१८	६	३०	५	३०	१५	२९	६	१८	२१	५०	६०	२३	-	१८	८	५१
२७ २७	५	बुध.	३७	४३	रात	९	३६	मूल	७	११	दिन	९	२३	सुकर्मा	९	१५	दिन	१०	१३	बव	७	४२	बा	३७	४३	ध्वज	६	२०	२०	१५				६	३१	५	२९	१५	४७	६	१९	२२	१३	६०	२५	-	१८	९	५३
२७ २४	६	गुरु.	३६	१५	रात	९	१	पूर्वाषाढ़ा	७	४९	दिन	९	४०	धृति	५	३५	दिन	८	४६	कौ	६	४९	तै	३६	१५	धाता	७	२१	२१	१६	मकर	२२	४२	६	३१	५	२९	१६	५	६	२०	२२	३८	६०	२७	-	१८	१०	५६
२७ २१	७	शुक्र.	३३	३५	रात	७	५८	उत्तराषाढ़ा	७	१५	दिन	९	२६	शूल / गण्ड	० / ५४	५६ / ३२	प्रातः	६ / ४	५४ / ४३	गर	४	५५	व	३३	३५	आनन्द	८	२२	२२	१७				६	३२	५	२८	१६	२३	६	२१	२३	५	६०	२९	-	१८	१२	०
२७ १८	८	शनि.	२९	५६	रात	६	३१	श्रवण	५	३९	दिन	८	४९	वृद्धि	४९	१७	रात	२	१६	वि	१	४५	बव / बा	२९ / ५७	५६ / ४२	स्थिर	९	२३	२३	१८	कुंभ	३४	२८	६	३२	५	२८	१६	४०	६	२२	२३	३४	६०	३१	-	१८	१	१
२७ १५	९	रवि.	२५	२६	दिन	४	४४	धनिष्ठा	३	१५	दिन	७	५२	ध्रुव	४२	२६	रात	११	३२	कौ	२५	२६	तै	५२	५१	मातंग	१०	२४	२४	१९				६	३३	५	२७	१६	५८	६	२३	२४	५	६०	३२	-	१८	२	४
२७ १२	१०	सोम	२०	१७	दिन	२	४०	शतभिषा / पूर्वाभाद्रपद	० / ५६	३ / १६	प्रातः	६ / ५	[illegible]	व्याघात	३५	५	रात	८	३६	गर	२०	१७	व	४७	२७	अमृत	११	२५	२५	२०	मीन	४२	१५	६	३४	५	२६	१७	१५	६	२४	२४	३७	६०	३४	-	१८	३	८
२७ ९	११	मंगल	१४	३७	दिन	१२	२६	उत्तराभाद्र	५२	१४	रात	३	२८	हर्षण	२७	२५	सायं	५	३३	वि	१४	३७	बव	४१	४१	सिद्धि	१२	२६	२६	२१				६	३४	५	२६	१७	३१	६	२५	२५	११	६०	३६	-	१८	४	१४
२७ ६	१२	बुध.	८	४५	दिन	१०	५	रेवती	४८	२	रात	१	४८	वज्र	१९	३४	दिन	२	२५	बा	८	४५	कौ	३५	४५	उत्पात	१३	२७	२७	२२	मेष	४८	२	६	३५	५	२५	१७	४७	६	२६	२५	४७	६०	३८	-	१८	५	२२
२७ ३	१३ / १४	गुरु.	२ / ५४	४६ / ९	प्रात	२ / २	[illegible]	अश्विनी	४३	५०	रात	१२	८	सिद्धि	११	४०	दिन	११	१६	तै	२	४६	गर / व	३८ / ५७	[illegible]	मानस	१४	२८	२८	२३				६	३५	५	२५	१८	३	६	२७	२६	२५	६०	४०	-	१७	६	३३
२७ ०	१५	शुक्र.	५१	२२	रात	३	९	भरणी	४०	०	रात	१०	३६	व्यतीपात / वरीयान	३ / ५२	५४ / ३२	प्रातः	६ / ८	[illegible]	वि	२२	४१	बव	५१	२२	मुद्गर	१५	२९	२९	२४	वृष	५७	१०	६	३६	५	२४	१८	१९	६	२८	२७	५	६०	४१	-	१७	+	+

वृश्चिकराशिः रात्रि ११।५ वादने। अन्नकूट १। काशीतोऽन्यत्र गोवर्धन पूजा। मार्गपाली बन्धनम् सायं गोक्रीडनम् यष्ठ्याकर्षणम् साभ्यङ्गस्नानम्। द्यूत क्रीडा। प्रातर्नारी कर्तृक नीराजनम् सायं मंगल मालिका। **गुर्जर (गुजराती)**(क)

चन्द्र दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। **काश्यां गोवर्धनपूजा, भ्रातृ द्वितीया (भइया दूज) २**। भ्रातृस्य भगिनी गृह, भोजनम् तस्य द्रव्यवस्त्रादिभिसम्मानम् स्नेह वर्धनम्। **चित्रगुप्त पूजा** लेखन्यादि(ख)

मु.जमादि-उल-अव्वल ५ हिजरी सन् १४४६। सर्वार्थसिद्धियोगः २।८ (प्रातः ७।२१) या.। (ख) पूजा (दवात पूजा) यमुना स्नानम् यम तर्पणम्, यम पञ्चक निवृत्तिः। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३४।४२ (रा.८।२२)उ.।

धनुराशिः दिवा ८।३७ वादने। भद्रा ७।२९ (दि.९।३०) उ. ३८।० (रा.९।४१) या. (पाताले)। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। नाग नथैया** श्रीकृष्ण लीला (तुलसीघाट-काशी)। **सूर्य षष्ठी व्रतारम्भः** दिन (ग)

सूर्य षष्ठी व्रतस्य द्वितीय दिनम्। ज्ञान पंचमी ५ (जैन)। सौभाग्य ५, लाभ ५, पाण्डव पंचमी ५। ☉ **विशाखा नक्षत्रे रविः** ३७।४७ (रा.९।३८)। यमघंट योगः ७।११ (दि.९।२३) या.।

मकरराशिः दिवा ३।३६ वादने। **सूर्य षष्ठी (डाला छठ)। प्रतिहार षष्ठी ६। स्कन्द षष्ठी ६।** सायंकालीन सूर्यार्घ्यदानम्, अरुणोदये द्वितीयार्घ्यम्। **सूर्यार्घ्य मन्त्रः**-"नमोऽस्तु सूर्याय सहस्रभानवे नमोऽस्तु वैश्वानरजातवेदसे।(घ)

भद्रा ३३।३५ (रा.७।५८) या. (पाताले)। **पारणा सूर्यषष्ठीव्रतस्य प्रातरेव। सहस्त्रार्जुन (सहस्त्रबाहु) जयन्ती ७** (जायसवाल समाज)। कल्पादिः ७। सर्वार्थसिद्धियोगः ७।१५ (दि.९।२६) उ.। रवियोगः ७।१५ (दि.९।२६) या.।

कुम्भ राशिः रात्रि ८।१९ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा १।४५ (दि.७।१४) या.। **गोपाष्टमी ८**। गवामलंकरणम् पूजनम् तत्प्रदक्षिणा च। अयोध्या-मथुरा परिक्रमा २९।५६ (रा.६।३१) उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५।३९

अक्षय नवमी ९ व्रतम्। रत्न गर्भ कुष्माण्डादिदानम्। धात्री (आँवला) मूले सपरिवार भोजनम्। **कृतयुगादिः ९**। श्री विष्णु त्रिरात्रि आरम्भः। जगद्धात्री पूजा (बंगाल) अयोध्या-मथुरा परिक्रमा २५।२६ (दि.४।४४) या.।(च)

मीनराशिः रात्रि ११।२८ वादने। भद्रा ४७।२७ (रा.१।३३) उ. (मर्त्य)। रवियोगः रात्रि शेष ६।३५ वादने यावत्। (ग) त्रयं यावत्। तत्रैकभुक्तनर्मावितव्यम्। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ५।१८ (दि.८।३७) या.।

भद्रा १४।३७ (दि.१२।२६) या.। **श्रीहरिप्रबोधिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। देवोत्थापनम् प्रबोधनोत्सवः। दिठवन एकादशी ११।** भद्रा दिवा १२।२६ वादनात्परं इक्षुरसपानम्। **तुलसी विवाहोत्सवः** पूर्णिमान्तं(छ)

मेषराशिः रात्रि १।४८ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। **प्रदोष व्रतम् १२। गोवत्स द्वादशी १२। चातुर्मास्य व्रत समाप्तिः।** मन्वादिः १२। द्विदलदानम्। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ८।४५ (दि.१०।५) या.। रवियोगः ४८।२(रा.१।४८)उ.।

भद्रा ५४।९ (रा.शे.५।२२) उ. (स्वर्ग)। क्षयवती चतुर्दश्यां **श्रीवैकुण्ठ चतुर्दशी १४**। रात्रौ श्रीमहाविष्णुपूजनम्। अरुणोदये काश्यां मणिकर्णिका स्नानम्। **श्री विश्वेश्वर पूजनम्। नर्मदेश्वराय तुलसी समर्पणम्**।(ज)

वृषराशिः रात्रि ४।१६ वादने। भद्रा २२।४१ (दि.३।४०) या.। **स्नानदान व्रतादौ कार्तिक पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। गुरु नानक जयन्ती १५।** मन्वादिः १५। सर्वत्रगंगा स्नानम्। **काश्यां देव दीपावली महोत्सवः**। (झ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ श.	[illegible]																																					
२ र.	[illegible]																																					
३ सो.	[illegible]																																					
४ मं.	[illegible]																																					
५ बु.	[illegible]																																					
६ गु.	[illegible]																																					
७ शु.	[illegible]																																					
८ श.	[illegible]																																					
९ र.	[illegible]																																					
१० सो.	१०	२०	११	१५	३	८	०	३७	१६	११	७	१६	५५	१९	७५	३७	१	२५	१९	२१	५	५२	८	५	१७	४५	७१	३४	१०	१८	३१	४	०	२९	११	९	५१	२७
११ मं.	११	४	१९	४७	३	८	१६	४८	१५	४५	७	१८	१०	५६	७३	५५	१	२५	१३	२९	६	२	८	६	२९	२९	७१	२३	१०	१८	३०	३५	०	२३	११	९	४८	१६
१२ बु.	११	१८	२९	२२	३	८	३२	३३	१५	४	७	१९	२४	५१	७०	२८	१	२५	७	२७	६	१७	८	७	४०	४८	७१	२५	१०	१८	३०	१२	०	१५	११	९	४५	५
१३ गु.	०	२	३८	४२	३	८	४७	३७	१४	३४	७	२०	३५	१९	६६	४०	१	२५	१	१०	६	३०	८	८	५२	१३	७१	२१	१०	१८	२९	५७	०	६	११	९	४१	५५
१५ शु.	०	१७	१४	३१	३	९	२	११	१४	१४	७	२१	४२	५९	६२	२९	१	२४	५४	४०	६	४१	८	१०	३	३४	७१	१८	१०	१८	३०	३	०	१३	११	९	३८	४४

फलम्– चतुर्दशी तिथि का क्षय हो जाने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। रविवार-अनुराधा नक्षत्र वृश्चिक राशि का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव को स्थिर रखेगा। देव-मन्दिरों में प्रसिद्ध अन्नकूट का पर्व तथा काशी से अन्यत्र गोवर्धन पूजा २ नवम्बर शनिवार को मनाई जायेगी। **काशी में गोवर्धन पूजा (गोधना) एवं सर्वत्र भ्रातृ द्वितीया (भइया दूज)**, चित्रगुप्त पूजा, कलम दवात पूजा **३ नवम्बर** रविवार को मनाई जायेगी। आज के दिन भाइयों को अपनी बहनों के घर जाकर भोजन करना चाहिए तथा द्रव्य-वस्त्रादि का उपहार प्रदान कर उनको सम्मानित करना चाहिए। इससे भाइयों के आयुष्य में वृद्धि होती है। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी एवं **काशी के तुलसीघाट की विश्व प्रसिद्ध नाग नथैय्या** की कृष्ण लीला **५ नवम्बर** मंगलवार को होगी। तीन दिन तक चलने वाला सूर्य षष्ठी व्रत का अनुष्ठान ५ नवम्बर मंगलवार से प्रारम्भ हो जायेगा। वर्तमान काल का वर्ष भर का सबसे **लोकप्रिय पर्व डाला छठ (छठ पूजा) ७ नवम्बर** गुरुवार को होगी। यह एक ऐसा व्रत पर्व है जिसमें कोई शास्त्रीय एवं कर्मकाण्डी विधि नहीं है। अपितु यह लोकरीति कुल परम्परा एवं अपार श्रद्धा का समावेशी पर्व है जो महिलायें अत्यन्त पवित्रता एवं शुचिता के साथ परिवार के पुरुष सदस्यों के सहयोग के साथ अत्यन्त कठिन रीति-रिवाज के साथ सम्पन्न करती हैं। रात भर की तपपूर्ण प्रतीक्षा के बाद अरुणोदय समय भगवान भास्कर एवं छठी माता को द्वितीय अर्घ्य देकर **८ नवम्बर** शुक्रवार को इस व्रत को समाप्त कर पारण कर लिया जायेगा। **गोपाष्टमी का पर्व ९ नवम्बर** शनिवार को मनाया जायेगा। **अयोध्या-मथुरा** की परिक्रमा ९ नवम्बर शनिवार को रात्रि (सायं ६।३१) बजे से प्रारम्भ होकर अक्षय नवमी पर्यन्त १० नवम्बर रविवार को दिन ४।४४ बजे तक चलेगी। **अक्षय नवमी का पुण्य पवित्र पर्व १० नवम्बर** रविवार को मनाया जायेगा। आज के दिन आँवला वृक्ष के नीचे स्वादिष्ट पक्वान्न बनाकर ब्राह्मणों के खिलावें तथा भोजन दक्षिणा देकर सपरिवार ●

पं.२९ कार्तिक शुक्ल ८ शनि सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५८८
अयनांशाः २४/११/१७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]								



भौमादीनां चारः
भौमः:-पुष्ये कर्कराशौ। **बुधः**:-वृश्चिक राशौ। **गुरुः**:-(वक्री) मृगशिरायां वृष राशौ। **शुक्रः**:-वृश्चिकराशौ ५ बुधतः धनु राशौ रात्रि ८।५० वादने। **शनिः**:-शतभिषायां ४ चरणे कुम्भ राशौ। **राहुः**:-तिथि ७ शुक्रतः उ.भा. २ चरणे **केतुश्च**-उ.फा. ४ चरणे।

कार्तिक शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१श. घं.	मि.	२र. घं.	मि.	३सो घं.	मि.	४मं. घं.	मि.	५बु. घं.	मि.	६गु. घं.	मि.	७शु. घं.	मि.	८श. घं.	मि.	९र. घं.	मि.	१०सो घं.	मि.	११मं. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	१५शु. घं.	मि.
तुला	[illegible]																											
वृश्चिक	[illegible]																											
धनु	[illegible]																											
मकर	[illegible]																											
कुम्भ	[illegible]																											
मीन	[illegible]																											
	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मेष	[illegible]																											
वृष	[illegible]																											
मिथुन	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२
कर्क	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०
सिंह	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	६	२	२	१	५८	१	५४
कन्या	४	५७	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	६

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ शनौ**–विशाखायां इष्टिका दहनं। **तिथि २ रवौ**–अनुराधायां प्रसूति स्नानं विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं, लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं, धान्यस्थापनं शस्त्रधारणं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदनपत्र लेखनं, शल्यकर्म, वाहन क्रयविक्रयः, अनुराधायां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ३ सोमे**–अनुराधायां प्रातरेव आ.प्रसूतिस्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः, दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपण नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं, अनुराधायां दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ४ भौमे**–ज्येष्ठायां रिक्ता भद्रा व्याप्तिः। **तिथि ५ बुधे**–मूले नामकरणं, दीक्षाग्रहणं, हलप्रहवणं बीजवपनं, धान्यरोपणं, वृक्षारोपणं, जलयन्त्र कर्म, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ६ गुरौ**–पूर्वाषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं जलयंत्र कर्म, मुकदमा कार्य, उत्तराषाढ़ायाम् नामकरणं, जातकर्म, विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं चूल्ही स्थापनं वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शस्त्र धारणं शय्यासनाद्युपभोगं, नूतनवध्वा पाककर्म, रात्रौ **जीर्णादि गृहप्रवेश (सप्तम्यां) ल.३**, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ७ शुक्रे**–भद्रा पूर्व उ.षा.-श्रवणे गर्भाधानं आ. प्रसूति स्नानं जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं, दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहण बीजवपनं वृक्षारोपण नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदनपत्र लेखनं, **जीर्णादि-गृहप्रवेश ल.८** (उ.षा.) पूर्व दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ८ शनौ**–भद्रा दिवा ७।१४ वादनात्परं श्रवणे नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **ति.९ रवौ**–धनिष्ठायां रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं रिक्ताः दिवा ४।४४ वादनात्परं शतभिषायां शस्त्रघटनं। **ति.१० सोमे**–शतभिषा उपरान्त पू.भा. आ.प्रसूति स्नानं दीक्षाग्रहणं, जलयंत्र कर्म धान्यच्छेदनं। **ति.११ भौमे**–उ.भा. भद्रा दिवा १२।२६ उपरान्त पुंसवनं सीमान्त प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं पश्चिम दिग् यात्रा। **ति.१२ बुधे**–रेवत्यां जातकर्म अन्नप्राशनं (त्रयोदश्यां) कर्णविधः कन्या नासिकाच्छेदनं, **वरवरणं कन्या वरणं, वधूप्रवेशः** विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं बीजवपनं▯

पं.३० कार्तिक शु.१५ शुक्रे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३५९४
अयनांशाः २४/११/१८

र.	सा.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
[illegible]								



(क) **नूतन संवत्सर २०८१ आरम्भः**। शुभाशुभत्रय पुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ३२।१६ (रा.६।५३) उ. ५७।५१ (रा.शे.५।३७) या.। (घ) त्वमेव चार्घ्यं प्रतिगृह्ण, गृहाण देवाधिदेवायनमोनमस्ते।" इत्यादिः। रवियोगः ७।४९ (दि.९।४०) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३६।१५ (रा.९।१) उ.। (ङ) (दि.८।४१) या.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः २९।५६ (रा.६।३१) उ.। (च) रवियोगः ३।१५ (दि.७।५२)या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३।१५ (दि.७।५२) या.। (छ) यावत्। श्रीविष्णुत्रिरात्रि निवृत्तिः। भीष्म पंचकारम्भः। एकादश्यां अयोध्या अन्तर्गृही परिक्रमा। सर्वार्थसिद्धियोगः ५२।१४ (रा.३।२८) या.। (ज) उक्तं च-विनाहरि पूजां तु कुर्याद्रुद्रस्यचार्चनम्। वृथातस्य भवेत्पूजा सत्यमेतद्वचोमम्। **श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिनम् १४। चैमासी चौदस** (जैन)। **श्री नेहरू जयन्ती (बालदिवसः)**। (झ) प्रदोषे त्रिपुरोत्सवः दिवाली दीपदानम् तद्दर्शनम् च सायं क्षीरसागरादिदानम्। **रासयात्रा १५**। सायं मत्स्यावतारः १५। कार्तिकेय दर्शनम्। हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला पुष्कर स्नानम् मेलोत्सवः। भीष्म पञ्चक समाप्तिः। **श्रीमहावीर रथोत्सवः** (जैन)।

● भोजन करने का पुण्यफलदायक विधान है। **श्रीहरि प्रबोधिनी एकादशी व्रत** सबके लिये १२ नवम्बर मंगलवार को होगी। आज सृष्टि के मालिक एवं भरण पोषण करने वाले श्रीहरि विष्णु का विधिवत् पूजन कर उनको योग निद्रा से जगाया जायेगा। भद्रा दिन १२।२६ बजे के बाद गन्ने का पूजन कर उसका सेवन किया जायेगा। **तुलसी-शालिग्राम** का विवाहोत्सव परम्परागत तरीके से मनाया जायेगा तथा इसका क्रम पूर्णिमान्त तक चलता रहेगा। एकादशी तिथि में अयोध्या की अन्तर्गृही परिक्रमा भी की जायेगी। **प्रदोष का व्रत १३ नवम्बर** बुध. को किया जायेगा। **वैकुण्ठ चतुर्दशी** का मान **क्षयवती चतुर्दशी** तिथि १४ नवम्बर गुरुवार को होगा। अरुणोदय समय काशी के मणिकर्णिका तीर्थ का स्नान अत्यन्त पुण्यफलकारी माना जाता है। आज ही के दिन श्रीकाशी विश्वनाथ का प्रतिष्ठा दिवस भी उत्सव पूजन के साथ मनाया जायेगा। वर्ष भर में केवल आज ही के दिन बाबा विश्वनाथ को तुलसी दल समर्पित किया जाता है। यह हर एवं हरि के एकाकार होने का पर्व है स्नानदान एवं व्रत सहित कार्तिक पूर्णिमा १५ नव. शुक्र. को मनायी जायेगी। आज के दिन का गंगा स्नान अत्यन्त पुण्यफलकारी माना जाता है। **त्रिपुरोत्सव** मनाया जायेगा तथा काशी का **विश्वप्रसिद्ध** हो चुका **देव-दीपावली** का पर्व हर्षउल्लास एवं **काशी के गंगा घाटों** सहित सम्पूर्ण नगर में स्थित देव मन्दिरों सरोवरों पर असंख्य दीप जलाकर मनाया जायेगा। काशी के गंगा-घटों की इस अनुपम एवं अद्वितीय छवि को अपनी आँखों में बसा लेने की कामना से विश्वभर के लोगों का काशी आगमन होगा। **गुरुनानक देव** की जयन्ती परम्परागत रीति-रिवाज के साथ मनाई जायेगी। **विशाखा नक्षत्र का सूर्य ६ नव.** बुध. को रात १।३८ बजे से आवेगा। मादक द्रव्यों में तेजी चलेगी तथा दक्षिण भारत में कुछ घटनाएँ घट सकती है।

▯ वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भ सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग नूतनवध्वापाककर्म **गृहारम्भ ल.गोधूलि (भू.सु.) जीर्णादिगृहप्रवेशः (त्रयोदश्यां)** लग्नं गोधूलिः मीन चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा। **ति.१३ गुरौ**-अश्विन्यां रिक्ता प्रातः७।४२वादनात्पूर्व प्रसूति स्नानं अन्नप्राशनं वधूप्रवेशः विपणिव्यापार, दीक्षाग्रहणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **ति.१५ शुक्रे**-भरण्यां भद्रा दिवा ३।४० वादनात्परं, धान्यच्छेदनं शय्यासनाद्युपभोगं।

राशिफल

राशि	फल
मेष-	गमनम् हानिः
वृष-	रिपुनाशः
मिथुन-	दैन्यम् हानिः
कर्क-	रोगः
सिंह-	सुखम् श्रीः
कन्या-	भयम्
तुला-	स्थान हानिः
वृश्चिक-	पीड़ा भयम्
धनु-	वित्तक्षितिः
मकर-	सौख्यं
कुम्भ-	पापं वृद्धिः
मीन-	रोगार्त भयम्

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः शरद् ऋतुः। वृश्चिकार्कतः हेमन्त ऋतुः। दि.१६ नवम्बर - १ दिसम्बर सन् २०२४ ई. (रा.कार्तिक २५ - मार्गशीर्ष १०)

दि.मा.		मार्गशीर्ष कृ. तिथि							नक्षत्र						योग						करण						औदायिका	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		र.क्रां. द. -		स्पष्ट सूर्यः				गति		रे.अं.		चन्द्रोदय		
घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगा	अं.	फ.	सां.	रा.	राशि	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
२६	५८	१	शनि.	४६	२२	रात	१	९	कृत्तिका	३६	३७	रात	९	१५	परिघ	४१	२५	रात	२	२२	बा	१८	४७	कौ	४६	२२	ध्वज	१६	१	३०	२५				६	३६	५	२४	१८	३४	६	२९	२७	४६	६०	४३	-	१७	५	२३	फसली मार्गशीर्ष मासारम्भः। पारणा कार्तिक व्रतस्य। धनधान्य व्रतारम्भः १ धन प्राप्ति हेतवः वर्षपर्यन्तम् (वाराहपुराणानुसारेण)।(•) सं.वृश्चिक राशौ रवि ३२।१४ (रा.७।३६)(क)
२६	५५	२	रवि.	४२	५	रात	११	२६	रोहिणी	३३	५३	रात	८	१०	शिव	४३	०	रात	११	४८	तै	१४	१४	गर	४२	५	धाता	१७	२	१	२६				६	३७	५	२३	१८	५०	७	०	२८	२९	६०	४५	-	१७	६	१९	सौर मार्गशीर्ष मासारम्भः। मृत्युबाणः ३१।२५ (रा.७।११) उ.। शुभाशुभद्वय गुण्यकरः द्विपुष्करयोगः ३३।५३ (रा.८।१०) उ. ४२।५ (रा.११।२६) या.। (ख) सिद्धियोगाः ३२।३(रा.७।२७)या.।
२६	५२	३	सोम.	३८	४१	रात	१०	६	मृगशिरा	३२	३	रात	७	२७	सिद्ध	३७	१०	रात	९	३०	व	१०	३७	वि	३८	४१	आनन्द	१८	३	२	२७	मिथुन	३	०	६	३८	५	२२	१९	४	७	१	२९	१४	६०	४६	-	१७	७	१९	मिथुनराशिः दिवा ७।५० वादने। भद्रा १०।३७ (दि.१०।५३) उ. ३८।४१ (रा.१०।६) या. (स्वर्गे)। सौभाग्य सुन्दरी व्रतम् ३। मृत्युबाणः ३०।४० (रा.६।५४) या.। सर्वार्थाऽमृत(ख)
२६	५०	४	मंगल	३६	१७	रात	९	८	आर्द्रा	३१	१०	रात	७	६	साध्य	३२	१५	रात	७	३२	बव	७	२१	बा	३६	१७	चर	१९	४	३	२८				६	३८	५	२२	१९	१९	७	२	३०	०	६०	४८	-	१७	८	२३	अंगारकी संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदयं (रा.८।२३) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्।(•) अनुराधा नक्षत्रे रविः ४९।५० (रा.२।३४)। यमघण्टयोगः ३१।१० (रा.७।६)या.।
२६	४७	५	बुध	३५	८	रात	८	४२	पुनर्वसु	३१	२६	रात	७	१३	शुभ	२८	१५	सायं	५	५७	कौ	५	४२	तै	३५	८	गद	२०	५	४	२९	कर्क	१६	२३	६	३९	५	२१	१९	३३	७	३	३०	४८	६०	५०	-	१६	९	२६	कर्कराशिः दिवा १।१२ वादने। काश्यां अन्नपूर्णेश्वरी माता (काशी अन्नपूर्णा) निमित्त षोडश (१६) दिनानि यावत् दर्शन पूजन आरम्भः (परम्परानुसारेण।)
२६	४५	६	गुरु	३५	१३	रात	८	४४	पुष्य	३२	५६	रात	७	४९	शुक्ल	२५	११	दिन	४	४३	गर	५	१०	व	३५	१३	शुभ	२१	६	५	३०				६	३९	५	२१	१९	४६	७	४	३१	३८	६०	५१	-	१६	१०	२६	भद्रा ३५।१३ (रा.८।४४) उ. (मर्त्ये)। काश्यां रामेश्वर तीर्थे लोटा-भण्टा मलोत्सवः (परम्परानुसारेण) गुरु-पुष्य सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोग योगो ३२।५६ (रा.७।४१) या.। (ग)
२६	४२	७	शुक्र.	३६	४०	रात	९	११	श्लेषा	३५	४३	रात	८	५७	ब्रह्म	२३	१०	दिन	३	५६	वि	५	५६	बव	३६	४०	मृत्यु	२२	७	६	१	सिंह	३५	४३	६	४०	५	२०	२०	०	७	५	३२	२१	६०	५३	-	१६	११	२२	सिंहराशि रात्रि ८।५७ वादने। भद्रा ५।५६ (दि.१।२) या.। रवियोगः ३५।४३ (रा.८।५७) या.। स्थायी (मुद्गालेह) जयद् योगः ३६।४० (रा.९।११) उ.।
२६	४०	८	शनि	३८	१८	रात	१०	२३	मघा	३९	३९	रात	१०	३२	ऐन्द्र	२२	७	दिन	३	३१	बा	६	९	कौ	३८	१८	पद्म	२३	८	७	२				६	४०	५	२०	२०	१२	७	६	३३	२२	६०	५४	-	१६	१२	१५	श्रीकालभैरवाष्टमी ८ व्रतम्। अद्य भैरव उत्पत्तिः कालाष्टमी ८। काश्यां काल भैरव–बटुक भैरव–अष्ट भैरव मन्दिरेषु तथा अन्यत्र कालभैरव मन्दिरे दर्शनम् पूजनञ्च कुर्यात्। मनवा व्रतम्८।
२६	३८	९	रवि	४३	५	रात	११	५५	पूर्वाफाल्गु.	४४	४३	रात	१२	३४	वैधृति	२१	५७	दिन	३	२८	तै	१०	४१	गर	४३	५	छत्र	२४	९	८	३				६	४०	५	२०	२०	२५	७	७	३४	२६	६०	५६	-	१६	१	६	सर्वार्थसिद्धियोगः ४४।४३ (रा.१२।३४) उ.। (ग) वायि (मुद्दई) जयद् योगः ३५।१३ (रा.८।४४) उ.। रवियोगः ३२।५६ (रा.७।४१) उ.।
२६	३५	१०	सोम	४७	४४	रात	१	४६	उत्तराफा.	५०	३४	रात	२	५५	विष्कुंभ	२२	३२	दिन	३	४२	व	१५	२५	वि	४७	४४	श्रीवत्स	२५	१०	९	४	कन्या	१	१०	६	४१	५	१९	२०	२७	७	८	३५	१२	६०	५७	-	१५	१	५७	कन्याराशिः दिवा ७।१ वादने। भद्रा १५।२५ (दि.१२।५१) उ. ४७।४४ (रा.१।४६) या. (पाताले)। वायि (मुद्दई) जयद् योगः ४७।४४ (रा.१।४६) उ.।
२६	३३	११	मंगल	५२	५८	रात	३	५३	हस्त	५६	५७	रात	५	२९	प्रीति	२३	४०	दिन	४	१०	बव	२०	२१	बा	५२	५८	सौम्य	२६	११	१०	५				६	४१	५	१९	२०	४९	७	९	३६	१	६०	५९	-	१५	२	४७	उत्पन्ना एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। मृत्युबाणः २१।४० (दि.४।१०) उ.। शुभाशुभ द्वयगुण्यकरः योगः ५६।५७ (रा.५।२१) उ.। (घ) जयद् योगः १।४२ (दि.१०।३५) उ.।
२६	३१	१२	बुध.	५८	२३	रात	६	४	चित्रा	६०	०	स	म	स्त	आयुष्मान	२५	०	सायं	४	४२	कौ	२५	४१	तै	५८	२३	कालदण्ड	२७	१२	११	६	तुला	३०	१४	६	४२	५	१८	२१	०	७	१०	३७	८	६१	०	-	१५	३	३८	तुलाराशिः रात्रि ६।४८ वादने। मृत्युबाणः २२।३६ (दि.३।४४) या.। बुध-भद्रा सिद्धयोगः ५८।२३ (रा.६।४) या.।
२६	२९	१३	गुरु.	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	३	२८	दिन	८	५	सौभाग्य	२६	१८	सायं	५	१३	गर	३०	५५	व	६०	०	चर	२८	१३	१२	७				६	४२	५	१८	२१	११	७	११	३८	८	६१	१	-	१४	४	३२	प्रदोष व्रतम् १३। वायि (मुद्दई) जयद् योगः ३।२८ (प्रातः ८।५) उ.।
२६	२७	१३	शुक्र.	३	२८	प्रातः	८	७	स्वाती	९	४१	दिन	१०	३५	शोभन	२७	१२	सायं	५	३६	व	३	२८	वि	३५	४१	गद	२९	१४	१३	८	वृश्चिक	५८	५१	६	४३	५	१७	२१	२२	७	१२	३९	९	६१	३	-	१४	५	२८	वृश्चिकराशिः रात्रि शेष ६।१५ वादने। भद्रा ३।२८ (प्रातः ८।७) उ. ३५।४१ (रा.९।०) या. (पाताले)। मास शिवरात्रि व्रतम् १३। पश्चिम दिशायाम् बुधास्तः। स्थायी (मुद्गालेह)(व)
२६	२५	१४	शनि.	७	५४	दिन	९	५२	विशाखा	१५	१३	दिन	१२	४९	अतिगण्ड	२७	३३	सायं	५	४४	श	७	५४	च	३९	३९	शुभ	३०	१५	१४	९				६	४३	५	१७	२१	३३	७	१३	४०	१२	६१	४	-	१४	६	२६	श्राद्धादो अमा ३०। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोग ७।५४ (दि.७।५२) या.।
२६	२३	३०	रवि.	११	२३	दिन	११	१७	अनुराधा	१९	४७	दिन	२	३९	सुकर्मा	२७	३	सायं	५	३३	ना	११	२३	किं	४२	३२	मृत्यु	१	१६	१५	१०				६	४३	५	१७	२१	४२	७	१४	४१	१६	६१	५	-	१३	+	+	स्नानदानादौ अमावस्या ३०। पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्।

(क) मु.३० समा समताकरम्। पूर्वाः १६ घट्यः पुण्याः। दानवस्त्र गोऽन्न दानं नर्मदा स्नानम्। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ३६।३७ (रा.९।१५) उ.।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१ शनौ–रात्रि ९।१५ वादनात्परं रोहिण्यां रेखा ६ लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।।

तिथि २ रवौ–रोहिण्यां रेखा ६ दिवा लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५।। वा लग्नं गोधूलि किन्तु रात्रि ७।११ वादनात्परं मृत्युबाणः।

तिथि ३ सोमे–मृगशिरायां भद्रा मृत्युबाणः।

तिथि ७ शुक्रे–रात्रि ८।५७ वादनात्परं मघायां रेखा ७ लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं ८ पंचेष्टाभावः।

तिथि ८ शनौ–मघायां रेखा ७ दिवा लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (अष्ट चं.दा.) वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११ वा लग्नं गोधूलिः।

तिथि ९ रवौ–रात्रि १२।३४ वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां रेखा ८ लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं ७ पंचेष्टाभावः।

तिथि १० सोमे–उ.फा. रेखा ८ भद्रा दिवा १२।५१ वादनात्पूर्वं दिवा लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (रा.दा.) भद्रा रात्रि १।४६ वादनात्परं लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।। वा हस्त नक्षत्रे रेखा ७ लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।।

तिथि ११ भौमे–हस्त नक्षत्रे रेखा ७ दिवा लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (रा.दा.) दिवा ४।१० वादनात्परं मृत्युबाणः।

तिथि १३ गुरौ–दिवा ८।५ वादनात्परं स्वात्यां स्वाती १ चरणे (दिवा २।४२ वादनम् यावत्) हानि वेधः अत्यावश्यके लग्नं गोधूलिः।

तिथि १३ शुक्रे–स्वात्यां भद्रा व्याप्तिः।

तत्परं मासान्तः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम				स्पष्ट मंगल				गति		स्पष्ट बुध				गति		स्पष्ट गुरु				गति वक्री		स्पष्ट शुक्र				गति		स्पष्ट शनि				गति मार्गी		स्पष्ट राहु			
		रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.			रा.	अ.	क.	वि.
१	श.	१	१	१४	३५	३	९	१६	२५	१३	५०	७	२२	४४	२८	५७	३४	१	२४	४७	५९	६	५०	८	११	१४	५२	७१	१०	१०	१८	३०	२६	०	१९	११	९	३५	३३
२	र.	१	१५	७	४१	३	९	३	१५	१३	१२	७	२३	४२	२	५४	१४	१	२४	४१	९	६	५९	८	१२	२६	२	७१	१	१०	१८	३०	३५	०	२६	११	९	३२	२२
३	सो	१	२९	२९	२६	३	९	४३	२७	१२	४९	७	२४	३६	१६	५०	३६	१	२४	३४	१०	७	८	८	१३	३७	३	७०	५२	१०	१८	३१	१	०	३३	११	९	२९	११
४	मं.	२	१३	१	५७	३	९	५६	१६	१२	३३	७	२५	३६	५२	४५	३०	१	२४	२७	२	७	१७	८	१४	४७	५६	७०	४८	१०	१८	३१	२४	०	४०	११	९	२६	०
५	बु.	२	२६	१८	३५	३	१०	८	४९	१२	३	७	२६	१२	२२	४१	५२	१	२४	१९	४५	७	२५	८	१५	५८	४४	७०	४२	१०	१८	३२	१४	०	४६	११	९	२२	५०
६	गु.	३	९	२०	१४	३	१०	२०	५२	११	४४	७	२६	५४	१४	३८	२२	१	२४	१२	२०	७	३४	८	१७	९	२६	७०	३७	१०	१८	३३	०	०	५१	११	९	१९	३९
७	शु.	३	२२	६	५१	३	१०	३२	३६	११	१२	७	२७	३२	३६	३०	४१	१	२४	४	४६	७	४०	८	१८	२०	३	७०	३४	१०	१८	३३	५१	०	५७	११	९	१६	२८
८	श.	४	५	८	१७	३	१०	४३	४८	१०	३४	७	२८	३	१७	१८	२८	१	२३	५७	६	७	४५	८	१९	३०	३७	७०	३०	१०	१८	३४	४८	१	२	११	९	१३	१७
९	र.	४	१७	२८	४२	३	१०	५४	२२	१०	१२	७	२८	२१	४५	१९	३३	१	२३	४९	२१	७	५०	८	२०	४१	७	७०	२५	१०	१८	३५	४८	१	४	११	९	१०	६
१०	सो.	४	२९	३८	५६	३	११	४	३४	९	४३	७	२८	३१	१८	५७	१३	१	२३	४१	२१	७	५६	८	२१	५१	३२	७०	२१	१०	१८	३६	५२	१	८	११	९	६	५५
११	मं.	५	११	४२	१७	३	११	१४	१७	८	२१	७	२८	२६	५	११	२५	१	२३	३३	३५	८	०	८	२३	१	५३	७०	१८	१०	१८	३८	०	१	१३	११	९	३	४४
१२	बु.	५	२३	४५	५६	३	११	२२	३८	७	३५	७	२८	११	४०	१९	१४	१	२३	२५	३५	८	२	८	२४	१२	११	७०	१५	१०	१८	३९	१३	१	२०	११	९	०	३३
१३	गु.	६	५	४८	१४	३	११	३०	१३	६	३६	७	२७	५२	२६	२५	३०	१	२३	१७	३३	८	२	८	२५	२२	२६	७०	१३	१०	१८	४०	३३	१	२८	११	८	५७	२२
१३	शु.	६	१७	५४	५१	३	११	३६	४९	६	०	७	२७	२६	५६	३०	४५	१	२३	९	३१	८	५	८	२६	३२	३९	७०	१०	१०	१८	४२	१	१	३५	११	८	५४	११
१४	श.	७	०	८	२७	३	११	४२	४९	५	४१	७	२६	५६	११	३८	४२	१	२३	१	२६	८	५	८	२७	४२	४९	७०	६	१०	१८	४३	३६	१	४१	११	८	५१	०
३०	र.	७	१२	३४	१४	३	११	४८	३०	४	१६	७	२६	१७	२१	४५	२८	१	२२	५३	२१	८	५	८	२८	५२	५५	७०	३	१०	१८	४५	१७	१	४५	११	८	४७	५०

फलम्– त्रयोदशी तिथि की वृद्धि हो जाने के कारण यह पक्ष १६ दिन का हो गया है। पक्षारम्भ १६ नवम्बर को **वृश्चिक राशि** में सूर्य का प्रवेश रात ७।३६ बजे से हो जायेगा, अतः विवाहादि शुभ कार्यों के मुहूर्त आरम्भ हो जाने से समाज एवं व्यवसाय जगत में चहल-पहल बढ़ जायेगी। पक्ष के तीन शनिवार एवं रविवार कुछ न कुछ करामात दिखाकर रहेंगे। दैवी प्राकृतिक दुर्घटना समुद्री तूफान भूकम्पादि की सम्भावना है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान १९ नवम्बर मंगलवार को है; **चन्द्रोदय रात ८।२३** बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। मंगलवार की गणेश चतुर्थी को **अंगारकी** कहते हैं एवं यह विशेष पुण्यफलदायिनी होती है। **मार्गशीर्ष पंचमी तदनुसार २० नवम्बर** बुधवार से काशी अन्नपूर्णेश्वरी माता के निमित्त १६ दिन तक चलने वाला व्रत पूजन शृंगार का अनुष्ठान प्रारम्भ हो जायेगा। इसमें काशी के समीपस्थ गाँवों के किसान धान के फसल की पहली कटाई से धान की बालियों को लाकर माता को समर्पित करते हैं एवं प्रसाद स्वरूप उन्हीं बालियों को वितरित किया जाता है, जिसे कृषक आगामी फसल में उन्नत पैदावार की कामना से श्रद्धा स्वरूप ग्रहण कर धान के बीज के लिये संचित करते हैं। **मार्गशीर्ष षष्ठी २१ नवम्बर** गुरुवार को **काशी के** ○ **समीप प्रसिद्ध रामेश्वर तीर्थ** का लोटा-भण्टा मेला लगेगा एवं भगवान राम द्वारा पूजित-स्थापित रामेश्वर महादेव के मन्दिर में विधिवत् पूजन कर बाटी-चोखा बनाकर श्रद्धा स्वरूप ग्रहण करने की पुण्यफलदायी परम्परा का निर्वाह करते हैं। **श्रीकाल भैरवाष्टमी** का प्रसिद्ध व्रत पर्व २३ **नवम्बर** शनिवार को होगा। आज के दिन **काल भैरव की जयन्ती** उत्पत्ति मानी गई है। देशभर में सर्वत्र एवं काशी के कोतवाल तथा सुरक्षाधिकारी **श्रीकालभैरव मन्दिर एवं कमच्छा स्थित बटुक भैरव** मन्दिर सहित काशी के आठों भैरव मन्दिरों में कालाष्टमी कालभैरव जयन्ती मनाई जायेगी। रात्रि जागरण कर पूजन शृंगार के विशेष अनुष्ठान किये जायेंगे। शास्त्र में कहा गया है कि यदि कोई पाप जीवन में किया गया है तो वह आज के दर्शन मात्र से समाप्त हो जाता है। मनवा व्रत का मान भी आज ही होगा। **उत्पन्ना एकादशी का व्रत २६ नवम्बर** मंगलवार को सबके लिए होगा। इस एकादशी का व्रत करने से अभीष्ट कार्य सिद्ध होते हैं। **प्रदोष का व्रत २८ नवम्बर** गुरुवार को किया जायेगा। **मासशिवरात्रि का व्रत २९ नवम्बर** शुक्रवार को होगा। श्राद्ध के लिये **अमावस्या ३० नवम्बर** शनिवार को होगी जबकि स्नान दान की अमावस्या १ दिसम्बर रविवार को मनाई जायेगी। अनुराधा नक्षत्र का सूर्य १९ नवम्बर मंगलवार को रात २।३४ बजे से आयेगा। २१ नवम्बर के आसन्न बूंदा-बांदी पानी बरसने के योग मिल रहे हैं।

पं.३१ मार्गशीर्ष कृष्ण ८ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६०२ अयनांशाः २४/११/१९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
७	४	३	७	१	८	१०	११	५
६	५	१०	२८	२३	१९	१८	९	९
३३	८	४३	३	५७	३०	३४	१३	१३
२२	१७	४८	१७	६	३७	४८	१७	१७
६०	७५१	१०	१८	७	७०	१	३	३
५४	५	३४	२८	४५ व	३०	२	११	११

शु. ९ | ७ | १० | ८ सू. बु. | ६ के. | ११श. | चं. ५ | १२रा. | २ गु. | ४ मं. | १ | ३

भौमादीनां चारः

भौमः-पुष्य नक्षत्र कर्क राशौ। बुधः-वृश्चिकराशौ। गुरुः-(वक्री) मृगशिरायां वृषराशौ १२ बुधतः रोहिण्यां। शुक्रः-धनुराशौ ३० रवितः मकरे रात्रि शेषे। शनिः-शतभिषायां ४ चरणे कुम्भ राशौ। राहुः-उ.भा.४ चरणे केतुश्च-उ.फा.४ चरणे।

मार्गशीर्ष कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१श. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	२र. घं.	मि.	३सो घं.	मि.	४मं. घं.	मि.	५बु. घं.	मि.	६गु. घं.	मि.	७शु. घं.	मि.	८श. घं.	मि.	९र. घं.	मि.	१०सो. घं.	मि.	११मं. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	१४श. घं.	मि.	३०र. घं.	मि.
तुला	६	२०	वृश्चिक	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१
वृश्चिक	८	४०	धनु	१०	४१	१०	३७	१०	३४	१०	३०	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६
धनु	१०	४५	मकर	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१
मकर	१२	३०	कुम्भ	१	५७	१	५३	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२
कुम्भ	२	१	मीन	३	२५	३	२१	३	१७	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०
मीन	३	२९	मेष	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९
रा.	रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मेष	५	८	वृष	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	१०	६	६
वृष	७	५	मिथुन	९	१४	९	१०	९	६	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९
मिथुन	९	१८	कर्क	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७
कर्क	११	३६	सिंह	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१
सिंह	१	५०	कन्या	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३
कन्या	४	२	तुला	६	२५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०

पं.३२ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६१० अयनांशाः २४/११/२०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
७	७	३	७	१	८	१०	११	५
१४	१२	११	२६	२२	२८	१८	८	८
४१	३४	४८	१७	५३	५२	४५	४७	४७
१६	१४	३०	२९	२१	५५	१७	५०	५०
६१	७४४	४	४५	८	७०	१	३	३
५	५	१६	२८	५ व	३	४५	११	११

शु. ९ | ७ | १० | ८चं. सू.बु. | ६के. | ११ श. | ५ | १२ रा | २ गु. | ४ मं. | १ | ३

विविध मुहूर्त्ताः तिथि १ शनौ–कृत्तिकायां इष्टिका दहनं, शस्त्र निर्माणं। तिथि २ रवौ–रोहिण्यां प्रसूति स्नानं, वरवरणं कन्यावरणं दीक्षाग्रहणं, लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं कर्णमर्दनं, शस्त्रधारणं, आवेदनपत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ३ सोमे**–भद्रा दिवा १०।५३ वादनात्पूर्वं मृगशिरायां आ.प्रसूति स्नानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं, **वरवरणं कन्यावरणं, वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.८ वा ९**, विपणिव्यापारः, हलप्रवहणं बीजवपनं, नवान्नभक्षणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं **गृहारम्भः ल.८**, वाहन क्रयः औषधिनिर्माणं दिवा ७।५० वादनात्परं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ४ भौमे**–आर्द्रायाम् रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ५ बुधे**–पुनर्वसौ नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं **द्विरागमनं ल.१२ वा गोधूलि** दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, वाहनक्रयः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ६ गुरौ**–पुष्ये पुंसवनं सीमन्तः जातकर्म नामकरणं कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं **वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.९ वा गोधूलिः** विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं, वृक्षारोपणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ७ शुक्रे**–भद्रा दिवा १।२ वादनात्परं धान्यच्छेदनं जलयंत्र कर्म मुकदमा कार्यं, भूमिक्रयः, रात्रि ८।५७ वादनात्परं मघायां वधूप्रवेश। **तिथि ८ शनौ**–मघाया इष्टिका दहनं, शस्त्र निर्माणं। **तिथि ९ रवौ**–पूर्वाफाल्गुन्यां रिक्तायां रोग विमुक्तस्नानं। **तिथि १० सोमे**–उत्तराफाल्गुन्यां भद्रा दिवा १२।५१ वादनात्पूर्वं आ. प्रसूतिस्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं वधूप्रवेशः **द्विरागमनं ल.९**, विपणिव्यापार, दीक्षाग्रहणं, आभूषण निर्माण धारणं न हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यरोपणं, वृक्षारोपणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भ, सेवारम्भ शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं, **जीर्णादि गृहप्रवेशः ल.९, नूतन**वध्वापाककर्म औषधि निर्माण, दक्षिण दिग् गमनं। **तिथि ११ भौमे**–हस्त नक्षत्रे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं दत्तक पुत्रग्रहणं शल्यकर्म दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १२ बुधे**–चित्रायां जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं (ति.दा.) कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं, **द्विरागमनं ल.९ वा गोधूलिः** विपणिव्यापारः, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदनपत्र लेखनं, **जीर्णादिगृहप्रवेशः ल.९ वा गोधूलिः**, वाहनक्रयः पूर्व दिग् यात्रा तुलाचन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा नवान्नभक्षणं। **तिथि १३ गुरौ**–चित्रायां स्वात्यां जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं **वधूप्रवेश-द्विरागमनं ल.९ वा.गोधूलि**, विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षारोपणं, सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगः आवेदन पत्र लेखनं **जीर्णादिगृहप्रवेश प्रातः ल.८** वाहनक्रयः पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३ शुक्रे**–रिक्ता-भद्रापूर्वं स्वात्यां आ.प्रसूति स्नानं नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेध कन्या नासिकाच्छेदनं **वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.८** क्रय-विक्रयः नववस्त्रधारणं दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं न हलप्रवहणं बीजवपनः दत्तकपुत्र ग्रहणं आवेदनपत्र लेखनं **जीर्णादिगृहप्रवेश ल.८** (भू.सु.). वाहनक्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। तत्परं रिक्ता **मासान्त दोषः**।

राशिफल

मेष- सुख लाभः	तुला- अर्थागमः
वृष- धनदः	वृश्चिक-धनप्राप्तिः
मिथुन-भयं	धनु-सुखं शत्रुनाशः
कर्क- शत्रु पीड़ा	मकर-धनागमः
सिंह- पुत्रोन्नति	कुम्भ-दुःखं
कन्या-धनागमः	मीन-धर्मार्जनं

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः। दि.२ - १५ दिसम्बर सन् २०२४ ई. (रा. मार्गशीर्ष ११ - २४)

दि.मा. घ.	प.	मार्गशीर्ष शु. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. द. - अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
२६	२२	१	सोम.	१३	४१	दिन	१२	१२	ज्येष्ठा	२३	१६	दिन	४	३	धृति	२५	४३	सायं	५	१	बव	१३	४१	बा	४४	११	पद्म	२	१७	१६	११	धनु	२३	१६	६	४४	५	१६	२१	५२	७	१५	४२	२१	६१	६	-	१३	५	४९	धनुराशिः दिवा ४।३ वादने। चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। रुद्रव्रतम् (पीड़िया)इति लोक प्रसिद्धम्।⊙ ज्येष्ठ नक्षत्रे रविः ५६।४० रात्रि शेष५।२४।
२६	२०	२	मंगल.	१४	४२	दिन	१२	३७	मूल	२५	२७	सायं	४	५५	शूल	२३	२२	दिन	४	५	कौ	१४	४२	तै	४४	३३	छत्र	३	१८	१७	१२				६	४४	५	१६	२२	०	७	१६	४३	२७	६१	७	-	१३	६	४६	मु.जमादि-उस्सानी ६ हिजरी सन् १४४६। भौमे-जया सिद्ध सिंह योगः १४।४२ (दि.१२।३७) उ.। (क) यायि (मुद्दइ) जयद् योगः १२।५१ (दि.११।५३) उ. २६।६ (सा.५।११)या.।
२६	१८	३	बुध.	१४	२३	दिन	१२	३०	पूर्वाषाढ़ा	२६	२२	सायं	५	१८	गण्ड	२०	०	दिन	२	४५	गर	१४	२३	व	४३	३७	श्रीवत्स	४	१९	१८	१३	मकर	४१	१९	६	४४	५	१६	२२	९	७	१७	४४	३४	६१	८	-	१३	७	४७	मकरराशिः रात्रि ११।१६ वादने। भद्रा ४३।३७ (रा.१२।११) उ. (पाताले)। रवियोगः २६।२२ (सायं ५।१८) उ.।
२६	१७	४	गुरु.	१२	५१	दिन	११	५३	उत्तराषाढ़ा	२६	६	सायं	५	११	वृद्धि	१५	४०	दिन	१	१	वि	१२	५१	बव	४१	३२	सौम्य	५	२०	१९	१४				६	४५	५	१५	२२	१७	७	१८	४५	४२	६१	९	-	१२	८	५०	भद्रा १२।५१ (दि.११।५३) या.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। मृत्युबाणः १४।५ (दि.१२।२३) उ.। रवियोगः २६।६ (सा.५।११) या.। गुरौ-पूर्णसिद्ध योगः १२।५१ (दि.११।५३)उ.।(क)
२६	१५	५	शुक्र.	१०	१३	दिन	१०	५०	श्रवण	२४	४३	दिन	४	३९	ध्रुव	१०	२४	दिन	१०	५५	बा	१०	१३	कौ	३८	२४	धूम्र	६	२१	२०	१५	कुंभ	५३	३९	६	४५	५	१५	२२	२५	७	१९	४६	५१	६१	११	-	१२	९	५२	कुम्भराशिः रात्रि ४।१३ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। श्रीराम विवाहमहोत्सवः। विवाह पंचमी ५। भविस्योक्तरोक्तं श्रीपञ्चमी ५ व्रतम्। द्वितीया नाग पञ्चमी ५ स्नानदानेबहुफलम्।(ख)
२६	१४	६	शनि	६	३५	दिन	९	२३	धनिष्ठा	२२	३२	दिन	३	४६	व्याघात हर्षण	४ ५३	२४ २१	प्रातः	८ ८	३१ ५७	तै	६	३५	गर	३४	२१	प्रवर्धमान	७	२२	२१	१६				६	४५	५	१५	२२	३२	७	२०	४८	२	६१	१२	-	११	१०	५४	स्कन्दषष्ठी ६। चम्पा षष्ठी ६। महाराष्ट्रप्रसिद्धा। शुभाशुभेद्वय गुण्यकरः द्विपुष्करयोगः ६।३५ (दि.९।२३) उ. २२।३२ (दि.३।४६) या.। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः ६।३५ (दि.९।२३)उ.(ग)
२६	१३	७ ८	रवि	२ ५४	८ ५१	प्रातः	७ ५	३३ ३४	शतभिषा	१९	२९	दिन	२	३४	वज्र	५०	३०	रात	२	५८	व	२	८	वि बव	२९ ५४	३१ ५५	राक्षस	८	२३	२२	१७				६	४५	५	१५	२२	३९	७	२१	४९	१४	६१	१२	-	११	११	५५	भद्रा २।८ (प्रातः ७।३७) उ. २९।३१ (रा.६।३३) या. (मर्त्ये)। विष्णु सप्तमी ७। मित्र सप्तमी ७। भानुसप्तमी पर्वः सूर्यग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय।
२६	११	९	सोम	५१	२७	रात	३	२०	पूर्वाभाद्र	१५	५३	दिन	१	७	सिद्धि	४२	५५	रात	११	५६	बा	२३	११	कौ	५१	२७	मुसल	९	२४	२३	१८	मीन	१	४७	६	४६	५	१४	२२	४५	७	२२	५०	२६	६१	१३	-	११	१२	५६	मीनराशिः दिवा ७।२९ वादने। कल्पादिः ९। नन्दा नवमी ९। देवी पूजनेन विष्णुलोक प्राप्तिः। रवियोगः १५।५३ (दि.१।७) उ.। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः १५।५३ (दि.१।७)उ.।
२६	१०	१०	मंगल	४५	३६	रात	१	०	उत्तराभा	११	५२	दिन	११	३०	व्यतिपात	३५	६	रात	८	४८	तै	१८	१	गर	४५	३६	सिद्धि	१०	२५	२४	१९				६	४६	५	१४	२२	५१	७	२३	५१	३९	६१	१४	-	१०	१	५८	सर्वार्थसिद्धियोगः ११।५२ (दि.११।३०) या.। रवियोगः यावद्दिनम्। पूर्व दिशायाम् बुधोदयः। (ङ) २३ व्रतम्। काश्यां अन्तर्गृही यात्रा २८।३० (सा.६।११) उ.।
२६	९	११	बुध	३९	४२	रात	१०	३९	रेवती	७	४०	दिन	९	५०	वरीयान	२७	१०	सायं	५	३८	व	१२	३९	वि	३९	४२	उत्पात	११	२६	२५	२०	मेष	७	४०	६	४६	५	१४	२२	५७	७	२४	५२	५३	६१	१५	-	१०	३	३	मेषराशिः दिवा ९।५० वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा १२।३९ (दि.११।५०) उ. ३९।४२ (रा.१०।३९) या. (स्वर्गे)। मोक्षदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। गीता जयन्ती११।(घ)
२६	८	१२	गुरु.	३३	५७	रात	८	२०	अश्विनी भरणी	३ ५६	३० २	प्रातः	८ ६	२० ३६	परिघ	१९	१९	दिन	२	३०	बव	६	४९	बा	३३	५७	मानस	१२	२७	२६	२१				६	४६	५	१४	२३	२	७	२५	५४	८	६१	१६	-	९	४	१०	व्यञ्जन द्वादशी १२। बहुविध पक्वान्नं विष्णु अर्पयेत्। जनार्दन पूजा १२। अखण्ड १२। दान १२ (उड़ीसा)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३।३० (प्रा.८।१६) या.। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः ३३।५७(रा.८।२०)उ.।
२६	७	१३	शुक्र.	२८	३०	सायं	६	११	कृत्तिका	५६	०	रात	५	११	शिव	११	४२	दिन	११	२८	कौ	१	१३	तै गर	५४ ५६	३० ३	छत्र	१३	२८	२७	२२	वृष	१३	३९	६	४७	५	१३	२३	६	७	२६	५५	२४	६१	१७	-	८	५	२०	वृषराशिः दिवा १२।१५ वादने। प्रदोष व्रतम् १३। रवियोगः ५६।० (रा.शे.५।११) या.। स्थायी (मुद्दइ) जयद्योगः २८।३० (सा.६।११) उ. ५६।० (रा.शे.५।११) या.। अनंग त्रयोदशी(ङ)
२६	७	१४	शनि.	२३	३७	दिन	४	१४	रोहिणी	५३	६	रात	४	२	सिद्ध साध्य	४ २३	२० १९	प्रातः	८ ५	३४ ५३	व	२३	३७	वि	५१	३३	श्रीवत्स	१४	२९	२८	२३				६	४७	५	१३	२३	१०	७	२७	५६	४१	६१	१७	-	८	६	२९	भद्रा २३।३७ (दि.४।१४) उ. ५१।३३ (रा.३।२४) या. (स्वर्गे)। व्रताय पूर्णिमा १५। काश्यां पिशाच मोचन यात्रा दर्शनम् पिशाचत्व मुक्तये श्राद्धं तर्पणं च। पार्वण श्राद्धम्।(च)
२६	६	१५	रवि.	१९	२९	दिन	२	३४	मृगशिरा	५१	७	रात	३	१४	शुभ	५१	४५	रात	३	२९	बव	१९	२९	बा	४७	५१	सौम्य	१५	३०	२९	२४	मिथुन	२२	७	६	४७	५	१३	२३	१४	७	२८	५७	५८	६१	१८	-	७	+	+	मिथुनराशिः दिवा ३।३८ वादने। स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। नगर परिक्रमा १९।२९ (दि.२।३४) या.। मृत्युबाणः दिवा ८।० वादनम् यावत्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ सो.	७	२५	१२	१९	३	११	५२	४६	३	९	७	२५	३२	१	५३	५६	१	२२	४५	१६	८	७	९	०	२	५८	६१	५६	१०	१८	४७	२	१	४८	११	८	४४	३९
२ मं.	८	८	६	४०	३	११	५६	३५	३	१०	७	२४	३८	५	६०	३३	१	२२	३७	९	८	७	९	१	१२	५८	६१	४०	१०	१८	४८	५०	१	५०	११	८	४१	२८
३ बु.	८	२१	१५	११	३	११	५९	४५	२	३९	७	२३	३७	३२	६७	२२	१	२२	२९	२	८	८	९	२	२२	३४	६१	३२	१०	१८	५०	४०	१	५३	११	८	३८	१७
४ गु.	९	४	३८	४७	३	१२	२	२४	१	४४	७	२२	३०	१०	७५	४१	१	२२	२०	५४	८	१०	९	३	३२	६	६१	२५	१०	१८	५२	३३	१	५५	११	८	३५	६
५ शु.	९	१८	१४	३९	३	१२	४	८	ख	०	७	२१	४४	२९	८०	४५	१	२२	१२	४४	८	१०	९	४	४१	३१	६१	१७	१०	१८	५४	२८	१	५९	११	८	३१	५५
६ श.	१०	२	०	१५	३	१२	३	८	१	२५	७	१९	५३	४४	८४	५०	१	२२	४	३४	८	१०	९	५	५०	४८	६१	१३	१०	१८	५६	२७	२	४	११	८	२८	४४
७ र.	१०	१५	५५	२२	३	१२	१	४३	२	१	७	१८	२८	५४	८४	०	१	२१	५६	२४	८	१२	९	७	०	१	६१	४	१०	१८	५८	२१	२	८	११	८	२५	३३
९ सो.	१०	२९	५०	४६	३	११	५९	४२	२	४७	७	१७	४	५४	८१	३४	१	२१	४८	१२	८	११	९	८	९	५	६८	५५	१०	१९	०	३९	२	१३	११	८	२२	२२
१० मं.	११	१३	५८	३२	३	११	५६	५५	३	१८	७	१५	४३	२०	७५	५३	१	२१	४०	१	८	८	९	९	१८	०	६८	४५	१०	१९	२	५२	२	१७	११	८	१९	११
११ बु.	११	२८	८	१५	३	११	५३	३७	३	५३	७	१४	२७	२७	५९	२०	१	२१	३१	५३	८	५	९	१०	१६	४५	६८	३८	१०	१९	५	९	२	२२	११	८	१६	०
१२ गु.	०	१२	१८	५६	३	११	४९	४४	४	३०	७	१३	२८	७	५५	१३	१	२१	२३	४८	८	१	९	११	२५	२३	६८	३०	१०	१९	७	३१	२	२९	११	८	१	५०
१३ शु.	०	२७	२८	४२	३	११	४५	१४	४	५५	७	१२	४२	५४	३५	३३	१	२१	१५	४७	८	०	९	१२	३३	५३	६८	१५	१०	१९	१०	०	२	३७	११	८	९	३९
१४ श.	१	११	३५	१४	३	११	४१	१९	५	२३	७	१२	१७	२१	११	२७	१	२१	७	४७	७	५८	९	१३	४२	८	६८	६	१०	१९	१२	३७	२	४५	११	८	६	२८
१५ र.	१	२५	१९	४९	३	११	३५	५६	५	४६	७	१२	५	५४	मा.५	४४	१	२०	५९	४९	७	५८	९	१४	५०	१४	६८	५७	१०	१९	१५	२२	२	५२	११	८	३	१८

फलम्– अष्टमी तिथि का क्षय हो जाने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। सोमवार मूल नक्षत्र धनु राशि का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव खड़ा। शुक्ल पक्ष में तिथि का घटना अच्छा नहीं माना जाता। **पीड़िया** नाम से प्रचलित **रुद्रव्रत २ दिसम्बर** सोमवार को किया जायेगा। **श्रीराम-माता जानकी** के विवाह दिवस का महोत्सव **'विवाह पंचमी'** ६ दिसम्बर शुक्रवार को मनाया जायेगा। निथिलान्चल के लोग इसे अत्यन्त श्रद्धा के साथ मानते हैं। पूरे देश में जगह-जगह इस महोत्सव को मनाया जायेगा। **चम्पा षष्ठी स्कन्द षष्ठी ७ दिसम्बर** शनिवार को होगी। पश्चिमी प्रदेशों विशेषकर महाराष्ट्र में इसका विशेष महात्म्य है। पौराणिक आख्यान के अनुसार आज के दिन स्वामी कार्तिकेय ने तारकासुर का वध किया था और आज ही उनका राज्याभिषेक भी हुआ था। विष्णु सप्तमी एवं मित्र सप्तमी तथा रविवार औदयिक सप्तमी तिथि के योग से **भानु सप्तमी** का पर्व ८ दिसम्बर को मनाया जायेगा। भानु सप्तमी के दिन का किया गया स्नान दान सूर्य ग्रहण में किये गये स्नान-दान के बराबर माना जाता है। **मोक्षदा एकादशी व्रत** का सबके लिये मान ११ दिसम्बर बुधवार को होगा। आज ही जैन **जगत् की मौन एकादशी** तथा सुप्रसिद्ध **गीता जयन्ती** मनाई जायेगी। ३६ भाषाओं में अनुवदित तथा सन्तों महापुरुषों के विशिष्ट टीका व्याख्यान विवेचन से परिष्कृत महिमा मण्डित विस्तारित गीता का ज्ञान सम्पूर्ण विश्व में भारतीय मनीषा की गौरव पूर्ण गाथा को मुखरित करेगा। श्रीमद्भागवत गीता मात्र एक धार्मिक ग्रन्थ नहीं है, अपितु अपार जनकोष है, हम सनातन धर्मियों की आचार संहिता है तथा जीवन के आधार-भूत मूल्यों का मार्गदर्शक है। **प्रदोष का व्रत १३ दिसम्बर** शुक्रवार को किया जायेगा। ☐

पं.३३ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६१७ अयनांशाः २४/११/२१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	३	७	१	९	१०	११	५
२१	१५	१२	१८	२१	७	१८	८	८
४९	५५	१	२८	५६	०	५८	२५	२५
१४	२२	४३	५४	२४	१	३१	३३	३३
६१	८४३	२ १	८४ ०	८ १२	६१	२	३	३
१२	३५	व	व	व	४	८	११	११



भौमादीनां चारः

भौमः-पुष्य नक्षत्रे कर्क राशो ५ शुक्रतः वक्री। बुधः-(वक्री) वृश्चिकराशो। गुरुः-(वक्री) रोहिण्यां वृषराशो। शुक्रः-मकर राशो। शनिः-शतभिषायां ४ चरणे कुम्भ राशो। राहुः-उ.भा.२ चरणे केतुश्च-उत्तराफाल्गुनी ४ चरणे।

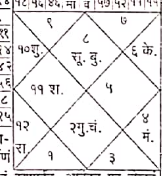
मार्गशीर्ष शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१सो. घं.	मि.	२मं. घं.	मि.	३बु. घं.	मि.	४गु. घं.	मि.	५शु. घं.	मि.	६श. घं.	मि.	७र. घं.	मि.	९सो घं.	मि.	१०मं. घं.	मि.	११बु. घं.	मि.	१२गु. घं.	मि.	१३शु. घं.	मि.	१४श. घं.	मि.	१५र. घं.	मि.
वृश्चिक	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५४	६	५०	६	४६
धनु	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	३	८	५९	८	५५	८	५१
मकर	११	२७	११	२३	११	१९	११	१६	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६
कुम्भ	१२	५८	१२	५४	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७
मीन	२	२६	२	२२	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५
मेष	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृष	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१५	५	११
मिथुन	८	१५	८	११	८	७	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४
कर्क	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२२	१०	१८	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२
सिंह	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६
कन्या	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८
तुला	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३३	४	२९	४	२५

विविध मुहूर्त्ताः तिथि १ सोमे–ज्येष्ठायाम्–नामकरणं, मूले **वधूप्रवेशः द्विरागमनं लग्नं गोधूलिः**, वृक्षारोपणं, जलयंत्र कर्म, उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि २ भौमे**–मूल उपरान्त पूर्वाषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, इष्टिका दहनं पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ३ बुधे**–पूर्वाषाढ़ायाम् रिक्ता पूर्व दीक्षाग्रहणं **वरवरणं कन्या वरणं**, धान्यच्छेदनं जलयन्त्र कर्म, मुकदमा कार्य पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ४ गुरौ–रिक्ता–भद्रा** उपरान्त उत्तराषाढ़ायाम् श्रवणे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, जातकर्म नामकरणं **वधू-प्रवेश-द्विरागमनं लग्नं गोधूलि**, विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भ **वरवरणं कन्या वरणं** शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं (सायं) श्रवणे गर्भाधानं ल.५ नवान्नभक्षणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ५ शुक्रे**–श्रवणे अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं **कन्यावरणं वधूप्रवेश-द्विरागमनं ल.९** नवान्नभक्षणं आ.भूषण निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं बीजवपनं धान्यच्छेदनं कणमर्दन, आवेदन पत्र लेखन वाहनक्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं, धनिष्ठायां रात्रौ गर्भाधानं ल.५, **वधूप्रवेश-द्विरागमनं ल.गोधूलिः जीर्णादिगृहप्रवेशः ल.गोधूलिः वा २** दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ६ शनौ**–धनिष्ठायां-नीलमादिरत्न कृष्ण वस्त्र धारणं **जीर्णादिगृहप्रवेशः ल.१२** पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ७ रवौ**–शतभिषायां भद्रात्परं सायं पूर्वाभाद्रपदे प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं, शल्यकर्म आवेदन पत्र लेखनं, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ९ सोमे**–पू.भा. उ.भा. रिक्ता व्याप्तिः। **ति.१० भौमे**–उ.भा. पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ११ बुधे**–भद्रापूर्व रेवत्यां-अश्विन्यां जातकर्म, अन्नप्राशनं कर्णवेधः ○

पं.३४ मार्गशीर्ष शु.१५ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६२४ अयनांशाः २४/११/२२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	३	७	१	९	१०	११	५
२८	२५	११	१२	२०	१४	१२	८	८
५७	१९	२५	५	५१	५०	१५	३	३
५८	४९	५६	५४	४९	१४	२२	५८	१८
६१	८२६	५	५ ४४	७ ५८	६७	२	३	३
१८	५६	४६	मा	व	५७	५२	११	११



(ख) मृत्युबाणः १३।१५ (दि.१२।३) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः २४।४३ (दि.४।३९) या.। रवियोगः २४।४३ (दिन ४।३९) उ.। (ग) २२।३२ (दि.३।४६) या.। रवियोगः २२।३२ (दि.३।४६) या.। **(घ) मौन एकादशी** (जैन)। अखिल भूमण्डले गीता ज्ञान महोत्सवः। या स्वयं पद्मनाभस्य मुख पद्माद्विनिस्सृतां। रवियोगः ७।४० (दि.९।५०) या.। (च) काश्यां अन्तर्गृही यात्रा २३।३७ (दि.४।१४) या.। कार्दमेश्वर दर्शनम्। **प्रदोषे दत्तात्रेय अवतार १५**। मृत्युबाण दिवा ८।३० वादनात् उपरान्त। सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगो ५३।६ (रा.४।२) या.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः २३।३७ (दि.४।१४)या.।

☐ एवं आज ही अनङ्ग त्रयोदशी व्रत का मान भी हो जायेगा। काशी के पिशाच मोचन में अतृप्त आत्माओं की शान्ति के लिये **श्राद्ध कर्म १४ दिसम्बर** शनिवार को किया जायेगा। काशी अन्तर्गृही परिक्रमा की जायेगी। व्रत के लिये पूर्णिमा का मान १४ दिसम्बर शनिवार को होगा; एवं प्रदोष में पूर्णिमा तिथि मिलने के कारण **श्रीदत्त जयन्ती दत्तात्रेय भगवान का अवतरणोत्सव** मनाया जायेगा एवं नगर परिक्रमा की जायेगी। **स्नान दान के लिये पूर्णिमा का मान १५ दिसम्बर** रविवार को होगा। ज्येष्ठा नक्षत्र का सूर्य पक्षारम्भ २ दिसम्बर सोमवार को रात्रि शेष ५।२४ बजे से आवेगा। सोना चाँदी खाद्यान्न सरसों, ऊनी वस्त्र एवं मादक द्रव्यों में तेजी चलेगी। १० दिसम्बर के आसन्न मौसम करवट लेगा तथा बूँदी-बाँदी वर्षा के योग है। ठंड पड़नी प्रारम्भ हो जायेगी।

○ **वरवरणं-कन्यावरणं, द्विरागमनं ल.११**, विपणि व्यापारः, दीक्षाग्रहणं, सेवारम्भः शय्या-सनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं **गृहारम्भ जीर्णादिगृहप्रवेशः** ल.८ अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १२ गुरौ**–प्रातः अश्विन्यां प्रसूति स्नानं जातकर्म वधूप्रवेशः **द्विरागमनं ल.८**, अन्नप्राशनं कर्णवेध कन्यानासिकाच्छेदनं (ति.दा.), विपणिव्यापारः, दीक्षाग्रहणं नवान्नभक्षणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १३ शुक्रे**-कृत्तिकायां वरवरणं-कन्यावरणं धान्यच्छेदनं। **तिथि १४ शनौ**–रोहिण्यां भद्रापूर्व नीलमादि रत्न कृष्णवस्त्र धारणं रात्रि शेषे मृगशिरायां **गृहारम्भ ल.८ तिथि १५ रवौ**–मृगशिरायां पुंसवन सीमन्तः प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेध-कन्यानासिकाच्छेदन वरवरणं कन्यावरणं दीक्षाग्रहणं नवान्नभक्षणं, हलप्रवहणं बीजवपनं सेवारम्भ शस्त्रधारणं, आवेदन पत्र लेखनं।

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.१ सोमे–दिवा ४।३ वादनात्परं मूल नक्षत्रे रेखा ९ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं ७ पंचेष्टाभावः।

तिथि २ भौमे–मूले रेखा ९ दिवा ल.१० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (भौम दा.) वा लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।।

तिथि ३ बुधे–सायं ५।१८ वादनात्परं उत्तराषा. रेखा ९ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ५ पंचेष्टाभावः ततो रात्रि १२।११ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः।

तिथि ४ गुरौ–उत्तराषाढ़ायाम् भद्रा मृ.बा.।

तिथि ९ सोमे–दिवा १।७ वादनात्परं उ.भा. व्यतिपातः आव. रेखा ७ रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं ७ पंचेष्टाभावः।

तिथि १० भौमे–उत्तराभाद्रपदे रेखा ७ आ.दिवा लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१७ दिवा ११।३० वादनात्परं रेवत्यां प्रथम चरणे केतुवेधः ततो आ. रेखा ६ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं ७ पंचेष्टाभावः।

तिथि ११ बुधे–रेवत्यां दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः।

तिथि १४ शनौ–रोहिण्यां दिवा ८।३० वादनात्परं मृत्युबाणः भद्रा च।

तिथि १५ रवौ–मृत्युबाण दिवा ८।० वादनात्परं मृगशिरायां रेखा ६ दिवा लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (भौ.दा.) वा लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१६।। वा लग्नं २ अथवा गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१२।।

राशिफल

मेष-	शत्रुभयं
वृष-	सुखं
मिथुन-	धनहानिः
कर्क-	पीडा भयम्
सिंह-	रोगं शोकं
कन्या-	सुखलाभः
तुला-	शोकं
वृश्चिक-	रोगं
धनु-	भयं पाप वृद्धिः
मकर-	दौर्बल्यं
कुम्भ-	सुखार्थ लाभः
मीन-	रोगं हानिः

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ पौष कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः। दि.१६ - ३० दिसम्बर २०२४ ई.
(राष्ट्रीय मार्गशीर्ष २५ - पौष ९)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	
२६	५	१	सोम	१६	१२	दिन	१	१६	आर्द्रा	४१	५९	रात	२	४७	शुक्ल	४६	३१	रात	१	२३	को	१६	१२	तै	४५	४	कालदण्ड	१६	१	३०	२५				६	४७	५	१३	२३	१७	७	२९	५८	१६	६१	१९	-	७	६	३	फसली पौष मासारम्भः। ⊙सं.मूल नक्षत्रे धनुराशौ रविः १।४० (दि.७।२९)। मु.१५ जघन्या फलम् महर्घता करम्। पराः १६ घट्यः पुण्याः। वस्त्रादिदानम् गोदावर्याम् स्नानम्। **खरमासारम्भः।**
२६	५	२	मंगल	१३	५७	दिन	१२	२२	पुनर्वसु	४९	५९	रात	२	४७	ब्रह्म	४२	८	रात	११	३८	गर	१३	५७	व	४३	३७	स्थिर	१७	२	१	२६	कर्क	३५	०	६	४७	५	१३	२३	२०	८	१	०	३५	६१	२०	-	६	७	७	कर्कराशिः रात्रि ८।४७ वादने। भद्रा ४३।२७ (रा.१२।१०) उ. (मर्त्ये)। **सौर पौष मासारम्भः।** शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः १३।५७ (दि.१२।२२) या.। भौमे-जया सिद्धयोगः १३।५७ (दि.१२।२२) उ.।
२६	४	३	बुध.	१२	५७	दिन	११	५८	पुष्य	५१	११	रात	३	१५	ऐन्द्र	३८	४४	रात	१०	१७	वि	१२	५७	बव	४३	५	मातंग	१८	३	२	२७				६	४७	५	१३	२३	२२	८	२	१	५५	६१	२०	-	६	८	१०	भद्रा १२।५७ (दि.११।५८) या.। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम् चन्द्रोदये** (रा.८।१०) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्।
२६	७	४	गुरु.	१३	१३	दिन	१२	४	श्लेषा	५३	४१	रात	४	१५	वैधृति	३६	२०	रात	९	१९	वा	१३	१३	को	४४	०	अमृत	१९	४	३	२८	सिंह	५३	४१	६	४७	५	१३	२३	२४	८	३	३	१५	६१	२०	-	५	९	११	**सिंहराशिः** रात्रि ४।१५ वादने। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः १३।१३ (दि.१२।४) उ. ५३।४१ (रा.४।१५) या.। गुरो-पूर्णा सिद्धयोगः १३।१३ (दि.१२।४) उ.।
२६	४	५	शुक्र.	१४	४४	दिन	१२	४२	मघा	५७	२५	रात	५	४५	विष्कुंभ	३४	५८	रात	८	४६	तै	१४	४७	गर	४६	१०	काण	२०	५	४	२९				६	४७	५	१३	२३	२५	८	४	४	३५	६१	२१	-	५	१०	६	दोषसंघ विनाशको रवियोगः ५७।२५ (रा.शे.५।४५) उ.। **(क)** (दि.३।२२) या.। रवियोगः २।१६ (प्रातः ७।४१) या.। शुभाशुभे त्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः २।१६ (प्रातः ७।४१) उ. २१।२८ (दि.३।२२) या.।
२६	४	६	शनि.	१७	३३	दिन	१	४८	पूर्वाफाल्गु	६०	०	स	म	स्त	प्रीति	३४	२५	रात	८	३३	व	१७	३३	वि	४९	३०	लुम्बक	२१	६	५	३०				६	४७	५	१३	२३	२६	८	५	५	५६	६१	२२	-	४	१०	५८	भद्रा १७।३३ (दि.१।४८) उ. ४९।३० (रा.२।३५) या. (मर्त्ये)। दोषसंघ विनाशको रवियोगः यावदिनम्।
२६	३	७	रवि	२१	२८	दिन	३	२२	पूर्वाफाल्गु	२	१६	प्रातः	७	४१	आयुष्मान	३३	४६	रात	८	२७	बव	२१	२८	बा	४४	५६	छत्र	२२	७	६	१	कन्या	१८	४३	६	४७	५	१३	२३	२६	८	६	७	१८	६१	२२	-	४	११	४९	**कन्याराशिः** दिवा २।१६ वादने। **राष्ट्रीय पौष मासारम्भः। भानु सप्तमी पर्वः सूर्य ग्रहण सन्निभम्** स्नानदानाय। सर्वार्थसिद्धियोगः २।१६ (प्रातः ७।४१) उ.। यायि (मुद्दइ) जयद्योगः २।१६ प्रातः ७।४१ उ. २१।२८(क)
२६	३	८	सोम	२६	१४	सायं	५	१६	उत्तराफा.	७	५८	दिन	९	५९	सौभाग्य	३५	४०	रात	९	३	कौ	२६	१४	तै	५८	५८	श्रीवत्स	२३	८	७	२				६	४७	५	१३	२३	२६	८	७	८	४०	६१	२२	-	३	१२	३९	**अष्टका श्राद्धम् ८।** पार्वण वदस्य विधिः। **रुक्मिणी अष्टमी।** 'तत्र कृष्ण रुक्मिणी प्रद्युम्न च पूजयेदित्युक्ते।' मार्गशीर्ष पौष माघे प्रोष्ठि च फाल्गुन कृष्ण पक्षे पूर्वव्यसुन्वष्टकं तवाष्टका। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः २६।१४(सा.५।१६)उ.।
२६	३	९	मंगल	३१	३०	रात	७	२३	हस्त	१४	१९	दिन	१२	३१	शोभन	३६	५५	रात	९	३३	गर	३१	३०	व	६०	०	सौम्य	२४	९	८	३	तुला	४७	३७	६	४७	५	१३	२३	२६	८	८	१०	२	६१	२३	-	३	१	३०	**तुलाराशिः** रात्रि १।५० वादने। **अन्वष्टका श्राद्धम्।**
२६	४	१०	बुध.	३६	५५	रात	९	३४	चित्रा	२०	५३	दिन	३	८	अतिगण्ड	३८	१७	रात	१०	६	व	४	१२	वि	३६	५५	कालदण्ड	२५	१०	९	४				६	४७	५	१३	२३	२५	८	९	११	२५	६१	२३	-	२	२	२२	भद्रा ४।१२ (दि.८।२८) उ. ३६।५५ (रा.९।३४) या. (पाताले)। **क्रिसमस डे (बड़ा दिन) ईसाई। म.म.पं. मदनमोहन मालवीय तथा च पं. अटल बिहारी बाजपेयी जयन्ती** (अंग्रेजी दिनांकानुसारेण)। **पार्श्वनाथ(ख)**
२६	४	११	गुरु.	४२	२	रात	११	३६	स्वाती	२७	१८	सायं	५	४१	सुकर्मा	३९	२२	रात	१०	३२	बव	९	२८	बा	४२	२	स्थिर	२६	११	१०	५				६	४७	५	१३	२३	२३	८	१०	१२	४८	६१	२३	-	२	३	१७	**सफला एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** यायि (मुद्दइ) जयद् योगः २७।१४ (सा.५।४१) या.। **(ख) जन्मकल्याणक** (जैन)।
२६	४	१२	शुक्र.	४६	२७	रात	१	२०	विशाखा	३२	५८	रात	७	५९	धृति	३९	५६	रात	१०	४५	को	१४	१४	तै	४६	२७	मातंग	२७	१२	११	६	वृश्चिक	१६	३३	६	४७	५	१३	२३	२१	८	११	१४	११	६१	२३	-	१	४	१५	**वृश्चिकराशिः** दिवा १।२४ वादने। सर्वार्थसिद्धियोगः ३२।५८ (रा.७।५९) उ.। स्थायी (मुद्दालह) जयद् योगः ३२।५८ (रा.७।५९) या.। **(ग)** मूले १०८ परिक्रमा कार्या। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।
२६	५	१३	शनि.	४९	४८	रात	२	४३	अनुराधा	३७	५०	रात	९	५५	शूल	३९	४७	रात	१०	४२	गर	१८	२७	व	४९	४८	अमृत	२८	१३	१२	७				६	४७	५	१३	२३	१९	८	१२	१५	३४	६१	२३	-	१	५	१३	भद्रा ४९।४८ (रा.२।४३) उ. (स्वर्गे)। **शनि प्रदोष व्रतम् १३।** पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः ३७।५० (रा.९।५५) या.।
२६	५	१४	रवि	५२	५	रात	३	३७	ज्येष्ठा	४१	३९	रात	११	२७	गण्ड	३८	४५	रात	१०	१७	वि	२०	५६	श	५२	५	काण	२९	१४	१३	८	धनु	४१	३९	६	४७	५	१३	२३	१६	८	१३	१६	५७	६१	२४	-	०	६	२२	**धनुराशिः** रात्रि ११।२७ वादने। भद्रा २०।५६ (दि.३।१) या. (पाताले)। **मास शिवरात्रि व्रतम् १४।⊙ पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रे रविः** ४।९ (दि.८।२९)। सर्वार्थसिद्धियोगः ४१।३९ (रा.११।२७) उ.।
२६	६	३०	सोम.	५३	३	रात	४	०	मूल	४४	११	रात	१२	२७	वृद्धि	३६	४३	रात	९	२८	च	२२	३४	ना	५३	३	लुम्बक	३०	१५	१४	९				६	४७	५	१३	२३	१२	८	१४	१८	२१	६१	२४	-	०	+	+	**स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। सोमवती अमावस्या।** 'अश्वत्थमूले प्रणिधाय विष्णुं सम्पूज्य सम्यग्विविधोपचारैः। प्रदक्षिणाभीष्ट फलाद्रि द्रव्यैः स्त्रीभाग्यया पति सौख्य वृद्धये'। इति मंत्रेण अश्वत्थ (पीपल)(ग)

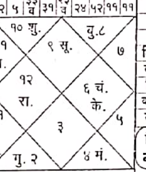
सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	सो	२	८	५२	३६	३	११	३०	१०	६	०	७	१२	११	३८	१२	३५	१	२०	५१	५१	७	५५	९	१५	५८	११	६७	४७	१०	१९	१८	१४	३	०	११	८	०	८
२	मं.	२	२१	१२	४४	३	११	२४	१०	६	३१	७	१२	२४	१३	२८	२४	१	२०	४३	५६	७	५०	९	१७	५	५८	६७	३८	१०	१९	२१	१४	३	७	११	७	५६	५७
३	बु.	३	४	२२	३५	३	११	१७	२९	७	३५	७	१२	४२	३७	२२	१६	१	२०	३६	६	७	४४	९	१८	१३	३६	६७	२५	१०	१९	२४	२१	३	१३	११	७	५३	४६
४	गु.	३	१८	१२	२६	३	११	१०	४	८	१७	७	१३	४	५३	२७	४८	१	२०	२८	२२	७	४०	९	१९	२१	१	६७	१३	१०	१९	२७	३४	३	२१	११	७	५०	३५
५	शु.	४	०	४७	४९	३	११	१	४७	९	११	७	१३	३२	४१	३१	३६	१	२०	२०	४२	७	३५	९	२०	२८	१४	६७	०	१०	१९	३०	५५	३	२८	११	७	४७	२५
६	श.	४	१३	९	४१	३	१०	५२	३६	१०	५०	७	१४	४	१७	४०	२५	१	२०	१३	७	७	३१	९	२१	३५	१४	६६	४८	१०	१९	३४	२३	३	३७	११	७	४४	१४
७	र.	४	२६	३१	५	३	१०	४१	४६	११	१७	७	१४	४४	४२	४१	५०	१	२०	५	३६	७	२९	९	२२	४२	२	६६	३५	१०	१९	३८	०	३	४५	११	७	४१	३
८	सो.	५	८	४१	१६	३	१०	३०	२९	१२	३३	७	१५	३४	३२	५५	३१	१	१९	५८	७	७	२३	९	२३	४८	३७	६६	२४	१०	१९	४१	४५	३	५२	११	७	३७	५३
९	मं.	५	२०	४६	१४	३	१०	१७	५६	१३	२४	७	१६	३०	३	६०	४४	१	१९	५०	४४	७	१५	९	२४	५५	१	६६	१२	१०	१९	४५	३७	४	०	११	७	३४	४२
१०	बु.	६	२	४२	१८	३	१०	४	३२	१४	४०	७	१७	३०	४७	६३	२६	१	१९	४३	२९	७	९	९	२६	१	१३	६६	१	१०	१९	४९	३७	४	३	११	७	३१	३१
११	गु.	६	१४	५०	३३	३	९	४९	५२	१५	५	७	१८	३४	१३	६६	५०	१	१९	३६	२०	७	२	९	२७	७	१४	६५	४६	१०	१९	५३	४०	४	७	११	७	२८	२०
१२	शु.	६	२७	१३	१२	३	९	३४	४७	१६	२७	७	१९	४०	३	६७	२५	१	१९	२९	१८	६	५६	९	२८	१३	०	६५	३०	१०	१९	५७	४७	४	१२	११	७	२५	९
१३	श.	७	९	३४	१४	३	९	१८	२०	१६	५६	७	२०	४७	२८	७०	११	१	१९	२२	२२	६	५१	९	२९	१८	३०	६५	२२	१०	२०	१	५९	४	१८	११	७	२१	५८
१४	र.	७	२२	०	२५	३	९	१	२४	१७	११	७	२१	५७	४७	७२	५०	१	१९	१५	३१	६	४६	१०	०	२३	४२	६५	४	१०	२०	६	१७	४	२३	११	७	१८	४७
३०	सो.	८	३	५१	५८	३	८	४४	५	१७	५२	७	२३	१०	३७	७३	४२	१	१९	८	४५	६	४०	१०	१	२८	४६	६४	४२	१०	२०	१०	४०	४	२८	११	७	१५	३७

फलम्– यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के तीन सोमवार एवं सोमवती अमावस्या अत्यन्त शुभ फलकारक है। पक्षारम्भ से सर्दी अपना गहरा रंग दिखाने लगेगी। पहाड़ों पर हिमपात भी आरम्भ हो जायेगा। पक्षारम्भ १६ दिसम्बर सोमवार को मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में सूर्य दिन ७।२९ बजे से प्रवेश कर जायेगा। **खरमास** प्रारम्भ हो जायेगा। अतः विवाहादि शुभ कार्य स्थगित हो जायेंगे! **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत का मान १८ दिसम्बर** बुधवार को है, चन्द्रोदय रात ८।१० बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **रुक्मिणी अष्टमी** का मान २३ दिसम्बर सोमवार को होगा। इसमें रुक्मिणी एवं भगवान प्रद्युम्न की प्रतिमा को षाडषोपचार विधि से पूजित कर कम से कम ८ सौभाग्यवती स्त्रियों को भोजन कराकर वस्त्रादि से सम्मानित करना सौभाग्यप्रद माना जाता है। ईसाई जगत का वर्ष का सबसे बड़ा पर्व **'क्रिसमस डे'** जिसे **'बड़ा दिन'** के नाम से भी जाना जाता है; २५ दिसम्बर बुधवार को मनाया जायेगा। आज देश के दो महान विभूतियों **पं. मदन मोहन मालवीय** एवं **पं. अटल बिहारी बाजपेयी** का जन्म दिवस भी अंग्रेजी मत के अनुसार मनाया ■ जायेगा। जैन जगत का पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक भी २५ दिसम्बर बुधवार को मनाया जायेगा। **सफला एकादशी व्रत का मान** सबके लिये २६ दिसम्बर गुरुवार को है। इस एकादशी में भगवान को नैवेद्य में बेल, बिजौर, जंबीरी, नारियल, अनार का भोग अर्पित कर पूजा करने से पुण्यफल की प्राप्ति होती है। पुत्र की कामना से **शनि-प्रदोष व्रत** का मान २८ दिसम्बर को है। **मासशिवरात्रि व्रत २९ दिसम्बर** रविवार को की जायेगी। **स्नान-दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या** तथा **सोमवती अमावस्या** का पर्व योग ३० दिसम्बर को मिल रहा है। सोमवती अमावस्या में पीपल (अश्वत्थ) वृक्ष में भगवान विष्णु का निवास मानते हुए सौभाग्यवती स्त्रियाँ विधिवत् पूजन करती है तथा विहित मंत्र "अश्वत्थ मूले ..." का उच्चारण करते हुए, पीपल वृक्ष की १०८ परिक्रमा करती हैं। इससे सुख सौभाग्य में वृद्धि होती है। **पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का सूर्य २९ दिसम्बर** रविवार को दिन ८।२९ बजे से आयेगा। तिल, तेल, गुड़, हल्दी, कपड़ा कपास ऊनी वस्त्र सन एवं चाँदी में तेजी चलेगी। सोमवार की अमावस्या शुभफलकारक है। भयंकर सर्दी पड़ने का सिलसिला प्रारम्भ हो जायेगा।

पं.३५ पौष कृष्ण ८ सोमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६३२
अयनांशाः २४/११/२३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	३	७	१	९	१०	११	५
७	८	१०	१५	१९	२३	१९	७	७
८	४१	३०	३४	५८	४८	४१	३७	३७
४०	१६	२९	३२	७	३७	४५	५३	५३
६१	७३१	१२ ३३	५५	७ २३	६६	३	३	३
२२	५	व	३१	व	२४	५२	११	११



भौमादीनां चारः
भौमः-(वक्री) पुष्य नक्षत्रे कर्कराशौ। बुधः-वृश्चिक राशौ। गुरुः-(वक्री) रोहिण्यां वृष राशौ। शुक्रः-मकर राशौ२८शनितः कुम्भराशौ रात्रि१।५० वादने। शनिः-शतभिषायां ४चरणे कुम्भ राशौ १२शुक्रतः पू.भा. १ चरणे रात्रि शेष४।१० वादने। राहुः-उ.भा.२ चरणे केतुश्च उ.फा. ४ चरणे।

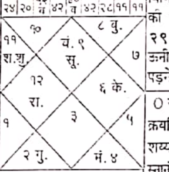
पौष कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ सो. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	२ मं. घं.	मि.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ सो घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	३० सो घं.	मि.
वृश्चिक	६	४०	धनु	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२
धनु	८	४७	मकर	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७
मकर	१०	३२	कुम्भ	११	५९	११	५५	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	८
कुम्भ	१२	३	मीन	१	२७	१	२३	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६
मीन	१	३१	मेष	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५
मेष	३	१०	वृष	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१६	४	१२
रा.	रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृष	५	७	मिथुन	७	१६	७	१२	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५
मिथुन	७	२०	कर्क	९	३४	९	३०	९	२६	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३
कर्क	९	३८	सिंह	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	९	११	५	११	१	१०	५७
सिंह	११	५२	कन्या	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९
कन्या	२	४	तुला	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६
तुला	४	२१	वृश्चिक	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३

विविध मुहूर्त्ताः तिथि १ सोमे–आर्द्रायाम् धान्यच्छेदनं। तिथि २ भौमे–पुनर्वसौ पुंसवनं सीमन्तः लालवस्त्रधारणं उग्रकर्माचरणं पश्चिम दिग् यात्रा। तिथि ३ बुधे–भद्रा दिवा ११।५८ वादनात्परं पुष्य नक्षत्रे जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशन, विपणिव्यापारः गवां क्रय-विक्रयः आभूषण निर्माणं धारणं च हलप्रवहण बीजवपन वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भ जलयन्त्रकर्म शय्यासनाद्युपभोगं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि ४ गुरौ–रिक्ता आदि दोषः। तिथि ५ शुक्रे–मघायां-कणमर्दन जलयन्त्र कर्म, शय्यासनाद्युपभोगं भूमिक्रयः पूर्व दिग् यात्रा। तिथि ६ शनौ–भद्रा दिवा १।४८ वादनात्पूर्व पूर्वाफाल्गुन्यां इष्टिका दहनं उग्रकर्माचरणं शस्त्रादि निर्माणं। तिथि ७ रवौ–पूर्वाफाल्गुन्यां-उत्तराफाल्गुन्यां पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शस्त्रकरणं आवदेन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं इष्टिका दहनं (प्रातः) पूर्व दिग् यात्रा। तिथि ८ सोमे–उत्तराफाल्गुन्यां हस्त नक्षत्रे आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं, विपणिव्यापारः गवां क्रय-विक्रयः हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः हस्त नक्षत्रे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि ९ भौमे–हस्त नक्षत्रे रोग विमुक्त स्नानं। तिथि १० बुधे–भद्रा दिवा ८।२८ वादनात्पूर्व चित्रायां ○ जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः, क्रय-विक्रयः, गवां क्रयविक्रयः नववस्त्र धारणं हलप्रवहणं बीजवपनं वृक्षारोपणं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, पश्चिम दिग् यात्रा। तिथि ११ गुरौ–स्वात्यां प्रसूति स्नानं, नामकरणं, अन्नप्राशनं (ति.दा.) क्रय-विक्रयः, हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं, वाहन क्रयः, पश्चिम दिग् यात्रा। तिथि १२ शुक्रे–विशाखायां वृक्षारोपणं गवां क्रय-विक्रयः रात्रौ ७।५९ वादनात्परं अनुराधायां गर्भाधानं ल.५ दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि १३ शनौ–अनुराधायां नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि १४ रवौ–ज्येष्ठायां भद्रा-रिक्ता व्याप्ति. तत्परं मासान्त दोषः।

पं.३६ पौष कृष्ण ३० सोमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६३९
अयनांशाः २४/११/२४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	३	७	१	१०	१०	११	५
१४	३	८	२३	१९	१	२०	७	७
१८	५१	४४	१०	८	२८	१०	१५	१५
२९	५८	५	३७	४५	४६	४०	३७	३७
६१	६६७	१७ ५२	७३	५ ४०	६४	४	२	३
२४	२०	व	४२	व	३२	२८	११	११



राशिफल

मेष-	शत्रुभयं
वृष-	श्रीप्राप्तिः
मिथुन-	नेत्रविकार
कर्क-	कष्टं पीड़ा
सिंह-	रोगं शोकं
कन्या-	लाभः
तुला-	शोकं कष्टं
वृश्चिक-	सुख लाभः
धनु-	भयं पाप वृद्धि
मकर-	दौर्बल्यं
कुम्भ-	सुखलाभः
मीन-	रोगं हानिः

श्रीशुभ संवत्२०८१ शाके१९४६ पौष शुक्ल पक्षः॥

याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः। दि.३१ दिसम्बर २०२४ - १३ जनवरी २०२५ ई. (राष्ट्रीय पौष १० -२३)

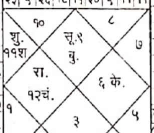
दि.मा. घ.	प.	पौष शुक्ल तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां.द- अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
२६	७	१	मंगल	५२	३८	रात	३	५०	पूर्वाषाढ़ा	४५	२३	रात	१२	५६	ध्रुव	३३	४२	रात	८	१६	किं	२२	५०	बव	५२	३८	मित्र	३१	१६	१५	१०				६	४७	५	१३	२३	८	८	१५	१९	४५	६१	२४	-	०	५	३७	शुभाशुभत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ५२।३८ (रा.३।५०) उ.। (क) ३६।३ (रा.९।११) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३६।३ (रा.९।११) उ.।
२६	७	२	बुध	५१	२	रात	३	११	उत्तराषाढ़ा	४५	२६	रात	१२	५६	व्याघात	२९	४५	रात	६	४०	बा	२१	५५	को	५१	२	वज्र	१	१७	१६	११	मकर	०	२४	६	४६	५	१४	२३	३	८	१६	२१	९	६१	२४	+	०	६	४१	मकरराशिः प्रातः ६।५६ वादने। चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.४५ वृहती समर्घताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। ईसाई नववर्ष २०२५ प्रारम्भः। सर्वत्र शुभकामना संदेशः हर्षोल्लासः। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः ५१।२ (रा.३।११)या.।
२६	८	३	गुरु	४८	२०	रात	२	६	श्रवण	४४	२०	रात	१२	३०	हर्षण	२४	५०	सायं	४	४२	तै	१९	४१	गर	४८	२०	ध्वज	२	१८	१७	१२				६	४६	५	१४	२२	५८	८	१७	२२	३३	६१	२४	+	१	७	४५	मु.रज्जब ७ हिजरी सन् १४४६। दोषसंघ विनाशको रवियोगः ४४।२० (रा.१२।३०) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४४।२० (रा.१२।३०) उ. ४८।२० (रा.२।६) या.।
२६	९	४	शुक्र.	४४	३७	रात	१२	३७	धनिष्ठा	४२	२१	रात	११	४२	वज्र	१९	१	दिन	२	२२	व	१६	२८	वि	४४	३७	धाता	३	१९	१८	१३	कुंभ	१३	२१	६	४६	५	१४	२२	५३	८	१८	२३	५७	६१	२३	+	२	८	४८	कुम्भराशिः दिवा १२।६ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा १६।२८ (दि.१।२१) उ. ४४।३७ या. (मर्त्य)। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। दोषसंघ विनाशको रवियोगः ४२।२१ (रा.११।४२) या.।
२६	१०	५	शनि.	४०	५	रात	१०	४८	शतभिषा	३९	३२	रात	१०	३५	सिद्धि	१२	३५	दिन	११	४८	बव	१२	२१	बा	४०	५	आनन्द	४	२०	१९	१४				६	४६	५	१४	२२	४७	८	१९	२५	२०	६१	२३	+	२	९	५०	दोषसंघ विनाशको रवियोगः ३९।३२ (रा.१०।३५) उ.। (ग) (दि.२।४०) या.। यमघंट योगः १२।४९ (दि.२।४०) उ.।
२६	१२	६	रवि.	३४	५८	रात	८	३५	पूर्वाभाद्र	३६	३	रात	९	११	व्यतीपात वरीयान	५/५२	३२/३०	प्रातः	६/६	५१/५१	को	७	३२	तै	३४	५८	चर	५	२१	२०	१५	मीन	२१	५५	६	४६	५	१४	२२	४१	८	२०	२६	४३	६१	२३	+	३	१०	५०	मीनराशिः दिवा ३।३२ वादने। गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (नवीनमत)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३६।३ (रा.९।११)उ.। दोषसंघ विनाशको रवियोगः ३६।३ (रा.९।११) या.। शुभाशुभत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः३४।५८(रा.८।४५)उ.(क)
२६	१३	७	सोम	२९	२३	रात	६	३०	उत्तराभाद्र	३२	९	रात	७	३७	परिघ	५०	१८	रात	२	५२	गर	२	१०	वि/व	२९/५६	२३/२८	गद	६	२२	२१	१६				६	४६	५	१४	२२	३४	८	२१	२८	६	६१	२३	+	३	११	५१	भद्रा २९।२३ (दि.६।३०) उ. ५६।२८ (रा.५।२१) या. (मर्त्य)। गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती ७ (प्राचीन-तिथिमत)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २९।२३ (रा.६।३०) या.।
२६	१४	८	मंगल	२३	३३	दिन	४	१०	रेवती	२८	१	रात	५	५८	शिव	४२	२१	रात	११	४१	बव	२३	३३	बा	५०	३६	शुभ	७	२३	२२	१७	मेष	२८	१	६	४५	५	१५	२२	२७	८	२२	२९	२९	६१	२३	+	३	१२	५४	मेषराशिः सायं ५।५८ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। शाकम्भरी देवी (पीठ) पूजन यात्रा नवरात्रश्च प्रारम्भः। भौमाश्विनी सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगः २८।१ (सा.५।५८) उ.। रवियोगः २८।१ (सा.५।५८) उ.। भौमे-जया(ख)
२६	१५	९	बुध.	१७	४०	दिन	१	४९	अश्विनी	२३	४९	सायं	४	२७	सिद्ध	३४	३०	रात	८	३३	को	१७	४०	तै	४४	४७	मृत्यु	८	२४	२३	१८				६	४५	५	१५	२२	१९	८	२३	३०	५२	६१	२३	+	४	१	५८	दोषसंघविनाशको रवियोगः यावद्दिनम्। (घ) माघ स्नान, यम नियम संयमारम्भः। रवियोगः ९।४० (दि.१०।३५) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ९।४० (दि.१०।३५) उ.।
२६	१७	१०	गुरु.	११	५५	दिन	११	३०	भरणी	१९	४९	दिन	२	४०	साध्य	२६	४५	सायं	५	२६	गर	११	५५	व	३९	१५	पद्म	९	२५	२४	१९	वृष	३३	५५	६	४५	५	१५	२२	११	८	२४	३२	१५	६१	२२	+	४	३	५	वृषराशिः रात्रि ८।१९ वादने। भद्रा ३९।१५ (रा.१०।२७) उ. (स्वर्ग)। साम्ब दशमी १०। सूर्य पूजा १० (उड़ीसा)। गुरौ-पूर्णा सिद्धयोगः ११।५५ (दि.११।३०) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ११।५५ (दि.११।३०) उ. १९।४९(ग)
२६	१९	११	शुक्र.	६	३६	दिन	९	२२	कृत्तिका	१६	१४	दिन	१	१४	शुभ	१९	२३	दिन	२	२९	वि	६	३६	बव	३४	९	छत्र	१०	२६	२५	२०				६	४४	५	१६	२२	३	८	२५	३३	३७	६१	२२	+	४	४	१२	भद्रा ६।३६ (दि.९।२२) या.। पुत्रदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। मन्वादिः ११। सोपपदा ११। शुक्रे-नन्दा सिद्धयोगः ६।३६ (दि.९।२२) या.। यमघंटयोगः १६।१४ (दि.१।१४) उ.।
२६	२०	१२/१३	शनि.	१/५५	४५/५८	प्रातः	५/५	३६/४९	रोहिणी	१३	१२	दिन	१२	१	शुक्ल	१२	३०	दिन	११	४४	बा	१	४२	को/तै	२८/५५	५०/५८	श्रीवत्स	११	२७	२६	२१	मिथुन	४२	६	६	४४	५	१६	२१	५४	८	२६	३४	५९	६१	२१	+	५	५	१७	मिथुनराशिः रात्रि ११।३४ वादने। कूर्म द्वादशी १२। शनि प्रदोष व्रतम् १३। पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगः १३।१२ (दि.१२।१) या.।☉ उत्तराषाढ़ा नक्षत्रे रविः ६।९ (दि.९।१२)।
२६	२२	१४	रवि.	५४	३२	रात	४	३२	मृगशिरा	११	२	दिन	११	८	ब्रह्म	६	१७	दिन	९	१४	गर	२५	१५	व	५४	३२	सौम्य	१२	२८	२७	२२				६	४४	५	१६	२१	४४	८	२७	३६	२०	६१	२१	+	५	६	१७	भद्रा ५४।३२ (रा.४।३२) उ. (स्वर्ग)। दोषसंघ विनाशकोरवियोगः ११।२ (दि.११।८) उ.। स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (१२ जनवरी) अंग्रेजी दिनांकानुसारेण। (ख) सिद्धयोगः २३।३३ (दि.४।१०) या.।
२६	२४	१५	सोम	५२	५	रात	३	४१	आर्द्रा	९	४०	दिन	१०	३५	इन्द्र वैधृति	०/५५	४४/१९	प्रातः	७/८	१/८	वि	२३	२८	बव	५२	२५	कालदण्ड	१३	२९	२८	२३	कर्क	५७	२८	६	४३	५	१७	२१	३५	८	२८	३७	४१	६१	२१	+	५	+	+	कर्कराशिः रात्रि ४।३० वादने। भद्रा २३।२८ (दि.४।७) या.। स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। पौषी पूर्णिमा १५। शाकम्भरी जयन्ती १५। शाकम्भरी नवरात्र समाप्तिः। प्रयागे माघ मेला, कल्पवास(घ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.		स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	मं.	८	१६	५७	११	३	८	२६	१३	१८	२	७	२४	२४	१९	७५	३०	१	१९	२	५	६	३२	१०	२	३३	२८	६४	१९	१०	२०	१५	८	४	३१	११	७	१२	२६
२	बु.	८	२९	३७	३३	३	८	८	११	१८	४९	७	२५	३९	४९	७७	२७	१	१८	५५	३३	६	२४	१०	३	३७	४७	६३	५८	१०	२०	१९	३९	४	३५	११	७	९	१५
३	गु.	९	१३	१०	५	३	७	४९	२२	१९	३४	७	२६	५७	१६	७८	३९	१	१८	४९	९	६	१२	१०	४	४१	४५	६३	३८	१०	२०	२४	१४	४	४०	११	७	६	४
४	शु.	९	२६	५४	१४	३	७	२९	४८	२०	२६	७	२८	१५	५५	८०	४५	१	१८	४२	५७	५	५७	१०	५	४५	२३	६३	२३	१०	२०	२८	५४	४	४३	११	७	२	५४
५	श.	१०	१०	४८	५२	३	७	९	२२	२०	५७	७	२९	३६	४०	८४	५२	१	१८	३७	०	५	४८	१०	६	४८	४६	६३	११	१०	२०	३३	३७	४	४७	११	६	५९	४३
६	र.	१०	२४	५०	२०	३	६	४८	२५	२१	३५	८	१	१	३२	८५	१५	१	१८	३१	१२	५	४०	१०	७	५१	५७	६३	०	१०	२०	३८	२४	४	५२	११	६	५६	३२
७	सो.	११	८	५७	४३	३	६	२६	५०	२२	५	८	२	२६	४७	८५	४७	१	१८	२५	३२	५	२८	१०	८	५४	५७	६२	४०	१०	२०	४३	१६	४	५८	११	६	५३	२१
८	मं.	११	२३	६	३५	३	६	४	४५	२२	२६	८	३	५२	३४	८६	१८	१	१८	२०	४	५	१५	१०	९	५७	३७	६२	२०	१०	२०	४८	१४	५	५	११	६	५०	१०
९	बु.	०	७	१५	२१	३	५	४२	१९	२२	४९	८	५	१८	५२	८६	४३	१	१८	१४	४९	५	५	१०	१०	५९	५७	६२	२	१०	२०	५३	१९	५	११	११	६	४७	०
१०	गु.	०	२१	२३	४३	३	५	१९	३०	२३	३	८	६	४५	३५	८७	५	१	१८	९	४८	४	५४	१०	१२	१	५९	६१	३९	१०	२०	५८	३०	५	१८	११	६	४३	४९
११	शु.	१	५	३५	१४	३	४	५६	२७	२३	२२	८	८	१२	४०	८७	३९	१	१८	४	५०	४	४५	१०	१३	३	३८	६१	२४	१०	२१	३	४८	५	२३	११	६	४०	३८
१२	श.	१	१९	२१	३२	३	४	३३	५	२३	३८	८	९	४०	१९	८७	५७	१	१८	०	५	४	३८	१०	१४	५	२	६१	०	१०	२१	९	११	५	२९	११	६	३७	२७
१४	र.	२	३	७	४८	३	४	९	२७	२३	५१	८	११	८	१६	८८	२६	१	१७	५५	२७	४	३०	१०	१५	६	२	६०	४२	१०	२१	१४	४०	५	३६	११	६	३४	१६
१५	सो.	२	१७	४३	२४	३	३	४५	३६	२४	०	८	१२	३६	४२	८८	५१	१	१७	५०	५७	४	२१	१०	१६	६	४४	६०	९	१०	२१	२०	१६	५	४१	११	६	३१	६

पं.३६ पौष शुक्ल ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६४७ अयनांशाः २४/११/२५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	३	८	१	१०	१०	११	५
२२	२३	६	३	१८	९	२०	६	६
२९	६	४	५२	२०	५७	४८	५०	५०
२९	३५	४५	३४	४	३७	१४	१०	१०
६१	७६०	२२	८६	४५	६२	५	३	३
२३	५	२६	१८	१५	२०	५	११	११



भौमादीनां चारः
भौमः-(वक्री) पुष्ये कर्क राशौ। बुधः-वृश्चिके तिथि ५ शनितः धनु राशौ दिवा १२।३० वादने। गुरुः-रोहिण्यां वृषराशौ। शुक्रः-कुम्भ राशौ। शनिः-पू.भा.१ चरणे कुम्भ राशौ। राहुः-उ.भा.२ चरणे केतुश्च-उ.फा.४ चरणे तिथि ११ शुक्रतः राहु उ.भा. १ चरणे केतुश्च उ.फा. ३ चरणे।

फलम्– त्रयोदशी तिथि का क्षय हो जाने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। शुक्ल पक्ष में तिथि का घटना अशुभ फलकारक होता है। उ.षा. नक्षत्र मकर राशि का चन्द्रदर्शन मु.४५ बाजार में फल दूध, छेना, सब्जी का भाव सस्ता रहेगा तथा सुगमता से प्राप्त होगा। पौष का महीना एवं घने कोहरे पाला का सम्बन्ध प्राकृतिक है। पूरा उत्तर भारत इसकी चपेट में आ जायेगा एवं सर्दी भयंकर पड़ेगी। नवीन मत के अनुसार **गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती ५ जनवरी** रविवार को मनाई जायेगी एवं प्राचीन **मतानुसार ६ जनवरी** सोमवार को पड़ेगी। (पौष शुक्ल सप्तमी तिथि के अनुसार) **पुत्रदा एकादशी व्रत** का मान सबके लिये १० जनवरी शुक्रवार को होगा। पुत्र की कामना से **शनि प्रदोष व्रत** का मान ११ जनवरी को होगा। स्नानदान एवं व्रत सहित **पौषी पूर्णिमा १३ जनवरी** सोमवार को होगी। पौष शुक्ल पूर्णिमा के दिन शाकम्भरी जयन्ती मनाई जाती है। आज के दिन शाकम्भरी पीठ में विशेष पूजा-अनुष्ठान किया जाता है। **पौष** □

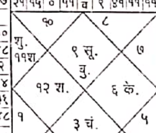
पौष शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत / ति.वा.	१ मं. घं.	मि.	२ बु. घं.	मि.	३ गु. घं.	मि.	४ शु. घं.	मि.	५ श. घं.	मि.	६ र. घं.	मि.	७ सो. घं.	मि.	८ मं. घं.	मि.	९ बु. घं.	मि.	१० गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	१५ सो. घं.	मि.
धनु	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	९	७	५	७	१	६	५७
मकर	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२
कुम्भ	११	४	११	०	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३
मीन	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१
मेष	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०
वृष	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१७
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मिथुन	६	२१	६	१७	६	१३	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०
कर्क	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८
सिंह	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१४	१०	१०	१०	६	१०	२
कन्या	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४
तुला	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३९	२	३५	२	३१
वृश्चिक	५	३९	५	३५	५	३१	५	२७	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५२	४	४८

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ भौमे**–पूर्वाषाढ़ायाम् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, इष्टिकादहनं धान्यस्थापनं, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि २ बुधे**–उत्तराषाढ़ायाम्-रात्रौ गर्भाधानं ल.६ जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं विपणि व्यापारः, हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदन, वृक्षारोपणं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं दक्षिण पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ३ गुरौ**–श्रवणे-पुंसवनं सीमन्तः अन्नप्राशन क्रय-विक्रयः हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यच्छेदन, कणमर्दनं, शय्यासनाद्युपभोगं आवेदनपत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म वाहन क्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ४ शुक्रे**–धनिष्ठायां भद्रापूर्व रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि ५ शनौ**–शतभिषायां शस्त्रघटनं कृष्ण वस्त्र धारणं। **तिथि ६ रवौ**–पूर्वाभाद्रपदे प्रसूति स्नानं धान्यस्थापनं, जलयन्त्र कर्म मुकदमा कार्य इष्टिका दहनं मीन चन्द्रे उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ७ सोमे**–उत्तराभाद्रपदे भद्रापूर्व आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नाप्राशनं, विपणि व्यापारः, आभूषण निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं बीजवपन धान्यच्छेदनं, नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः, सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन 0 पत्र लेखनं, उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ८ भौमे**–रेवत्यां पुंसवनं सीमन्तः, प्रसूति स्नानं लालवस्त्र धारणं, अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ९ बुधे**–अश्विन्यां रोग विमुक्त स्नानं। रिक्तोत्तरे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १० गुरौ**–भरण्यां धान्यच्छेदनं शय्यासनाद्युपभोगं कृत्तिकायां गवां क्रय विक्रय। **तिथि ११ शुक्रे**–भद्रात्परं कृत्तिकायां गवां क्रय विक्रयः धान्यच्छेदनं रोहिण्यां रात्रौ गर्भाधानं ल.६ आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म, विपणि व्यापारः, हलप्रवहणं, बीजवपनं कणमर्दन, वृक्षारोपणं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि १२/१३ शनौ**–रोहिण्यां नीलमादि रत्नकृष्ण वस्त्र धारणं शस्त्र घटनं। **तिथि १४ रवौ**–मृगशिरायां रिक्तायां रोगविमुक्त स्नानं आर्द्रायाम् उग्रकर्माचरणं। **तिथि १५ सोमे**–भद्रात्परं पुनर्वसौ लालवस्त्र धारणं शस्त्रधारणं, शल्यकर्म वाहन क्रयः पश्चिम दिग् यात्रा।

पं.३८ पौष शुक्ल १५ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६५३ अयनांशाः २४/११/२६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	३	८	१	१०	१०	११	५
२८	१७	३	१२	१७	१६	२१	६	६
३७	४३	४५	३६	५०	६	२०	३१	३१
४१	२८	३६	४२	५७	४४	१६	६	६
६१	८१६	२४	८८	४/२१/व	६०	५	३	३
२१	१५	०	५१		९	४१	११	११



□ **शुक्ल अष्टमी ७ जनवरी** मंगलवार से प्रारम्भ हुआ एक विशिष्ट मान्यता के अनुसार **शाकम्भरी नवरात्र** के रूप में मानते हुए पौष शुक्ल पूर्णिमा को समाप्त हो जाता है। यह शाकम्भरी पीठ का नवरात्र है। पौष शुक्ल पूर्णिमा १३ जनवरी से प्रयाग का कल्पवास, माघ स्नान दान नियम संयम प्रारम्भ हो जायेगा। **इस वर्ष प्रयाग में महाकुम्भ** लग रहा है। अतः अखाड़े अपनी-अपनी परम्परा एवं मान्यता के अनुसार प्रयाग में जुट जायेंगे एवं महाकुम्भ से सम्बन्धित स्नान करेंगे। **उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का सूर्य ११ जनवरी** शनिवार को दिन ९।१२ बजे से आवेगा। अंग्रेजी तारीख के अनुसार **स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती १२ जनवरी** रविवार को मनाई जायेगी। गेहूँ, जौ, चावल, चाँदी तथा सभी प्रकार के धातु इमारती सामान (बिल्डिंग मैटेरियल) का भाव बहुत चढ़ जायेगा। सरसों के भाव में तथा पीपलमूल किराना लाख चपड़ी के भाव भी तेज चलेंगे। हाड़ कँपा देने वाली सर्दी से जन-जीवन प्रभावित रहेगा।

राशिफल

राशि	फल
मेष-	पापबुद्धिः
वृष-	रोगभयं
मिथुन-	गमनम्
कर्क-	रिपुनाशः
सिंह-	दैन्यम्
कन्या-	रोगं
तुला-	सुखम्
वृश्चिक-	हानिः
धनु-	स्थान परिवर्तनं
मकर-	द्रव्यनाशः
कुम्भ-	चिन्ताप्तिः
मीन-	सौख्यं

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ माघ कृष्ण पक्षः।

याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः। मकरार्कतः सौम्यायनं शिशिर ऋतुः।
दि.१४ - २९ जनवरी सन् २०२५ ई. (राष्ट्रीय पौष २४ - माघ ९)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. द- अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	
२६	२५	१	मंगल	५१	३२	रात	३	२०	पुनर्वसु	९	२३	दिन	१०	२८	विष्कुम्भ	५२	२०	रात	३	३९	बा	२१	५८	को	५१	३२	स्थिर	१४	१	२९	२४				६	४३	५	१७	२१	१४	८	२९	३९	२	६१	२०	+	६	५	५३	फसली माघ मासारम्भः। 'माघे मूलिकाम्त्यजेत्।' ⊙सं.मकर राशौ रविः२०।३६(दि.२।५८)। मु.३० समा समता करम्। पूर्वा परा:२० वा४० घट्यः पुण्याः उत्तरायणे रविः निरयन(क)
२६	२८	२	बुध	५१	५६	रात	३	२८	पुष्य	१०	१९	दिन	१०	५०	प्रीति	४९	३५	रात	२	३२	ते	२१	४४	गर	५१	५६	मातंग	१५	२	१	२५				६	४२	५	१८	२१	१४	९	०	४०	२२	६१	१९	+	६	६	५४	सौर माघ मासारम्भः। मृत्युबाणः १९।२० (दि.२।२६) उ.। बुध-भद्रा सिद्धयोगः ५१।५६ (रा.३।२८) या.। (ख) पूर्वदिशायाम् बुधास्तः।
२६	२९	३	गुरु.	५३	४०	रात	४	१०	श्लेषा	१२	३१	दिन	११	४२	आयुष्मान	४७	५५	रात	१	५२	व	२२	४८	वि	५३	४०	अमृत	१६	३	२	२६	सिंह	१२	३१	६	४२	५	१८	२१	२	९	१	४१	४१	६१	१९	+	७	७	५२	सिंहराशि दिवाः ११।४२ वादने। भद्रा २२।४८ (दि.३।४९) उ. ५३।४० (रा.४।१०) या. (मर्त्ये)। मृत्युबाणः १८।० (दि.१।१४) या.। यायि (मुहइ) जयद् योगः १२।३१ (दि.११।४२)या.।(ख)
२६	३२	४	शुक्र	५६	३१	रात	५	१७	मघा	१६	०	दिन	१	५	सौभाग्य	४७	३	रात	१	३०	बव	२५	५	बा	५६	३१	काण	१७	४	३	२७				६	४२	५	१८	२०	५२	९	२	४३	०	६१	१८	+	७	८	४८	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदय (रा.८।४८) वादन चन्द्राय अर्घ्यम्। 'गणेश चौथ इति लोक प्रसिद्धम्।' अद्य गणेशोत्पत्तिः। तिलकुटी ४। वक्रतुण्ड चतुर्थी ४।(ग)
२६	३४	५	शनि.	६०	०	स	म	स्त	पूर्वाफा.	२०	३७	दिन	२	५५	शोभन	४७	१०	रात	१	३३	को	२८	३३	ते	६०	०	लुम्बक	१८	५	४	२८	कन्या	३७	२	६	४१	५	१९	२०	४०	९	३	४४	१८	६१	१७	+	८	९	३९	कन्याराशिः रात्रि ९।३० वादने। यायि (मुहइ) जयद् योगः २०।३७ (दि.२।५५) उ.। (ग) 'माघ कृष्ण चतुर्थ्यां तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।'
२६	३६	५	रवि.	०	३४	प्रातः	६	५५	उत्तराफा.	२६	१०	सायं	५	९	अतिगण्ड	४७	५६	रात	१	५१	ते	०	३४	गर	३२	५९	मित्र	१९	६	५	२९				६	४१	५	१९	२०	२८	९	४	४५	३५	६१	१७	+	८	१०	३०	सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। रवि हस्त सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो २६।१० (सा.५।९) उ.। यायि (मुहइ) जयद् योगः ०।३४ (प्रातः ६।५५) या.। रवियोगः २६।१० (सा.५।९) उ.।
२६	३८	६	सोम	५	२३	दिन	८	४९	हस्त	३२	२३	रात	७	३७	सुकर्मा	४९	१०	रात	२	२०	व	५	२३	वि	३८	३	वज्र	२०	७	६	३०				६	४०	५	२०	२०	१५	९	५	४६	५२	६१	१६	+	८	११	२१	भद्रा ५।२३ (दि.८।४९) उ. ३८।३ (रा.९।५३) या. (पाताले)। ⊙अभिजित प्रवेशे रविः रात्रि ३।५० वादने। रवियोगः ३२।२३ (रा.७।३७) या.। यायि (मुहइ) जयद् योगः ५।२३(घ)
२६	४०	७	मंगल	१०	४४	दिन	१०	५८	चित्रा	३८	५७	रात	१०	१५	धृति	५०	३२	रात	२	५३	बव	१०	४४	बा	४३	२७	ध्वांक्ष	२१	८	७	१	तुला	५	४५	६	३९	५	२१	२०	२	९	६	४८	९	६१	१६	+	९	१२	१३	तुलाराशिः दिवा ८।५७ वादने। सर्वाप्ति सप्तमी७। स्वामी रामानन्दाचार्य जयन्ती ७। स्वामी विवेकानन्द जयन्ती ७ (तिथिमतानुसारेण)। राष्ट्रीय माघ मासारम्भः। शुभाशुभद्वय(ङ)
२६	४३	८	बुध	१६	१०	दिन	१	७	स्वाती	४५	२५	रात	१२	४९	शूल	५१	४६	रात	३	२१	को	१६	१०	ते	४८	४२	धूम्र	२२	९	८	२				६	३९	५	२१	१९	४९	९	७	४९	२४	६१	१५	+	९	१	६	अन्वष्टका श्राद्धम् ८। बुधाष्टमी पर्वः सूर्य ग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय। (ङ) पुण्यकरः द्विपुष्करयोगः १०।४४ (दि.१०।५८) या.।
२६	४५	९	गुरु	२१	१३	दिन	३	९	विशाखा	५१	१७	रात	३	१०	गण्ड	५२	३५	रात	३	४१	गर	२१	१३	व	५३	२३	प्रवर्धमान	२३	१०	९	३	वृश्चिक	३४	५४	६	३८	५	२२	१९	३५	९	८	५०	३९	६१	१४	+	९	२	२	वृश्चिक राशिः रात्रि ८।३५ वादने। भद्रा ५३।२३ (रा.३।५९) उ. (स्वर्ग)। नेताजी सुभाष चन्द्र जयन्ती। सर्वार्थसिद्धियोगः ५१।१७ (रा.३।१०) उ.।
२६	४८	१०	शुक्र	२५	३३	दिन	४	५१	अनुराधा	५६	२७	रात	५	१३	वृद्धि	५२	४४	रात	३	४४	वि	२५	३३	बव	५७	१२	राक्षस	२४	११	१०	४				६	३८	५	२२	१९	२१	९	९	५१	५३	६१	१३	+	९	३	०	भद्रा २५।३३ (दि.४।५१) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः ५६।२७ (रा.५।१३) या. ⊙ श्रवण नक्षत्रे रविः ८।१० (दि.९।५४) ⊙अभिजिन्निवृत्तो रविः रात्रि शेष ५।३० वादने। मृत्युबाणः ८।१०(दि.९।५४)उ.
२६	५०	११	शनि.	२८	५१	सायं	६	१०	ज्येष्ठा	६०	०	स	म	स्त	ध्रुव	५२	१	रात	३	२६	बा	२८	५१	को	५९	५७	मुसल	२५	१२	११	५				६	३७	५	२३	१९	७	९	१०	५३	६	६१	१२	+	१०	३	५८	षट्तिला एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। 'तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिल होमी तिलोदकी। तिलदाता च भोक्ता च षट्तिला पापनाशिनी।' मृत्युबाणः ६।५४ (दि.९।२३) या.।
२६	५३	१२	रवि.	३१	४	रात	७	३	ज्येष्ठा	०	२८	प्रातः	६	४९	व्याघात	५०	२४	रात	२	४७	ते	३१	४	गर	६०	०	काण	२६	१३	१२	६	धनु	०	२८	६	३७	५	२३	१८	५२	९	११	५४	१८	६१	११	+	१०	४	५५	धनुराशिः प्रातः ६।४९ वादने। तिल द्वादशी १२। अत्र तिलोत्पत्तिः। सर्वार्थसिद्धियोगः ०।२८ (प्रातः ६।४९) उ.। भारतीय गणतन्त्र दिवसः। सर्वत्र ध्वजोत्तोलनम् विविधोत्सवः।
२६	५६	१३	सोम.	३१	५१	रात	७	२१	मूल	३	१९	दिन	७	५६	हर्षण	४७	४५	रात	१	४२	गर	१	२७	व	३१	५१	लुम्बक	२७	१४	१३	७				६	३७	५	२२	१८	३७	९	१२	५५	२९	६१	१०	+	१०	५	४९	भद्रा ३१।५१ (रा.७।२१) उ. (पाताले)। सोम प्रदोष व्रतम् १३। पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। मासशिवरात्रि व्रतम् १३। (च) वाहिनी गंगायाम् स्नानम्। मन्वादिः ३०। युगादिः ३०। त्रिवेणी
२६	५८	१४	मंगल	३१	२३	रात	७	१०	पूर्वाषाढ़ा	४	५३	दिन	८	३३	वज्र	४४	७	रात	१२	१५	वि	१	३७	श	३१	२३	मित्र	२८	१५	१४	८	मकर	२०	०	६	३६	५	२४	१८	२१	९	१३	५६	३९	६१	९	+	११	+	+	मकरराशिः दिवा २।३६ वादने। भद्रा १।३७ (दि.७।१५) या.। स्थायी (मुद्दालह) जयद् योगः ४।५३ (दि.८।३) या.। अमावस्या (उड़ीसा)। शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।
२७	१	३०	बुध	२९	४२	रात	६	२८	उत्तराषाढ़ा	५	१४	दिन	८	४०	सिद्धि	३९	२५	रात	१०	२५	च	०	३३	ना कि	२९ ५८	४१ १८	वज्र	२९	१६	१५	९				६	३६	५	२४	१८	६	९	१४	५७	४८	६१	८	+	११	+	+	स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा। मौनी अमावस्या ३०। मौन व्रताचारेण स्नानम् विधेयम्। कुम्भपर्वस्य मुख्य स्नानम्। प्रयाग त्रिवेणी, काश्यां दशाश्वमेध वा पश्चिम(च)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.		स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	मं.	३	१	६	१२	३	३	२१	६	२४	०	८	१४	५	३३	८९	३६	१	१७	४६	३६	४	११	१०	१७	६	५३	५९	३८	१०	२१	२५	५७	५	४३	११	६	२७	५५
२	बु.	३	१४	१४	४०	३	२	५७	३६	२३	५२	८	१५	३५	१	९०	१७	१	१७	४२	२५	४	०	१०	१८	६	३१	५८	४०	१०	२१	३१	४०	५	४५	११	६	२४	४४
३	गु.	३	२७	८	३१	३	२	३३	४४	२३	४४	८	१७	५	२६	९०	४८	१	१७	३८	२५	३	५१	१०	१९	५	११	५८	०	१०	२१	३७	२५	५	४८	११	६	२१	३३
४	शु.	४	९	४६	५०	३	२	१०	०	२३	३९	८	१८	३६	१४	९१	२५	१	१७	३४	३४	३	३८	१०	२०	३	११	५७	२५	१०	२१	४३	१३	५	५०	११	६	१८	२२
५	श.	४	२२	११	१५	३	१	४६	२१	२३	३३	८	२०	७	३९	९१	५६	१	१७	३०	५६	३	२६	१०	२१	०	३६	५७	१०	१०	२१	४९	३	५	५२	११	६	१५	११
५	र.	५	४	२४	३७	३	१	२२	४८	२३	२७	८	२१	३९	३५	९२	१०	१	१७	२७	३०	३	१३	१०	२१	५७	४६	५६	४५	१०	२१	५४	५४	५	५४	११	६	१२	०
६	सो.	५	१६	३०	९	३	०	५९	२१	२३	२०	८	२३	११	४५	९२	४९	१	१७	२४	१७	३	३	१०	२२	५४	३१	५६	२२	१०	२२	०	४८	५	५६	११	६	८	५०
७	मं.	५	२८	३०	४४	३	०	३६	१	२३	११	८	२४	४४	३४	९३	११	१	१७	२१	१४	२	४९	१०	२३	५०	५३	५५	५८	१०	२२	६	४४	५	५९	११	६	५	३९
८	बु.	६	१०	३४	२८	३	०	१२	५०	२२	५४	८	२६	१७	४५	९३	५०	१	१७	१८	२५	२	३७	१०	२४	४६	५१	५५	३०	१०	२२	१२	४२	६	३	११	६	२	२८
९	गु.	६	२२	४४	११	२	२९	४९	५६	२२	३५	८	२७	५१	३५	९४	३७	१	१७	१५	४८	२	२६	१०	२५	४२	२१	५५	०	१०	२२	१८	४६	६	५	११	५	५९	१७
१०	शु.	७	५	२	११	२	२९	२७	२१	२२	१२	८	२९	२६	१२	९५	९	१	१७	१३	२२	२	८	१०	२६	३७	२१	५४	३१	१०	२२	२४	५१	६	८	११	५	५६	६
११	श.	७	१७	३४	४२	२	२९	५	९	२१	५९	९	१	१	२१	९५	४४	१	१७	११	१४	१	५६	१०	२७	३१	५२	५३	५९	१०	२२	३०	५९	६	१२	११	५	५२	५५
१२	र.	७	२९	३६	५४	२	२८	४३	१०	२१	३३	९	२	३७	५	९६	६	१	१७	९	१८	१	४७	१०	२८	२५	२१	५३	१९	१०	२२	३७	११	६	१५	११	५	४९	४४
१३	सो.	८	११	२२	१७	२	२८	२१	३७	२१	१३	९	४	१३	११	९६	४७	१	१७	७	३२	१	३५	१०	२९	१७	४०	५१	२	१०	२२	४३	२६	६	१७	११	५	४६	३३
१४	मं.	८	२५	२०	४०	२	२८	०	२४	२०	५९	९	५	४९	५८	९७	४०	१	१७	५	५६	१	२८	११	०	८	४२	४९	३८	१०	२२	४९	४३	६	२०	११	५	४३	२२
३०	बु.	९	८	२६	११	२	२७	३९	२५	२०	३२	९	७	२७	३८	९८	४	१	१७	४	२८	१	१५	११	०	५८	२०	४९	२५	१०	२२	५६	३	६	२१	११	५	४०	११

फलम्– पंचमी तिथि की वृद्धि हो जाने से यह पक्ष १६ दिन का हो गया है। पक्षारम्भ १४ जनवरी मंगलवार को **भगवान भास्कर मकर राशि** में दिन २।५८ बजे से प्रवेश कर जायेंगे और इसी के साथ **खरमास समाप्त** हो जायेगा। यही **मकर संक्रान्ति** तथा **खिचड़ी का पर्व** है। इसका पुण्यकाल दिनभर रहेगा। स्नान-दान के लिये यह पर्व अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। सर्वत्र गंगा नदी, अन्यत्र नदी तीर्थ एवं कुँआ सरोवर में स्नान किया जायेगा। ऊनी वस्त्र, दुशाला, कम्बल, जूता, धार्मिक पुस्तकें विशेषकर **पंचांग** का दान विशेष पुण्यफलकारक होता है। इस पर्व को पूरे देश में अपने स्थानीय रीति एवं परम्परा के अनुसार मनाया जाता है। इस वर्ष तो प्रयाग में महाकुम्भ भी लगा है। अतः शाही स्नान भी होगा। **गणेश चौथ** के नाम से प्रचलित **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत १७ जनवरी** शुक्रवार को होगा। गणितागत चन्द्रोदय का समय काशी में ८।४८ बजे है। अतः उसके बाद चन्द्रमा के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाने पर इस व्रत का पूजन एवं अर्घ्य का कार्य सम्पन्न होगा। आज के दिन गणेश जी की उत्पत्ति मानी गयी है। इसे तिलकुटी एवं वक्रतुण्ड चतुर्थी भी कहते हैं। पुत्र की दीर्घायु की कामना से मातायें इसे श्रद्धा एवं विश्वास के साथ करती हैं। सर्वाप्ति **सप्तमी-स्वामी रामानन्दाचार्य जयन्ती** एवं तिथि मत से स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती २१ जनवरी मंगलवार को मनाई जायेगी। **नेताजी सुभाष चन्द्र बोस** की जयन्ती २३ जनवरी गुरुवार को मनाई जायेगी। **षट्तिला एकादशी व्रत** का मान सबके लिये २५ जनवरी शनिवार को होगा। इसमें तिल से स्नान, भोजन में तिल का प्रयोग एवं तिल का दान सभी प्रकार के पापों को नष्ट कर देता है।○

पं.३९ माघ कृष्ण ८ बुधे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६६२
अयनांशाः २४/११/२७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	३	८	१	१०	१०	११	५
७	१०	०	२६	१७	२४	२२	६	६
४९	३४	१२	१७	१८	४६	१२	२	२
२४	२८	५०	४५	२५	५९	४३	२८	२८
६१	७२२	२२	९३	२ ३७	५५	६	३	३
१५	२०	५४	५०	व	३०	३	११	११



भौमादीनां चारः
भौमः-(वक्री) ति.१ भौमतः वक्र गत्या पुनर्वसु ४ चरणे दिवा ७ वादने। ति.२ गुरुतः मिथुने सायं ६।१५ वादने। बुधः-धनु राशौ १० गुरुतः मकरे दिवा २।२० वादने। गुरुः-(वक्री) रोहिण्यां वृष राशौ। शुक्रः- कुम्भ राशौ १३ सोमतः मीने रात्रि १२।२० वादने। शनिः- पू.भा.१ चरणे कुम्भ राशौ। राहुः-उ.भा.१ चरणे केतुश्च- उ.फा.३ चरणे।

माघ कृष्ण

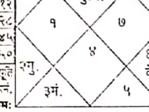
दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१मं. घं.	मि.	लग्नांत ति.वा.	२बु. घं.	मि.	३गु. घं.	मि.	४शु घं.	मि.	५श. घं.	मि.	५र. घं.	मि.	६सो घं.	मि.	७मं. घं.	मि.	८बु. घं.	मि.	९गु. घं.	मि.	१०शु. घं.	मि.	११श. घं.	मि.	१२र. घं.	मि.	१३सो. घं.	मि.	१४मं घं.	मि.	३०बु. घं.	मि.
धनु	६	५२	मकर	८	३४	८	३०	८	२६	८	२३	८	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९
मकर	८	३८	कुम्भ	१०	५	१०	१	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०
कुम्भ	१०	९	मीन	११	३३	११	२९	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८
मीन	११	३७	मेष	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७
मेष	१	१६	वृष	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२२	२	१८	२	१४
वृष	३	१३	मिथुन	५	२२	५	१८	५	१४	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७
रा.	रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मिथुन	५	२६	कर्क	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५
कर्क	७	४४	सिंह	९	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९
सिंह	९	५८	कन्या	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	१२
कन्या	१२	१०	तुला	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८
तुला	२	२७	वृश्चिक	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५
वृश्चिक	४	४४	धनु	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०

विविध मुहूर्त्ताः तिथि १ भौमे–पुनर्वसौ-पुष्ये पुंसवनं सीमन्तः प्रवाल रत्न लालवस्त्र धारणं, दत्तक पुत्रग्रहणं, उग्रकर्माचरणं, शल्यकर्म पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि २ बुधे**–पुष्य नक्षत्रे-जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डन ल.१२** (उ.दा.) अक्षरारम्भः विद्यारम्भः, **उपनयनं ल.१२ या १** (श्लेषायामपि) दीक्षाग्रहण इक्षुवपनं **गृहारम्भः ल.११ सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशय वाटिकारम्भः** पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्वदिग गमनं। **तिथि ३ गुरौ**–भद्रा दिवा ३।४९ वादनात्पूर्वं श्लेषायां विद्यारम्भः **उपनयनं ल.१**, धान्यच्छेदनं जलयन्त्र कर्म दिवा ११।४२ वादनात्परं मघायां **वर वरणं–कन्या वरणं वधूप्रवेश ल.१२** दीक्षाग्रहणं जलयन्त्र कर्म, शय्यासनाद्युपभोगं, उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ४ शुक्रे**–मघायां-रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ५ शनौ**–पूर्वाफाल्गुन्यां रससंघटनं उत्तराफाल्गुन्यां नीलमादि रत्नकृष्ण वस्त्र धारणं। **तिथि ५ रवौ**–उत्तराफाल्गुन्यां हस्त नक्षत्रे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं अक्षरारम्भः विद्यारम्भः वरवरणं कन्यावरणं विपणिव्यापारः, दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं, इक्षुवपनं, रसधारणं आवेदनपत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म **सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः** वाहनक्रयः हस्त नक्षत्रे सर्व दिग् यात्रा। **तिथि ६ सोमे**–भद्रा दिवा ८।४९ वादनात्पूर्वं हस्त नक्षत्रे आ.प्रसूति स्नानं (ति.दा.) जातकर्म नामकरणं कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं अक्षरारम्भ विद्यारम्भ **वरवरणं कन्या वरणं वधूप्रवेशः** दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं इक्षुवपनं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ७ भौमे**–चित्रायां लाल वस्त्र धारणं, हलप्रवहणं, दत्तकपुत्र ग्रहणं रात्र १०।१५ वादनात्परं स्वात्यां शल्यकर्म, पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ८ बुधे**–स्वात्यां रिक्ता दिवा १।७ वादनात्पूर्वं नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेध कन्यानासिकाच्छेदनं **आ.चौल मुण्डनं** (ति.दा.) अक्षरारम्भ विद्यारम्भ, वरवरणं-कन्या वरणं, दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं, इक्षुवपनं, धान्यच्छेदनं, **आ.गृहप्रवेशः** (ति.दा. श.दा. न). **सर्वदेव प्रतिष्ठा** पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ९ गुरौ**–रिक्तायां योग विमुक्त स्नानं रिक्तोत्तरे विशाखायां इष्टिका दहनं रसस्थापनं उग्रकर्माचरणं। भद्रा रात्रि ३।५९ वादनात्परं अनुराधायां **गृहप्रवेशः** रा.८ **या ९**। **तिथि १० शुक्रे**–भद्रा दिवा ४।५१ वादनात्परं अनुराधायां-□

पं.४० माघ कृष्ण ३० बुधे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६६९
अयनांशाः २४/११/२८

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	२	९	१	११	१०	११	५
१४	८	२७	७	१७	०	२२	५	५
५७	२६	३९	२७	४	५८	५६	४०	४०
४८	११	२५	३८	२८	२०	३	११	११
६१	७५	२०	९८	१ १५	४९	६	३	३
८	३०	३२	४	व	११	२१	११	११



(क)सौम्यायनं। शिशिर ऋतु प्रारम्भः। **खरमास समाप्तिः।** मकर संक्रान्ति (खिचड़ी) पर्वः। पोंगल (द.भा.) बिहू (आसाम) देवानाम् दिनम् दैत्यानाम् च रात्रि प्रारम्भः। तिल चावल मृत्पमोदक कम्बल उपानह आदि दानम्। गंगा सागरे प्रयागे त्रिवेणी काश्यां दशाश्वमेधे गोदावर्याम् च स्नानम्। (घ) ५।२३ (दि.८।४९)उ. ३२।२३ (रा.७।३७) या.।

○ **पुत्र की कामना से सोमप्रदोष का व्रत २७ जनवरी** को किया जायेगा एवं आज ही महानिशा में चतुर्दशी तिथि मिलने के कारण **मासशिवरात्रि व्रत** भी किया जायेगा। सोम **प्रदोष** के साथ **मास शिवरात्रि** का संयोग शिवपूजन के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा। **माघ की अमावस्या को मौनी अमावस्या** के रूप में माना जाता है और इसका मान **२९ जनवरी** बुधवार को होगा। महत्वपूर्ण सूचना यह है कि प्रत्येक १२ वर्ष के अन्तराल पर मेष अथवा वृष राशि के गुरु और मकर राशि के सूर्य के संयोग में प्रयाग का महाकुम्भ पर्व लगता है। विश्वविख्यात इस पर्व का **मुख्य स्नान २९ जनवरी** बुधवार को होगा। शासन प्रशासन की कुशल व्यवस्था के साथ करोड़ों लोग प्रयाग के संगम तट पर शाही स्नान के बाद स्नान करेंगे। आज के दिन मौन रहकर गंगा स्नान किया जाता है। प्रयाग के संगम तट के साथ जहाँ भी गंगा जी पश्चिम वाहिनी हुई हैं वहाँ का स्नान विशेष पुण्यफलदायक होता है। काशी एवं चन्दौली के बलुआ चन्द्रावतीघाट में भी गंगा पश्चिम वाहिनी हुई है अतः वहाँ का स्नान भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। श्रवण नक्षत्र का सूर्य २४ जनवरी शुक्रवार को दिन ९।५४ बजे से आयेगा। बादल-बदली एवं वर्षा होने के योग मिल रहे हैं।

□ गर्भाधानं रात्रौ लग्नं ६ आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, कर्णवेध, कन्यानासिकच्छेदनं, अक्षरारम्भः विद्यारम्भः वरवरणं, कन्यावरणं **वधूप्रवेश ल.गोधूलि**, विपणिव्यापारः दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं इक्षुवपनं, सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं, दत्तक पुत्रग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं, भूमिक्रयः **गृहप्रवेशः ल.गोधूलि वा ६, सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशयवाटिकारम्भः ल.गोधूलि** वाहनक्रय, दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ११ शनौ**–ज्येष्ठायां-उग्रकर्माचरणं। **ति.१२ रवौ**–ज्येष्ठा प्रातः ६।४९ वादनात्परं मूले विद्यारम्भः **वरवरणं कन्यावरणं** दीक्षाग्रहणं, लालवस्त्रधारणं कर्णमर्दनं जलयन्त्रकर्म मुकदमा कार्य, शल्यकर्म (प्रातः), पूर्व दिग् यात्रा। **ति.१३ सोमे**–मूल ७।२१ वादनात्परं पूर्वाषाढायाम् आ.प्रसूति स्नानं भद्रा रात्रि ७।५१ वादनात्पूर्वं **वरवरणं कन्यावरणं**, दीक्षाग्रहणं, धान्यच्छेदनं जलयन्त्र कर्म, उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि १४ भौमे**–भद्रा रिक्ता व्याप्तिः **तदुपरान्त मासान्तः।**

विवाह मुहूर्त विमर्शः

तिथि ३ गुरौ–दिवा ११।४२ वादनात्परं तथा भद्रा दिवा ३।४९ वादनात्पूर्वं मघायां रेखा ८ दिवा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं २ पंचेष्टाभावः। भद्रा रात्रि ४।१० वादनात्परं लग्नं ९ पंचेष्टाभावः।
तिथि ४ शुक्रे–मघायां रेखा ८ दिवा लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.२० (चं.क्षा.) वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.२०।
तिथि ५ शनौ–दिवा २।५५ वादनात्परं उ.फा. रेखा ७ लग्नं गोधूलि वा रात्रौ लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१४ वा लग्नं ९ पञ्चेष्टाभावः।
तिथि ५ रवौ–उ.फा. रेखा ७ दिवा लग्नं ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (श.दा.) वा लग्नं १ इष्टाः५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं २ पंचेष्टाभावः। सायं ५।९ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे रेखा ७ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१५ वा ल.८ इ.५ ग्र.व.वि.१४ वा ल.९ पंचेष्टाभावः।
तिथि ६ सोमे-हस्त नक्षत्रे भद्रा व्याप्तिः।
तिथि ७ भौमे–रात्रि १०।१५ वादनात्परं स्वात्यां रेखा ८ लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।।
तिथि ८ बुधे–स्वात्यां रेखा ७ दिवा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.२० वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३।
तिथि ९ गुरौ–रात्रि ३।१० वादनात्परं अनुराधायां पंचेष्ट लग्नाभावः भद्राव्याप्तिः। **तिथि १० शुक्रे**-अनुराधायां भद्रा तथा च मृत्युबाण।
तिथि १२ रवौ–प्रातः ६।४९ वादनात्परं मूल नक्षत्रे २ चरणे भौमवेधः आ.रेखा ६ लग्नं गोधूलि वा रात्रौ लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१४।
तिथि १३ सोमे–मूले प्रातः पंचेष्टाभाव। तत्परं मासान्तः।

राशिफल
मेष- [illegible]
वृष- धर्मावरण
मिथुन- सुख लाभ
कर्क- विपत्ति
सिंह- शोक
कन्या- शुभाय
तुला- पुत्रोन्नति
वृश्चिक- धनान्त
धनु- अर्थलाभ
मकर- धनहानि
कुम्भ- राज्यलाभ
मीन- लाभ

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ माघ शुक्ल पक्षः। सौम्यायनं याम्य गोलः शिशिर ऋतुः। दि.३० जनवरी - १२ फरवरी सन् २०२५ ई. (रा.माघ १० - २३)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा.द. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
२७	४	१	गुरु	२६	५४	सायं	५	२१	श्रवण	४	२४	दिन	८	२१	व्यतीपात	३४	५	रात	८	१३	बव	२६	५४	बा	५५	१	ध्वज	३०	१७	१६	१०	कुम्भ	३३	३१	६	३५	५	२५	१७	४९	९	१५	५८	५६	६१	७	+	११	६	३५
२७	७	२	शुक्र	२३	९	दिन	३	५०	धनिष्ठा शतभिषा	२ ५७	३६ २०	प्रातः	७ ६	३६ ३२	वरीयान	२७	५५	सायं	५	४४	कौ	२३	९	ते	५०	५१	धाता	३१	१८	१७	११				६	३५	५	२५	१७	३३	९	१७	०	३	६१	५	+	११	७	३९
२७	१०	३	शनि	१८	३३	दिन	२	०	पूर्वाभाद्र	५६	३६	रात	५	१२	परिघ	२१	५	दिन	३	०	गर	१८	३३	व	४५	५६	कालदण्ड	१	१९	१८	१२	मीन	४२	२५	६	३४	५	२६	१७	१६	९	१८	१	८	६१	४	+	११	८	४२
२७	१३	४	रवि	१३	२०	दिन	११	५३	उत्तराभाद्र	५२	४८	रात	३	४०	शिव	१३	५०	दिन	१२	५	वि	१३	२०	बव	४०	३०	स्थिर	२	२०	१९	१३				६	३३	५	२७	१६	५९	९	१९	२	१२	६१	३	+	१२	९	४४
२७	१६	५	सोम	७	४१	दिन	९	२६	रेवती	४८	४३	रात	२	१	सिद्ध साध्य	[illegible]	[illegible]	प्रात	[illegible]	[illegible]	बा	७	४१	कौ	३४	४५	मातंग	३	२१	२०	१४	मेष	४८	४३	६	३३	५	२७	१६	४२	९	२०	३	१५	६१	२	+	१२	१०	४७
२७	१९	६ ७	मंगल.	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	अश्विनी	४४	३०	रात	१२	२०	शुभ	५०	२२	रात	२	४१	ते	१	४९	गर व	[illegible]	[illegible]	अमृत	४	२२	२१	१५				६	३२	५	२८	१६	२४	९	२१	४	१७	६१	१	+	१२	११	५२
२७	२२	८	बुध.	५०	१२	रात	२	३६	भरणी	४०	२८	रात	१०	४२	शुक्ल	४२	३७	रात	११	३४	वि	२२	९	बव	५०	१२	काण	५	२३	२२	१६	वृष	५४	३२	६	३२	५	२८	१६	६	९	२२	५	१८	६०	५९	+	१२	१२	५७
२७	२५	९	गुरु.	४४	५२	रात	१२	२८	कृत्तिका	३६	४६	रात	९	१३	ब्रह्म	३५	१०	रात	८	३५	बा	१८	३३	कौ	४४	५२	लुम्बक	६	२४	२३	१७				६	३१	५	२९	१५	४८	९	२३	६	१७	६०	५८	+	१२	२	४
२७	२८	१०	शुक्र.	४०	३	रात	१०	३१	रोहिणी	३३	३५	रात	७	५६	ऐन्द्र	२८	८	सायं	५	४५	ते	१२	२७	गर	४०	३	मित्र	७	२५	२४	१८				६	३०	५	३०	१५	३०	९	२४	७	१५	६०	५७	+	१२	३	८
२७	३१	११	शनि.	३६	५	रात	८	५५	मृगशिरा	३१	१४	रात	६	५९	वैधृति	२१	४१	दिन	३	९	व	८	४	वि	३६	५	वज्र	८	२६	२५	१९	मिथुन	२	२४	६	३०	५	३०	१५	११	९	२५	८	१२	६०	५५	+	१२	४	९
२७	३५	१२	रवि	३२	५८	रात	७	४०	आर्द्रा	२१	४०	रात	६	२१	विष्कुंभ	१५	५६	दिन	१२	५१	बव	४	३१	बा	३२	५८	ध्वांक्ष	९	२७	२६	२०				६	२९	५	३१	१४	५२	९	२६	९	८	६०	५४	+	१२	५	२
२७	३८	१३	सोम	३०	५६	रात	६	५०	पुनर्वसु	२९	१०	सायं	६	८	प्रीति	११	०	दिन	१०	५२	कौ	१	५८	ते	३०	५६	धूम्र	१०	२८	२७	२१	कर्क	१४	१८	६	२८	५	३२	१४	३२	९	२७	१०	२	६०	५२	+	१२	५	४८
२७	४१	१४	मंगल.	३०	७	रात	६	३०	पुष्य	२९	५०	सायं	६	२३	आयुष्मान	७	०	दिन	९	१४	गर	०	३१	व	३०	७	प्रवर्धमान	११	२९	२८	२२				६	२८	५	३२	१४	१३	९	२८	१०	५४	६०	५२	+	१२	+	+
२७	४४	१५	बुध.	३०	३५	रात	६	४१	श्लेषा	३१	४८	रात	७	१०	सौभाग्य	३	५६	दिन	८	१	वि	०	१७	बव	३०	३५	राक्षस	१२	३०	२९	२३	सिंह	३१	४८	६	२७	५	३३	१३	५४	९	२९	११	४५	६०	४९	+	१२	+	+

- कुम्भराशिः रात्रि ७।५९ वादने। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। वल्लभाचार्य जयन्ती १। गुप्त नवरात्रारम्भः गुप्त रूपेण पूजा-साधनाविधेयम्। यायि (मुद्दइ) जयद्योगः ४।२४(क)
- चन्द्र ८ दर्शनम् मु.१५ जघन्या फलम् महर्घताकरम्। सम श्रृंगम् समताकरम्। रवियोगः ५७।२० (रा.शे.६।३२) उ.। (क) (दि.८।२१) उ. २६।५४ (सा.५।२१) या.।
- मीनराशिः रात्रि ११।३२ वादने। भद्रा ४५।५६ (रा.१२।५६) उ. (मर्त्य)। मु.सावान ८ हिजरी सन् १४४६। प्रदोषे कार्यः दुण्ढिराज पूजन दर्शनञ्च। तिल ४, कुन्द चतुर्थी ४।(ख)
- भद्रा १३।२० (दि.११।५३)या.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। सोपपदा ४ वेदारम्भानध्यायः। उमा चतुर्थी ४ व्रतम्। मृत्युबाणः ५६।४८ (रा.शे.५।२६) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः५२।४८(ग)
- मेषराशिः रात्रि २।१ वादने। पंचक (पचखा) समाप्तिः। बसन्त पञ्चमी ५। श्रीपञ्चमी ५। वाणी पूजा, वागीश्वरी जयन्ती। सर्वत्र सरस्वती पूजनोत्सवः। तक्षक पूजा। रतिकाममहोत्सवः।(घ)
- भद्रा ५४।६ (रा.४।५४) उ. (स्वर्ग)। मन्दार षष्ठी ६ (भविष्योत्तरे) दारिद्र्यहरण षष्ठी ६ (स्कन्दपुराण)। शीतला षष्ठी (बंगाल)। क्षयवती सप्तम्यां अचला सप्तमी ७। रथसप्तमी७।(ङ)
- वृषराशिः रात्रि ४।२२ वादने। भद्रा २२।९ (दि.३।२४) या.। भीष्माष्टमी ८। भीष्माय श्राद्धम् तर्पणञ्च सन्तति लाभाय। बुधाष्टमी पर्वः सूर्य ग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय। सर्वार्थसिद्धियोगः(च)
- महानन्दानवमी ९। ब्रह्मनायक श्रीहरसूब्रह्मदेव जयन्ती उत्सवः (चैनपुर, रोहतास) स्थाने मेलोत्सवः दर्शन पूजनम् च। गुप्त नवरात्र समाप्तिः। ⊙ धनिष्ठा नक्षत्रे रविः १३।४८(छ)
- रवियोगः वार्वाहनम्। यमघंटयोगः ३३।३५ (रा.७।५६) या.। (घ) आम्रमञ्जरी भक्षणम्। लेखनी पूजन (बंगाल)। पुष्पाञ्जलि व्रतारम्भः (जैन)। रवियोगः ४८।४३ (रा.२।१) या.।
- मिथुनराशिः प्रातः ७।२८ वादने। भद्रा ८।४ (दि.९।४४) उ. ३६।५ (रा.८।५५) या. (स्वर्ग)। जया एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्। भैमी एकादशी ११। रवियोगः ३१।१४ (रा.६।५९)या.।
- भीष्म द्वादशी १२। भीष्मोद्देशेन श्राद्धम् तर्पणञ्च दीर्घायुलाभाय। वाराहद्वादशी १२। तिल द्वादशी १२ (ब्रह्मपुराण) तिलेन श्रीविष्णु पूजनम्। सोपपदा १२ वेदारम्भानध्यायः। शुभाशुभं(ज)
- कर्कराशिः दिवा १२।११ वादने। सोम प्रदोष व्रतम् १३ पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। कल्पादिः १३। माघ दिन त्रयेऽपिस्नानं विधेयम् पूर्णमासस्य व्रत-स्नान फल प्राप्ति हेतवः। सर्वार्थसिद्धियोगः(झ)
- भद्रा ३०।७ (रा.६।३०) उ. (मर्त्य)। सर्वार्थसिद्धियोगः २१।५० (सा.६।२३) उ.। रवियोगः २१।५० (सा.६।२३) या.। (ग) (रा.३।४०) या.।
- सिंहराशिः रात्रि ७।१० वादने। भद्रा ०।१७ (प्रातः ६।३४) या.। स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। माघी पूर्णिमा १५। राजराजेश्वरी ललिता देवी जयन्ती १५। सन्त(ट)

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

तिथि ३ शनौ–रात्रि शेष ५।१२ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे भद्रा व्याप्ति ततो मृत्युबाणश्च।
तिथि ४ रवौ-भद्रा मृत्युबाणः।
तिथि ५ सोमे–रेवत्यां रेखा ७ दिवा लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.११।। वा लग्नं २ इष्टाः५ ग्र.व.वि.२३।। वा लग्नं गोधूलिः।
तिथि ९ गुरौ–रात्रि ९।१३ वादनात्परं रोहिण्यां रेखा ७ लग्नाभावः।
तिथि १० शुक्रे–रोहिण्यां रेखा ७ दिवा लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र. व.वि.१५।। वा लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१४।। वा लग्नं गोधूलिः वा मृगशिरायां वैधृतिः आ. मृगशिरायां रेखा ६ रात्रिशेषे लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०।
तिथि ११ शनौ–मृगशिरायां रेखा ७ आ.दिवा लग्नं१० इ.५ ग्र.व.वि.१० तत्परं भद्राव्याप्तिः।
तिथि १५ बुधे–रात्रि७।१० वादनात्परं मघायां रेखा ७ लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२(भो.दा.)।

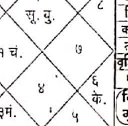
(ख) मृत्युबाणः ५८।० (रा.शे.५।४६) उ.। 'अद्य कुन्द पुष्पैः सदाशिवपूजनम्।' (ङ) आरोग्य सप्तमी ७। अरुणोदये स्नानम्। सूर्यरथोत्सवः। मन्वादिः ७। भौमाश्विनी-सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगो ४४।३० (रा.१२।२०) या.। (च) ४०।२८ (रा.१०।४२) उ.। रवियोगः ४०।२८ (रा.१०।४२) उ.। (छ) (दि.१२।०)। गुरौ पूर्णा सिद्धयोगः ४४।५२ (रा.१२।२८) उ.। (ज) त्रय पुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः २९।४० (रा.६।२१) उ. २२।५८ (रा.७।४०) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ३२।५८ (रा.७।४०) उ.। (झ) २९।१० (सा.६।८) उ.। रवियोगः २९।१० (सा.६।८) उ.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः २९।५० (सा.६।२३) या.। (ट) रविदास जयन्ती १५। शोभायात्रा। काश्यां सीर गोवर्धन जन्मस्थाने महोत्सवः। ⊙ सं.कुम्भ राशौ रविः ४८।१५ (रा.१।४५)। मु.३० रामा रामताकरम्। पराः १६ घट्यः पुण्याः परदिने स्नान-दानादि विधेयम्। गोऽन्न, तिल, अदि दानम्, गोरावर्याम् स्नानम्। माघ स्नान व्रत नियम संयम समाप्तिः। प्रयागे माघ मेला कल्पवास स्नानं च समाप्तिः। तिल वस्त्र कम्बल आदि दानम्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१ गु.	९	२१	५१	१५	२	२७	१८	५३	२०	३	९	९	५	४२	९८	५३	१	१७	३	१३	१	५	११	१	४७	३५	४८	४८	१०	२३	२	२४	६	२५	११	५	३७	०
२ शु.	१०	५	४१	३८	२	२६	५८	५०	१९	४५	९	१०	४४	३५	९९	२३	१	१७	२	८	०	५५	११	२	३६	१९	४८	२३	१०	२३	८	४९	६	२७	११	५	३३	५०
३ श.	१०	१९	३७	२०	२	२६	३१	५	१८	३९	९	१२	२३	५८	९९	५७	१	१७	१	१३	०	८	११	३	२४	४२	४७	४६	१०	२३	१५	१६	६	३०	११	५	३०	३९
४ र.	११	३	४३	३५	२	२६	२०	२६	१७	२९	९	१४	३	५५	१००	२२	१	१७	०	२५	०	३५	११	४	१२	२८	४७	२८	१०	२३	२१	४६	६	३३	११	५	२७	२८
५ सो.	११	१७	५१	१२	२	२६	२	५७	१६	४०	९	१५	४४	१७	१०१	३५	१	१६	५९	५०	म.०	११	११	४	५९	५६	४६	१	१०	२३	२८	१९	६	३५	११	५	२४	१८
६ मं.	०	२	१	५६	२	२५	४६	१७	१५	५१	९	१७	२५	५२	१०२	४३	१	१७	०	१	०	२०	११	५	४५	५७	४४	४३	१०	२३	३४	५४	६	३८	११	५	२१	७
८ बु.	०	१७	९	४३	२	२५	३०	२६	१४	[illegible]	९	१९	८	३५	१०३	१४	१	१७	०	२१	०	२८	११	६	३०	४०	४३	१३	१०	२३	४१	३२	६	४०	११	५	१७	५६
९ गु.	१	१	१४	२९	२	२५	१५	४२	१३	५६	९	२०	५१	४२	१०३	५८	१	१७	०	४९	०	३७	११	७	१३	५३	४१	४०	१०	२३	४८	१२	६	४३	११	५	१४	४५
१० शु.	१	१५	२	४६	२	२५	१	४६	१३	५	९	२२	३५	४७	१०४	३१	१	१७	१	२६	०	४५	११	७	५५	३३	४०	२२	१०	२३	५४	५५	६	४६	११	५	११	३४
११ श.	१	२९	१५	१७	२	२४	४८	४१	१२	४२	९	२४	२०	१८	१०५	५६	१	१७	२	११	०	५६	११	८	३५	५५	३८	३१	१०	२४	१	४१	६	४८	११	५	८	२३
१२ र.	२	१२	५४	२४	२	२४	३५	५९	१२	२०	९	२६	६	१४	१०६	३५	१	१७	३	७	१	१	११	९	१४	२६	३७	५	१०	२४	८	२९	६	५१	११	५	५	१२
१३ सो	२	२६	२०	५७	२	२४	२३	३९	११	२५	९	२७	५२	४९	१०७	९	१	१७	४	८	१	७	११	९	५१	३१	३६	१८	१०	२४	१५	२०	६	५५	११	५	२	१
१४ मं.	३	९	३२	२६	२	२४	१२	१४	१०	३४	९	२९	३९	५८	१०७	४६	१	१७	५	१५	१	१५	११	१०	२७	४९	३५	३३	१०	२४	२२	१५	६	५७	११	४	५८	५०
१५ बु.	३	२२	५८	४१	२	२४	१	४०	९	४०	१०	१	२७	४४	१०८	३०	१	१७	६	३०	१	२९	११	११	३	२२	३५	१५	१०	२४	२९	१२	६	५९	११	४	५५	३९

पं.४१ माघ शुक्ल ८ बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६७६ अयनांशाः २४/११/२९

र.	सा.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	२	९	१	११	१०	११	५
२२	१७	२५	१९	१७	६	२३	५	५
५	९	३०	८	०	३०	३१	१७	१७
१८	४३	२६	३५	२१	४०	३२	५६	५६
६०	८५३	१४	१०३	०	४३	६	३	३
५९	२०	४४	१४	२८	१३	४०	११	११



भौमादीनां चारः
भौमः-(वक्री) पुनर्वसौ मिथुनाशि। बुधः-मकरराशौ १५ बुधतः कुम्भ राशौ दिवा १० वादने। गुरुः-रोहिण्यां वृष राशौ ५ सामतः मार्गी। शुक्रः-मीन राशौ। शनिः-कुम्भ राशौ पू.भा.१ चरणे ३ शनितः पू.भा.२ चरणं रात्रौ २।१५ वादने। राहुः-उ.भा.१ चरणे केतुश्च-उ.फा. ३ चरणं।

माघ शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१ गु. घं.	मि.	२ शु घं.	मि.	३ श घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ सो. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	८ बु घं.	मि.	९ गु. घं.	मि.	१० शु. घं.	मि.	११ श. घं.	मि.	१२ र. घं.	मि.	१३ सो घं.	मि.	१४ मं. घं.	मि.	१५ बु घं.	मि.
मकर	७	३५	७	३१	७	२७	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४
कुम्भ	९	६	९	२	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५
मीन	१०	३४	१०	३०	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३
मेष	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२
वृष	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२३	१	१९
मिथुन	४	२३	४	१९	४	१५	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कर्क	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०
सिंह	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१६	८	१२	८	८	८	४
कन्या	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६
तुला	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३
वृश्चिक	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	२	२	५८	२	५४	२	५०
धनु	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५

पं.४२ माघ शुक्ल १५ बुधे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६८३ अयनांशाः २४/११/३०

र.	सा.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	२	१०	१	११	१०	११	५
२९	२२	२४	१	१७	११	२४	४	४
११	५८	१	२७	६	३	२९	५५	५५
४५	४१	४०	५४	३०	२२	१२	३९	३२
६०	७७४	२	१०८	१	३५	६	३	३
४२	५	४०	३०	२९	१५	५९	११	११



विविध मुहूर्त्ताः तिथि १ गुरौ–श्रवणे दिवा ८।२१ वादनम् यावत् दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं तत्परं धनिष्ठायां गर्भाधानं रात्रौ ल.६, प्रसूति स्नानं नामकरणं- अन्नप्राशनं कर्णवेधकन्यानासिकाच्छेदनं चौलमुण्डनं ल.२ (ति.दा.) आ. उपनयनं ल.२ (ति.दा.) वधूप्रवेश ल.२ वा गोधूलि दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं, इक्षुवपनं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदनपत्र लेखनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भ ल.२ पश्चिम दिग् यात्रा। तिथि २ शुक्रे–धनिष्ठा प्रातः ७।३६ वादनम् यावत् आ.प्रसूति स्नानं नामकरणं-अन्नप्राशनं कर्णवेध-कन्या नासिकाच्छेदनं शतभेऽपि चौलमुण्डनं ल.२, विद्यारम्भः गवांक्रय विक्रयः हलप्रवहणं इक्षुवपनं, जलयन्त्र कर्म, आवेदन पत्र लेखनं, नूतन वध्वापाककर्म वाहन क्रयः दक्षिण दिग् यात्रा। तिथि ३ शनौ–पूर्वाभाद्रपदे इष्टिकादहनं शस्त्र घटनं रिक्तायां रोग विमुक्तस्नानं। तिथि ४ रवौ–रिक्ता भद्रा दिवा ११।५३ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, उपनयनं ल.२, दीक्षाग्रहणं लालवस्त्र धारणं, हलप्रवहणं इक्षुवपनं, शस्त्रधारणं, आवेदन पत्र लेखनं उत्तरदिग् यात्रा। तिथि ५ सोमे–रेवत्यां आ. प्रसूति स्नानं, जातकर्म, अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं चौलमुण्डनं ल.१२, अक्षरारम्भः उपनयनं ल.२ वरवरणं-कन्या वरणं वधूप्रवेशः विपणिव्यापारः, दीक्षाग्रहणं हलप्रवहणं इक्षुवपनं सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोग, आवेदनपत्र लेखनं, सर्वदेव प्रतिष्ठा जलाशयवाटिकारम्भः, नूतनवध्वापाककर्म वाहन क्रयः उत्तर दिग् यात्रा। तिथि ६/७ भौमे–अश्विन्यां प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं दत्तकपुत्र ग्रहणं, शल्यकर्म अश्विन्यां दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि ८ बुधे–भद्रा दिवा ३।२४ वादनात्परं भरण्यां धान्यच्छेदनं मुकदमाकार्यं। तिथि ९ गुरौ–कृतिकायां रोग विमुक्त स्नानं रिक्ता रात्रि १२।२८ वादनात्परं रोहिण्यां गर्भाधानं ल.८, गृहारम्भः गृहप्रवेशः ल.८ पूर्व दिग् यात्रा। ○

○ तिथि १० शुक्रे–रोहिण्यां - गर्भाधानं रात्रौ ल.८ आ. प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणं (मृगशिरायां रात्रौ) अन्नप्राशनं उपनयनं ल.१२, वरवरणं, कन्यावरणं वधूप्रवेशः, विपणि व्यापार, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं, इक्षुवपनं शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं गृहारम्भः-गृहप्रवेशः ल.२, सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशयवाटिकारम्भ ल.१२ वा २ नूतनवध्वापाककर्म, वाहन क्रयः पूर्व-दक्षिण दिग् यात्रा। तिथि ११ शनौः–भद्रा दिवा ९।४४ वादनात्पूर्व मृगशिरायां नीलमादि रत्न कृष्णवस्त्र धारणं आ.गृहारम्भः गृहप्रवेशः ल.११ (श.दा.) मिथुन चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा। तिथि १२ रवौ–आर्द्रायाम् पुंसवनं सीमन्त विद्यारम्भः सायं ६।२१ वादनात्परं पुनर्वसौ दीक्षाग्रहणं लालवस्त्र धारणं। तिथि १३ सोमे–पुनर्वसौ-नामकरणं अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्यानासिकाच्छेदनं चौलमुण्डनं ल.१२ अक्षरारम्भः आ. उपनयनं ल.१२ (ति.दा.) हलप्रवहणं, इक्षुवपनं, शय्यासनाद्युपभोगं, सायं ६।८ वादनात्परं पुष्ये गृहारम्भ गृहप्रवेश लग्नं ५ सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयवाटिकारम्भः ल.५ दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। तिथि १४ भौमे–पुष्ये शल्यकर्म लालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। तिथि १५ बुधे–श्लेषायां, जलयन्त्र कर्म रात्रि ७।१० वादनात्परं मघायां शय्यासनाद्युपभोग।

फलम्– सप्तमी तिथि का क्षय हो जाने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। शुक्रवार शतभिषा नक्षत्र कुम्भ राशि का चन्द्र दर्शन मु.१५ दैनिक उपभोग में आने वाली खाद्य सामग्री महँगी बिकेगी। ऊनी वस्त्रों का भाव उतरने लगेगा। शास्त्र में बताया गया है कि यदि माघ मास भर गंगा स्नान कर पाने में असमर्थ हो तो शुक्ल पक्ष में ३ दिन तक नियमित स्नान कर लेने से पूरे माघ मास भर का पुण्य फल प्राप्त हो जाता है। माघ शुक्ल प्रतिपदा ३० जनवरी से **गुप्त नवरात्र** में सिद्धी प्राप्त करने के लिए साधक भक्त भगवती की आराधना अनुष्ठान रूप में करेंगे। इसे गुप्त रूप से करना चाहिए। **बसन्त पंचमी** का प्रसिद्ध एवं सर्वमान्य पर्व **३ फरवरी** सोमवार को मनाया जायेगा। वागीश्वरी जयन्ती, वाणी पूजन, वसन्तोत्सव, रतिकाम महोत्सव के साथ विद्यानुरागी श्रद्धालुजन माँ सरस्वती की प्रतिमा स्थापित कर पूजा-अर्चना करेंगे। जगह-जगह उत्सव की धूम रहेगी। यह प्रकृति के उत्सव का पर्व है। **अचला सप्तमी एवं रथ सप्तमी छयवती सप्तमी** तिथि में ४ फरवरी मंगलवार को है। **भीष्माष्टमी ५ फरवरी** बुधवार को होगी। इसमें सनातन धर्म के सार्वभौमिक सर्वकालिक पूर्वज **पितामह भीष्म** का श्राद्ध तर्पण सन्तान प्राप्ति के निमित्त किया जाता है। **महानन्दा नवमी ६ फरवरी** गुरुवार को मनाई जायेगी। आज **ब्रह्मनायक श्री हरसूब्रह्म देव** की जयन्ती उनके धाम चैनपुर रोहतास में दर्शन पूजन महोत्सव के साथ सम्पन्न होगी। **जया एकादशी व्रत** का मान सबके लिए **८ फरवरी** शनिवार को होगा। इसे **भैमी एकादशी** भी कहते हैं। **प्रदोष का व्रत पुत्र की कामना से १० फरवरी** सोमवार को किया जायेगा। **भीष्म द्वादशी ९ फरवरी** रविवार को होगी। इसमें भीष्म को उद्देश्य कर श्राद्ध तर्पण करने □ से दीर्घायु प्राप्त होती है। स्नान-दान एवं व्रत सहित **माघी पूर्णिमा १२ फरवरी** बुधवार को होगी। आज ही **राजराजेश्वरी ललिता देवी** जयन्ती एवं **सन्त रविदास की** जयन्ती भी मनाई जायेगी। सन्त रविदास की जन्मस्थली काशी के सीर गोवर्धन नामक स्थान तक शोभायात्रा निकाली जायेगी एवं विभिन्न समारोह समपन्न होंगे। माघी पूर्णिमा में तिल कम्बल आदि का दान पुण्यफलदायक माना गया है। **धनिष्ठा नक्षत्र का सूर्य ६ फरवरी** गुरुवार को दिन १२ बजे से आयेगा। **कुम्भ राशि की सूर्य संक्रान्ति** १२ फरवरी बुधवार की रात १।४५ बजे से आवेगी और इसी के साथ माघ महीने में प्रयाग का कल्पवास नियम संयम समाप्त हो जायेगा।

राशिफल

राशि	फल
मेष-	सौख्यं
वृष-	कुचर्चा
मिथुन-	रोगं
कर्क-	गमनम्
सिंह-	रिपुनाशः
कन्या-	दैन्यम्
तुला-	रोग
वृश्चिक-	सुख
धनु-	भयम्
मकर-	स्थान हानिः
कुम्भ-	हानिः
मीन-	वित्ताप्तिः

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ फाल्गुन कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनम् याम्यगोलः शिशिर ऋतुः। दिनांक १३ - २८ फरवरी सन् २०२५ ई. (रा. माघ २४ - फाल्गुन ९)

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	फाल्गुन कृ. तिथि ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योग	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा.द्द अं.	क.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गति क्र.	वि.	रे.अं. पं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	विशेष
२७	४८	१	गुरु	३२	२७	रात	७	२६	मघा	३५	१	रात	८	२७	शोभन	१	५७	प्रातः	७	१३	बा	१	३१	कौ	३२	२७	मुसल	१३	१	१	२४				६	२६	५	३४	१३	३४	१०	०	१२	३४	६०	४८	+	१२	६	३६	फसली फाल्गुन मासारम्भः। मृत्युबाणः ४७।२६ (रा.१।२४) उ.। सौर फाल्गुन मासारम्भः।
२७	५१	२	शुक्र	३५	२२	रात	८	३४	पूर्वाफाल्गु	३९	२१	रात	१०	१०	अतिगण्ड	०	५८	प्रातः	६	४८	तै	३	५४	गर	३५	२२	सिद्धि	१४	२	२	२५	कन्या	५५	४४	६	२६	५	३४	१३	१२	१०	१	१३	२१	६०	४६	+	१२	७	३०	कन्याराशिः रात्रि ४।४४ वादने। मृत्युबाणः ४६।४० (रा.१।१६) या.।
२७	५४	३	शनि	३९	३०	रात	१०	१३	उत्तराफा	४७	४८	रात	१२	१९	सुकर्मा	०	५२	प्रातः	६	४६	व	६	४५	वि	३९	३०	उत्पात	१५	३	३	२६				६	२५	५	३५	१२	५३	१०	२	१४	७	६०	४४	+	१२	८	२१	भद्रा ६।४५ (दि.९।७) उ. ३९।३० (रा.१०।१३) या. (पाताले)। शनि-रिक्ता समायोग सिद्धयोगः ३९।३० (रा.१०।१३) उ.। यमघण्टयोगः ४४।४४ (रा.१२।१९) उ.।
२७	५८	४	रवि.	४४	२०	रात	१२	८	हस्त	५०	५३	रात	२	४६	धृति	१	३१	प्रातः	७	०	बव	११	५५	बा	४४	२०	मानस	१६	४	४	२७				६	२४	५	३६	१२	३३	१०	३	१४	५१	६०	४३	+	१२	९	१२	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.९।१२) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। रवि-हस्त सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ ५०।५३ (रा.२।४६) या.।
२८	१	५	सोम	४९	४०	रात	२	१५	चित्रा	५७	२५	रात	५	२१	शूल	२	४०	दिन	७	२७	कौ	१७	०	तै	४९	४०	मुद्गर	१७	५	५	२८	तुला	२४	११	६	२४	५	३६	१२	१२	१०	४	१५	३४	६०	४१	+	१२	१०	४	तुलाराशिः दिवा ४।४ वादने। रवियोगः ५७।२५ (रा.५।२१) उ.। (ख) विश्वनाथ) दर्शन पूजन जलाभिषेकञ्च। काश्यां चतुर्दश लिंग पूजनम्। श्रीवैद्यनाथ
२८	५	६	मंगल	५५	३	रात	४	२५	स्वाती	६०	०	स	म	स्त	गण्ड	४	७	दिन	८	२	गर	२२	२२	व	५५	३	ध्वज	१८	६	६	२९				६	२३	५	३७	११	५१	१०	५	१६	१५	६०	३९	+	१२	१०	५६	भद्रा ५५।३ (रा.४।२५) उ. (पाताले)। रवियोगः यावद्दिनम्। जयन्ती; सर्वत्र शिवपूजनम् अभिषेकञ्च। रात्रि जागरणम्। काश्यां शिव बारात-शोभायात्रा।
२८	८	७	बुध.	६०	०	स	म	स्त	स्वाती	३	५५	प्रातः	७	५६	वृद्धि	५	२०	दिन	८	३४	वि	२७	७	बव	६०	०	धूम्र	१९	७	७	३०	वृश्चिक	५३	३०	६	२२	५	३८	११	३०	१०	६	१६	५४	६०	३८	+	१२	११	५१	वृश्चिक राशिः रात्रि ३।४६ वादने। भद्रा २७।७ (सा.५।२३) या.। बुधे-भद्रा सिद्धयोगः यावद्दिनम्। ⊙ शतभिषा नक्षत्रे रविः २३।६ (दि.३।३६)। रवियोगः ३।५५ (प्रातः ७।५६)या.।
२८	१२	७	गुरु.	०	२	प्रातः	६	२३	विशाखा	१०	२	दिन	१०	२२	ध्रुव	६	२९	दिन	८	५७	बव	०	२	बा	३२	७	प्रवर्धमान	२०	८	८	१				६	२२	५	३८	११	८	१०	७	१७	३२	६०	३६	+	१२	१२	४७	मध्यान्ह व्यापिनी अष्टम्यां अष्टका श्राद्धम् ८। अद्य श्राद्धस्य सन्तति लाभाय सर्वोपरि। राष्ट्रीय फाल्गुन मासारम्भः। सर्वार्थसिद्धियोगः १०।२ (दि.१०।२२) उ.। रवियोगः १०।२(दि.१०।२२)या.
२८	१५	८	शुक्र.	४	१३	रात	८	१	अनुराधा	१५	२३	दिन	१२	१०	व्याघात	७	०	दिन	९	७	कौ	४	१३	तै	३५	४७	राक्षस	२१	९	९	२				६	२१	५	३९	१०	४७	१०	८	१८	८	६०	३४	+	१२	१	४८	जानकी जयन्ती ८। मिथिलायां विशेष उत्सवः। अन्वष्टका श्राद्धम्। सर्वार्थसिद्धियोगः १५।२३ (दि.१२।३०) या.। (क) ७।२१ (दि.९।१६) या.।
२८	१९	९	शनि.	७	२१	दिन	९	१६	ज्येष्ठा	१९	३७	दिन	२	११	हर्षण	६	३३	दिन	८	५७	गर	७	२१	व	३८	२३	मुसल	२२	१०	१०	३	धनु	१९	३७	६	२०	५	४०	१०	२५	१०	९	१८	४२	६०	३२	+	१२	२	४२	धनुराशिः १९।३७ (दि.२।११) वादने। भद्रा ३८।२३ (रा.९।४१) उ. (पाताले)। मृत्युबाणः ४१।१८ (रा.१०।५१) उ.। पश्चिम दिशायाम् बुधोदयः। शनि-रिक्ता समायोग सिद्धयोगः(क)
२८	२२	१०	रवि.	९	२४	दिन	१०	५	मूल	२२	४७	दिन	३	२६	वज्र	५	२०	दिन	८	२७	वि	९	२४	बव	३१	४४	सिद्धि	२३	११	११	४				६	२०	५	४०	१०	३	१०	१०	१९	१४	६०	३०	+	१२	३	३६	भद्रा ९।२४ (दि.१०।५) या.। मृत्युबाणः ४०।४६ (रा.१०।३८) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः २२।४७ (दि.३।२६) या.।
२८	२६	११	सोम.	१०	५	दिन	१०	२०	पूर्वाषाढ़ा	२४	३९	दिन	४	१०	सिद्धि व्यतीपात	३ ५६	३ [illegible]	प्रातः	६ ६	३१ [illegible]	बा	१०	५	कौ	३९	४६	उत्पात	२४	१२	१२	५	मकर	२९	५०	६	१९	५	४१	९	४१	१०	११	१९	४४	६०	२९	+	१२	४	२७	मकरराशिः रात्रि १०।१३ वादने। विजया एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।
२८	३०	१२	मंगल.	९	२७	दिन	१०	५	उत्तराषाढ़ा	२५	१६	दिन	४	२४	वरीयान	५५	३१	रात	४	३०	तै	९	२७	गर	३७	२९	मानस	२५	१३	१३	६				६	१८	५	४२	९	१९	१०	१२	२०	१३	६०	२७	+	१२	५	१२	भौम प्रदोष व्रतम् १२। ऋणापकर्णाय श्रेयकरम्। भौमे जयासिद्धयोगः ९।२७ (दि.१०।५) उ.। शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः ९।२७ (दि.१०।५) या.।
२८	३३	१३	बुध.	७	५	दिन	९	१९	श्रवण	२८	४२	दिन	४	१०	परिघ	५०	२३	रात	२	२६	व	७	५	वि	३५	५८	छत्र	२६	१४	१४	७	कुंभ	५३	५२	६	१७	५	४३	८	५७	१०	१३	२०	४०	६०	२५	+	११	५	५४	कुम्भराशिः रात्रि ३।५० वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा ७।३५ (दि.९।१९) उ. ३५।५८ (रा.८।४०) या. (पाताले)। महाशिवरात्रि व्रतम् १३। कृति वासेश्वर (काशी(ख)
२८	३७	१४	गुरु.	४	४२	दिन	८	९	धनिष्ठा	२३	५	दिन	३	३०	शिव	४४	३०	रात	१२	३	श	४	४२	च	३२	४२	श्रीवत्स	२७	१५	१५	८				६	१७	५	४३	८	३४	१०	१४	२१	५	६०	२३	+	११	+	+	पारणा महाशिवरात्रि व्रतस्य प्रातः ८।९ वादनात्पूर्वं। श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा।
२८	४०	३० १	शुक्र.	० ५५	४१ २६	प्रातः	६ ४	३५ ४१	शतभिषा	३०	३८	दिन	२	३०	सिद्ध	३७	५४	रात	९	२५	ना	०	४१	कि बव	२८ २५	३ २५	सौम्य	२८	१६	१६	९				६	१६	५	४४	८	१२	१०	१५	२१	२८	६०	२१	+	११	+	+	स्नानदानादौ अमा ३० पुण्यतमा। अनुदया प्रतिपदायां पयोव्रतारम्भः। दिनात्मक १२ पुत्र कामनाया। फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदारम्भ द्वादश दिन पर्यन्तम् पयोव्रतम्। तच्च भागवते दृष्टव्यम्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	गु.	४	५	४०	३९	२	२३	५२	०	८	५२	१०	३	२६	१४	१०९	११	१	१७	७	५९	१	४०	११	११	३८	३७	२४	२४	१०	२४	३६	११	७	०	११	४	५२	२९
२	शु.	४	१८	८	३२	२	२३	४३	८	८	२७	१०	५	५	२५	१०९	४५	१	१७	९	३९	१	५४	११	१२	१३	१	२३	४१	१०	२४	४३	२२	७	३	११	४	४९	१८
३	श.	५	०	२४	२०	२	२३	३४	४१	७	५६	१०	६	५५	२०	११०	१८	१	१७	११	३३	२	९	११	१२	४६	४२	२२	३०	१०	२४	५०	२४	७	५	११	४	४६	८
४	र.	५	१२	३०	३३	२	२३	२६	४५	७	२१	१०	८	४५	३८	११०	४०	१	१७	१३	४२	२	२३	११	१३	१९	१२	३०	३२	१०	२४	५७	१९	७	५	११	४	४२	५७
५	सो.	५	२४	३२	४७	२	२३	१९	२४	६	३२	१०	१०	३६	२८	११२	३५	१	१७	१६	५	२	३८	११	१३	४९	४५	२८	४२	१०	२५	४	२४	७	७	११	४	३९	४७
६	मं.	६	६	३४	५१	२	२३	१२	५२	५	४०	१०	१२	२८	५३	१११	२४	१	१७	१८	३९	२	४४	११	१४	१८	२७	२५	३६	१०	२५	११	३१	७	८	११	४	३६	३६
७	बु.	६	१८	३६	१७	२	२३	७	१२	४	५१	१०	१४	२०	१७	१११	२	१	१७	२१	२३	२	५३	११	१४	४४	३	२३	४७	१०	२५	१८	३९	७	८	११	४	३३	२५
७	गु.	७	१	८	५२	२	२३	२	२१	३	४५	१०	१६	११	१९	११०	४५	१	१७	२४	१६	३	३	११	१५	७	५०	२०	५८	१०	२५	२५	४७	७	१०	११	४	३०	१४
८	शु.	७	१३	२४	२०	२	२२	५८	३६	२	४९	१०	१८	२	४	११०	२२	१	१७	२७	१९	३	११	११	१५	२८	४८	१८	१४	१०	२५	३२	५७	७	११	११	४	२७	३
९	श.	७	२५	५५	१४	२	२२	५५	४७	१	०	१०	१९	५२	२६	१०९	५३	१	१७	३०	३०	३	२४	११	१५	४७	२	१५	२६	१०	२५	४०	८	७	११	११	४	२३	५२
१०	र.	८	८	३७	३९	२	२२	५४	४७	०	२६	१०	२१	४२	१९	१०९	६	१	१७	३३	५४	३	२६	११	१६	२	२८	१४	२२	१०	२५	४७	१९	७	१४	११	४	२०	४२
११	सो.	८	२१	३४	४	२	२२	५४	२१	व्या.	३०	१०	२३	३१	२५	१०७	२६	१	१७	३७	३०	३	४९	११	१६	१६	५०	१२	४५	१०	२५	५४	३३	७	१४	११	४	१७	३१
१२	मं.	९	४	४७	२६	२	२२	५४	५१	०	५६	१०	२५	१८	५१	१०५	३६	१	१७	४२	१९	३	५८	११	१६	२९	३५	११	३७	१०	२६	१	४८	७	१५	११	४	१४	२०
१३	बु.	९	१८	१३	३३	२	२२	५५	४७	१	८	१०	२७	४	२७	१०२	४३	१	१७	४५	१७	४	८	११	१६	४१	१२	९	५०	१०	२६	९	२	७	१५	११	४	११	१०
१४	गु.	१०	१	५२	२४	२	२२	५६	५५	१	५०	१०	२८	४७	१०	१००	५१	१	१७	४९	२५	४	२२	११	१६	५१	२	७	४२	१०	२६	१६	१७	७	१६	११	४	८	०
३०	शु.	१०	१५	४२	३	२	२२	५८	४५	२	९	११	०	२८	१	९७	२८	१	१७	५३	४६	४	४४	११	१६	५८	४४	५	२१	१०	२६	२३	३३	७	१८	११	४	४	४९

फलम्– सप्तमी तिथि की वृद्धि हो जाने के कारण यह पक्ष १६ दिन का है। पक्ष के तीन गुरुवार एवं शुक्रवार सामान्यतया शुभफलकारक हैं। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत का मान १६ फरवरी** रविवार को होगा; चन्द्रोदय रात ९।१२ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। सन्तान प्राप्ति की कामना से **अष्टका का श्राद्ध मध्यान्ह** व्यापिनी अष्टमी तिथि में २० फरवरी गुरुवार को किया जायेगा। **जनक नन्दिनी माता सीता की जयन्ती २१ फरवरी** शुक्रवार को **जानकी जयन्ती** के रूप में विविध उत्सवों के साथ मनाई जायेगी। मिथिलाञ्चल में इसे विशेष श्रद्धा एवं विश्वास के साथ मनाया जाता है। **विजया एकादशी व्रत** का मान सबके लिये **२४ फरवरी** सोमवार को होगा। ऋण से छुटकारा पाने के लिये **भौम प्रदोष व्रत २५ फरवरी** को किया जायेगा। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट करने वाली **महारात्रि-महाशिवरात्रि** का परम-पावन-पर्व **महाशिवरात्रि २६ फरवरी** बुधवार को पड़ रही है। आज का दिन शिव भक्तों तथा सनातन धर्मियों के लिये **महत्वपूर्ण** माना गया है। विश्वभर में फैले शिवानुरागी शिव भक्त अत्यन्त श्रद्धा-विश्वास के साथ जलाभिषेक दुग्धाभिषेक बिल्वपत्राभिषेक तथा अन्यान्य विधियों से शिव पूजन कर व्रत रखकर मनाते हैं। देश भर के द्वादश ज्योतिर्लिंग के साथ-साथ सभी शिव मन्दिरों में विशेष पूजनः अनुष्ठान का कार्य सम्पन्न होगा। काशी नगरी की तो बात ही निराली है और यह काशीवासियों के लिये वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण पर्व है। औघड़दानी बाबा भोलेनाथ के भक्त भी शिवभक्ति में सराबोर होकर शिव बारात निकालकर तथा व्रत रखकर अभिषेक करके मस्ती में आकर इसे मनाते हैं। शास्त्रीय मान्यता एवं परम्परा के सम्मिलित स्वरूप के मानते हुए आज के दिन बाबा भोलेनाथ का माता पार्वती के साथ विवाह हुआ था। काशी एक अकेली नगरी है **जहां चतुर्दश (१४) शिवलिङ्गों** का दर्शन-पूजन किया जाता है। (प्रसंग वश स्कन्द पुराण)। **महाशिवरात्रि व्रत का पारण २७ फरवरी** गुरुवार को **प्रातः ८।९** बजे से पूर्व ही कर लिया जायेगा। **श्राद्ध के लिये अमावस्या २७ फरवरी** गुरुवार को होगी जबकि **स्नानदान** के लिये अमावस्या औदायिक तिथि २८ फरवरी शुक्रवार को होगी। आज ही फाल्गुन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा क्षयवती है। अतः पुत्र की कामना से किया जाने वाला **पयोव्रत** भी आज से ही आरम्भ होकर १२ दिन तक चलेगा। **शतभिषा नक्षत्र का सूर्य १९ फरवरी** बुधवार को दिन [illegible]

पं.४३ फाल्गुन कृष्ण ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६९२ अयनांशाः २४/११/३१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	२	१०	१	११	१०	११	५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(कुण्डली) १२शु.रा. । १० । ११ सू. श.बु. । ९ । १ । २ गु. । ८ चं. । ३मं. । ५ । ७ । ४ । ६ के.

भौमादीनां चारः

भौमः-(वक्री) पुनर्वसौ मिथुन राशौ ११ सोमतः मार्गी। बुधः-कुम्भ राशौ १४ गुरुतः मीनराशौ रात्रि १२।१७ वादने। गुरुः-रोहिण्यां वृष राशौ। शुक्रः-मीनराशौ। शनिः-कुम्भ राशौ पू.भा.२ चरणे। राहुः-उ.भा.१ चरणे केतुश्च उ.फा. ३ चरणे।

फाल्गुन कृष्ण दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१गु घं.	मि.	२शु घं.	मि.	३श. घं.	मि.	४र. घं.	मि.	५सो घं.	मि.	६मं. घं.	मि.	७बु. घं.	मि.	७गु. घं.	मि.	८शु. घं.	मि.	९श. घं.	मि.	१०र. घं.	मि.	११सो घं.	मि.	१२मं. घं.	मि.	१३बु. घं.	मि.	१४गु. घं.	मि.	३०शु. घं.	मि.
कुम्भ	८	११	८	७	८	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२
मीन	९	३९	९	३५	९	३१	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०
मेष	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९
वृष	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२४	१२	२०	१२	१६
मिथुन	३	२८	३	२४	३	२०	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९
कर्क	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
सिंह	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१
कन्या	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७	९	१४
तुला	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०
वृश्चिक	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७
धनु	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२
मकर	६	३८	६	३२	६	२८	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७

विविध मुहूर्ताः

तिथि १ गुरौ–मघायां वरवरणं-कन्यावरणं वधूप्रवेश ल.२, कर्णमर्दनं जलयंत्र कर्म, शय्यासनाद्युपभोगं, भूमिक्रयः, हलप्रवहणं इक्षुवपनं, कर्णमर्दनं। तिथि २ शुक्रे–पूर्वाफाल्गुन्यां आ.प्रसूति स्नानं, विद्यारम्भः **उपनयनं ल.२** वरवरणं-कन्यावरणं, दीक्षाग्रहणं धान्यच्छेदन, कर्णमर्दनं, जलयंत्र कर्म रात्रि १०।१० वादनात्परं उत्तराफाल्गुन्यां गर्भाधानं, **वधूप्रवेशः-द्विरागमनं**, पूर्व दिग् यात्रा। **तिथि ३ शनौ**–भद्रा दिवा ९।७ वादनात्पूर्वं उत्तराफाल्गुन्यां कृष्ण वस्त्र धारणं, इष्टिका निर्माणं, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ४ रवौ**–हस्त नक्षत्रे रोगविमुक्त स्नानं। **तिथि ५ सोमे**–चित्रायां जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशन कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं, **चौलमुण्डनं ल.२ उपनयनं ल.२** अक्षरारम्भः विद्यारम्भः **वधूप्रवेशः द्विरागमन ल.२** विपणिव्यापार दीक्षाग्रहण हलप्रवहणं इक्षुवपनं सेवारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं, वाहन क्रयः सर्वदेव प्रतिष्ठा ल.२, दक्षिण दिग् यात्रा। तुला चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि ६ भौमे**–स्वात्यां प्रसूति स्नानं (ति.दा.), तालवस्त्र धारणं, दत्तकपुत्र ग्रहणं (ति.दा.) शल्यकर्म, पश्चिम् दिग् यात्रा। **तिथि ७ बुधे**–भद्रा सायं ५।२३ वादनात्परं विशाखायां-नवयस्त्र धारणं, नूतनवध्वापाककर्म। **तिथि ७ गुरौ**–दिवा १०।२२ वादनात्परं अनुराधायां-प्रसूति स्नानं (प्रातः), जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं (प्रातः) कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदन (ति.दा.), वरवरणं कन्यावरणं वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.२ वा ३, दीक्षाग्रहणं (ति.दा.), हलप्रवहणं इक्षुवपनं कर्णमर्दन सेवारम्भः शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगं दत्तकपुत्रग्रहण आवेदन पत्र लेखन, शल्यकर्मः भूमिक्रयः सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयवाटिकारम्भः ल.२ वाहनक्रयः, शल्य कर्म दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि ८ शुक्रे**–रिक्ता दिवा ८।१ वादनात्पूर्वं आ.प्रसूति स्नानं, जातकर्म नामकरणं वरवरणं, कन्यावरणं **वधूप्रवेशः-द्विरागमनं ल.११ वा १२**, विपणि व्यापारः हलप्रवहणं इक्षुवपनं, शल्यकर्म दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ९ शनौ**–ज्येष्ठायां रोग विमुक्त स्नानं। रिक्ता दिवा ९।१६ वादनात्परं इष्टिका निर्माणं शस्त्रघटनं। **तिथि १० रवौ**–भद्रा दिवा १०।५ वादनात्परं मूले-पुंसवनं सीमन्तः विद्यारम्भः **आ.उपनयनं लग्नं २**, दिवा ३।२६ वादनात्परं पूर्वाषाढायाम् प्रसूति स्नानं वरवरणं-कन्या वरणं जलयंत्र कर्म इष्टिका दहनं पूर्व दिग् यात्रा। ☐ **तिथि ११ सोमे**–पूर्वाषाढायाम् आ.प्रसूति स्नानं आ. **उपनयनं ल.२** जलयंत्र कर्म दिवा ४।१० वादनात्परं उत्तराषाढायाम् गर्भाधानं रवौ ल.८ जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं (ति.दा.) वरवरणं कन्यावरणं **वधूप्रवेशः ल.गो. आ.द्विरागमनं** ल.गोधूलि हलप्रवहणं इक्षुवपनं धान्यच्छेदनं, सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं आवेदन पत्र लेखनं रात्रि रवि अग्निबाणात्परं गृहप्रवेशः ल.११ दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि १२ भौमे**–उ.षा. श्रवणे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं तालवस्त्र प्रवालरत्न धारणं, शल्यकर्म श्रवणे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १३ बुधे**–रिक्ता भद्रा ९।१९ वादनात्पूर्वं श्रवणे अन्नप्राशनं कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदनं **चौलमुण्डनं** अक्षरारम्भ कन्यावरणं **वधूप्रवेशः-द्विरागमनं** हलप्रवहणं इक्षुवपनं शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं सर्वदेव प्रतिष्ठा दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। ति. १४ गुरौ–रिक्ता तत्परं तत्परं मासान्तः।

पं.४३ फाल्गुन कृष्ण ३० शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३६९९ अयनांशाः २४/११/३२

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	२	११	१	११	१०	११	५
१५	१५	२२	०	१७	१६	२६	४	४
२१	४२	५८	२८	१३	५८	२३	४	४
२८	३	४५	९	५६	४४	३३	४९	४९
६०	३३	२	२७	४	४	७	३	३
२१	६	९	२८	४१	२१	१८	११	११

(कुण्डली) शु.१२रा. श. । सू. चं.११ रा. । १० । ९ । १ । २ गु. । ८ । ३ मं. । ५ । ७ । ४ । ६ के.

विवाह मुहूर्त विमर्शः

ति.१ गुरौ–मघायां रेखा ७ दिवा लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं ४ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१६।। वा लग्नं गोधूलिः।

तिथि २ शुक्रे–रात्रि १०।१० वादनात्परं उ.फा. मृत्युबाण रात्रि १।१६ वादनात्परं रेखा ६ लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०

तिथि ३ शनौ–उ.फा. भद्रा दिवा ९।७ वादनात्पूर्वं पंचेष्टलग्नाभावः ततो भद्रा रात्रि १०।१३वादनात्परं रेखा ६ पंचेष्टाभावः ततो १२।१९ वादनात्परं हस्त नक्षत्रे रेखा ५ अत्यावश्यके लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (भौ.दा.) वा लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०

तिथि ४ रवौ–हस्त नक्षत्रे रेखा ५ दिवा लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं ४ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१६।। वा लग्नं गोधूलिः। रात्रि ८।९ वादनात्परं हस्त नक्षत्र४चरण गहुवेधः।

तिथि ५ सोमे–रात्रि शेष ५।२१ वादनात्परं स्वात्यां लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०।

तिथि ६ भौमे–स्वात्यां रेखा ८ दिवा लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१२ (सप्त चं.दा.) वा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। वा लग्नं गोधूलि वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं ९ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१७ (रात्रि ४।२५ वादनात्परं भद्रा व्याप्तिः)। **तिथि ७ बुधे–**स्वात्यां भद्रा व्याप्तिः।

तिथि ७ गुरौ–दिवा १०।२२वादनात्परं अनुराधायां रेखा ८ दिवा लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३ (अष्ट चं.दा.) वा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१६ (सप्त भौ.दा.) वा लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१०

तिथि ८ शुक्रे–अनुराधायां रेखा ८ दिवा लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३ (अष्ट चं.दा.)

तिथि ९ शनौ–दिवा २।११ वादनात्परं मूले भौमे वेधः आ.लं. गोधूलिः।

तिथि १० रवौ–मूल नक्षत्रे भद्रा भौमवेधः।

तिथि ११ सोमे–दिवा ४।१० वादनात्परं उ.षा. रेखा ७ लग्नं गोधूलिः (व्यतिपातः)

तिथि १२ भौमे–उ.षा.रेखा ७ दिवा लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१३ वा लग्नं ४ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।। (दिवा ४।२४ वादनम् यावत्) तत्परं सल्लग्नाभावः।

राशिफल

मेष- लाभः	कर्क- सुखलाभः	धनु- धनागमः
वृष- धनागमः	सिंह- विपत्तिः	मकर- अर्थागमः
मिथुन-धर्माचरणं	कन्या-शोकः	कुम्भ-धनप्राप्तिः
	तुला- शत्रुभयं	मीन-सुखं
	वृश्चिक-पुत्रोन्नतिः	

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ फाल्गुन शुक्ल पक्षः।

सौम्यायनं याम्य गोलः शिशिर ऋतुः। मीनार्कतः बसन्त ऋतुः।
दि.१ - १४ मार्च सन् २०२५ ई. (राष्ट्रीय फाल्गुन १० - २३)।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वार	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिक योग	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रां. अं.	क.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं.		चन्द्रास्त घं.	मि.
२८	४४	२	शनि.	५०	५०	रात	२	३५	पूर्वाभाद्र.	१७	२७	दिन	१	१४	साध्य	३०	४६	रात	६	३३	वा	२३	७	को	५०	५०	कालदण्ड	१	१७	१७	१०	मीन	३	१५	६	१५	५	४५	७	४९	१०	१६	२१	४९	६०	१९	+	१०	७	३०
२८	४८	३	रवि.	४५	८	रात	१२	१७	उत्तराभा.	१३	४५	दिन	११	४४	शुभ	२३	१४	दिन	३	३२	तै	१७	२९	गर	४४	८	स्थिर	२	१८	१८	११				६	१४	५	४६	७	२७	१०	१७	२२	८	६०	१७	+	१०	८	३४
२८	५१	४	सोम.	३९	१४	रात	९	५५	रेवती	९	४४	दिन	१०	४	शुक्ल	१५	३१	दिन	१२	२५	व	११	४१	वि	३९	१४	मातंग	३	१९	१९	१२	मेष	९	४४	६	१४	५	४६	७	४	१०	१८	२२	२४	६०	१५	+	१०	९	४१
२८	५५	५	मंगल.	३२	१६	रात	७	३०	अश्विनी	५	३०	दिन	८	२४	ब्रह्म / ऐन्द्र	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	बव	५	४५	बा	३२	१६	अमृत	४	२०	२०	१३				६	१३	५	४७	६	४१	१०	१९	२२	३९	६०	१३	+	१०	१०	४८
२८	५९	६	बुध.	२७	३०	सायं	५	१२	भरणी / कृत्तिका	[illegible]	[illegible]	प्रातः	[illegible]	[illegible]	वैधृति	५२	२३	रात	३	९	को	०	२३	तै / गर	[illegible]	[illegible]	काण	५	२१	२१	१४	वृष	१५	३०	६	१२	५	४८	६	१८	१०	२०	२२	५२	६०	११	+	१०	११	५६
२९	२	७	गुरु.	२२	९	दिन	३	३	रोहिणी	५४	२४	रात	३	५७	विष्कुंभ	४५	१४	रात	१२	१७	व	२२	९	वि	४९	४४	उत्पात	६	२२	२२	१५				६	१२	५	४८	६	५४	१०	२१	२३	३	६०	९	+	९	१	२
२९	६	८	शुक्र.	१७	१९	दिन	१	६	मृगशिरा	५१	४८	रात	२	५३	प्रीति	३८	४०	रात	९	३८	बव	१७	१९	बा	४५	२०	मानस	७	२३	२३	१६	मिथुन	२३	८	६	११	५	४९	५	३१	१०	२२	२३	१२	६०	७	+	९	२	४
२९	१०	९	शनि.	१३	२१	दिन	११	२९	आर्द्रा	५०	४	रात	२	११	आयुष्मान	३२	४४	रात	७	१५	को	१३	२१	तै	४१	४८	मुद्गर	८	२४	२४	१७				६	१०	५	५०	५	८	१०	२३	२३	१९	६०	५	+	९	२	५९
२९	१४	१०	रवि.	१०	१५	दिन	१०	१५	पुनर्वसु	४९	२१	रात	१	५३	सौभाग्य	२७	३५	सायं	५	११	गर	१०	१५	व	३९	१६	ध्वज	९	२५	२५	१८	कर्क	३४	३२	६	९	५	५१	४	४४	१०	२४	२३	२४	६०	३	+	९	३	४७
२९	१७	११	सोम.	८	१४	दिन	९	२६	पुष्य	४९	४७	रात	२	३	शोभन	२३	२५	दिन	३	३०	वि	८	१४	बव	३७	४८	धाता	१०	२६	२६	१९				६	९	५	५१	४	२१	१०	२५	२३	२७	६०	१	+	९	४	२८
२९	२१	१२	मंगल	७	२७	दिन	९	६	श्लेषा	५१	२९	रात	२	४३	अतिगण्ड	२०	११	दिन	२	११	वा	७	२७	को	३४	४२	आनन्द	११	२७	२७	२०	सिंह	५१	२९	६	८	५	५२	३	५७	१०	२६	२३	२८	५९	५८	+	९	५	३
२९	२५	१३	बुध	७	५६	दिन	९	१७	मघा	५४	२५	रात	३	५२	सुकर्मा	१८	०	दिन	१	१८	तै	७	५६	गर	३८	५३	चर	१२	२८	२८	२१				६	७	५	५३	३	३४	१०	२७	२३	२६	५९	५६	+	९	५	३५
२९	२८	१४	गुरु	९	४८	दिन	१०	२	पूर्वाफा.	५८	३०	रात	५	३०	धृति	१६	५०	दिन	१२	५०	व	९	४८	वि	४१	१८	गद	१३	२९	२९	२२				६	६	५	५४	३	१०	१०	२८	२३	२२	५९	५४	+	९	६	४
२९	३२	१५	शुक्र.	१२	४५	दिन	११	११	उत्तराफा.	६०	०	स	म	स्त	शूल	१६	३०	दिन	१२	४१	बव	१२	४५	बा	४४	४८	शुभ	१४	३०	३०	२३	कन्या	१४	५०	६	६	५	५४	२	४६	१०	२९	२३	१६	५९	५२	+	८	+	+

- २ मीनराशिः दिवा ७।३३ वादने। चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.४५ बृहती समर्घताकरम्। याम्य श्रृंगम् दुर्भिक्षं। श्रीरामकृष्णपरमहंस जयन्ती २। फुलरिया २। शुभाशुभेत्रय गुण्यकरः त्रिपुष्करयोगः(क)
- ३ मु.रमजान १ हिजरी सन् १४४६। यवने रोजा आरम्भः। सर्वार्थसिद्धियोगः १३।४५ (दि.११।४४)या.। रवियोगः १३।४५ (दि.११।४४) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ४५।८(रा.१२।१७या.
- ४ मेषराशिः दिवा १०।४ वादने। पंचक (पचखा) समाप्ति। भद्रा ११।४१ (दि.१०।५४) उ. ३१।२४ (रा.९।५५) या. (स्वर्ग)। वेनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। मृत्युवाणः ३७।३६(ख)
- ५ भौमाश्विनी सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ ५।३० (दि.८।२४) या. ⊙ पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे रविः ३७।२१ (रा.९।९)। मृत्युवाणः ३७।२१ (रा.९।९) या.।
- ६ वृषराशिः दिवा १२।२४ वादने। सर्वार्थसिद्धियोगः १।२८ (प्रातः ६।४७) उ.। रवियोगः १।२८ (प्रातः ६।४७) उ.। बुध-भद्रा सिद्धयोगः २७।३० (सायं ५।१२) उ.।
- ७ भद्रा २२।९ (दि.३।३) उ. ४९।४४ (रा.२।६) या. स्वर्ग। अर्कपुट सप्तमी ७, कामदा ७। कल्याण सप्तमी ७। यायि (मुद्दई) जयद् योगः २२।९ (दि.३।३) या.।
- ८ मिथुनराशिः दिवा ३।२६ वादने। होलाष्टकारम्भः। होलाष्टके वर्जितः "विपाशे रावतीतीरे शुतुद्र्याश्च त्रिपुष्करे विवाहादि शुभे नेष्टं होलिकाप्राग्दिनाष्टकम्।"
- ९ रवियोगः यावद्दिनम्। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्धयोगः १३।२१ (दि.११।२९) या.। (ख) (रा.९।१६) उ.। रवियोगः ९।४४ (रा.१०।४) या.।
- १० कर्कराशिः रात्रि ७।५८ वादने। भद्रा ३९।१६ (रा.९।५१) उ. (मर्त्य)। फागुदशमी १०। लट्ठमार होली (नन्दगाँव)। रवि-पुष्य-सर्वार्थसिद्धियोगः ४१।२१ (रा.१।५३) उ.। रवियोगः(ग)
- ११ भद्रा ८।१४ (दि.९।२६) या.। आमलकी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। इयमेव रंगभरी एकादशी। श्रीकाशी विश्वनाथ अबीरेण शिवार्चनम् श्रृंगारोत्सवः शोभायात्रा। सर्वार्थसिद्धियोगः(घ)
- १२ सिंहराशिः रात्रि २।४३ वादने। भौमप्रदोष व्रतम् १२। ऋणापकर्णाय श्रेयस्करम्। सर्वार्थसिद्धियोगः ५१।२९ (रा.२।४३) या.। रवियोगः ५१।२९ (रा.२।४३) उ.।
- १३ दोषसंघविनाशकोरवियोगः ५४।२५ (रा.३।५२) या.। मृत्युवाणः ३६।४० (रा.८।४७) उ.। (घ) ४९।४७ (रा.२।३) या.।
- १४ भद्रा १।४८ (दि.१०।२) उ. ४१।१८ (रा.१०।३७) या. (मर्त्य)। **व्रताय पूर्णिमा १५। चौमासी चोदस (जैन)। भद्रा रात्रि १०।३७ वादनात्परं होलिका दहन मुहूर्तः।** ढुण्ढा(ङ)
- १५ कन्याराशिः दिवा १२।० वादने। स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। मन्वादिः १५। श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती १५। श्रीत्रिष्णुदोलोत्सवः। काश्यां होलिकोत्सवः, रंगोत्सवः।(च)

(क) १७।२७ (दि.१।१४)या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः ५०।५० (रा.२।३५) उ.। (ग) ४१।२१ (रा.१।५३) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः १०।१५ (दि.१०।१५) उ.। (ङ) राक्षसी पूजनम् तद्दहनं च। "ओं होलिकायै नमः" इति मन्त्रेण यथोपचारैः सम्पूजयेत्। हुताशनी जन्म १५। (च) काश्यां चतुर्षष्टी (चौसट्ठी) देवी यात्रा दर्शनम् ⊙ **सं.मीन राशौ रविः** ३७।० (रा.८।५४)। मु.४५ बृहती समर्घताकरम्। पराः १६ घट्यः पुण्या, परदिने पुण्यकालः। गोऽन्न दानं गोदावर्याम् स्नानम्। **खरमासारम्भः। बसन्त ऋतु प्रारम्भः।**

विवाह मुहूर्त्त विमर्शः

ति.२ शनौ–दिवा १।१४ वादनात्परं उ.भा. रेखा ५ लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२वा लग्नं १० इ.६ ग्र.व.वि.१६।।

तिथि ३ रवौ–उ.भा. रेखा ५ दिवा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११ दिवा ११।४४ वादनात्परं रेवत्यां रेखा ६ दिवा लग्नं ४ इ.६ ग्र.व.वि.१३।। वा लग्नं गोधूलि. वा रात्रौ लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ वा लग्नं १० इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१६।।

तिथि ४ सोमे–रेवत्यां दिवा १०।४ वादनात्पूर्वं रेखा ६ दिवा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११।

तिथि ७ गुरौ–भद्रा दिवा ३।३ वादनात्पूर्वं रोहिण्यां रेखा ८ दिवा लग्नं १ इष्टाः६ ग्र.व.वि.१६ वा लग्नं ४ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१८।। भद्रा रात्रि २।६ वादनात्परं लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (सप्त भो.दा.) रात्रि ३।५७ वादनात्परं मृगशिरायां रेखा ८ लग्नं १० इष्टा. ५ ग्र.व.वि.११।।

तिथि ८ शुक्रे–मृगशिरायां रेखा ८ दिवा लग्नं १ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१६ वा लग्नं ४ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१८।। वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (सप्त भो.दा.) (रात्रि २।५३वादनम् यावत्)। **तिथि १२ भौमे**- रात्रि २।४३ वादनात्परं मघायां रेखा ८ लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (सप्त. भो.दा.) वा लग्नं १० इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (अष्ट.चं.दा.)।

तिथि १३ बुधे–मघायां रेखा ८ दिवा लग्नं१ इष्टाः५ ग्र.व.वि.११ लग्नं ४ इ.७ ग्र.व.वि.१८।। वा लग्नं गोधूलिः। रात्रि ८।४७ वादनात्परं मृत्युवाणः। **तिथि १४ गुरौः**–रात्रि ५।३० वादनातपरं उत्तराफाल्गुन्यां सल्लग्नाभावः।

तिथि १५ शुक्रे–उ.फा. दिवा लग्ने सल्लग्नाभावः ततो मीनार्कः खरमासः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
२ श.	१०	२९	४०	२१	२	२३	०	५४	२	३१	११	२	५	२९	९५	३९	१	१७	५८	२७	४	५४	११	१७	३	५	१	५४	१०	२६	३०	५१	७	२१	११	४	१	३९
३ र.	११	१३	४४	८	२	२३	३	२५	३	४	११	३	४१	८	९३	१९	१	१८	३	२१	५	२	११	१७	१	११	३	१०	१०	२६	३८	१२	७	२१	११	३	५८	२८
४ सो.	११	२७	५२	२९	२	२३	६	२९	३	४८	११	५	१४	२७	९०	३३	१	१८	८	२३	५	१४	११	१६	५८	१	५	३४	१०	२६	४५	३३	७	२१	११	३	५५	१७
५ मं.	०	१२	२	५४	२	२३	१०	१७	४	१०	११	६	४५	०	८६	२७	१	१८	१३	३७	५	२८	११	१६	५२	२७	८	४६	१०	२६	५२	५४	७	२२	११	३	५२	६
६ बु.	०	२६	१०	२०	२	२३	१४	२७	५	५३	११	८	११	२७	८०	४८	१	१८	१९	५	५	४०	११	१६	४३	४१	११	३६	१०	२७	०	१६	७	२२	११	३	४८	५५
७ गु.	१	१०	१७	४८	२	२३	२०	२०	६	४६	११	९	३१	१५	७३	३२	१	१८	२४	४५	५	५१	११	१६	३२	५	१२	५५	१०	२७	७	३८	७	२२	११	३	४५	४४
८ शु.	१	२४	९	५५	२	२३	२७	६	७	३४	११	१०	४४	४७	६८	२०	१	१८	३०	३६	६	०	११	१६	१९	१०	१४	२१	१०	२७	१५	०	७	२४	११	३	४२	३३
९ श.	२	७	४१	१२	२	२३	३४	४०	८	५३	११	११	५३	७	६०	४	१	१८	३६	३६	६	१२	११	१६	४	४१	१५	३१	१०	२७	२२	२४	७	२४	११	३	३९	२२
१० र.	२	२१	२५	५	२	२३	४३	३३	९	२५	११	१२	५३	११	५६	४३	१	१८	४२	४८	६	२५	११	१५	४९	१०	१७	४३	१०	२७	२९	४८	७	२४	११	३	३६	११
११ सो.	३	४	४०	१४	२	२३	५२	५८	१०	०	११	१३	४९	५४	४९	२४	१	१८	४९	१३	६	३९	११	१५	३१	२७	२०	२६	१०	२७	३७	१२	७	२४	११	३	३३	०
१२ मं.	३	१७	५१	४७	२	२४	२	५८	१०	१४	११	१४	३९	१८	४०	३६	१	१८	५५	५२	६	५०	११	१५	११	१	२२	३४	१०	२७	४४	३६	७	२४	११	३	२९	५०
१३ बु.	४	२	३५	३५	२	२४	१३	१२	१०	४०	११	१५	१९	५४	२३	४२	१	१९	२	४२	६	५९	११	१४	२८	२७	२५	४७	१०	२७	५२	०	७	२४	११	३	२६	३९
१४ गु.	४	१५	७	११	२	२४	२३	५२	१०	५०	११	१५	४३	३६	१०	५	१	१९	९	४१	७	८	११	१४	२२	४०	२७	३६	१०	२७	५९	२४	७	२३	११	३	२३	२८
१५ श.	४	२७	४८	५८	२	२४	३४	४२	११	१८	११	१५	५३	४१	८व.	५५	१	१९	१६	४९	७	१७	११	१३	५५	४	३०	२८	१०	२८	६	४७	७	२३	११	३	२०	१७

फलम्– विगत् अमावस्या में ही प्रतिपदा तिथि का क्षय हो जाने के कारण यह पक्ष १४ दिन का है। शनिवार उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मीन राशि का चन्द्रदर्शन मु.४५ दैनिक उपभोग में आने वाली खाद्य सामग्रीयों का भाव थोड़ा नरम रहेगा किन्तु झुकाव तेजी की ओर ही दिखाइ देगा। ७ मार्च शुक्रवार से **होलाष्टक** आरम्भ हो जायेगा। स्मरण रखना चाहिए कि होलाष्टक में विपशा एवं रावती शुतुद्र एवं त्रिपुष्कर क्षेत्र में ही विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित रहते हैं, न कि पूरे देश में। **होलाष्टक से प्रभावित क्षेत्र के अन्तर्गत - लुधियाना, धवलपुर, फिरोजपुर, गुरुदासपुर होशियार पुर कांगड़ा,कपूरथला एवं इसके समीप के ही स्थान आते हैं।** इसके अलावा पूरे भारत में सर्वत्र विवाहादि शुभ कार्यों में कोई दोष नहीं होता। **फागुदशमी ९ मार्च** रविवार को है एवं आज ही ब्रजभूमि की लट्ठमार होली प्रारम्भ हो जायेगी। यह होली अपनी अनूठी शैली के लिये विश्वविख्यात् है। **आमल की एकादशी व्रत** का मान सबके लिये १० मार्च सोमवार को होगा और इसी को **रंगभरी एकादशी** भी कहते हैं। काशी वासी इस एकादशी को उत्सवरूप में मानते हैं। ऐसा माना गया है कि आज ही के दिन भोले बाबा माता गौरा का गौना कराकर काशी लाये हैं। इसी विश्वास एवं परम्परा को मानते हुए रजत पालकी में विराजित गौरा-पार्वती के विग्रह का पूजन कर काशी वासी अबीर-गुलाल उड़ाते हुए भक्ति भाव में सराबोर होकर निहाल हो जाते हैं। ऋण से छुटकारा पाने के लिये **भौम प्रदोष व्रत ११ मार्च** को किया जायेगा। व्रत के लिये **पूर्णिमा का मान १३ मार्च** गुरुवार को होगा एवं आज ही दिन १०।२ बजे से पूर्णिमा तिथि लग जायेगी एवं **भद्रा रात १०।३७** बजे समाप्त हो जायेगी। चूंकि रात्रि में पूर्णिमा तिथि ○ आज ही मिलेगी तथा भद्रा की समाप्त हो जायेगी। अतः **भद्रा रात्रि १०।३७ बजे के बाद होलिका दहन** किया जायेगा। इसी समय ढुण्डा राक्षस का पूजन कर **'ओं होलिकायै नमः'** मन्त्र का उच्चारण करते हुए विधि-विधान से होलिका दहन किया जायेगा। **स्नान दान के लिये पूर्णिमा** एवं काशी **क्षेत्र में रंग की होली का प्रसिद्ध पर्व १४ मार्च** शुक्रवार को मनाया जायेगा। सायंकाल काशी में चौसट्टी घाट पर स्थित **चतुर्षष्टी (चौसट्टी) देवी** का दर्शन पूजन किया जायेगा। काशी की अपनी परम्परा के अनुसार होलिका दहन के बाद से ही रंग की होली प्रारम्भ हो जाती है। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य ४ मार्च मंगलवार को रात ९।९ बजे से आयेगा। मीन राशि की सूर्य **संक्रान्ति १४ मार्च** शुक्रवार को **रात ८।५४** बजे से आयेगी। इसी के साथ **खरमास प्रारम्भ हो जायेगा।** इसका फल सुभिक्ष एवं सस्तीकारक है।

पं.४५ फाल्गुन शुक्ल ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७०६ अयनांशाः २४/११/३३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	२	११	१	११	१०	११	५
२२	२४	२३	१०	१८	१६	२७	३	३
२३	९	२७	४४	३०	१२	१५	४२	४२
१२	५५	६	४७	३६	१०	०	३३	३३
६०	८३५	१७	६८	६	१४ २२	७	३	३
७	५०	३४	२०	०	व	२४	११	११



भौमादीनां चारः

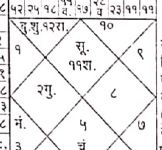
भौमः-पुनर्वसौ मिथुनराशौ। बुधः-मीनराशौ १५ शुक्रतः वक्री। गुरुः-रोहिण्यां वृषराशौ। शुक्रः-(वक्री) मीन राशौ। शनिः-पू.भा. २ चरणे ३ रवितः पू.भा.३ चरणं दिवा १२।३८ वादने। राहुः-उ.भा. १ चरणं केतुश्च उ.फा.३ चरणे १५ शुक्रतः राहुः पू.भा.४ चरणे। केतुश्च-उ.फा.२ चरणे।

फाल्गुन शुक्ल दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	२श. घं.	मि.	३र. घं.	मि.	४सो. घं.	मि.	५मं. घं.	मि.	६बु. घं.	मि.	७गु. घं.	मि.	८शु. घं.	मि.	९श. घं.	मि.	१०र. घं.	मि.	११सो. घं.	मि.	१२मं. घं.	मि.	१३बु. घं.	मि.	१४गु. घं.	मि.	१५शु. घं.	मि.
कुम्भ	७	५	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४४	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३
मीन	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१
मेष	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०
वृष	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७
मिथुन	२	२१	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०
कर्क	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
सिंह	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२२	६	१८	६	१४	६	१०	६	६	६	२
कन्या	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१९	८	१५
तुला	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१
वृश्चिक	१	३९	१	३५	१	३१	१	२७	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८
धनु	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३
मकर	५	२९	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८

पं.४६ फाल्गुन शुक्ल१५ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७१३ अयनांशाः २४/११/३४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	२	११	१	११	१०	११	५
२९	२७	२४	१५	१९	१३	२८	३	३
२३	४८	३४	५३	१६	५५	६	२०	२०
१६	५८	४२	४१	३२	४	४७	१७	१७
५९	७३५	११	८ ५५	७	३० २८	७	३	३
५२	२५	१८	व.	२७	व	२३	११	११



विविध मुहूर्त्ताः

तिथि २ शनौ–पूर्वाभाद्रपदे शस्त्र घटनं–इष्टिका दहनं दिवा १।१४ वादनात्परं उत्तराभाद्रपदे नीलमादि रत्न कृष्ण वस्त्र धारणं मीन चन्द्रे उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ३ रवौ**–उत्तराभाद्रपदे पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्रधारणं, इक्षुवपनं शस्त्रधारणं आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माणं, उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ४ सोमे**–रेवत्यां रिक्ता व्याप्तिः रिक्ता रात्रि ९।५५ वादनात्परं अश्विन्यां आ.प्रसूति स्नानं दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ५ भौमे**–अश्विन्यां दिवा ८।२४ वादनम् यावत् प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवालरत्नधारणं, शल्यकर्म, दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं तत्पश्चात् भरण्यां इष्टिका दहनं शस्त्र घटनं उग्रकर्माचरण। **तिथि ६ बुधे**–भरण्यां कृत्तिकायां धान्यच्छेदनं कृत्तिकायां वरवरणं कन्यावरणं। **तिथि ७ गुरौ**–भद्रा दिवा ३।३ वादनात्पूर्व प्रसूति स्नानं जातकर्म अन्नप्राशनं, **वरवरणं कन्यावरणं वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.१२ वा ३**, विपणिव्यापारः, दीक्षाग्रहणं, हलप्रवहणं, इक्षुवपनं, चूल्हीस्थापनं, सेवारम्भः, सर्वदेवप्रतिष्ठा शस्त्र धारणं, शय्यासनाद्युपभोगं, आवेदन पत्र लेखनं, इष्टिका निर्माण रात्रि ३।५७ वादनात्परं मृगशिरायां **गृहारम्भ–गृहप्रवेश ल.११। तिथि ८ शुक्रे**–मृगशिरायां रिक्ता दिवा १।६ वादनात्पूर्व आ.प्रसूति स्नानं जातकर्म नामकरणः **वरवरणं कन्या वरणं वधूप्रवेशः द्विरागमनं ल.१२ वा २**, विपणिव्यापारः, हलप्रवहणं इक्षुवपनं, **गृहारम्भः–गृहप्रवेशः ल.१२ वा २** (ति.दा.), **सर्वदेव प्रतिष्ठा ल.१२**, वाहन क्रय, दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ९ शनौ**–आर्द्रायाम् रोग विमुक्त स्नानं रिक्ता ११।२९ वादनात्परं इष्टिका दहनं उग्रकर्माचरणं, शस्त्रघटनं। **तिथि १० रवौ**–पुनर्वसौ–पुंसवनं सीमन्तः, उपनयनं ल.१२ वा २ लालवस्त्र धारणं धान्यच्छेदनं, शय्यासनाद्युपभोगं, वाहन क्रयः। **ति.११ सोमे**–भद्रा दिवा ९।२६ वादनात्परं पुष्ये–जातकर्म नामकरणं अन्न- □

□ प्राशनं कर्णवेधः कन्या नासिकाच्छेदन **चौलमुण्डल ल.२** अक्षराम्भः विद्यारम्भः, **उपनयनं ल.२ वधूप्रवेशः–द्विरागमनं ल.२ वा ३** विपणिव्यापारः, दीक्षाग्रहणं आभूषण निर्माणं धारणं चः हलप्रवहणं इक्षुवपनं, सेवारम्भ, जलयन्त्रकर्म, शस्त्रधारण, शय्यासनाद्युपभोग आवेदन पत्र लेखनं, **गृहारम्भः–गृहप्रवेशः ल.२ सर्वदेव प्रतिष्ठा** नूतन वध्वापाककर्म वाहन क्रयः औषधि निर्माणं सेवनं च पुष्ये दिग् शूल विहाय सर्वदिग् गमनं। **तिथि १२ भौमे**–श्लेषायां–उग्रकर्माचरणं। **तिथि १३ बुधे**–मघायां रिक्ता ९।१७ वादनात्पूर्व दीक्षाग्रहणं कणमर्दनं, जलयन्त्र कर्म शय्यासनाद्युपभोगं रिक्तायां रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १४ गुरौ**–पूर्वाफाल्गुन्यां रिक्ता भद्रा व्याप्तिः। **तिथि १५ शुक्रे**–उत्तराफाल्गुन्यां **वरवरणं कन्या वरणं वधूप्रवेशः, द्विरागमनं ल.२**, हलप्रवहणं इक्षुवपनं, चूल्ही स्थापनं, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः, आवेदन पत्र लेखनं, सर्वदेव प्रतिष्ठा पूर्व दिग् यात्रा। (खरमास रात्रि ८।५४ वादनात्पूर्व)।

राशिफल

- मेष- सुखं
- वृष- नेत्र कष्टं
- मिथुन- पीड़ा भयम्
- कर्क- रोगं शोकं
- सिंह- लाभः
- कन्या- शोकं
- तुला- रोगं
- वृश्चिक- पापवृद्धिः
- धनु- दौर्बल्यं
- मकर- सुखायं लाभः
- कुम्भ- रोगं हानिः
- मीन- शत्रुभयं

श्रीशुभ संवत् २०८१ शाके १९४६ चैत्र कृष्ण पक्षः।

सौम्यायनं याम्यगोलः बसन्त ऋतुः। दि.१५ - २९ मार्च सन् २०२५ ई. (रा.फाल्गुन २४ चैत्र ८)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वार	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदायिका योगा	अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
२९	३६	१	शनि.	१६	५१	दिन	१२	४९	उत्तराफा.	३	४४	दिन	७	३५	गण्ड	१७	५	दिन	१२	५५	को	१६	५१	तै	४९	१६	उत्पात	१५	१	१	२४				६	५	५	५५	२	२३	११	०	२३	८	५९	५०	+	८	७	६
२९	४०	२	रवि.	२१	४२	दिन	२	४५	हस्त	९	४३	दिन	९	५८	वृद्धि	१८	१०	दिन	१	२०	गर	२१	४२	व	५४	२१	मानस	१६	२	२	२५	तुला	४३	०	६	४	५	५६	१	५९	११	१	२२	५८	५९	४७	+	७	७	५७
२९	४३	३	सोम.	२७	०	दिन	४	५०	चित्रा	१६	११	दिन	१२	३२	ध्रुव	१९	३५	दिन	१	५३	वि	२७	०	बव	५९	३८	मुद्गर	१७	३	३	२६				६	३	५	५७	१	३५	११	२	२२	४५	५९	४५	+	७	८	४९
२९	४७	४	मंगल	३२	१७	सायं	६	५७	स्वाती	१२	४७	दिन	३	९	व्याघात	२१	५	दिन	२	२८	बा	३२	१७	को	६०	०	ध्वज	१८	४	४	२७				६	३	५	५७	१	१२	११	३	२२	३०	५९	४३	+	७	९	४२
२९	५१	५	बुध.	३७	८	रात	८	५४	विशाखा	२८	५९	सायं	५	३७	हर्षण	२२	२०	दिन	२	५८	को	४	४२	तै	३७	८	धाता	१९	५	५	२८	वृश्चिक	१२	३०	६	२	५	५८	०	४८	११	४	२२	१३	५९	४१	+	६	१०	३८
२९	५५	६	गुरु	४१	१५	रात	१०	३०	अनुराधा	३४	३१	सायं	७	५०	वज्र	२३	०	दिन	३	१२	गर	९	११	व	४१	१५	आनन्द	२०	६	६	२९				६	१	५	५९	०	२४	११	५	२१	५४	५९	३९	+	६	११	३४
२९	५८	७	शुक्र	४४	१६	रात	११	४१	ज्येष्ठा	३९	२	रात	९	३७	सिद्धि	२२	५६	दिन	३	९	वि	१२	४०	बव	४४	१६	चर	२१	७	७	३०	धनु	३९	२	६	०	६	०	०	१	११	६	२१	३३	५९	३६	+	६	१२	३०
३०	०	८	शनि.	४६	६	रात	१२	२५	मूल	४२	२८	रात	१०	५९	व्यतिपात	२२	२	दिन	२	४८	बा	१५	२०	को	४६	६	गद	२२	८	८	१				६	०	६	०	उ.० +	२२	११	७	२१	९	५९	३४	+	५	१	२५
३०	४	९	रवि.	४६	३७	रात	१२	३७	पूर्वाषाढ़ा	४४	३६	रात	११	५०	वरीयान	२०	५	दिन	२	१	तै	१६	२१	गर	४६	३७	शुभ	२३	९	९	२	मकर	५९	५०	५	५९	६	१	०	४६	११	८	२०	४३	५९	३२	+	५	२	१६
३०	७	१०	सोम	४५	५१	रात	१२	१७	उत्तराषाढ़ा	४५	२९	रात	१२	१०	परिघ	१७	१०	दिन	१२	५०	व	१६	१४	वि	४५	५१	मृत्यु	२४	१०	१०	३				५	५९	६	१	१	१०	११	९	२०	१५	५९	२९	+	५	३	३
३०	११	११	मंगल	४३	५२	रात	११	३०	श्रवण	४५	११	रात	१२	२	शिव	१३	१४	दिन	११	१६	बव	१४	५१	बा	४३	५२	लुम्बक	२५	११	११	४				५	५८	६	२	१	३३	११	१०	१९	४३	५९	२७	+	४	४	४५
३०	१५	१२	बुध.	४०	४१	रात	१०	१७	धनिष्ठा	४३	४५	रात	११	२६	सिद्ध	८	२५	दिन	९	१९	को	१२	१७	तै	४०	४१	मित्र	२६	१२	१२	५	कुंभ	१४	३०	५	५७	६	३	१	५७	११	११	१९	१०	५९	२५	+	४	४	२४
३०	१९	१३	गुरु.	३६	५०	रात	८	४०	शतभिषा	४१	३२	रात	१०	३२	साध्य शुभ	१ ५३	४४ ६०	प्रात	३ ४	३ ३०	गर	८	४५	व	३६	५०	वज्र	२७	१३	१३	६				५	५६	६	४	२	२०	११	१२	१८	३५	५९	२३	+	४	५	१
३०	२३	१४	शुक्र.	३२	१	सायं	६	४३	पूर्वाभाद्र	३८	२९	रात	९	१८	शुक्ल	४९	३०	रात	१	४२	वि	४	२५	श च	३२ ५९	१ ०	ध्वांक्ष	२८	१४	१४	७	मीन	२४	१५	५	५५	६	५	२	४४	११	१३	१७	५८	५९	२०	+	४	५	३७
३०	२६	३०	शनि.	२६	३९	दिन	४	३३	उत्तराभाद्र	३४	५४	रात	७	५२	ब्रह्म	४२	६	रात	१०	४५	ना.	२६	३९	किं	५३	४५	धूम्र	२९	१५	१५	८				५	५५	६	५	३	७	११	१४	१७	१८	५९	१८	+	३	+	+

फसली चैत्र मासारम्भः। काशीतोऽन्यत्र होलिकोत्सव रंगोत्सवः (होली) **सर्वत्र। धुरेड्डी, छारंडी, फाग १ बसन्तोत्सवः,** होलिका विभूतिधारणं, धूलिवन्दनम् स्वपच स्पर्शम्, रतिकाम महोत्सवः सायं चूत कुसुम प्राशनम्।(क)

तुलाराशिः रात्रि ११।१५ वादने। भद्रा ५४।२१ (रा.३।४८) उ. (पाताले)। रवि-हस्त सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ९।४३ (दि.९।५८) या.। **शुक्रवृद्धत्वारम्भः** दिवा १।० वादने शुभाशुभद्वय गुणकरः द्विपुष्कर योगः ९।४३ (दि.९।५८)उ.(ख)

भद्रा २७।० (दि.४।५०) या.। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदय (रा.८।४९) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। कल्पादिः ३। प्राचीनमतानुसारेण **छत्रपति शिवाजी जयन्ती ३**। ☉ **उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे रविः** ५७।३०(ग)

स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः २२।४७ (दि.३।९) उ. ३२।१७ (सा.६।५७) वा.। **पश्चिम दिशायाम् बुधास्तः।** (ग) (रा.श.५।३)। यायि (मुद्दई)जयद् योगः १६।११ (दि.१२।३२) उ. २७।० (दि.४।५०) या.।

वृश्चिकराशिः दिवा ११।२ वादने। **रंग पंचमी ५। पश्चिम दिशायाम् शुक्रास्तः** दिवा १।० वादने। सर्वार्थाऽमृत सिद्धियोगो २८।५९ (सा.५।३७) उ.। (ख) २१।४२ (दि.२।४५) या.।

भद्रा ४१।१५ (रा.१०।३०) उ. (स्वर्ग)। सर्वार्थसिद्धियोगः ३४।३१ (रा.७।५०) या.। रवियोगः ३४।३१ (रा.७।५०) उ.। (घ) गंगायाम् तु विशेषतः।" स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः ३२।१ (सा.६।४३) या.।

धनुराशिः रात्रि ९।३७ वादने। भद्रा १२।४० (दि.११।४) या.। रवियोगः ३९।२ (रा.९।३७) या.।

श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्। पर्युषितान्नपानादिकमत्र विहितम्। **राष्ट्रीय चैत्रमासारम्भः शाके नववर्ष १९४७ प्रारम्भः।** शनि-रिक्ता सनायोग सिद्धयोगः ४६।६ (रा.१२।२५) उ.।

मकरराशिः रात्रि शेष ५।५५ वादने। **पूर्व दिशायाम् शुक्रोदयः** दिवा २।५० वादने। सर्वार्थसिद्धियोगः ४४।३६ (रा.११।५०) उ.।

भद्रा १६।१४ (दि.१२।२१) उ. ४५।५१ (रा.१२।१७) या. (पाताल)। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो ४५।२९ (रा.१२।१०) उ.।

पाप मोचनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। वृद्ध अंगारक (बुढ़वा मंगल) पर्वः। काशीस्थ लौकिक पर्वः संगीत आदि विविधोत्सवः।

कुम्भराशिः दिवा ११।४५ वादने। पंचक (पचखा) आरम्भः। **शुक्रबालत्व निवृत्ति** दिवा २।५० वादने। बुध-भद्रा सिद्धयोगः ४०।४१ (रा.१०।१७) या.।

भद्रा ३६।५० (रा.८।४०) उ. (मर्त्य)। **प्रदोष व्रतम् १३। मासशिवरात्रि व्रतम् १४। वारुणी पर्व योगः सूर्योदयात् - सूर्यास्त यावत्।**

मीनराशिः रात्रि ३।३७ वादने। भद्रा ४।२५ (दि.७।४१) या.। **काममहोत्सवः १४।** अद्य शिव सन्निधौ गंगा स्नानम् प्रेतत्वनुक्तये। अत्र सोपवासं **केदार कुण्डोदक पानं।** "चैत्र कृष्ण चतुर्दश्यां स्नात्वाऽच्छिवसन्निधौ न प्रेतत्वमवाप्नोति(घ)

स्नानदान श्राद्धादौ अमा ३० पुण्यतमा ३०। शनि अमावस्या ३०। पाप वारान्वित दर्शे दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्। **चान्द्र संवत्सर २०८१ समाप्तिः। शुभम्।**

(क) तैलाभ्यङ्ग स्नानम्। स्वजन मेलनम्, मधुर पेय पानम्, मिष्ठान्न वितरणम्, विविधहास्य विनोद आयोजनम्। "चैत्रे मासि महाबाहो पुण्या प्रतिपदा परा। यस्तस्यां श्वपचं स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्यान्नरोत्तमः। न तस्य दुरितं किंचिन्नाधयो व्याधयो नृपः।"

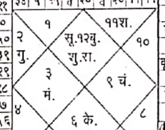
सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अ.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अ.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शनि रा.	अ.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अ.	क.	वि.
१	श.	५	१०	२१	२५	२	२४	४६	०	११	२८	११	१५	४४	४६	११	१४	१	१९	२४	६	७	२८	११	१३	२४	३६	३२	४८	१०	२८	१४	१०	७	२३	११	३	१७	६
२	र.	५	२२	३७	४	२	२४	५७	२८	११	३१	११	१५	३३	३२	२०	३८	१	१९	३१	३४	७	३८	११	१२	५१	४८	३४	१८	१०	२८	२१	३३	७	२३	११	३	१३	५५
३	सो.	६	४	४०	३३	२	२५	८	५९	११	५३	११	१५	१२	५४	२८	५६	१	१९	३९	१२	७	४५	११	१२	१७	३०	३५	२५	१०	२८	२८	५६	७	२२	११	३	१०	४४
४	मं.	६	१६	४२	१५	२	२५	२०	५२	१२	१४	११	१४	४३	५८	३५	४३	१	१९	४६	५७	७	५२	११	११	४२	५	३६	५२	१०	२८	३६	१७	७	२१	११	३	७	३३
५	बु.	६	२८	४२	४७	२	२५	३३	६	१२	५०	११	१४	८	१५	४१	३५	१	१९	५४	४९	८	०	११	११	५	१३	३८	१०	१०	२८	४३	३८	७	२०	११	३	४	२२
६	गु.	७	१०	५६	११	२	२५	४५	५६	१३	६	११	१३	२६	४०	४५	४०	१	२०	२	४९	८	६	११	१०	२७	३	३८	३९	१०	२८	५०	५८	७	२०	११	३	१	११
७	शु.	७	२३	१०	४४	२	२५	५९	२	१४	३८	११	१२	४१	०	४८	४२	१	२०	१०	५५	८	१३	११	९	४८	२४	३८	५९	१०	२८	५८	१८	७	२०	११	२	५८	०
८	श.	८	४	४९	१०	२	२५	१३	४०	१५	१५	११	११	५२	१८	५०	१३	१	२०	१९	८	८	२०	११	९	९	२५	३९	१४	१०	२९	५	३८	७	२०	११	२	५४	५०
९	र.	८	१७	४३	५०	२	२६	२८	५५	१६	२०	११	११	२	५	५०	५५	१	२०	२७	२८	८	२५	११	८	३०	११	३९	४२	१०	२९	१२	५८	७	१८	११	२	५१	३९
१०	सो.	९	०	५२	४१	२	२६	४५	१५	१६	५१	११	१०	११	१०	४८	३८	१	२०	३६	५३	८	३३	११	७	५०	३१	३९	०	१०	२९	२०	१६	७	१८	११	२	४८	२९
११	मं.	९	१३	१५	२६	२	२७	२	६	१७	२५	११	९	२२	३२	४६	१७	१	२०	४५	२६	८	४०	११	७	११	३९	३७	५३	१०	२९	२७	३४	७	१७	११	२	४५	१८
१२	बु.	९	२७	५	१८	२	२७	१९	३१	१७	४९	११	८	३६	१५	४३	२२	१	२०	५४	६	८	४८	११	६	३३	४६	३७	१२	१०	२९	३४	५१	७	१७	११	२	४२	७
१३	गु.	१०	१०	५१	५६	२	२७	३७	२०	१७	५७	११	७	५२	५३	४१	३६	१	२१	२	५४	८	५४	११	५	५६	३४	३६	२४	१०	२९	४२	८	७	१७	११	२	३८	५६
१४	शु.	११	२४	४७	४८	२	२७	५५	१७	१८	९	११	७	११	१७	४०	५२	१	२१	११	४८	९	०	११	५	२०	१०	३४	३७	१०	२९	४९	२५	७	१५	११	२	३५	४६
३०	श.	११	८	४७	१२	२	२८	१३	२६	१८	२८	११	६	३०	२५	४०	२३	१	२१	२०	४८	९	५	११	४	४५	३३	३३	२७	१०	२९	५६	४०	७	१५	११	२	३२	३५

फलम्– शास्त्रीय प्रमाण एवं परम्परा के अनुसार उदया तिथि चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को रंग की होली रंगोत्सव तथा धुरेड्डी का पर्व धूलि वन्दन मनाया जाता है, **तदनुसार १५ मार्च** शनिवार को रंग की होली का पर्व **काशी से अन्यत्र सर्वत्र** मनाया जायेगा। आज होलिका भस्म को मस्तक पर स्पर्श कराकर अगामी संवत्सर की कुशलता के लिये मंगल कामना की जायेगी। सनातन धर्मियों का यह महापर्व अद्भुत एवं अतुलनीय है। परस्पर सद्भावना प्रेम-सौहार्द का संदेश देता यह पर्व स्व के साथ अभिमान को दूर कर देता है तथा मानव के साथ-साथ पशुओं से भी प्रेम की भावना प्रदर्शित करने का संदेश देता है। हम ग्रामीण लोग अपने गाँव में गाय-बैलों को भी नहला धुलाकर अबीर-गुलाल का टीका लगाते है। ऐसा स्नेहपूर्ण औदार्य केवल भारतीय परम्परा में ही सम्भव है। वास्तव में यह पर्व मनोविकारों को निकाल फेंकने का पर्व है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान **१७ मार्च** सोमवार को है। चन्द्रोदय रात ८।४९ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **रंग पंचमी का पर्व १९ मार्च** बुधवार को है और इसी के साथ होली का सिलसिला समाप्त हो जायेगा। **श्री शीतलाष्टमी का व्रत २२ मार्च** शनिवार को होगा, इसमें वासी पक्वान्न प्रसाद स्वरूप ग्रहण करने की पुण्यफलदायक परम्परा है। **पाप मोचनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिये **२५ मार्च** मंगलवार को है। काशी की परम्परा का प्राचीन पर्व **वृद्ध अङ्गारक (बुढ़वा मंगल) २५ मार्च** मंगलवार को मनाया जायेगा। यह पर्व काशी की सांस्कृतिक परम्परा के प्रदर्शन का पर्व है। **प्रदोष का व्रत २७ मार्च** गुरुवार को किया जायेगा एवं आज ही महानिशा में चतुर्दशी तिथि मिलने के कारण **मासशिवरात्रि व्रत** का मान भी हो जायेगा। **वारुणी पर्व का योग** भी २७ मार्च गुरुवार को होगा। इसमें **सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त** तक काशी के गंगा-वरुणा संगम का स्नान अत्यन्त पुण्यफलकारक माना गया है। **चैत्र कृष्ण चतुर्दशी २८ मार्च** शुक्रवार को शिव सान्निध्य में गंगा स्नान करने से प्रेत बाधाओं का शमन होता है। आज काशी के केदार कुण्ड का जलग्रहण करना अत्यन्त पुण्यफलदायक होता है। स्नान दान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या २९ मार्च शनिवार को होगी। शनिवार को अमावस्या **शनि अमावस्या** के रूप में **शनिग्रह की शान्ति** के लिये पुण्यफलदायक होती है। इस पक्ष में १९ मार्च को शुक्र पश्चिम दिशा में अस्त हो रहा है तथा २३ मार्च को पूर्व दिशा में उदित भी हो जा रहा है। पक्ष के तीन शनिवार एवं शनिवार की अमावस्या तथा कुछ ही दिनों में शुक्रोदय एवं शुक्रास्त का प्रभाव मौसम पर पड़ेगा। ओला पत्थर, आँधी पानी, समुद्री तूफान इत्यादि की सम्भावना है। पक्षान्त में देश-समाज के सम्मुख कुछ कठिनाइयाँ आ सकती है। इस प्रकार २९ मार्च शनिवार को **चान्द्र संवत्सर २०८१ की समाप्ति** हो जायेगी। **आगामी संवत्सर की मंगल कामनाएँ श्रीमहावीर पञ्चाङ्ग के विद्वान पाठकों को प्रेषित करते हुए सादर नमन।**

पं.४७ चैत्र कृष्ण ८ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७२१ अयनांशाः २४/११/३५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	२	११	१	११	१०	११	५
७	४	२६	११	२०	९	२९	२	२
२१	४९	१३	५२	१९	९	५	५४	५४
९	१०	५०	१८	८	२५	३८	५०	५०
५९	७४३	११	५०	८	३१	७	३	३
३४	५	११	१३ व	२०	१४ व	२०	११	११



भौमादीनां चारः भौमः-पुनर्वसौ मिथुन राशौ। बुधः-(वक्री) मीनराशौ। गुरुः-रोहिण्यां वृष राशौ। शुक्रः-(वक्री) मीन राशौ। शनिः-पू.भा. ३ चरणे ३० शनितः पू.भा.४ चरणे दिवा ३ वादने। राहुः-पू.भा. ४ चरणे। केतुश्च उ.फा. २ चरणे।

चैत्र कृष्णा दैनिक लग्न सारिणी

लग्नांत ति.वा.	१श. घं.	मि.	२र. घं.	मि.	३सो. घं.	मि.	४मं. घं.	मि.	५बु. घं.	मि.	६गु. घं.	मि.	७शु. घं.	मि.	८श. घं.	मि.	९र. घं.	मि.	१०सो घं.	मि.	११मं. घं.	मि.	१२बु. घं.	मि.	१३गु. घं.	मि.	१४शु. घं.	मि.	३०श. घं.	मि.
मीन	७	३७	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२
मेष	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१
वृष	११	१३	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	३०	१०	२६	१०	२२	१०	१८
मिथुन	१	२६	१	२३	१	१९	१	१५	१	११	१	७	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१
कर्क	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७	२	५३	२	४९
सिंह	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	२
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कन्या	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	२०	७	१६
तुला	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२
वृश्चिक	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९
धनु	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४
मकर	४	३४	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९
कुम्भ	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	११

विविध मुहूर्त्ताः **तिथि १ शनौ–**उत्तराफाल्गुन्यां हस्त नक्षत्रे कृष्ण वस्त्र धारणं इष्टिका निर्माणं हस्त नक्षत्रे दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि २ रवौ–**हस्त नक्षत्रे दिवा ९।५८ वादनम् यावत् पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं लालवस्त्र प्रवाल रत्न धारणं नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः शस्त्रधारण दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदन पत्र लेखनं इष्टिका निर्माणं शल्यकर्म दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनम्। **तिथि ३ सोमे–**भद्रा सायं ४।५० वादनात्परं रिक्ता व्याप्तिः। **तिथि ४ भौमे–**स्वात्यां रिक्ता सायं ६।५७ वादनात्परं विशाखायां इष्टिका दहनं शस्त्रघटनं उग्रकर्माचरणं। **तिथि ५ बुधे–**विशाखायां गवां क्रयविक्रयः नववस्त्र धारणं सायं ५।३७ वादनात्परं अनुराधायां गर्भाधानं रात्रौ लग्नं ८ दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ६ गुरौ–**अनुराधायां प्रसूति स्नानं (ति.दा.) जातकर्म–नामकरणं अन्नप्राशनं (ति.दा.), विपणिव्यापारः नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं इक्षुवपनं कणमर्दनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगं दत्तक पुत्र ग्रहणं आवेदन पत्र लेखनं शल्यकर्म भूमिक्रयः वाहनक्रयः दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि ७ शुक्रे–**भद्रा दिवा ११।४ वादनात्परं नामकरणं, गवां क्रय-विक्रय, कणमर्दन, नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः, शस्त्र धारणं मुकदमा कार्यं। **तिथि ८ शनौ–** मूले कृष्ण वस्त्रधारणं शस्त्रघटनं उत्तर दिग् यात्रा। **तिथि ९ रवौ–**पूर्वाषाढ़ायाम् रोग विमुक्त स्नानं। **तिथि १० सोमे–**भद्रा दिवा १२।२९ वादनात्पूर्व उत्तराषाढ़ायाम् आ.प्रसूति स्नानं ☐

पं.४८ चैत्र कृष्ण ३० शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः ३७२८ अयनांशाः २४/११/३६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	२	११	१	११	१०	११	५
१४	८	२८	६	२१	४	२९	२	२
१७	४७	१३	३०	२०	४५	५६	३२	३२
१८	१२	२६	२१	४८	३३	५०	३५	३५
५९	८५०	१८	४० २३	९	३३ २७	७	३	३
१८	५५	२८	व	५	व	१५	११	११



☐ जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः, आभूषण निर्माणं हलप्रवहणं-बीजवपनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः सेवारम्भः शय्यासनाद्युपभोगः आवेदन पत्र लेखनं दक्षिण दिग् यात्रा। **तिथि ११ भौमे–**श्रवणे पुंसवनं सीमन्तं लालवस्त्र प्रवाल रत्नधारणं शल्यकर्म दिग् शूल विहाय सर्व दिग् गमनं। **तिथि १२ बुधे–**धनिष्ठायां रात्रौ गर्भाधानं ल.८ नामकरणं अन्नप्राशन नववस्त्र धारणं हलप्रवहणं बीज (इक्षु) इत्यादि वपनं नृत्यगीतवाद्यकलारम्भः कुम्भ चन्द्रे पश्चिम दिग् यात्रा। **तिथि १३ गुरौ–**शतभिषायां रात्रौ गर्भाधानं ल.८, अन्नप्राशनं गवां क्रय विक्रयः हलप्रवहणं बीज (इक्षु) वपनं औषधि सेवन नृत्यगीत वाद्यकलारम्भः जलयन्त्र कर्म, आवेदन पत्र लेखनं पश्चिम दिग् यात्रा। **ति.१४शुक्रे-**पूर्वाभाद्रपदे रिक्ता व्याप्तिः **तदुपरि मासान्तः।**

राशिफल

- **मेष-** लाभः
- **वृष-** धनागमः
- **मिथुन-** धर्माचरणं
- **कर्क-** सुख लाभः
- **सिंह-** विपत्तिः
- **कन्या-** शोकः अतिभ
- **तुला-** शत्रुभयं
- **वृश्चिक-** पुत्रोन्नति
- **धनु-** धनागम
- **मकर-** अर्थागमः
- **कुम्भ-** धनप्राप्तिः
- **मीन-** सुखं शत्रुनाश

सरल संध्या

शरीर पवित्र करने का मंत्र- **ॐअपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।**

इस मन्त्र को पढे, कुशा से अपने ऊपर जल छिडक कर शरीर पवित्र करें। ***आसन पवित्र करने का मन्त्र-***(विनियोगः) ॐपृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।

मंत्रः-**ॐपृथ्वीत्वयाधृतालोका देवि त्वं विष्णुनाधृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।** (इस मन्त्र से आसन पर जल छिड़कें और नीचे का संकल्प पढ़कर पृथ्वी पर छोड़ देवें)। (संकल्पः) ॐतत्सत् अद्य अमुकमासे अमुक पक्षे अमुक शुभ पुण्यतिथौ अमुक वासरे स्वकायिक-वाचिक-मानसिक पापक्षायार्थ श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थञ्च प्राप्तः (मध्याह्न वा सायं) सन्ध्योपासनामहं करिष्ये। **आचमन मन्त्रः-ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः।। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोऽजायत।अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।। सूर्याच्चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।।** (इस मंत्र से हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें और अपनी रक्षा के लिए गायत्री मन्त्र (ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ) पढ़कर चारों ओर जल छिड़के। तत्पश्चात नीचे लिखे प्राणायाम के विनियोगों को पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ें और प्राणायाम के मन्त्र से प्राणायाम करें)। **(विनियोगः)**- ॐ कारस्य ब्रह्मऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः॥१॥ ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्नि भरद्वाज गौतमात्रिवसिष्ठ कश्यपा ऋषयोगायत्र्युष्णिगनुष्टब्बृहती पङ्क्ति त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पति वरुणेन्द्र विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चिते प्राणायामे विनियोगः॥२॥ ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः॥३॥ ॐ शिरसः प्रजापति ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीछन्दो ब्रह्माग्निवायु सूर्या देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः ॥४॥

संक्षिप्त तर्पण विधिः

संकल्प-अपवित्रः पवित्रो वा इत्यादिमंत्र को पढ़कर शिखा बांधकर संकल्प करें (अक्षत तिल, जौ लेकर) संकल्प में देशकालादि का उच्चारण करने के बाद अमुक गोत्रः अमुक शर्माहं (वर्माहं-गुप्तोऽहं-दासोऽहं) क्रमशः क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रादिको में जोड़कर) अद्य श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थ देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणंकरिष्ये।

आवाहन मन्त्रः-ब्रह्मादयः सुरा सर्वे, ऋषयः सनकादयः। आगच्छन्तु महाभागाः, ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः।।

१. तर्पणमन्त्र–(सव्य होकर पूर्वाभिमुख होकर कुश अक्षत हाथ में लेकर देवतीर्थ से जल गिरावे)।

देवासुरास्तथा यक्षा, नागा गन्धर्व राक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाःसिद्धाः कूष्माण्डास्तरवःखगाः।।
जलेचरा भूनिलया, वाय्वाधाराश्च जन्तवः।
तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु, मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः।।

२. इसके बाद अपसव्य होकर जनेऊ और अंगोछे को दाहिने कंधे पर रखकर दक्षिणाभिमुख होकर कुशा का मोटक अंगूठे से दबाकर लिखे मन्त्र को पढ़कर पिता आदि का ध्यान करते हुए पितृतीर्थ से तीन-तीन बार जल गिरावे-

तर्पणमन्त्रा- ॐ अमुकगोत्रा अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहास्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ अमुकगोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम् (३)। ॐ अमुकगोत्रा अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकास्तृप्यन्ताम् (३)।

इसके बाद अपसव्य होकर पहले ही जैसे जनेऊ और अंगोछे को दाहिने कंधे पर रखकर दक्षिणाभिमुख होकर मोटक दाहिने अंगूठे में दबाकर तिल से तर्पण करें।

मन्त्रः-१ नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः। तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया।। २. येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। ते तृप्तिमखिलायान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।। ३.ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्।।४. आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे, मातृमातामहादयः।। ५. अतीतकुलकोटीनां, सप्तद्वीपनिवासिनाम्। आब्राह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।।

इसके बाद अंगोछे को चार तह कर उसमें तिल रखकर अंगोछे को जल से खूब भिगोकर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर जल के बाहर बायीं ओर पृथ्वी पर वस्त्र को निचोड़े - **मंत्र–ये के चास्मत्कुले जाता, अपुत्रा गोत्रिणो मृताः। ते गृह्णन्तु मया दत्तं, वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।। इसके बाद भीष्मपितामह का तर्पण जल से करे- मंत्र–भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। इसके बाद सूर्य को अर्घ्य देकर प्रणाम करे। इति समाप्तम्।**

प्रस्तुति- डा.राधाकान्त ओझा
पूर्व ज्योतिषाध्यापक, रणवीर संस्कृत विद्यालय, का.हि.वि.वि.वाराणसी।

अङ्गन्यास मंत्र

(१) ॐ हृदयाय नमः । (२) ॐ भूः शिरसे स्वाहा। (३) ॐ भुवः शिखायैवषट् । (४) ॐ स्व कवचाय हुम् । (५) भुर्भुवः स्व नेत्राभ्यां वौषट् (६) ॐ भुर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ।

गायत्री के ध्यान करने का मन्त्र- **ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता।। आदित्यमण्डलस्था चब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।। गायत्री के आवाहन करने का मन्त्र** (विनियोगः)-ॐ तेजोऽसीति देवा ऋषयो शुक्रं दैवतं गायत्रीछन्दः गायत्र्यावाहने विनियोगः। मंत्रः-ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामना मसिप्रिय देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।

गायत्री के उपस्थान (प्रणाम) करने का मन्त्र-(विनियोगः)-गायत्र्यसीति मंत्रस्य विमलऋषिः पंक्तिश्छंदः परमात्मादेवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः। (मंत्रः)- **ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदोमा प्रापत।।** इसके बाद प्रातःकाल में पूर्वाभिमुख, मध्याह्न में सूर्याभिमुख और सायंकाल में पश्चिमाभिमुख बैठ,सावधान होकर गायत्री का ध्यानपूर्वक शुद्ध उच्चारण (मन ही मन) करता हुआ जप करे। ***गायत्री का जपस्वरुप-*** (विनियोगः) - ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लवर्णो जपे विनियोगः। ॐ सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब् छन्दांस्यग्नि वायव्यादित्या देवता जपे विनियोगः॥२॥ ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता अग्निमुखमुपनयने जपे विनियोगः॥३॥ ***(मंत्रः)-*****ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात् ॐ ।।** (हमलोग उस सविता सूर्य देवता का ध्यान करते हैं जो हमलोगों की बुद्धि को प्रकृष्ट प्रेरणा दिया करें।) सन्ध्या समाप्त होने पर ७ बार प्रदक्षिणा करके गायत्री देवी का विसर्जन करना चाहिए। ***प्रदक्षिणा मन्त्रः-*** **यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।** ***विसर्जन मन्त्रः-*****ॐ उत्तरे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूदेति। ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि ! यथासुखम् ।।** *ॐ तत्सदब्रह्मार्पणमस्तु।*

प्राणायाम विधि

स्वस्थचित्त हो, आसन पर बैठ कर प्राणायाम करना चाहिए। उससमय नेत्र बन्द करके मन ही मन मंत्रो का उच्चारण करते हुए पूरक, कुम्भक और रेचक प्राणायाम करें। पहिले नासिका के दाहिने छिद्र को अंगूठे से मूंदकर, बायें छिद्र से धीरे-धीरे स्वाँस खींचते हुए अपने नाभि में नीलकमल के समान श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णु भगवान का ध्यान करतेहुए, प्राणायाम मन्त्र को तीन बार पढ़े। फिर कनिष्ठिका अनामिका, अंगुलियों से बायें छिद्र को भी मूंदकर स्वाँस को रोके रहें और प्राणायाम मंत्र को पूर्ववत् पढ़ते जायें। उस समय हृदय में कमलासन पर बैठे हुए रक्तवर्ण चतुर्मुख ब्रह्मा का ध्यान करें। अन्त में अंगूठा हटाकर धीरे-धीरे स्वाँस को बाहर निकाले और ललाट में स्थित श्वेतवर्ण त्रिनेत्र शिवजी का ध्यान करते हुए उसी मन्त्र को पूर्ववत् पढ़ते रहें। इस प्रकार क्रमशः पूरक, कुम्भक और रेचक भेद से तीन प्रकार के प्राणायाम होते हैं।

(प्राणायाम मंत्र) - **ॐ भूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यं ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।**

इसके बाद खड़े होकर हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ता हुआ प्रातः काल तथा सायंकाल में तीन चार और मध्याह्न काल में एक बार सूर्य को अर्घ देवें।

(मंत्र) - ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्य दिवाकर।

अथ स्वप्न विचार

शुभस्वप्न - राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्रवाली स्त्री इनके दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व, इनपर चढ़ना या दर्शन करना, रक्त से स्नान, रक्त, शय्यादि का ज्वलन स्वशिर का छेदन, अपना मरना, वेदध्वनि श्रवण, रक्तपात, पुष्प दर्शन दर्पण-प्राप्ति, दही, चावल भोजन, जुआ, रण, विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मद्य कपास इन वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु स्वप्न में देखना धन ऐश्वर्य तथा सम्मान की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि स्वप्न में फल पुष्प में श्वेत सर्प काट खाये तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वपन में बिच्छू या सर्प द्वारा पैर में काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथ में हथकड़ी पैरो में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ जूता खड़ाऊँ तीक्ष्ण तलवार का मिलना, सर्प दिखना अपने पैर के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्य मण्डल का देखना, अपना मरना, देखे तो रोगी पुरुष का रोग नाश और निरोग को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, मोरनी देखना चतुर स्त्री प्राप्ति सूचक है। स्वप्न में रक्त वा मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस चरबी का खाना, विष्टा अपने अंग में लगाना श्वेत चन्दन श्वेत पत्र पुष्पों से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर आकर दे जाय तो लाभ हो। नदी में तैरना, या तालाब में तैरकर पार जाना, सूर्योदय का देखना, कष्ट निवृत्ति करता है। ऊँचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना भाग्योदय करता है। राजा गौ ब्राह्मण का प्रसन्न देखना, पर्वत वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ा पर चढ़कर नदी पार होने पर परदेश गमन होता है। स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है। अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न - लाल वस्त्र पहनना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हँस-हँस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना नीम, पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई कपास.तेल, लोहा मिलना इनसे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना, किसी द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु या भारी कष्ट को सूचित करता है। सिर के सारे बालों का वा मुख के दाँत का गिरना द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन या किसी वस्तु को टाँग कर ले जाना, द्रव्य हानि या कष्ट करता है। तेलपका गुलगुल ताँवा ताँबे के पैसे मिलना रोग सूचक है। अपनी स्त्री के वस्त्र को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो, हाथ नाक का कटना कीच (पंक) में फंसना ऊंचे गधे भैंस पर चढ़कर तेल मलकर दक्षिण को जाना और विवाह गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्त वस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बन्दर सर्प चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृ कार्यो का करना भूत प्रेत चाण्डालों के साथ मिलना अथवा भूतादि द्वारा पकड़े जाकर दक्षिम दिशा में जाना, इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में वह जाना, बिना ऋतु के वर्षा का देखना, वाज रीक्ष गीदड़ बिलाव भैंस सर्प मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखर का तथा बड़े मंजिल के ध्वज को गिराते देखने अशुभफल वा चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती देव विप्र इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ या चिन्ता कारक होता है।

स्वप्न फल कब मिलेगा? - रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में द्वितीय का ८ मास में तृतीय का तीन मास में अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। बहुत बड़ा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है।

अशुभ स्वप्नदोष शांति - दुष्ट स्वप्नदोष दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, इष्टदेव पूजन, विष्णु सहस्र नाम, गजेन्द्र मोक्ष, व चण्डी पाठ , ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देख फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है। दुःस्वप्न निवारण मन्त्रः- "लंकायाः दक्षिणेकोणे कुक्कुटो नाम ब्राह्मणः। तस्य स्मरण मात्रेण कुस्वप्नों सुस्वप्नो भवेत्।।"

अथ वृष्टिविचारः

आर्द्रादिकपञ्चाकं पू.भा. रेवत्यादिचतुष्टयम्। पूर्वाषाढ़ा चतुष्कञ्ज चन्द्राणि चतुर्दश।।१।। चैत्राणि रविनक्षत्राणि विज्ञेयानि मनीषिभिः।। रवेर्नक्षत्राणि रोहिणी, मृगशिरा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, मूल, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद चन्द्र नक्षत्राणि आर्द्रा, पूर्वाफाल्गुनी, श्लेषा, मृगशिरा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृतिका, पूर्वाभाद्रपद, श्रवण, धनिष्ठा, इति सूर्य चन्द्रवर्ग वृष्टि चन्द्रे सूर्यर्क्षगे सति। उभौचंद्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदाभवेत्।. तावेनं यदि सूर्यक्षे तदा वृष्टिर्न जायते।। अथ सद्योवृष्टि विचारः वर्षाप्रश्ने शशिन्यराशिगे लग्नेऽपिवा। केंद्रगे वा शुक्ल पक्षे वाऽतिवृष्टि पापदृष्टे शुभेक्षिते।।१।। अल्पवृष्टि प्रावृट् कालेऽचिरादभवेत्। चन्द्रवत् भार्गवसर्वमेघगुणस्थिते।।२।। प्रावृष्टेंदुः क्षिप्रात्सराशिगः शुभ विक्षितः। शुक्रो यदा बुधसमीपगः। तयोर्मध्यगत भानौतदावृष्टि विनाशनः।।४।। पुरतः पृष्टतो भानो शुभायदि समीपगाः। तदा वृष्टि प्रकुर्वन्ति नचैते प्रतिलोमगाः।।५।। ग्रहाणामुदयास्ते वा राश्यन्तर्गतेऽपि पक्षतो प्रायो वृष्टिः प्रजायते।।६।। उदयास्तगतः शुक्रोः बुधश्च वृष्टि कारकः। चलत्यंगारके वृष्टि स्त्रियावृष्टिः शनैश्चरे।।७।। वारिपूर्णां महीं कृत्वा पञ्चात्सञ्चरते गुरु। शुक्रोवास्तमितेर्मदवृष्टिर्दिवाऽपि जायते।।८।।

वर्षा-विज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७२	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	१२	१६	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र में जिस दिन वर्षा होवे उसके नीचे लिखे दिन तक जल वृष्टि उत्तम ढंग से न होगी।

उदाहरण - यदि रोहिणी नक्षत्र का सूर्य आने के पाँचवे दिन पानी बरस गया हो तो ३९ दिन तक सुन्दर ढंग से जल वृष्टि न हो सकेगी। जिस दिशा से बादल रोहिणी नक्षत्र में आते हुए दृष्टिगोचर होगा उसी दिशा में जलवृष्टि की आगे न्यूनता रहेगी।

विशिष्टयोगावली

दीर्घायुर्योगाः

१-तृतीयैकादशे चैव नवमे पंचमे भृगुः।सप्तमस्थे यदाजीवो जीवेद्वर्षशतं नरः।।

जन्म कुण्डली में यदि शुक्र लग्न से ३, ११, ९, ५ स्थानों में से किसी एक में हो और सातवें गुरु हो तो मनुष्य सौ वर्ष जीता है।

२-कण्टकस्थो यदा जीव सप्तमस्थोपि भार्गवः।बुधे च लग्नसंप्राप्ते शतं जीवति जातकः।।

यदि बृहस्पति कुण्डली में कंटकस्य १।४।७।१० में हो और शुक्र सप्तम में पड़ा हो, बुध लग्न में हो तो जातक की आयु सौ वर्ष कहिये।

३-लग्ने जीवस्तथा शुक्रः सौम्यश्चाष्टमगो भवेत्।पापाः सर्वे न पश्यन्ति जीवेद्वर्षशतं नरः।।

लग्न में यदि गुरु और शुक्र पड़े हो, आठवें शुभग्रह हों, सब पाप ग्रह से दुष्ट न हों तो बालक की आयु सौ वर्ष जानिये।

४-पूर्णे चन्द्रे शुभे वर्गे भिन्ने वा मित्रवीक्षिते।उच्चत्रिलाभ संस्थे वा पूर्णायुर्जातको भवेत्।।

पूर्ण चन्द्रमा यदि मित्र के घर में हो, मित्र से देखा जाता हो उच्च का हो, या तीसरे अथवा ग्यारहवें स्थान में बैठा हो तो जातक की आयु पूर्ण जानिये।

बालारिष्टयोगाः

१-षष्ठरिष्फाष्टगश्चन्द्रः क्रूरैश्च सह वीक्षितः।जातस्य मृत्युदः यद्यस्त्वष्टवर्षैः शुभेक्षितः।।

जन्म कुण्डली में यदि चन्द्रमा क्रूरग्रह के साथ या क्रूर दृष्टि युक्त हो ६, ८,१२ घर में बैठा हो तो बालक शीघ्र संसार छोड़ देता है,शुभ ग्रह की दृष्टि होने से उसकी आयु आठ वर्ष होती है।

२-व्यय-शत्रु-गतैः क्रूरैः मृत्युद्रव्यगतैरपि।पापमध्यगते लग्ने सत्यमेव मृतिर्विदित् ।।

यदि पापग्रह लग्न से ६, १२, ८, २ में हो और लग्न पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक को अल्पायु समझिये।

३-शनैश्चरार्कभौमेषु रिष्फधर्माष्टमेषु च । शुभैरावीक्षमाणेषु यो जातो निधनं गतः।। लग्न से बारहवें शनि, नवें सूर्य और आठवें मंगल होवें और उनको शुभ ग्रह न देखें तो अल्पायु योग होता है।

४-शनिक्षेत्रगतो भानुः भानुक्षेत्रगतः शशी। विंशद्वर्षे वदेन्नाशो रक्षितो यदिशंकरः।।कुण्डली में सूर्य, मकर या कुम्भ का हो और चन्द्रमा सिंह राशि का हो तो बीसवें वर्ष के अन्त में निधन हो जाता है।

५-लग्नस्थितो यदा राहुः केन्द्रे भवति चन्द्रमा।बालस्य तस्यारिष्टं स्याद्रक्षितो यदि शंकरः।। जिसकी कुण्डली में लग्न में राहु केन्द्र में चन्द्रमा हो तो वह जातक किसी भी जप, दान से नहीं बच सकता।

६-चतुर्थे च यदा राहुः केन्द्रषष्ठाष्टगः शशी। दशमे।ब्दे भवेन्मृत्युः सद्योजातो न संशयः।। जिसकी कुण्डली में चौथे राहु रहे तथा केन्द्र, छठवें या आठवें चन्द्रमा हो तो उस जातक की मृत्यु दस वर्ष में हो जाती है।

७-सप्तमस्थो भूमिपुत्रो लग्ने भवति चन्द्रमा। आत्मानं पितरं हन्ति मातरं च न संशयः।। जिस बालक की कुण्डली में सप्तम में मङ्गल और लग्न में चन्द्रमा रहता है वह माता पिता सहित अपना नाश कर देता है।

नोट-लग्न, द्वितीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पापग्रह के होने से बालक को अरिष्ट योग होता है। लग्न लग्नेश पापग्रह के बीच में हो या पापयुक्त हो, सप्तम भां दो पापग्रह के बीच में हो (१) लग्नेश अष्टम में (२) अष्टमेश लग्न में (३) लग्नेश अष्टमेश का योग हो (४) चन्द्रमा लग्न पञ्चम सप्तम अष्टम नवम और द्वादश में पाप युक्त हो (५) सन्ध्या समय का जन्म हो (६) मधयाह्न का जन्म हो तो अरिष्ट समझिये।

पुत्र-भाव-विचारः

१- शुक्रेन्दुवर्गैः सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युते.थ दृष्टे। पापैरयुक्ते बहुपुत्रशाली शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः।। यदि पंचम भाव शुक्र या चन्द्र का वर्ण हो, या इस पर शुक्र, चन्द्र की दृष्टि हो और इसमें पापग्रह न बैठे हो तो उस मनुष्य को बहुत संतान सुख योग होता है। यदि शुक्र और चन्द्र की जगह शनि, मङ्गल का पूर्ववत् योग हो तो वह मनुष्य सन्तानहीन होता है।

२- पुत्रस्थे मदनाधिपे वितनयो जायाविहीनो थवा, पुत्रादष्टमशत्रुरिः फगृहगाः पापाः कुलध्वंसकाः। राहौ नन्दनराशिगे तदधिपे दुःस्थानगे पुत्रहा, पुत्रस्थे तनुपेतनौ सुतपतौ गृह्णाति दत्तात्मजम् ।। यदि लग्न से सप्तमेश पंचम में बैठा हो तो मनुष्य स्त्री-हीन वा पुत्र रहित होगा। पंचम भाव से छठे, आठवें तथा बारहवें यदि पाप ग्रह बैठे हो, तो उसी मनुष्य से परिवार-समाप्त हो जाता है। यदि पंचम भाव में राहु हो या पंचमेश ६,८,१२ वे घर में बैठा हो तो मृतवत्सा योग होता है। यदि लग्नेश पंचम भाव में और पंचमेश लग्न में हो तो दत्तक-पुत्र (गोद) का योग होता है।

३- दशमे शीतगुर्धूने भृगुभे पापिनः सुखे। तस्य सन्ततिविच्छेदो भविष्यति न संशयः।। यदि कुण्डली में लग्न से दसवें घर में चन्द्रमा, सातवें शुक्र और पापग्रह चौथे घर मे बैठे हो तो उसे सन्तति विच्छेदयोग होता है।

४- षष्ठाष्टमस्थो लग्नेशः पापयुक्तः सुताधिपः। दृष्टो वा शत्रुनीचस्थैः पुत्रहानि वदेद्बुधः।। यदि लग्नेश छठें या आठवें बैठा हो पंचमेश पापग्रह युक्त हो या शत्रु दृश्य हो तो मतृवत्सा योग होता है।

५- लग्नसप्तमधर्मान्त्यराशिगाः पामखेचराः। सपत्नराशिवर्गस्था वंशविच्छेदकारियाः।। यदि पाप ग्रह १, ७, ९ और १२ वे घर में बैठे हों और वे शत्रु क्षेत्र के हो तो वंशविच्छेद योग जानिये।

पुत्र प्राप्ति समय - लग्नेश, पंचमेश के राशि अंशों को जोड़ने से जो राशि अंश बने उस पर जब गुरु आवे तो पुत्रोत्पत्ति का समय आता है।

दत्तक पुत्र योग-पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे मन्दक्षेत्रेथवा यदि। मन्दिमान्दयुते दृष्टे तदा दत्तादयः सुताः।। पंचम भाव बुध या शनि की राशि में हो (३,६,१०,११,) बुध शनि से युक्त या दृष्ट हो तो दत्तक पुत्र योग होता है। पुत्र प्राप्ति धर्म करने से होती है। बुध, शुक्र और चन्द्रमा प्रतिबन्धक लों तो शिवजी का अभिषेक कराना चाहिए। बृहस्पति प्रतिबंधक हो तो मन्त्र, तन्त्र औषधि प्रयोग से कष्ट निवारण जानिये। शनि राहु और केतु बाधक हो तो कुलदेवता तथा सन्तान गोपाल की आराधना विहित है। पंचम स्थान में जो राशि हो उसकी संख्या तुल्य हरिवंश का पारायण प्राचीन देवस्थान में वा तुलसी के बीच में पुष्कर प्रादुर्भाव सम्पुटित प्रायश्चित करके स्त्री, पुरुष साथ होकर सुनने से कल्याण होता है। काशी से १७ मील उत्तर बृहत् पंचक्रोशी में श्री मार्कण्डेश्वर महादेव का मन्दिर इसके लिये सिद्ध तथा उपयुक्त स्थान है।

कलत्रभावविचार

१-शत्रुस्थाने यदा भौमः सप्तमे सैंहिकासुतः। नैधने भानुपुत्रस्येत्तस्यभार्या न जीवति।।जिसका कुण्डली छठे मङ्गल, सप्तम में राहु और बारहवें शनि पड़े हो तो उसकी स्त्री नहीं जीती है।

२-जयाधिपे लग्नशत्रुधर्मव्ययगते क्रमात् । एक-द्वि-त्रि-चतुर्भार्या भविन्ति नियतं नृणाम् ।।

यदि सप्तमेश लग्न, छठें, नवें और बारहवे घर में पड़ा हो तो उस व्यक्ति को क्रम से १, २, ३ और ४ स्त्रियों का योग होता है। **नोट**- (क) द्वितीय, सप्तम में पाप ग्रह हों, (ख) द्वितीयेश, सप्तमेश पाप युक्त हो (ग) शुक्र से चौथे, आठवें पाप ग्रह हों (घ) सप्तम घर पर पाप ग्रह की पूरी दृष्टि पड़ती हो (ङ) सप्तमेश अष्टम में और अष्टमेश सप्तम में हो, (च) शुक्र सप्तम में हो (छ) सप्तमेश पाप युक्त ६, ८, १२ में हो (ज) केवल बृहस्पति सप्तम में हो (झ) सन्तान प्रति बाधक योग पड़े हों तो मनुष्य स्त्री सुख से वंचित रहता है। यदि दाहिने हाथ में विवाह रेखायें ऊपर की ओर मुड़ी हो और मोटी हो तो उस मनुष्य का विवाह नहीं होगा।

स्त्री प्राप्ति समय - लग्नेश, सप्तमेश के राशि अंशों को जोड़ने से जो राशि अंश बने उस पर बृहस्पति आ जाय तो स्त्री प्राप्ति का समय हो जाता है।

प्रकारान्तर से विशेष योग

लग्न में सूर्य का सम्बन्ध हो तो राजकार्य करने वाला हो (१) लग्न में पूर्ण चन्द्रमा या शुक्र का सम्बन्ध हो तो भोगी तथा विद्या-जीवी होता है। (२) मंगल का योग हो तो धातु विद्या जाने, अग्नि से जीविका करे (३) बुध का योग हो तो सूत का काम तथा व्यवसाय करता है (४) बृहस्पति का सम्बन्ध हो तो विद्वान् और ज्ञानी हो (५) शुक्र का योग हो तो भी राजकार्य में नियुक्त और दीर्घायु हो (६) शनि हो तो प्रसिद्ध कर्म से जीविका करे (७) राहु हो तो लोहा का व्यापार करे (८)केतु हो तो उत्तम व्यवसायी हो (९) रवि राहु लग्न में हो शुभ दृष्टि न हो तो सर्प का भय हो (१०) गुलिक लग्न में हो पाप दृष्टि हो तो विष का भय हो (११) लग्न में सूर्य का योग या दृष्टि हो तो राज प्रेम हो (१२) दशम में बुध हो तो प्रसिद्ध कर्म करने वाला हो (१३) शुभ ग्रह दशम में हो तो स्थिर हो (१४) रवि दशम में हो केवल बृहस्पति की दृष्टि हो तो गोपालक हो (१५) चतुर्थ में चन्द्रमा और शुक्र का सम्बन्ध हो तो गृह बनाने वाला हो (१६) नवम में शुभ दृष्टि योग हो तो धार्मिक हो। शनि राहु हो तो अपने भृत्य से विरोध करे (१७) लग्न में मंगल शुक्र का सम्बन्ध हो तो परदारा संसक्त हो (१८) सप्तम में शुक्र चन्द्रमा का सम्बन्ध हो तो उसकी स्त्री सुन्दरी हो (१९) शनि का समन्वध हो तो स्त्री वयोधिका हो (२०) तृतीय में पापग्रह हो तो वीर हो शुभग्रह हो तो कायर हो (२१) तृतीया में षष्ट पाप ग्रह नवम में बृहस्पति हो तो कृषि कारक होता है (२२) द्वादश में शुभग्रह तथा केतु के होने से धार्मिक होता है (२३) नवम पंचम में पापग्रह हो तो मन्त्रज्ञ हो (२४) लग्न में चनद्रमा हो शुक्र का योग या दृष्टि हो तो रसायन जानने वाला हो (२५) चतुर्थ या पंचम में मंगल राहु हो तो क्षय रोग होता है। पाप सम्वन्ध से उदर विकार होता है (२६) लग्न पंचम में और द्वितीय में शुभग्रह का सम्बन्ध हो तो विद्वान होता है। (२७) द्वितीय अष्टम में पाप सम्बन्ध हो चन्द्रमा की दृष्टि हो तो केमद्रुम योग होता है। (२८) एकादश में शुभग्रह या पापग्रह या दृष्टियोग हो तो धनवान् होता है। शुभ सम्बन्ध से उत्तम मार्ग से पाप सम्बन्ध से नीच मार्ग से धन लाभ होता है (२९) द्वादश में अधिक ग्रह योग दृष्टि से अधिक व्यय होता है (३०) सप्तम में राहु केतु के होने से उदर रोग होता है। द्वितीय में केतु के होने से शीघ्र वार्धक्य चिन्ह हो जाते हैं (३१) सप्तम द्वितीय में चन्द्र बुध गुरु और शुक्र के योग से श्रीमान् हो (३२) जन्मलग्न , होरालग्न और घटि कालग्न को एक ही ग्रह देखता हो या तीनों के दृष्टि कोणों को एक ही ग्रह देखे या तीनों के नवांश को एक ही ग्रह देखे तो श्रीमान् होता है। जन्मेष्ट काल के घटी के तुल्य राशि जानना कलादि का आधा करके अंशादि जानना इन राश्यादि को स्पष्ट सूर्य के राश्यादि में जोड़ देने से घटिका लग्न होती है (३३) लग्न और सप्तम के राशि, अंश और दृष्टि कोण इन छवों पदार्थो को एक ही ग्रह देखे तो भी राजयोग होता है। इसमें जैसे-जैसे दृष्टि कम हो वैसे-वैसे योगों से भी तारातम्य जानना चाहिये (३४) जो ग्रह चर राशि में रहता है वह अपने द्वितीय स्थिति को छोड़कर बाकी तीनों स्थिर राशियों को देखता है। जो ग्रह स्थिर राशि में रहता है वह अपने द्वादशस्थ चर को छोड़ कर बाकी सभी चरों को देखता है एवं द्विस्वभाव में रहता है यह अपने साथ वलों को छोड़कर बाकी सब द्विस्वभाव को तथा द्विस्वभाव गत ग्रहों को देखता है। इस प्रकार में इसी दृष्टि से व्यवाहर करना ठीक है (३५) दिनार्ध और रात्र्यार्ध में अढ़ाई दण्ड शुभ समय है इसमें उत्पन्न बालक श्रीमान् होता है। (३६) शुभ स्वामी के लग्न में चन्द्रमा हो द्वितीय में शुभ युक्त बृहस्पति हो वा उच्च गत ग्रह हो तो भी श्रीमान् हो (३७) सप्तम में शुभ ग्रह हो तृतीय में पाप ग्रह हो चतुर्थ में भी शुभ योग हो तो श्रीमान् हो (३८) चतुर्थेश सप्तमेश द्वितीयेश और लाभेश लग्न को देखते हो और एकादश को शुक्र देखता हो तो धनवान् हो (३९) नीच गत ग्रह भी लग्न को देखते हों तो भी भाग्य योग होता है (४०) चर लग्न का एकादश,स्थिर लग्न का नवम और द्विस्वभाव लग्न का सप्तम बाधा स्थान कहा जाता है। इनके स्वामी और इनमें रहने वाले अपनी दशा में हानिकारक होते हैं।

गुरु - शनि गोचर - फलम्

गुरु : - जीवे जन्मन्यपगतधनधीः स्थानभ्रष्टो बहुकलयुतः। प्राप्यार्थेऽर्थान् व्यरिरपि कुरुते कान्तास्याब्जे भ्रमरविलसितम् ॥१॥ स्थानभ्रंशात्कार्यविघाताच्च तृतीयऽनेकैः क्लेशैर्वन्धु धुजनोत्थैश्च चतुर्थे। जीवे शांति पीडितचितश्च स विन्देन्नैव ग्रामे नापि वने मत्तमयूरे॥२॥ जनयति च तनयभवनमुपगतः परिजनशुभसुत-करितुरगवृषान् । सकनपुरगृहयुवतिवसनकृन्मणिगुणनिकरकृदपि विबुधगुरुः॥३॥ न सखीवदनं तिलकोज्जवलं न चं वनं शिखिकोकिलनादितम् । हरिणप्लुतशा-विचित्रितं रिपुगते मनसः सुखदं गुरौ॥४॥ त्रिदशगुरुः शयनं रतिभोगं धनमशनं कुसुमान्युपवाह्यम् । जनयति सप्तमराशिमुपेतो ललितपदां चर गिरं धिषणां च॥५॥ बन्धं व्याधिं चाष्ट में शोकमुग्रं मार्गक्लेशान् मृत्युतुल्यौश्चरोगान् । नैपुण्याज्ञापुत्र-कर्मार्थसिद्धिं धर्मे जीवः शालिनीनाँ च लाभम्॥६॥ स्थानकल्यधनहा दशर्क्षगस्तत्प्रदो भवति लाभगो गुरुः। द्वादशेऽध्वनि विलोमदुःखभाग्याति यद्यपि नरो रथोद्धतः॥७॥

शनिः- प्रथमे रविजे विषवाह्निहतः स्वजनैर्वियुतः कृतबन्धुवधः। परमदेशमुपैत्य सुहृद्भवनो विमुखार्थसुतोऽटकदीनमुखः॥१॥ चारवशाद् द्वितीयगृहगे दिनकरतनये रूपसुखापवर्जिततनुर्विगतमदबलः। अन्यगुणैः कृतं वसुचय तदपि खलु भवत्यम्बिवव वंशपत्रपतितं न बहु न च चिरम् ॥२॥ सूर्यसुते तृतीयगृहगे धनानि लभते दासपरिच्छदोष्ट्रमहिषाश्वञ्जरखरान् सद्य विभूतिसौख्यममितं गदव्युपरमं भीरुरपि प्रशास्त्यधिरिपूंश्च वीरललितैः॥३॥ चतुर्थं गृहं सूर्यपुत्रेऽभ्युपेते सुहृद्वित्तभार्यादि-भिर्विप्रयुक्तः। भवत्यस्य सर्वत्र चासाधु दुष्टं भजुङ्गप्रयातानुकारं च चित्तम् ॥४॥ सुतधनपरिहीणः पञ्चमस्थे प्रचुरकलहयुक्तश्चार्कपुत्रे। विनिहतरिपुरोगः षष्ठयाते पिबति च वनितास्यं श्रीपुटोष्ठम् ॥५॥ गच्छत्यध्वानं सप्तमे चाष्टमे च हीनः स्त्रीपुत्रैः सूर्यजे दीनचेष्टः। तद्वद्धर्मस्थे वैरहृद्रोगबन्धैर्धर्मोऽप्युच्छिद्येद्वैधदेवीक्रियाद्यः॥६॥ कर्म प्राप्तिदर्शमेऽर्थक्षयश्च विद्याकीर्त्योः परिहानिश्च सौरे। तैक्ष्ण्यं लाभे परयोषार्थ-लाभश्चान्तये प्राप्नोत्यपि शोकोर्मिमालाम् ॥७॥ अपि कालमपेक्ष्य च पात्रं शुभकृद्विदधात्यनुरुपम् । न मधौ बहुकं कुडवे वा विसृजत्यपि मेधवितानः॥८॥

प्रसूती लग्न विचार

मेष - जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर उपसूतिका का २ या ३, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पेर से प्रसव, भूमि पर, घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एव मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे इन वर्षों के आरम्भमें तुलादान, गोदान मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १००वर्ष जीवे।

वृष- माता का दक्षिण में शिर,उपसूतिका ३ या ४ जन्मोपरान्त दो और आयी, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण अधोमुख पेर से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत, स्वच्छ वस्त्र जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया १।१८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन-माता का पश्चिम में शिर, उपसूतिका ३ या ५ माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव मुख ऊपर को जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाक छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म। माता ने पहले लवणयुक्त विचित्र अल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१३।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे इससे बचे तो १०० वर्ष जीवे,कष्टकारक वर्षों के प्रवेश समय तुलादान छायादान मृतसंजीवनी मन्त्र का जप करवाना कल्याणप्रद है।

कर्क-माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४ बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, वाम भाग में चिन्ह पैर के बल जन्म घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता का वस्त्र श्वेत या लाल, माता ने प्रसव के पूर्व मुधर एवं शीतल भोजन किया था। दीपक उठा या गया। बालक के वामांग मे लहसन आदिक का चिन्ह, बालक जन्मोत्तर देर से रोया ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्ट कारक वर्षों के प्रवेश समय तुलादान छायादान मृतसंजीवनी मन्त्र का जप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह- माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलिन-सा लाल वस्त्र शुष्क कसेला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३ पीछे से १ आई दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया। दक्षिण भाग में प्रसव स्थान। ५।१२।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे इनसे बचे तो ६४ वर्ष जीवे। कष्ट कारक वर्षों के प्रवेश होते हैं श्रीसूर्य नारायण के मन्त्र का जप या आदित्य हृदय पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण होवे।

कन्या - माता का दक्षिण में शिर, रक्तजीर्ण वस्त्र मिष्ठ।न्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५ दीपक हाथ में आठ।या गया, बालक के जन्मते ही अर्ध शब्द किया, नैऋत्यकोण में सूतिका स्थान ४।१५।२३।३५।४५ इन कष्ट कारक वर्षों में गोदान मृत्युञ्ज्य जपादि और मूंग के मोदक भोजन कराना श्रेयस्कर है, यदि इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला - माता का शिर पश्चिम या पूर्व को श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुजा हुआ। अन्न ठण्डा जल या कोई मामूली चीज क्रोध पूर्वक खाई गयी थी। जन्म समय स्त्री ३ या वहाँ एक कन्या भी हो दीपक उठ।या गया बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्ध करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान ८।१५।३६।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के आरम्भ में नवग्रह दान, नवग्रह जप करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक - माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दुग्ध वस्त्र, अधिक अमधुर क्रोध पूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३ पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया दीर्खंश घर के पश्चिमी भाग में प्रसव स्थान, ११।२८।५८।६१ इन कष्ट कारक वर्षों के आरम्भ में मृत्युञ्जय जप औरतुलादान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीये।

धनु-माता का शिर पश्चिम पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान भोजन, जन्म समय स्त्री १ व ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान १।१०।१८२१।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन महामृत्युञ्जय जप ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७१ वर्ष जीवें।

अथ होरा मुहूर्त्त चक्रम् (शुभ ग्रह का फल शुभ एवं पाप का नेष्ट)

वार	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा
घंटा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
रवि	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध
सोम	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंग.	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंग.	रवि	शुक्र	बुध	सोम

राहुकाल विचारः

सप्ताह के ७ दिनों में प्रतिदिन प्रायः १ घंटा ३० मिनट का समय राहुकाल होता है। इसकी गणना दिनमान पर आधारित है। नीचे प्रतिदिन के राहुकाल का स्थूल समय पाठकों के सुविधार्थ प्रचलित घड़ी के अनुसार-

सोमवार-प्रातः ७.३० से ९ बजे तक।
मंगलवार-अपराह्न ३ से ४.३० बजे तक।
बुधवार-मध्यान्ह १२ से १.३० बजे तक।
गुरुवार-मध्यान्ह १.३० से ३ बजे तक।
शुक्रवार-पूर्वान्ह १०.३० से १२ बजे तक।
शनिवार-प्रातः ९ बजे से १०.३० बजे तक।
रविवार-सायं ४.३० से ६ बजे तक।

मकर - माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दूध या कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था, जन्म समय १ स्त्री पीछे आई। दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्ध शब्द से रोया और छींक भी किया। घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिका स्थान ५।१३।२७।३३।५७।६३।८४ इन कष्टकारक वर्षों के आरंभ में रुद्राभिषेक स्वर्णदान अन्नदान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवें।

कुम्भ - माता का पश्चिम को शिर, जीर्ण धूम्र-वस्त्र या मलिन वस्त्र मधुर शीत शाकादि भोजन कष्ट अधिक, जन्म के समय पास में स्त्रियाँ ४ या २, १ पीछे से आई उनमें से एक स्त्री गर्भिणी थी। दीपक स्वस्थान में टिका रहा,बालक जन्मोत्तर अर्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका गृह २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के आस-पास प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवें।

मीन - माता का शिर उत्तर, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र ढंग का भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५ दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था। बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशानकोण में सूतिका स्थान, १।७।१३।३६।४५ इन कष्टकर वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह शान्ति हवन, मृतसंजीवनी मन्त्र का जप करना श्रेष्ठ है।यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवें।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न में लक्षण मिले वही बालक का जन्म लग्न जानना, क्योंकि वह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

राशियों का वर्ण - मेष लाल, वृष सफेद, मिथुन हरा, कर्क पाटल, (गुलाब के फूल जैसा थोड़ा लाल) सिंह धूम्र, कन्या चित्र, तुला कृष्ण, वृश्चिक गौर, धनु गौर, मकर भूरा, कुम्भ और मीन श्वेत वर्ण का है।

ग्रहों का वर्ण - सूर्य लाल, चन्द्रमा गौर, मंगल लाल, बुध श्याम, गुरु पीत, शुक्र श्वेत, शनि काला, राहु और केतु भी काले होते हैं।

राशियों की दिशा - मेष, सिंह, धनु पूर्व का। वृष कन्या, मकर दक्षिण का। मिथुन, तुला, कुम्भ पश्चिम का और कर्क, वृश्चिक, मीन उत्तर के स्वामी होते हैं।

ग्रह दिशा- सूर्य पूर्व, शुक्र अग्निकोण, मंगल दक्षिण, राहु नैऋत्य, शनि पश्चिम, चन्द्रमा वायव्य, बुध उत्तर और गुरु ईशान का स्वामी है। जो ग्रह अपनी राशि से मित्र की राशि में और उच्च में रहता है एवं शुभ ग्रह और मित्र के साथ रहता है वह बलवान कहा जाता है और ग्रह शत्रु के गृह में नीच में, पाप ग्रह से और शत्रु से युक्त होता है वह दुर्बल माना जाता है। जो राशि अपने स्वामी से तथा शुभ ग्रह से युत हो तो बलवान तथा पाप ग्रहयुक्त राशि दुर्बल होती है। जिसके घर का स्वामी छठे , आठवें और बारहवें भाग में पड़े अथवा षष्ठाष्टम द्वादशाधीश जिस भाव में पड़े उस भाव की हानि होती है।

जातक प्रकरण

अथादौ पितृपरोक्षज्ञानम्- जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे १, बुध शुक्र के भवन में चन्द्रमा हो, लग्न शनैश्चर चन्द्रमा से अष्टम हो ३, भौम सप्तम चन्द्रमा को न देखता हो ४- इन चार योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना। जहाँ राहु शय्या वहाँ भंग तहाँ कुज होय।

अथ मातृ-सुख-नाश योग - (१) पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पाप ग्रह हो (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे (५) चौथे भाव में शनि पाप ग्रह से ही दृष्ट हो, इन पाँचों में से एक भी योग मिले तो माता का भय हो - जप दान करना चाहिये।

पितृनाशयोगः- (१) सूर्य मंगल दशम वा नवम में गये हों। (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो इन चारों योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोगः- भातृ गृह को ईश जो, भौम संग त्रिक होय, जाके ऐसे योग है, भ्रातृ हीन सो होय।

सन्तान सुख नाशक योग - गुरु से पञ्चम गेहपति, परे जाय त्रिक भाव। ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव।। पुत्र धर्म अरु लग्नपति, जाय परे त्रिक यान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हानि।

नीच योगः- सहज सप्त धनु सदन में, क्रूर बसे रवि आई। भवन पाँचवे, गुरु बसे, नीच जातमान सोई।। सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकाल। म्लेच्छ होइ कुछ दिवस में यद्यपि ब्रज को बाल।। जिसके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राज सुख होवे वेश्याबाज।

जारज योग - भानु, चन्द्र तनु ना लखै लग्नप लखे न लग्न। जो शिशु है पर पत्न्य को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुल गुरु तिथि अष्टमी, चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तरा जन्म में नव शिशु कहो वरार।।

अथ स्त्री जातक- क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहिं होय सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहोय कोय। जाके कुज दश में बसे ऋणी हो पति तासु। लग्न राहुशनि सातवेंपति जीवे नहिं जासु। क्रूर युत लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुध वार कहें कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में, कन्या को पति ओर। पाप दृष्टि शनि सातवें, कन्या वास कुठोर। लग्न बीच शनि कुज तमसि, निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहे, पति को तजे तमारि। छठे आठ वें चन्द्र जो, क्रूर परे जिन अंग। भौम आठ वें भवन में, सो पति करिहे भंग।। राहु सातवें लग्न कुज संकट शुभसो हीन। ताको पति जीवित रहे, वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूर युत राहु बसे तन धाम। रॉड हो कुछ दिवस में, कहत गणक गुणधाम। पाप ग्रहों के बीच में, लग्न होइ वा चन्द्र। सो तिय नाशे दूनों, भाषत कविकुल वृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसे, सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनुभृगु बसे, बुधजन कहत विचारि।।

वैधव्य (विष) कन्यायोगः- चौपाई-रविवार द्वितिया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय।।१।। कृत्तिका होय शनिश्चरवार। याते तिथि कर करो विचारं।।२।। शतभिषा मंगलवार । कहो द्वादशी तिथि निर्धार।।३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानी सोय।।४।। जन्म लग्न द्वय शुभ ग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वय ग्रह मानो। तो कन्या को विधवा जानो।।६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार साते तिथि लीजो निर्धार ।।८।। रविवार द्वादशी जो होय नक्षत्र विशाखा जानो सोय।।९।। ऐसो योग ससि जो परे, तो कन्या को विधवा करे।।१०।। धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूरज होय सुत सदन में, कन्या विधवा जान।।११।।

वैधव्य (विष कन्या) भङ्गयोगः- जन्म लग्न वा चन्द्र ते, शुभ ग्रह अष्टम होय। अथवा सप्तम लग्नपति, शुभगा कन्या होय।

काकवन्ध्या योगः- द्वादशे अष्टमे काकवन्ध्याः। मन्दार्कौषष्ठमै वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।

स्त्रीणां राजयोगः- चौपाई केन्द्रभाव नभगा शुभ होई। नर तनु पाप कलत्र न कोई। रानी होई बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइहैं सुत वाके। चन्द्र तुंग बसे तन जाई। लाभ नवम गुरु आगे भाई। सोई तिय होय नृपति की रानी। जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षटवर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि रवि केन्द्र भवन में सोई। ऐसे योग बने सुकुमारी। रानी होय सदन बद भारी।। दोहा- कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि भरपूर। पुत्र पौत्र धन भूरियुत ताको पति नृप शूर।। लाभ भवन सित चन्द्र जी, सोमज सप्तम भौन। सुर गुरु परिपूरन लावै, रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभाव विचार- पंचमे शुभसंदृष्टे पंचमाधिपतावपि केन्द्र कोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मासः-कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गो, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूती हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहाँ सर्वत्र सौर मास को ग्रहण करें। प्रसूती गौ आदि का तत्क्षण दान कर आहुति मन्त्रों से घृत युक्त पीली सरसों का हवन करे। कार्तिक में बच्चा जन्म तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ हो।

त्रिखल जन्म फल-यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा ३ पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण माता पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं। कृपणता त्याग कर त्रिखला शान्ति करे तो शुभ होता है।

यदि बच्चे को सर्व प्रथम ऊपर की दंत पक्ति निकले तो मातुल को भयप्रद हो। सदन्तौर्ध्वपंक्ति वाला बालक जन्मे तो माता पिता आदि को भयप्रद होता है। शान्ति करानी चाहिए।

अथैकनक्षत्रजन्मफलम्- वृद्धगर्ग जी कहते हैं कि- यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता का एक नक्षत्र में और एक ही चरण में जन्म हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

कन्याजन्म नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेपा	ज्येष्ठ	विशाखा
फलम्	श्वसुरहानि	सासनाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतश्वसुरहन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नव तथाऽऽश्लेषाद्यपादज।।

अथ मूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठ	मूल	रेवती

यह ६ नक्षत्र गन्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करनेवाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन भवन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र को ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए। तत्पश्चात् शान्ति कराके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा के चरण जन्म फल

मूल			आश्लेषा		
चरण		फल	चरण		फल
१	में	पितृनाश	४	में.	पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से शुभ	१	,,	शान्ति से शुभ

अथ मूलनिवास-फाल्गुन ज्येष्ठे वैशाखे मार्गे मूले रसातले। आषाढ़े वा आश्विने माघे स्वर्गे भाद्रपदे स्थितिः। श्रावणे कार्तिके चैत्रे पौषे च मृत्युमण्डले शुभं स्यात् स्वर्गपाताले मृत्युलोके च मृत्युदः।। तृतीय दशमी षष्ठी शनिः भौमः समन्वितः। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम्। यदि गण्डे प्रसूयेत् महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।

दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृती शूले, गण्डतिगण्डे च परिघे यमकंटके। व्रहदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गण्डदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शांतिकम्।। यथा सर्वविषं च मन्त्र श्रवण विलीयते। तथैव गण्डदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। यत्नेः शतौषधीमूले सप्तमृत्सि पूरयेत्। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि। बालकान्वापित्रस्नाने विप्रसम्पादिते सत्ति। जप होमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धाचरणे मूले कष्टं स्मृतं बुधैः मुनीनां वचनं सत्यं मन्त व्य कल्याणं इप्सिभिः।।

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
७	८	११	११	१२	१२	३	३
मूल नाश	वंश क्षय	मातृ पीड़ा	मातुल नाश	राज्य लाभः	राज्य मंत्री	राज्य प्राप्ति	श्र.श्रा.

ज्येष्ठ नक्षत्र की अन्तिम पाँच घटी, किसी के मत से चार घटी किसी के मत से एक घटी और किसी के मत से आधी घटी एवं मूल नक्षत्र की आदि की आठ घटी किसी के मत से चार घटी, दो घटी और आधी घटी, अभुक्तमूल कहलाता है, इस समय में जो बच्चा जन्मे उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष तक मुह न देखे। घनगण्डे दरिद्रोऽपि शान्ति कुर्यात् स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोतिचाभुक्तर्क्षे विशेषतः।

अश्विनीनक्षत्रफलम्- अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय होता है। विशेषः-पितृहा तु दिवाजातो रात्रौजातस्तु मातृहा। आत्मकष्ट सन्ध्ययोर्जातो नास्तिगण्डो निरामयः।

आश्लेषापाद फलम्- आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो शुभ सम्पत्तिदायक फल, द्वितीय चरण में धन का नाश, तृतीय चरण में माता का नाश, चतुर्थ चरण में पिता का नाश होता है। इसी नक्षत्र के दिन शांति करनेसे दोष नष्ट हो जाते हैं।

मघापाद फलम् - आद्यपादे मघायाः स्यान्मातृपक्षस्य नाशनम्। द्वितीये पितृनाशः स्यात्तृतीये सुखसम्पदः। चतुर्थे द्रविणं विद्यादिति शंकरभाषितम्।

ज्येष्ठापादफलम्- आद्यपादोऽग्रजं हन्ति अनुजं च द्वितीयजे। तृतीये जननीनाशः आत्मानं च तुरीयके। ज्येष्ठजपादयो ज्येष्ठे घ्नन्ति बाला न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षमातरं तथा।

रेवतीपादफलम्- रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री या प्रबन्धक, तीसरे में सुख सम्पत्ति युक्त, चौथे चरण में अनेक कष्ट हों।

सामान्य योग विचार

जन्मकुण्डली में जन्मराशीश बलहीन होकर पंचम नवम में हो तो क्रोधी होता है। जन्म लग्नेश और राशीश षष्ठ हो तो दुर्बल होता है। षष्ठ मेश अष्टमेश नवमेश पापयुक्त हो तथा पाप दृष्ट हो तो उस पुरुष की स्त्री व्यभिचारिणी होती है। चन्द्रमा मेष या वृष में मंगल शनि के साथ हो तो उसको दुष्ट रोग होता है। चन्द्रमा शुक्र मंगल कर्क वृश्चिक और मीन में हो तो भी कुष्ट रोग हो। बृहस्पति षष्ठाष्टम द्वादश में हो तो गुप्त रोगी हो मंगल और शनि षष्ठ वा द्वादश में हो तो वह व्रणयुक्त होता है।

मेष मीन कर्क मकर और वृश्चिक राशि में शनि, चन्द्रमा होकर नवम स्थान में पापयुक्त हो तो वह अंगहीन होता है। मंगल शनि और बृहस्पति चतुर्थ में हो तो हृदय रोग होता है। चतुर्थ में मंगल, पंचम में सूर्य बुध राहु और अष्टम शनि पड़ा हो तो वह सदेव दुःखी रहता है। मंगल और बुध एकत्र शुभग्रह के राशिमें हो अथवा शनि के राशि में हो, रवि की दृष्टि हो तो वह विदूषक होता है। मंगल बुध और चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो शीघ्रोत्तर दानशील होता है।

शुक्र और बुध सप्तम में हो (१) दशम में हो (२) शुक्र और मंगल दशम तथा सप्तम में हो (३) या दशम चतुर्थ में हो (४) चन्द्रमा से दशम स्थान में और शनि से चतुर्थ में शुक्र हो (५) सो व्यभिचारी होता है।

शुक्र शनि ग्रह मंगल के राशि में हो (१) सप्तम में शुक्र लग्नेश हो (२) शनि चन्द्रमा मंगल से दशम या चतुर्थ में हो तो उसकी स्त्री उससे सन्तुष्ट नहीं रहती।

सूर्य पंचम नवम वा द्वादश में पापयुक्त हो तो नेत्र विकार होता है और शनि हो तो कर्ण विकार होता। शुक्र मंगल अष्टम में हो (१) मंगल और शुक्र मंगल की राशि में हो (२) शुक्र और चन्द्रमा मंगल की राशि में हो या शनि बृहस्पति को देखता हो तो शुष्क वृद्धि होती है। धनु मेष या वृष लग्न हो पापग्रह देखते हों तो दन्त विकार होता है। पापग्रह का लग्न हो वा धनु या वृषलग्न हो और पापग्रह होतो खल्वाट होता है। नवम द्वितीय द्वादश और पंचम में पापग्रह हो तो वन्ध्यायोग होता है।

लग्न चन्द्रमा से सप्तम स्थान अपने स्वामी और शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट होतो उसका विवाह होता है। लग्न चन्द्रमासे पंचम स्थान स्वामी शुभ ग्रह से युक्त हो तो सन्तति होती है। कन्या लग्न में सूर्य और चन्द्रमा हो तो स्त्री पुरुष दोनों को आँख में विकार होता है।

शुक्र सप्तम स्थान में मंगल या शनिके वर्ग में हो मंगल शनि देखते भी हो तो वह स्त्री संसक्त हो,यदि ये चन्द्रमा के साथ हों तो उसकी स्त्री पुंश्चली होती है शुक्र और चन्द्रमा से सप्तम मंगल हो तो वह पुरुष स्त्री पुत्रहीन हो, सप्तम में स्त्री पुरुष दोनों ग्रह हो पाप ग्रह की दृष्टि हो तो अधिक अवस्था में विवाह होता है। शुक्र मंगल सप्तम में पाप दृष्ट हों तो प्रत्यक्ष रोग होता है। चन्द्रमा कर्क और वृश्चिक के नवांश में पाप युक्त हो तो गुप्त रोग होता है। द्वितीय और द्वादश में दो पाप ग्रह हो चन्द्रमा लग्न में और सूर्य दशम में हो श्वेत कुष्ठ होता है। चन्द्रमा दशम में मंगल सप्तम में और शनि द्वितीय में हो तो अंगहीन होता है। चन्द्रमा दो पाप ग्रह में रहकर सूर्य हो तो श्वास इत्यादि रोग होते हैं।

(१) अथ तेजी मन्दी निकालने का ध्रुवा

अथ दिन ध्रुवा ।।१।।

सूर्य १३०। चन्द्र ९४। मंगल ८०९। बुध ७०२। बृहस्पति ७१३। शुक्र ८०८। शनि ८५। पृथ्वी भर का ध्रुवा २०८५।

अथ तिथि ध्रुवा।।२।।

प्रतिपदा ६१०। द्वितीया ७१०। तृतीया ४८१। चतुर्थी २५० पंचमी ३३४। षष्ठी ३०४। सप्तमी ८१२। अष्टमी १११। नवमी ५६५। दशमी ३०५। एकादशी २२३। द्वादश २६१। त्रयोदशी ५२४। चतुर्दशी ५५२। पूर्णिमा ६३०। अमावस्या १६६।।

अथ नक्षत्र ध्रुवा।।३।।

अश्विनी १७६। भरणी ६८३। कृत्तिका ३७०। रोहिणी ७७५। मृगशिरा १०२। आर्द्रा १४६। पुनर्वसु ५४०। पुष्य ६३४। श्लेषा १७०। मघा ७३। पू.फा. ८५। उ.फा. १४८। हस्त ८१०। चित्रा ३०५। स्वाती ८६१। विशाखा ७३४। अनुराधा ७१२। ज्येष्ठ ७१६। मूल ६४३। पू.षा.६१४। उ.षा. ५२३। अभि.६८३। श्रवण ६५७। धनिष्ठ ५००। शतभिषा ५६४। पू.भा.प.३३६। उ.भा.प.१८३। रेवती ८३०।

अथ मास ध्रुवा ।।४।।

चैत्र ६१। वैशाख ६३। ज्येष्ठ ६५। आषाढ़ ६७। श्रावण ६९। भाद्र ७९। आश्विन ७३। कार्तिक ५१। मार्ग ५३। पौष ५५। माघ ५७। फाल्गुन ६५।

अथ सूर्य राशि ध्रुवा ।।५।।

मेष ५२०। वृष ७६२। मिथुन ५१०। कर्क २१८। सिंह ८३०। कन्या २६०। तुला ५०३। वृश्चिक ७११। धनु ५२४। मकर ५५४। कुम्भ २७०। मीन ५८६।

अथ देश तथा नगरों की ध्रुवा।।६।।

कलकत्ता ३४७। नागपुर १६६। असाम ७९१। इटावाँ ८९०। हरद्वार १७२। बीकानेर २१३। अजमेर १६७। बम्बई १६८। मध्यप्रान्त १६८। नेपाल १५४। चीन ६४२। पंजाब ४११। रंगून १६७। सूरत १२८। यूरोप २७६। अमेरिका ३२२।

अथ पदार्थों की ध्रुवा ।।७।।

सोना २५३। चाँदी ७६०। तांवा ५६३। पीतल २५८। लोहा ९१५। कांसा-पत्थर १६३। मोती १४२। रुई ६१७। कपड़ा १२७। पाट ४७६। हेसियन ७३८। सूर्ती १०३। तम्बाकू २४०। सुपारी २५२। लाह ८८। मरिच २६८। घृत ४६४। अतर ७५ गुड़ ३५६। चीनी ३२८। ऊन ११२। शाल ८११। धान ७१२। गेंहू ३३२। तेल मूंग ८०२। चावल ७७४। तीसी ३८६। गो १३२। बेल १६३। भैंस ६२८। हाथी ८३०। घोड़ा ८३५।

अथ तेजी मन्दी देखने का चक्र।।८।।

सूर्य १ तेज। चन्द्र २ अतिमन्द। भौम ३ तेज। बुध ४ अतितेज। बृहस्पति ५ मन्द। शनि ६ तेज। राहु ७ सम। केतु ८ तेज। शुक्र ९ तेज।

जिस देश को, जिस वस्तु की, जिस दिन तेजी मन्दी निकालनी हो उस देश, वस्तु, तिथिवार, नक्षत्र मास, राशि इन सबके ध्रुवाओं का योग (जोड़) कर ९ का भाग देकर शेष से जिस दिन को विचारना है, उस दिन से शेष तुल्य कोष्ठ आठ वें चक्र में देखकर तेजी मन्दी ज्ञान कर लेवें।

(२) दैनिक तेजी मन्दी निकालने की रीति

वस्तु विंशोपक धातु

सोना ९६। चाँदी ७१। पीतल ५९। मूंगा ५१। लोहा ५४। शीशा ९०। कांसा १२७। मोती ९५। रांगा ६७। ताँवा १०। कुमकुम २५।

किराना

कपूर १०२। गुड़ ७३। जीरा ७०। शक्कर १०२। मिश्री १०३। ज्वार १००। घृत ५०। तैल १०। नमक ५९। हींग ६२। सुपारी ३०४। अरहर ७२। मिर्च ८३। सूत ९४। सरसों ८०८। कपड़ा १००। चमड़ा ८७। मूंग १५। सोंठ १००। गुड़ ४०। विनौला ८८। मजीठ १४४। नारियल ७८१। छोहारा १४४। चावल १७। जौ ५७। साठी १६५। गेहूँ १४ उड़द ८०। तिल ५३। अरहर ७२। चना ५६। कपास १२७। अफीम ११२ रुई ७७।

पशु

अश्व ७७०। हाथी ६४। भैंस ९२। गाय ७७ बैल ८७। बकरी ६०। सांड़ ९४ ऊँट ८५।

नक्षत्र विंशोपक

अश्विनी १०। भरणी १०। कृत्तिका ९६। रोहिणी २०। मृगशिरा ५६। आर्द्रा ८६। पुनर्वसु २१। पुष्य ६४। आश्लेषा १३५। मघा १५०। पू.फा.२२०। उ.फा. ७२। हस्त ३३४। चित्रा २१। स्वाती २१०। विशाखा ३२०। अनुराधा ४९३। ज्येष्ठ ५५९। मूल ५५२। पू.षा. १४२। उ.षा.४२०। श्रवण ४५०। धनिष्ठा ७३६। शतभिषा ५७६। पू.भा. २७५। उ.भा. २२६। रेवती ३५६।

संक्रान्ति राशि विंशोपक

मेष ३७। वृष ८४। मिथुन ६६। कर्क १०९। सिंह १२५। कन्या १०२। तुला १०४। वृश्चिक १४४। धनु १४४। मकर १९८। कुम्भ १९०। मीन १८०।

तिथि		विंशोपक		वार		विंशोपक
१	१८	१०	१७	मंगल	५०	निकालनो हो उस
२	२०	११	१५	बुध	७२	महिने की संक्रान्ति
३	२२	१२	११	गुरु	६५	का ध्रुवांक तिथि
४	२४	१३	१३	शुक्र	२४	वार उसमें सब का
५	२६	१४	८	शनि	१४	ध्रुवांक जोड़ देवे।
६	२५	अमावस्या	९	**तेजी मन्दी**		फिर ३ का भाग देने
७	२३	पूर्णिमा	१६	जिस मास की		से १ शेष तो मन्दी
८	२१	रवि	४०	या जिस दिन की		२ समान और ०
९	१९	चन्द्र	५०			बचे तो तेजी।

(३) तेजी मन्दी निकालने का तृतीय प्रकार

वस्तु	स्वामी राशि	पुरश्चरण
गेहूँ	कुम्भ	नियम पूर्वक ब्रह्मचर्य
सुवर्ण	मेष	से कामनानुकूल
मोती	मीन	कार्य करना
खाँड़	कुम्भ	
चावल	मेष	
ज्वार	वृश्चिक	
रुई	मिथुन	
चाँदी	कर्क	

चन्द्रमा- जिस वस्तु के स्वामी राशि से आठ वां तथा बारहवाँ चन्द्रमा हो तो वस्तु तेज होवे। उस वस्तु के दशमी राशि से पहले दूसरे, तीसरे, पांचवे, छठे , सातवें, नवे, दसवें और ग्यारहवे स्थान में चन्द्रमा आवे तो वह वस्तु मन्दी कारक है।

सूर्य-मं.श.रा. के यह क्रूर ग्रह कहलाते हैं। ये क्रूर जिन प्रभाव राशि से तीसरे छठे दसवें ग्यारहवें रहे हो वह वस्तु मन्दी करेंगे। वही क्रूर जिस वस्तु के स्वामी राशि से पहले, दूसरे चौथे, पांचवे, सातवें, आठ वें नवें, बारहवें, जा रहे हों वह वस्तु तेज करेंगे। जितने अधिक क्रूर उपर्युक्त स्थान में गये होंगे, उतनी अधिक तेजी आवेगी।

अग्नि बुझाने का मन्त्र (आग बाँधना)

ॐ नमो कोरा करावा जल सा झरिया, ले गौरा के शिर पर धरिया, ईश्वर ले गौरा नहाय, ई जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द साँचा पिड काँचा फूरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। मन्त्र ग्रहण या दीपावली में जगा लेवें।

विधि-कूप सन्निकट से सात कंकड़ों को लेकर प्रत्येक पर सात बार पढ़ कर अग्नि की ओर देवे।

नजर झाड़ने का मन्त्र

गरुर चरण दिया मन, श्रीहरी मोक्ष कारन, देव दानव दैत्यानी लाई नरसिंह वरा आसी सव उड़ाई, आलाली पालाली चोटी चाटी हुँकारे फूकार उडाय माटी शलिकेर पाँव देख, ठुकरिया आय अमुकार अंगे डाइनेर दृष्टि पलाय कार अक्षावीर नरसिंह आज्ञा। दीपावली में सिद्ध करके इस मन्त्र से झारने का विधान है।

सर्प विषनाशक मन्त्र-औषधिः

गरुड़ास्त मन्त्र - ॐ सुपर्णोसि स्मरत्मां स्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुबृहद् यन्तरेवक्षी। सोम आत्माछन्दा स्ययंमानि यजूंषिनाम साम। त तनुवांम देवं यज्ञयज्ञि यम्य छन्विष्टायाऽशम्या सुपर्णोसिगरुत्मान्दिवं गच्छ स्वःपत ॐ। इसे ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्ग से झारने का विधान है।

दधि मधु नवनीता, पीप्पली श्रृङ्गवेरं मिरचमपि कूटो प्रतिहन्सा सुकेशी। यदि डसति सरोष तक्षको वासुकीवा यम सदन, गतानांनास्ति मृत्युर्नाराणाम्।

गाय के ताजे दूध से निकाला जाता मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल अदरक मिर्च और कूट, बराबर मात्रा में मिलाकर साँप से डसे हुए व्यक्ति को पिला देने से विष उतर जाता है।

(१) चिन्ता निवारण लक्ष्य प्राप्ति मन्त्र -

ॐ श्रीं ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मैय नमः।

(२) पुत्र कन्या के विवाह में यदि कठिनाइं उपस्थित होती हो या विघ्न होता हो तो श्रीकात्यायनी देवी का पूजन विधि से करावे।

स्थायीधन स्थिति मन्त्र - ॐ ह्री क्लीं महालक्ष्मै नमः।।

प्रसवसमयेजलमन्त्रः- आकाश टले पर्वत टले राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोंका कोंको रिक्ता कुण्डली वसिया वाहिर हव असिया सिद्ध गुड़ कालिका चराडीर वरे शीघ्र करिया भूमे पड़े।। ताजा शुद्ध जल को सात बार मन्त्र पढ़कर परोरने के पश्चात् पिलाने का विधान है।

मन्त्र - शक्ति

अथ मृत्युञ्जय मन्त्र - ॐ हौं जूंसः भुर्भुवः स्वः त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिंपुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवः स्वरों जूंसः हौं ॐ।

पुराणोक्तामृत्युञ्जयमन्त्रः "मत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाह महादेवाय ते नमः।।"

ॐ हौंजूसः त्र्यक्षरमन्त्र है

इनके विनियोग न्यास नित्यकर्म प्रयोगशाला में देख लीजिये।

धन धान्य पूर्णकर- अन्नपूर्णा का मन्त्र

ॐ ह्री क्लीं नमो भगवतो माहेश्वरी अन्नपूर्णेस्वाहा क्लींश्री ही ॐ- इस मन्त्र के प्रभाव से धन धान्य पूर्ण रहता है। लक्षजप-तिल लाल धान की लाई, खीर, दाख, गोघृत से हवन करना चाहिए। २ लक्षजप का पुरश्चरण। क्षेत्र के भीतर मन्त्र या तावीज गाड़ देते हैं, उससे धान्य बढ़ता है।

आपदुद्धारक बटुक भैरव मन्त्र

ॐ नमो भगवते वुटुकाय आपादुद्धारकाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं। भात और सरसों चन्दन चूरा आदि से हवन करना चाहिये।

सब सिद्धिप्रद हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मन्त्र

ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा। खीर, दाख, ऊखरसा पखाड़, पीपल खेर की लकड़ी से हवन १ लक्ष का पुरश्चरण। भेद यह है कि कामना के अनुकूल हवन वस्तु होना चाहिए।

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

ॐ छः फट् स्वाहा। जल अभिमंत्रित करके देना

आदित्यरथवेगेन विष्णुवालबलेन च तार्क्ष्य पक्ष निपातेन भूम्यां गच्छ महाविष। राई से उतारना। (तार्क्ष्य - गरुड़)

आँख झाड़ने का मन्त्र- शर्याति सुकन्यां च्यवनं शुक्रमश्विनी संध्योः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति। जल से धुलवाना।

ज्वर झाड़ना - ॐ नमो नरहरे रोगापहारिने ज्वरं नाशय नाशय सुखमारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

अन्तरा तिजरा चौथिया का मंत्रखलंकायाम् दक्षिणेतीरे कुमुदो नाम वानरः। तस्य स्मरण मात्रेण ज्वरो याति दशोदिश। पीपल के पत्ते पर लिख कर डोरा से बाँध देवे।

यदि गर्भवती को क्लेश हो तो सुख से प्रसव के लिये चन्दन से चक्रव्यूह कांसे की थाली में बनावे फिर धोकर धर्मराज का स्मरण करके पिलावें।

मंत्र-हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शर्वरीनामयक्षिणी तस्य नूपुरशब्देन विशल्या गर्भिणी भवेत्।

चिरचिरा (चिचिड़ी) मस्तक में बाँधने से सुख से प्रसव होता है। इन सब मंत्रों को १०८ बार पढ़ना।

यात्रा में स्मरण करने का मंत्र - यः स्मरेत्तुलसी सीतां रामं सौमित्रणा सह। कार्यं कृत्वा रिपूञ्जित्वा क्षेमेणायाति वैनरः। दही थोड़ी सी अपने खाकर यात्रा करें और चंदनतिलक से सदा पूर्ण रहे।

गाँव में पशुओं की बीमारी न आवे इसके लिये गुरुपुष्य हस्तार्क अथवा उत्तर पूर्व में मिट्टी के कड़े कसोरे (परई) के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दें तो बिमारी नहीं होगी।

मंत्र-अर्जुनः फाल्गुनो विष्णुः किरीटीश्वेतवाहनः। वीभत्सुविजयी पार्थ सव्यसाची धनंजय। कपिध्वजी गुड़ाकेशो गांडवी कृष्णसारथिः।

एतान्यर्जुन नामानि गवां गोष्ठे च योलिखेत् न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्रं प्रजायते।

ज्वर झाड़ने का मंत्र - ॐ नमो अजैपाल की दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरोवाच।

इस मंत्र को सात बार पढ़कर झारे तो ज्वर न रहे। इस मंत्र को दीपावली की रात्रि में सातवार पढ़कर तथा धूप दीप देकर सिद्ध कर लेना चाहिये।

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र-

यज्ञोपवीतंपरमंपवित्रं प्रजापतेयत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्ज शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

यज्ञोपवीत उतारने का मन्त्र-

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मणत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्तव परित्यागो गच्छ सूत्रं यथासुखम्।

सूर्यार्घ्य मन्त्र

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पयमां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।

औषधी खाने का मन्त्र

अच्युतानन्द गोविन्द नामोच्चरण भेषजात्। नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

आयु-निर्णये

राशि सन्धिश्चखेटानां दशा रोगप्रदः भवेत्। त्रिशद्भागमनुक्रान्तदशायां मरणं नृणाम्।।१।। षष्ठाष्टमस्थो रिपुदणमूर्ति पापग्रहः प्रागृहोपगश्चेत् स्यात्तदशायां मरणं नराणां वदन्तिबुद्धे विजितस्वदाये।।२।। पञ्चम्यारदशामृत्यु दद्यात्षष्ठोगुरोदशा। दानेश्चतुर्थीमृत्यु स्याद्दशाराधरपंचमी।।३।। नीचारातिविमूढस्य विपत्प्रत्परिनधनाः। दशदद्यमूर्ति तस्य पापयुक्त विशेषतः।।४।। यदद्यदभावार्थकामेय दशास्वन्तर्दशासु तरादभावविनाशः स्वात्तयुतकेक्षितकारकैः।।५।। अष्टमस्यत्रिभागीश पतिः स्थितगृहशनो। तदीशनवभागर्यागतेवा मरणं भवेत्।।६।। रन्ध्रेश्वरौरन्ध्रयुक्तो रन्ध्रद्रष्टारमेश्वरः। रन्ध्राधिपयुतश्चैव चतुः षट्चंशः नायकः।।७।। रन्ध्रेश्वराधिशत्रुश्च सप्तछिद्र ग्रहाः स्मृता। तेषांमध्येवलीग्रहस्तु तस्यदायेमृति वदेत्।।८।। ततद्भावादव्यवस्यस्य तदभावादीश्वरस्य वा। वीर्योपतस्यखेट स्यपाकेमृत्युनं संशयः।।९।। जीवमृत्युतनुयोगराशिने गोचरेणारय रविजे धनक्षयः। तत्रिकोण गृहगेवा नृणां तत्रनाशकयुतं तत्वैदेवः।।१०।।

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथिभानि। सद्भाराः चन्द्रबुधगुरुशुक्राःतिथयः १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ शुभ भानि पुष्य, अश्वि, रोहिणी,मृगशिरा, उत्तराफाल्गुनी, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा एषु. भेषु।। दक्षिणांगेऽखिले पुंसा वामांगे च मृगीदृशाम् शुभम्।। जन्मभंमृत्युयोगऽह्नि दग्धविष्यादिदूषिते।। शुभम्।। अथपल्लीपतने विशेषफलम्।। पादयोर्जङ्घे जान्वोः गुदे गुह्यो च मृत्युदा। अन्यत्र शुभदा प्रोक्ता सतेलं स्नानमाचरेत्।।१।। पल्या प्रपतने चैव शरटस्याधिरोहणे।। यत्रोक्तं हि मनुष्यस्य शुभाशुभफलप्रदम्। स्त्रीणां तु तद्वि परित्यागोऽप्यबुद्धिमता सदा इति। पल्लीपतनस्यानिष्ट फल निवाराणार्थमंत्रदानजपमाह।। तिलमादिदानं च स्नात्वादेवं द्विजन्मने नमस्तस्यजपेन् मन्त्रं षडक्षरम् (ॐ नमः शिवाय) शतं सहस्रमथवा सर्वदोषनिवारणम्। शिवालये प्रदद्याद्वा दोषं दोषोपाशान्तये।।१।। अशुभध्वंस्य मृत्युञ्जयजपस्वर्ण गोदानं कार्यमिति शुभम्।।

अङ्गस्थविभागेन पल्लीपतने फलम्

स्थानम्	फलं
केशान्ते	अतिकष्टम्
उदरे	भूषणलाभः
अधरोष्टे	धनैश्वर्यलाभः
नाभौ	बहुधनाप्तिः
वामपादे	बंधुनाश
भ्रूमध्ये	राज्यसभा
वामकर्णे	बहुलाभः
स्तनद्वये २	दौर्भाग्यम्
हस्तद्वयं	वस्त्रलाभः
बा.मणिव.	कीर्तिनाशः
दक्षिणापादे	गमनम्
नेत्रयोः	बन्धनप्रा.
पृष्ठ देशे	बुद्धिनाशः
हृदये	धनलाभः
पादान्ते	स्त्रीनांशः
शिरसि	राज्यलाभः
नासाग्रे	व्याधिपीडनं
वाममुखे	राजभीतिः
जानुद्वये	शुभागमः
कटि भागे	अश्वलाभः
गुल्फयो	धनलाभः
दक्षिणमुखे	नृपतुल्यता
स्कन्धयोः	विजयः
मुखे	मिष्ठान्नभोजनं
ललाटे	बंधुदर्शनम्
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः
कण्ठे	शत्रुनाशः
२ जंघे	शुभावहः
द.मणिव.	मनस्तापं

रविभात्चुल्हीचक्रम्

पृष्ठे	६	श्रीलाभः
शीर्षे	४	मृत्युश्रवम्
वामे	८	सुखम्
मर्मे	५	विनाशः
हस्ते	२	सुभुक्ति
पादे	२	कलत्रमृतिः

गृहारम्भे वृष वास्तु चक्रम् गणना माभिजित

स्थानम्	नक्ष.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अग्रपादे	४	शून्यम्
पृष्ठ पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति
दक्षकुक्षौ	४	लाभः
पुच्छे	३	स्वामीनाशः
वामकुक्षौ	४	दरिद्र
मुखे	३	पीड़ा

अथगृहप्रवेशे कुम्भ चक्रम् रविभादस्यगणना

स्थानम्	नक्ष.	फलम्
मुखे	१	अग्निदाह
पूर्वे	४	उद्वसनम्
दक्षिणे	४	लाभः
पश्चिमे	४	लक्ष्मीप्राप्ति
उत्तरे	४	कलहः
गर्भे	४	विनाशः
गुदे	३	धैर्यम्
कण्ठे	३	स्थिरत्वम्

अथ द्वारशाखाचक्रम् सूर्यभादत्रापिगणना

स्थान	नक्ष.	फलम्
शिरसि	४	श्रीलाभः
कोणे	८	उद्वसनम्
शाखायां	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	स्वामीनाशः
मध्ये	४	सौख्यम

ग्रामवास चक्रम् नक्षत्रावधि गणना अथग्रामभाद्वासकर्त्तुः

मस्तके	७	धनं सौख्यम्
पृष्ठे	७	हानि-निर्धनम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	निर्धनम

कूपचक्रम् । सूर्यभाद्गणना

स्थान	नक्ष.	फलम्
मध्ये	३	शीघ्राज्जलम्
पूर्वे	३	निर्जलम्
अग्नि	३	आशुजलम्
दक्षिणे	३	निर्जलम्
नैऋत्ये	३	अमृतजलम्
पश्चिमे	३	निर्जलम्
वायव्ये	३	जलहानिः
उत्तरे	३	मधुरजलम्
ईशाने	३	क्षारजलम्

रोहिणीभात्कूपचक्रम्

रथान	नक्ष.	फलम्
मध्ये	३	स्वादुजलम्
पूर्वे	३	खंडितजलम्
अग्नि	३	स्वादुजलम्
दक्षिणे	३	जलहानिः
नैऋत्ये	३	स्वादुजलम्
पश्चिमे	३	निर्मलजलम्
वायव्ये	३	मिश्रजलम्
उत्तरे	३	पूर्णजलम्
ईशाने	३	क्षारजलम्

अथ गृहे शिलाप्रमाणानि

शिलाप्रमाणं क्रमशः प्रदिष्टं यणानुपूर्वेण तथांगुलानाम्।। अर्धेकविंशद्नविश्वनन्दविस्तारके व्यासमिदं तदर्धम्।। तदर्धमानं त्वथपिण्डकास्यात् ऊर्ध्वाऽधिका न्यूनतरा न कार्यम्। नामानि च। नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णेति। पञ्च कुम्भ नामानिपद्मनहापद्म शंख मकर समुद्र इति प्रधानशिलाधः पञ्चाधःरशिलाभवन्ति।

अथेष्ट नक्षत्रकल्पनाऽनेन गणनाविचारः। आर्द्रादितिर्गुरुश्चैव सर्पश्चैव पितृमृगः। शतभपूर्वयुग्मञ्च नेष्टा गृहतारकाः।।१।। तत्रराशि कूटादिकं सर्वदाम्पत्योरिवचिन्तयेत्।। सेव्यसेवकयोश्चे- वंगहतत्स्वामिनोरपि परस्परं मित्रयोश्च एकनाड़ी प्रशस्यतेऽति।

अथ गृहप्रवेशे मुहूर्तबोधचक्रम्।

मासः	वैशाख, ज्येष्ठ , माघ फाल्गुन जीर्णे गृहे श्रा. मार्गशीर्ष कार्तिक मासे अपिनवेप्यग्न्यादिभयसत्वे।
तिथयः	१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३
वाराः	सोम, बुध. बृह. शुक्र, शनि।

भानि	रोहिणी,मृगशिरा,उत्तराफाल्गुनी,चित्रा,अनुराधा, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद रे.केचन्मते अश्वि.पु.ह.स्वा.मू.श्र. ध. श. नक्षत्रे कुम्भ चक्रशुद्धौ।
लग्नानि	२।५।८।११ एषु शुभ ३।६।९।१२ एषु मध्यम्।
	जन्मलग्न जन्मराशिभ्यामुपचये स्थिर राशौ। लग्नात् १।२।३।५।७ ९।१०।११ स्थानेषु शुभाः श्रेष्ठाः ३।६।११ स्थानेषु पापाः श्रेष्ठाः४।८ शुद्धो वामार्कशुभम्।

प्रवेशलग्नात्-वामोरविमृत्युसुतार्थलाभार्यतोऽर्के पञ्चमे प्राग्वादनादि मन्दिरम्।

अथ वापीचक्रम् रोहिणीभादिनक्षत्रावधि गणना

कोष्ठे	४	श्रीलाभः
नाभौ	४	मृत्युभयम्
हृदि	४	सुखं
मध्ये	४	विनाशः
नेत्रे	४	सुमुक्तिः
पादे	४	कलत्रमृतिः

अथ चरणीचक्रम्।

पृष्ठे	४	शुभम्
नाभौ	४	वृद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरतां
मध्ये	४	कलहः
नेत्रे	४	धनप्राप्तिः
पादे	४	अनर्थ

अथ चरणी विचार स्वामि हस्तप्रमाणे-नदीर्घविस्तारसंयुतम्। अष्टभिश्च हरदे भागं शेषं चरणिरुच्यते। पशुहानिः पशोरोगः पशुलाभः पशुक्षयः पशुनाशः पशुवृद्धिः पशुभेदः बहु पशुः।

अग्नेर्वासज्ञानम्- प्रतिपादितस्तिथिवारयुता सैक ४ भक्ता ०।३ शेषे भूमौवासः १ शेषे स्वर्गे २ पातालेवासः। भूमौ वासः शुभः।

शल्यानयनरीतिः

अ.	क.	च.	ट.	त.	प.	य.	श.	ह.षय.	वर्णा.
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य	दिक्
मनुष्य	खरस्य	मनुष्य	शुनः	शिशोः	तुषांगार	विप्रश.	गोशल्यं	नृकपाल	शल्य
१॥	२	२	१॥	१॥	४	२	१	३	हस्त
मृत्यु	राजभ.	स्वा.मृ.	या. मृ.	गृ.वि.	दुःस्व.	दरिद्र.	गो.ना.	कु.ना.	फलानि

स्मृत्वेष्ट देवतां प्रष्टु र्वचनस्याद्यमक्षरम्। गृहीत्वा च ततः शल्याशल्ये पूर्वं विचारयेत्। इत्युक्त्वा-प्रश्नाक्षराणामादिम वर्णतोविचारः कर्तव्यः।

अथ शिलान्यासस्तत्र वाराहः- छत्रं सुगन्धयुक्तं कृतधूपविलेपनं। स्तम्भ स्थाप्यस्तथैव कार्यो द्वारोच्छायः प्रयत्ने न।। दक्षिणपूर्वकोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत्प्रथमाम्। शेषाः प्रदक्षिणान्ताः स्तम्भाश्चैव प्रतिस्थाप्याः।।२।। शार्ङ्गधरः प्रसादेषु च हर्म्येषु गृहेस्वन्येषु सर्वदा। आग्नेय्यां प्रथमं स्तम्भं स्थापेत्तद्विधानतः।३। तथा च ब्रह्मशम्भुः क्षेत्रभित्तिशिलान्यासः स्तम्भस्यारोपणं तथा। पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याह कश्यपः।।४।।

पिण्डतः आयाद्यानयनप्रकारः

पिण्डे क्रमात् ९।९।६।८।३।८।८।४।८ नवस्थानस्थापिते एतैगुणिते एतैऽ ८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२० विभक्तशेषेक्रमात् आयः १ वारः २ अंशकः ३ द्रव्यं ४ ऋणं ५ ऋक्षं ६ तिथिः ७ योगः ८ आयुश्च ९ भवति। बहुऋणाल्पद्रव्यं गृहमसत्। गृहगृहेशनक्षत्रैक्यं च न सदिती सर्वमादौ विचार्यम्।।६।। आयोध्वजादिः वारोऽर्कादिः। अंशको मेषादि-नवमांशाः। ताराणि न अंशस्तु त्रिषट् नवं एवं शकाः रामशास्त्र निधि संज्ञका धनं तु वेद वसु भानु संज्ञकम्।

अथायानां नमानिउपयोगस्य कथनञ्च

१	२	३	४	५	६	७	८
ध्वज	धूम्र	हरिः	श्वानः	वृषः	गर्दभः	हस्ती	काकः

वापीकूपतड़ागादौगजो देयो विचक्षणेः। आसनेयोजयेत्सिंहं शयने-काककुञ्जरौ।१। वृष भोजनापात्रेषु दद्याच्छालादिषु ध्वजम्। महानसे-ऽग्निशालायां गृहे वान्युपजीविनाम्।।२।। धूम्रं दद्यात्तथाश्वानं यवनान्त्यजयोगृहे। खरो वेश्यागृहेयोज्यो ध्वांक्षः पक्षिपतेर्गृहे।।३।। वृषं सिंह गजं दद्यात् प्रासादे पुर मन्दिर इति शुभम्।।

बीजोप्तिचक्रं राहुभादिनमवधिः

८	९	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभः	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

हवनचक्रं सूर्यभात्भेचान्द्र

३	३	३	३	३	३	३	३	३
र.	बु.	शु.	श.	सो.	मं.	बृ.	रा.	के.
असत्	सत्	सत्	असत्	सत्	असत्	सत	असत्	असत्

अथ देवालये गेह विधौ जलाशये राहुमुख ज्ञानम् यत्र राहुमुखं तत्पृष्ठ कोणे खात शुभं भवति

कोण	ऐशान्यां	वायव्यां	नैऋत्यां	आग्नेयां
देवालयारम्भे	मी.मे.वृ. राशिस्थितेसूर्ये	मि.क.सि. राशिस्थितेसूर्ये	कं.तु.वृ. राशिस्थितेसूर्ये	ध.म.कु. राशिस्थितेसूर्ये
जलाशयारम्भे	म.कु.मी. राशिस्थितेसूर्ये	मे.मि.वृ. राशिस्थितेसूर्ये	क.सिं.कं. राशिस्थितेसूर्ये	तु.वृ.ध. राशिस्थितेसूर्ये
गृहारम्भे	सि.क.तु. राशिस्थितेसूर्ये	ध.बृ.म. राशिस्थितेसूर्ये	कु.मी.मे. राशिस्थितेसूर्ये	वृ.मि.क. राशिस्थितेसूर्ये

अथगृहकरणे चैत्रादिमासे पृथक् पृथक् फलबोधकचक्रम्

चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.
शोकम्	धान्यम्	पशुमुक्तिः	पशुनाशः	द्रव्यवृद्धिः	नाशः	युद्धम्	भृत्यक्षयः	धनम्	लक्ष्मीप्रा.	अग्निभयं	लक्ष्मीप्रा.

अथ गृहारम्भे मुहूर्तबोधकचक्रम् (देवालयादि सहित)

मासः	वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, फाल्गुनमासे, मे.क.सिं.वृ.म. कु. राशस्थिसूर्ये च शुभम्।
श्रेष्ठभानि	रो. म. पुष्य, उ.फा. ह. चि. स्वा. उ.षा. घ. शत. उ. अनु. रो. एषु भेषु वृषभचक्रशुद्धौ शुभम्।
शुभवाराः	चं.बु.बृ.शु. शनयः रविभौम, रिक्ता, अमा. चरलग्न वर्जितम्।।
शुभतिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ शुक्लेपक्षे।
शुभलग्नानि	२।७।९।११।१२ ३, ५६ स्वस्वामि शुभदृष्टे शुभम्।
	लग्नात्- १।४।७।१०।५।९ शुभाः। पापा ३।६।११ स्थानेषु ८।१२ शुभ पापरहितेषु शुक्लपक्षे। अष्टम शुद्धौ गुरुशुक्रयोरुदये बालवार्द्धक्य नीचराश्यादि स्थितदोषरहिते समये शुभे।

कूपजलविचारः

अतृणे सतृणा यस्मिन सतृणे तृणवर्जिता मही यत्र ।।
तस्मिन् शिरा प्रदिष्टा वक्तव्यं जलं चास्मिन् ।।१।।
कण्टकाकण्टकानां व्यत्यासेऽम्भस्त्रिभिः करैः पश्चात् ।
ज्ञात्वा पुरुषत्रितयं त्रिभागयुक्तं धनं सा स्यात् ।।२।।
नर्दति मही गम्भीरं यस्मिश्चरणाहता जलं तत्र ।।
सार्द्धं स्त्रिभिर्मनुष्यैः कौवेरा तत्र च शिरा स्यात् ।।३।।
वृक्षस्यैका शाखा यदि विनता भवति पांडुरा वास्यात् ।।
विज्ञातव्यं शाखातले जलं त्रिपुरुषं ज्ञात्वा ।।४।।
पूर्वोत्तरेण पीतोयदि वाल्मीकी जलं भवति पश्चात् ।
उत्तरागमना च शिरा विज्ञेये पञ्चभिः पुरुष ।।५।।
चिन्हं दर्दुर आदौ मृत कला तत्परं भवेद्धरिता ।।
भवति च पुरुषेऽधोऽमातस्य तलेऽम्भोविनिर्देश्यम् ।।६।।
पीतोरेव प्राच्यां वाल्मीकोऽतोऽद्विपंञ्चभिर्हस्तः ।।
दिशि याम्यां तोयं वक्तव्यं सप्तभिः पुरुष ।।७।।
प्रथम पुरुषे भुंजगः सितासितो हस्तमात्रमूर्तिश्च ।।
दक्षिणतः वहति शिरा साक्षरं भूरि पानीयम् ।।८।।

सर्वघातचक्रम्। रोगातगोसनेरणं दो मंगले

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
सू. घा.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं. घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं. घा.	५	९	१	६	१०	२	७	१	८	१२	३	७
बु. घा.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
बृ. घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु. घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श. घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा. घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के. घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा. घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
ति. घा.	१ ६ ११	५ १० १५	२ ७ १२	२ ७ १२	३ ८ १३	५ १० १५	४ ९ १४	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	३ ८ १३	५ १० १५
वा. घा.	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	गु.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
न. घा.	म.	ह.	स्वा	ऽनु	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.
यो. घा.	वि.	शू.	प.	धृ.	प्र.	शु.	शु.	ब्र.	वै.	गं.	व्या.	व.
ल. घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
ग्र. घा.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.
धा. घा.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.
व. घा.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.
सं. घा.	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
सं. घा.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.
सं. घा.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.	च.	स्थि	द्वि.
व. घा.	रक्त	श्वे	हरि	पां.	धूम्र	चि.	कृ.	लक	पी.	कृ.	धू.	श्वे.
स्त्री	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.
चं. घा.	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

दीर्घः	विस्ता.	आयः	वार	अंश	धन	ऋण	ऋक्षं	तिथिः	योगः	आयुः	दीर्घ	विस्तार	आयः	वार	अंश	धन	ऋण	ऋक्षं	तिथिः	योगः	आयुः
२१	१९	७	७	९	१२	५	६	१२	३	७२	५९	५३	१	५	९	१२	३	१५	१२	२१	७२
२५	२१	५	७	९	१२	७	१६	१५	२२	१२०	६१	५५	७	६	९	१२	५	२२	३	२४	४८
२७	२५	३	६	९	१२	१	२७	१५	२७	१२०	६१	५३	१	५	३	४	३	२५	४	२६	६४
३१	२९	३	६	३	४	१	१७	७	५	११२	६१	५५	३	४	६	८	१	२	५	१	८०
३३	२७	३	४	९	१२	१	२७	३	२७	४८	६३	५७	३	७	९	१२	१	९	१२	१८	७२
३५	२९	७	७	६	८	५	२०	५	१०	८०	६३	५९	१	७	९	१२	३	१८	१५	९	१२०
३५	३३	३	७	९	१२	१	६	१५	३	१२०	६३	५३	७	७	९	१२	५	२७	३	२७	४८
३७	३१	३	५	६	८	१	२३	१०	२५	५६	६५	५७	५	७	९	१२	७	९	६	१८	९६
३७	३३	५	६	९	१२	७	२१	३	२४	४८	६५	५९	५	२	६	८	७	२०	५	१०	८०
३९	३३	७	५	९	१२	५	९	६	१८	९६	६५	६३	१	४	९	१२	३	२२	१५	२४	१२०
३९	३५	५	७	९	१२	७	१२	१५	६	१२०	६५	५५	३	४	६	८	१	८	५	४	८०
४१	३५	३	७	६	८	१	५	५	१६	८०	६७	६१	७	७	९	१२	५	९	१५	१८	१२०
४१	३९	७	६	९	१२	५	२१	१२	२४	७२	६७	६५	५	६	६	८	७	२३	५	२५	८०
४३	३५	१	७	३	८	३	२५	१०	२६	४०	६७	६१	७	५	६	८	५	२६	११	२३	५६
४३	४१	२	५	३	४	१	१०	४	५	६४	६१	६५	३	२	३	४	१	१०	१०	५	४०
४५	३७	१	५	९	१२	३	९	१५	१८	१२०	६९	६१	१	४	९	१२	३	३	१२	१५	७२
४५	४३	७	६	९	१२	५	९	१५	१८	१२०	७१	६३	३	७	१	१२	१	२७	६	२७	९६
४७	४१	७	४	६	८	५	२६	११	१३	५६	७१	५७	७	२	९	१२	५	३	६	१५	९६
४७	४५	३	२	९	१२	१	१८	१५	९	१२०	७१	६५	७	४	६	८	५	११	५	१९	८०
४९	४१	१	७	३	४	३	७	७	१७	११२	७३	६९	३	५	९	१२	१	२५	१२	२१	७२
४९	४३	३	७	६	८	१	८	११	४	५६	७३	६१	५	२	६	८	७	२२	१४	१९	१०७
४९	४५	५	७	९	१२	७	९	१५	१८	१२०	७५	६३	७	७	९	१२	५	१८	१२	९	७२
५१	४५	७	५	९	१२	५	२७	१५	२७	१२०	७५	६५	१	५	३	४	३	२१	१०	२६	४०
५१	४७	५	६	९	१२	७	६	६	३	९६	७५	६३	५	७	९	१२	७	२७	१५	२७	१२०
५१	४९	३	७	९	१२	१	१२	१२	६	७२	७५	६५	३	६	५	१२	१	१२	१५	६	१२०
५५	४७	१	४	३	४	३	२५	१०	२६	४०	७५	६७	१	५	९	१२	३	२४	१५	१२	१२०
५५	४९	७	७	६	८	५	२४	५	७	८०	७५	६९	७	४	९	१२	५	९	१५	१८	१२०
५५	५३	३	६	३	४	१	१९	१०	२३	४०	७७	७३	३	२	९	१२	१	६	५	३	१२०
५७	५१	३	४	९	१२	१	९	६	१८	१६	७७	६५	५	७	६	८	७	२६	११	१३	८८
५७	५५	७	५	९	१२	५	२४	१५	१२	१२०	७७	७१	३	७	६	८	१	२१	१५	२५	५६
५९	४९	३	७	३	४	१	१६	१३	८	८८	७७	७५	७	७	९	१२	५	३	७	१५	१२०
५९	५३	७	३	६	८	५	१४	११	७	५६	७७	६७	७	७	३	२	५	१६	७	८	११२

अथ गृहे गृहस्योच्छ्रायनिर्णयः

विस्तारषोडशांश सचतुर्हस्तो भवेद् गृहोच्छ्रायः द्वादशभागेन भूमौ वा स्यात्समस्तानाम्। गृहस्यभित्तिप्रमाणम्। व्यासात् षोडशभागः सर्वेषां सद्मनां भवति भित्तिर्मे पक्वेष्ट का कृतानां दारुकृतानान्तु विकल्पः।। तथा च गर्गः।। विस्तारषोडशांशेन गृहभित्तिम् प्रकल्पयेत्।। नवत्रयोदशांशेश्च करैशांत्वा प्रकल्पयेत्।।

वास्तुभूमिशुभाशुभज्ञानप्रकार- सायंकाले हस्तप्रमितायां विस्तृतिप्रमाणं गर्तं विधाय जलपूर्णंकृत्वां प्रातःकाले पुनर्विलोक्यम् तत्सजलं शुभम्। निर्जलं मध्यम्। स्फुटितं असदिति।

गृहेसूर्यचन्द्रवेधनिर्णयः - चन्द्रविद्धं गृहं कार्यं सूर्यविद्धं जलाशयम्। ह्रदो वा वाटिका वापि द्वाभ्यां विद्धा प्रशस्यते।। पूर्वापरदैर्घ्ये रविवेधो याम्योत्तर दैर्घ्ये चन्द्रवेध उक्तः। अन्यच्च- मन्दिर देवायतनं तत्र पिण्डविचारोऽपि न कर्तव्यः।

कदा द्वादशस्थचन्द्रमा शुभदः

आदाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे।
पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।
अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु।
यात्रायुद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशः शुभः।
उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहस्थितोऽपि वा।
मित्रवर्गे मित्र दृष्टः स ग्रह सबलः स्मृतः।

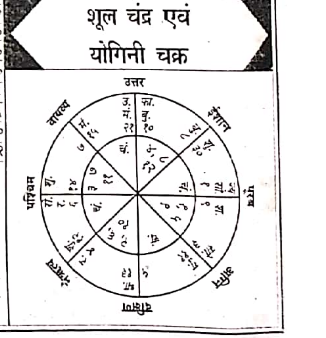
यात्रायां प्रस्थानस्थापनम्

प्रस्थापने भूमिपालो दशदिवसमभिव्याप्य- पञ्चरात्रमित्यादि। दिक्परत्वेन प्रस्थान-स्थापनं।। सप्ताहएव पूर्वस्यां प्रस्थाने पञ्चं दक्षिणे। पश्चिमे त्रीणिशस्तानि सौम्यायान्तु दिनद्वयम्।

वाटिकाचक्रं शिवयामलोक्तम्

वृक्षं चक्रं कल्पयित्वा चक्रमेव न्यसेत्पुनः।।
सूर्यभादिनम् यावद्वृक्षाचक्रं विधीयते।।
मूले त्रयं रोगभयं त्वचि त्रीणि धनागमः।।
शाखासुवेदनाशः स्यात् पत्रे युग्मं दरिद्रता।।
शीर्षत्रीणि कृतं प्रोक्तं पूर्वचैकस्तु मृत्युदः।।
याम्ये पञ्चात्मकोऽप्यस्य पश्चिमे दोषागमः।।
उत्तरेवेद लाभाय।

शूल चंद्र एवं योगिनी चक्र



यात्रा विचार-
अथ यात्रायां शुभाशुभनक्षत्रज्ञानाय चक्रम्

अश्वि.	पुन.	अनु.	मृग.	पुष्य	रेवती	हस्त	श्रवण	धनिष्ठ	एषु शुभाः
रोहि.	पू.३	उ.३	ज्येष्ठ	मूल	शतभिषा		एषु भेषु मध्याः		
भरणी	कृत्ति.	आर्द्रा	श्लेषा	मघा	चित्रा स्वाती विशा.		एतचे निन्द्याः		
श्रवण	हस्त	मृग.	पुष्य	एषु सर्वदा दिक्शूल दिनं विहाय शुभाः					
पू.३	कृत्ति.	मघा	भरणी	स्वाती	ज्येष्ठ	विशा.	आश्ले.	चित्रा	एषु आवश्यके
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	१४	यात्रायां त्याज्य घट्यं

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम्

आद्यचन्द्रः श्रियः कुर्यात् द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राज सन्मानं चतुर्थकलहागमः।।१।। पञ्चमे ज्ञान वृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा। सप्तमे सुखकृत्तचन्द्रोऽप्यष्टमे मरणं भवेत् (कष्टं वा)।।२।। नवमे भाग्य वृद्धिश्च दशमे सुख सम्पदः। एकादशे सर्वलाभो द्वादशे चाशु भयावहः।।३।। आवश्यके द्वादशः-गतेऽपि यात्रा कार्यानिष्ट चन्द्रदानात्। दान-सामग्री दधि श्वेततण्डुल घृत रजत मुक्तादयः।

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षिणे	पश्चिमे	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

यात्रायां छिक्का फलम्

पूर्वे अशुभम्। अग्रये दुःखी। दक्षिणे अनिष्टः। नैऋत्ये शुभम्। पश्चिमे सुभोज्यं। वायव्ये धन प्राप्ति। उत्तरे कलहः। ईशाने शुभम्। मध्ये भयः।

अथ यात्रायां समयशूलचक्रम्

पूर्वस्मिन्	प्रातःकाले
दक्षिणे	मध्याह्नकाले
पश्चिमे	सन्ध्यायाम्
उत्तरस्यां	अर्द्धरात्रौ

यात्रायां समयविचारः

तत्र सर्वासु यात्रासु शुक्रास्तो निषिद्धः। तदा जन्मदशेशेऽस्तंगतेऽपि न गन्तव्यम् तीर्थ यात्रासु गुरु शुक्र रस्त कालो वर्ज्यः सिंहस्थ गुरुत्तोच्च गोऽपि वर्ज्यः।।

संमुखेह्यर्थलोभायदक्षिणेसुख संपदः। पृष्ठतोमरणं चैववामेचन्द्रेधनक्षयः।।
सर्वे दोषा लघु यान्ति पूर्णचन्द्रे हि संमुखे।

अथ पथिराहुचक्रमिदम्

अश्विनी	पुष्य	अश्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठ	शतभिषा	धर्मभानि
भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठ	श्रवण	पू.भा.	अर्थभानि
कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.	कामभानि
रोहिणी	मृगशिरा	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती	मोक्षभानि

समरे (मुकदमा अथ कुल-अकुल वोधचक्रम्

कुलगणः	स्थायी समरे जयः	अकुलगणः (यायि) जयः	कुलाकुलगणः (सन्धिः समरे)
तिथयः	८।१२।४।१४	१।३।५।७।९।११।१३।१५	२।६।१०
वाराः	भौम, शुक्र	रवि,चन्द्र, गुरु, शनि	बुध
भानि	पू.३ अश्वि.वि.म. मृ.कृ.चि.ज्ये.श्र.पु.	भ.श्ले.स्वा.रे.ह.ध. अनु.पुन.उ.३ रो.	श.मू.आर्द्रा अभि.

अथ वारपरत्वेन पाशचक्रम्

पू.	अ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.	दिशा
मं.	चं.	गु.	०	श.	शु.	गु.	बु.	वारा

सूर्यधर्मगते चन्द्रो न मोक्षे शुभप्रदः। सूर्यधनगते धर्म्मं मोक्षमार्गशुभः शशी।। कामेऽर्के धर्ममोक्षार्थ-संस्थचन्द्रो जयप्रदः मोक्षेऽर्केधर्म-गतश्चन्द्र शुभोऽन्यत्र न शोभनः।

यात्रायां सर्वदिक शूलज्ञानाय चक्रम्।	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नै.ऋ	प.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिक् ८
	चं.श.	चं.गु.	गुरु.	सू.शु.	सू.शु.	मं.	मं.बु.	बु.श.	वाराः

यात्रायां - लग्नशुद्धिः। जन्मराशिलग्ने। कुम्भकुम्भांशकोमीनपृष्ठोदयराशयः त्याज्याः। लग्नात् १।४।७।१०।५।९ स्नायेषु शुभाः ३।६।११ स्थानेषु पापाः १० शनि ७ शुक्रो नेष्टः। लग्नात् १।६।७।८ स्थानगश्चन्द्रो १।६।७।८।१२ लग्नेशो न सत्। शुभाशुभहीनमष्टमभवनम्।

यात्रायामशुभशकुनानि-बन्ध्या स्त्री, चर्म, तुषा, अस्थि, सर्प, लवण निर्धूमाग्नि, इन्धन नपुंसक, विष्ठ, तपस्वि, उन्मत्त, चर्बा, ओषध, शत्रु, जटावान्, सन्यासी, तपस्वी, व्याधिमान्, नग्नतैलाभ्यंग, अंगभंग, जातिभ्रष्ट क्षुधार्त, रुधिर, स्त्री, पुष्प, नरट, छिक्का, स्वगृहदाह, मार्जारयुद्ध, रक्तवस्त्र गुड़, तक्र, पंक, त्रिधवा, कुब्ज, कुटुम्बेकलह, वस्त्रादेस्खलनं, महिषयुद्ध कृष्णवस्त्र तूल वमनं, दक्षिण गर्दभशब्दः अत्यन्त क्रोधी, गर्भवती मुण्डी, आद्राम्बर, दुष्टवाणी, अन्ध, वधिर, रजस्वलाम्बर, कुमारहीन, अतिरोगी, गधादर्शन, जातकदर्शन, सूकरदर्शन, शशकदर्शन, मर्कट दर्शन, ऋक्षशब्दयाते, प्रयाणसमये दृष्टाः सन्त न शुभाः नद्युतार भय प्रवेश युद्धापटार्यजन संवीक्षणे अशुभाशकुनाः शोभनाः नृपदर्शनेवलायां यात्रोदिता, शोभनाः।

यात्रायां शुभशकुनानि - ब्राह्मण २, अश्व, गज, फल, अग्र, दुग्ध, दधि धेनु, सर्षप, कमल विमलवस्त्र वेश्या, वाद्य, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र मांस दीप्ताग्नि, मत्स्य, आदर्श ससुतस्त्री, सन्मुखछत्र, नघः नीलकण्ठ रज्वादिनाबद्धपशु २ चम्पकादिपुष्प, कन्या कार्यसिद्धिवाक्य, मृतिका सजलपूर्णघट, घृत, इक्षुदण्ड, रत्नमाल्यादि शिरोवेष्टन, श्वेतवृषभ मदिरा कज्जल, पीताम्बर, गोरोचन, 'अरोदनशव, १ पताका, मेष, रजक, वेदशब्द, मंगलवस्तु, गीतगानादि भरद्वाज पक्षी, शिवाका, अंकुशहस्तिचालक पश्चाद जलघट, मंगलशब्द, दुर्वा कोकिला पल्ली, सूकरी रला भैरवी, छछून्दरी, श्रृङ्गाली, कपोत, खंजन तित्तिर हंसादयः। मेखर शब्दः। प्रयाणसमये दृष्टाः फलदा भवन्ति।

आसन्न मृत्यु लक्षणम्-अरुन्धती ध्रुवं चैव नभो मन्दाकिनी तथा सर्व नाशाग्रं च चन्द्रार्कमायु हीनो न पश्यति। पांशु पंकादिषु न्यस्त चरणं खण्डितं यदि। स्वाम्बु लिप्त गात्रस्य यस्यात्यं प्राक् प्रशुष्यति। पिहिते कर्ण युगले यस्य घोषोनुपश्रुतिः। अदर्शनं स्व शिरसः प्रति बिम्बे जलादिषु। छिद्रं प्रतिच्छायायां स चिरं नैव जीवति। दीप निर्वाण गन्धं च सुहृद्वाक्य-मरुन्धतीम्। न जिघ्रन्ति न श्रृण्वन्ति न पश्यन्ति गतायुषः।। (१) जब कान पर हाथ रखने से कान में से घोष न होवे। (२) जल में अपना मस्तक न दिखाई दे। (३) अपनी छाया में छिद्र का आभास हो। (४) अपनी नासिका का अग्रभाग न दिखाई दे। (५) कीचड़ या धूल में पांव रखने से पदचिन्ह खण्डित दृष्टि गोचर हो। (६) ध्रुवतारा न दिखाई दे इत्यादि, तो समझ जाइये कि आयु सम्बन्धी कष्ट आने वाला है।

आवश्यके दिग्शूल दोषनाशाय वारक्रमात् वस्तुनाम

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार
घृतम्	पुष्पं	गुड़म्	तिलान्	दधिः	यावान्	माषान्न	भक्षणं
ताम्बूलम्	चन्दनं	मृदु	पुष्पं	दधिः	घृतम्	तिलम्	धारणं

दिग्लग्नानि।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिक
१।५।९	२।१०।६	३।७।११	४।८।१२	शुभ
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्य
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	नेष्ट
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	नेष्ट

यात्रायां वारदोहदज्ञानायचक्रम्

रविः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः
रसालं	पयस्	कांजी	पक्वदु.	दधि	पयः	तिल

यात्रायां दिनमानस्याष्ट मांशेन रात्रौ रात्रिमानास्याष्ट मांशेन च (चौघड़िया मुहूर्त) वेलाफलज्ञानाय चक्रम्

श्री	र.दि.	चं.दि.	मं.दि.	बु.दि.	गु.दि.	शु.दि.	श.दि.
४	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
४	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
४	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
४	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
४	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
४	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
४	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
४	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
श्रीः	र.रा.	चं.रा.	मं.रा.	बु.रा.	गु.रा.	शु.रा.	श.रा.
४	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
४	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
४	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
४	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
४	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
४	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
४	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
४	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशः। षष्ठ्यष्टमोविष्णुदिनानि रिक्तां विहाय चित्रोत्तररोहिणी च। मृगान्त्यमैत्रेशनिवित्सितेज्येनिवृत्य गेहं प्रविशेत्यत्राणात्। स्थिरराशिलग्ने ४।८ शुद्ध १।७।४।१०।५।९। स्थानेषु शुभैः। ३।६।११ स्थानेषु पापैः योजनान्तं लघुयात्रा २५ योजनं मध्यान्तः परं दीर्घा ज्ञेया।

दिन रात्रि में समान साधन युक्त 'सहम'

सहमा	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं	सहमाः	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं
मातृ	शनि	गुरुतः	लग्न	श्रद्धाः	भौमः	शुक्रात्	तनु
पुत्र	चन्द्र	गुरुतः	लग्न	प्रमाद	पुण्यः	शुक्रात्	तनु
रोग	चन्द्र	तनुतः	तनु	व्यापा.	बुधः	ज्ञानात्	तनु
वंधु	चन्द्र	बुधात्	तनु	कन्या	चन्द्रः	भौमात्	तनु
मृत्यु	चन्द्र	८भावात्	शनि	संताप	चन्द्र	शुक्रात्	तनु
यात्रा	धर्मेश	धर्मतः	तनु	गर्भ	शनि	ज्ञानात्	तनु
धन	धनेश	धनात्	तनु	जलाध्व	लग्न	शतशः	६भा.
परस्त्री	सूर्य	शुक्रात्	तनु	राज	गुरु	कर्कोद्धत	मतम
वणिक	बुध	चन्द्रात्	तनु	घातक	पुण्यः	चन्द्रतः	तनु
विवाह	शनि	शुक्रतः	तनु	घातक	पुण्य	गुरुतः	तनु

उदाहरण-दिन में पूर्ण सहम बनाने के लिये चन्द्र से सूर्य को घटाकर लग्न जोड़ना चाहिए। रात्रि में सूर्य में चन्द्र को और लग्न जोड़ दे अतः दिन में जो घटता है उस पर एषऊन जिसमें घटता है उस पर अस्मिन् लिखा है। कुछ सहम दिनरात्रि में समान ही रहते हैं एषउन अस्मिन् यह संकेत दिन के लिये ऊपर रात्रि के लिये नीचे लिखा है। उसमें से जो घटता है उन दोनों के बीच में लग्न न आये तो स्पष्ट सहम राशि में १ राशि जोड़ना चाहिए।

अथ नक्षत्रचक्रम् / अथ यात्रायां दिग्वाहनानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशाः	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशाः
ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.	भानि	गज	रथ	अश्व	शिवि.	वाहन

अथ यात्रायां दिग्दोहृदचक्रम्

दिशः	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायु	उत्तर	ईशान
वस्तूनि	घृतम्	तंडुलं	तिलोदं	सक्तुकं	मत्स्य	गोधूम	दुग्धम्	पायस

अथ योगिनीवासचक्रम्

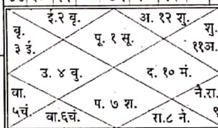
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथयः

अथैकस्मिन् दिनेप्यावश्यके योगिनीभोगस्तद्बोधकचक्रं

पू.	वा.	द.	ई.	प.	आ.	उ.	ने.	दिशा
३	७	११	१५	१८	२२	२६	३०	घटी
४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल
३३	३७	४१	४५	४८	५२	५६	६०	घटी
४४	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	पल

अथास्यफलम्

योगिनी सम्मुखेद्यूते गमे युद्धे च मृत्युदा।। अशुभा वामभागस्था पृष्ठे दक्षे जयप्रदा।



समयशूल-

उषाकाल में पूरब को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्न काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिये।

सहमसारिणी दिनरात्रिवश जिन सहमों के शोध्य में भेद होता है

दिने	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं	दिने	एषऊन	अस्मिन्	युक्तं
पुण्यः	सूर्यः	चन्द्रे	तनु	प्रसूति	बुध	गुरुतः	तनु
गुरु	चन्द्र	रवौ	तनु	जाढय	शनि	भौमतः	बुध
यशः	पुण्यः	गुरौ	तनु	जल	चन्द्र	शनौ	लग्न
मित्र	गुरुस.	पुण्ये	तनु	शत्रु	शनि	भौमतः	लग्न
माहा	भौमः	पुण्ये	तनु	दरिद्र	बुध	पुण्यतः	बुध
आशा	शुक्रः	शनौ	तनु	शास्त्र	शनि	गुरुतः	बुध
राज	सूर्यः	शनि	तनु	वंदक	सूर्य	चन्द्रात्	तनु
जाता	शनिः	गुरौ	तनु	बन्धनं	शनि	पुण्यात्	तनु
जीवि.	गुरु	शनौ	तनु	अश्व	सूर्य	पुण्यात्	लाभः
कर्म	बुधः	भौमतः	तनु	अन्यक.	शनि	चन्द्रात्	तनु
कलि	भौमः	गुरुतः	तनु	वृद्धि	सूर्य	जीवात्	तनु
चेतु.	भावः	१२ भा	तनु	अरि	शनि	भौमात्	तनु
रात्रौ	अस्मिन्	एषऊन	युक्तं	रात्रौ	अस्मिन्	एषऊन	युक्तं

विद्या १ ज्ञान २ ज्ञाति ३ सहम गुरु सहम ही होता है। पिता सहम राजा सहम समान है। बल १ देह २ यश के सदृश है। विवाह सहम से स्त्री का विचार होता है। सामर्थ्य सहम के साधन में लग्नेश यदि भौम हो तो भौम को गुरु में घटायें। गौरव सहम के लिये दिन में गृ.-चं.+सू रात्रि में वृ.-र+चं. कार्य सहम दिन में चं.-लग्नप+ लं.रात्रि में लग्नप - चं.+ल कार्यसिद्धि श.-सू.+सू रा.प. रात्रि में श.-च+चं. रा. प. गुरुता दिन में सूर्योच्च-सू.+ल. रात्रि में चन्द्रोच्च चं.+ल.।।

श्रीकाश्यां लग्न सारणीयम्

०	अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	रा.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
७	०	४१	५६	४	११	१८	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२१	२९	३८	४६
२२	मे.	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
०	रा.	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
८	१	५४	३	११	२०	२८	३७	४५	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१५	२५	३५	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
२६	वृ.	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६
०	रा.	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७
१०	२	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	८
८	मि.	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८
०	रा.	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
११	३	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३
२४	क.	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
०	रा.	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
११	४	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०
३०	सि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०
०	रा.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
११	५	४१	५३	४	१५	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५
१०	कं.	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०
०	रा.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
११	६	१६	२८	३९	५०	१	१२	२३	३५	४६	४८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	३०	४१	५३	०	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८
१०	तु.	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
०	रा.	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
११	७	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४२	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०
३०	वृ.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८
०	रा.	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
११	८	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२३	३५	४३	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४
२४	ध.	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६
०	रा.	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
१०	९	५५	५	१५	२५	३५	४५	५५	६	१४	२२	३१	३९	४८	५६	५	१३	२१	३०	३८	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४६	५४	३	११
८	म.	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	२६	५२	१८	४४	१०	३३	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
०	रा.	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
८	१०	२१	२८	३६	४५	५३	२	१०	१९	२६	३३	४१	४८	५५	३	१०	१७	२५	३२	४०	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३८	४६	५३	१
२६	कुं.	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	२	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
०	रा.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
७	११	८	१५	२३	३०	३७	४५	५२	०	७	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२१	२८	३५	४३	५०	५७	५	१२	१९	२७	३४	४२
२२	मी.	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४

लग्न स्पष्ट करने की विधि-

यत्सूर्यराश्यंश समान कोष्ठे घट्यादिकंस्वेष्टघटी युतंतत्।
तत्तुल्य् घट्यादि भवेद्धि यत्र तत्तिर्यगुर्ध्वांकमितं हि लग्नम्।

सूर्य राश्यंश के समान कोष्ठ के घटी पल में इष्ट काल घटी पलादि जोड़ने से आने वाली संख्या को उपरोक्त लग्न सारिणी में देखिये, जहाँ कही भी लग्न सारीणी में उक्त संख्या या उसके लगभग वाली संख्या मिले उसके बाईं ओर लग्न की राशि तथा ऊपर लग्न के अंश होंगे।

उदाहरण-जन्म कालिक सूर्य ५।१२ इष्ट घट्यादि १५।३० है। लग्नसारिणी में सूर्य की ५ राशि १२ अंश का समकोष्ठ देखा तो ३०।५५।५० सूर्यफल मिला, इसमें इष्ट घट्यादि १५।३० जोड़ा तो ४६।२५।५० हुआ। अब लग्न सारिणी में इसे देखा तो ४६।२७।४८ मिला। इसके बाईं ओर धनुलग्न तथा ऊपर ४ अंश मिला अतः ८।४।४६।४७ राश्यादि लग्न हुआ।

यही लग्न सारिणी गाजीपुर, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, झांसी, बलिया, बाँदा, इलाहाबाद, छपरा, पटना, मुंगेर, भागलपुर, हाजीपुर, हैदराबाद, चित्रकूट, बूंदी, पूर्णिया, शाहाबाद, सहसराम, कुदरा, डुमराँव, मालदह आदि स्थानों के लिये भी है।

शिवदास फल विचारः

तिथिं च द्विगुणीं कृत्वा पुनः पञ्च समन्वितम्। मुनिभिस्तु हरेद्भागं शेषं च शिववासनम्।।
एकेन वासः कैलाशे द्वितीये गौरिसन्निधौ। तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुर्थके।।
पंचमे भोजने चैव क्रीड़ायां च रसात्मके। श्मशाने सप्तमे चैव शिववासः उदीरितः।।
कैलाशे लभते सौख्यं गौर्य्यां च सुख सम्पदौ। वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यात् सभायांतापकारकौ।।
भोजने च भवेत् पीड़ां क्रीडायां कष्टमेव च। श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेवं विचारयेत्।।

चक्रमिदम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	तिथयः शु. पक्ष
७	१	२	३	४	५	६	७	८ ३०	९	१०	११	१२	१३	१४	तिथयः कृष्ण पक्ष
मृत्युकारकः	शुभम्	कष्टकारकम्	सन्ततिकष्टः	सौख्यं	अभीष्ट सिद्धिः	पीड़ा	मृत्युः	शुभम्	कष्टकारकम्	सन्ततिकष्टः	सौख्यं	अभीष्ट सिद्धिः	पीड़ा	मृत्युः	फलम्
श्मशाने	गौरी सन्निधौ	सभायाम्	क्रीड़ायां	कैलाशे	वृषे	भोजने	श्मशाने	गौरीसन्निधौ	सभायां	क्रीड़ायां	कैलाशे	वृषे	भोजने	श्मशाने	शिववासः

विशेषमाहः-कृष्णपक्षस्य तिथि गणनायां पञ्चदश संख्यां मेलयित्वा अस्मिन् चक्रे फलादेशो निर्दिष्टः। शिवप्रतिष्ठयां, महामृत्युञ्जय जपे तथा पार्थिव पूजने शिववासः विचारयेत्। नित्यं शिवपूजने न विचारणीयम्।
स्पष्टार्थ अथवा शिवास जानने की रितिः–कृष्ण पक्ष की तिथि में पहले १५ जोड़कर तब गणित करें। ० शेष बचे तो उसको ७ माने। जैसे ७ तिथि को लें-७ + १५ = २२ × २=४४ + ५ = ४९÷७ = शेष ० अर्थात् ७। शिव प्रतिष्ठा, महामृत्युञ्जय जप तथा पार्थिव पूजन में इसका विचार करें। रुद्राभिषेक में शिववास मिल जाये तो अच्छा है किन्तु अनिवार्य नहीं है। श्रावणमास में शिववास देखना आवश्यक नहीं है।

अथ चैत्रादिमासेषु मन्वादि तिथयः

चै.शु.	ज्ये.शु.	आषा.शु.	भा.प.शु.	आश्वि.शु.	कार्ति. शु.	पौष शु.	माघ शु.	फा.शु.	श्राव.कृ.
३।१५	१५	१०।१५	३	९	१२।१५	११	७	१५	८।३०

अथ युगादि तिथयः

वैशा.	भाद्रपद	कार्तिक	माघ	मासाः
शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण	पक्षः
३	१३	९	३०	तिथयः
त्रेता	द्वापर	कृत	कलि	अनध्यायं प्रकुर्वीत
युगादिः	युगादिः	युगादिः	युगादिः	मन्वादि युगादिषु

सामान्य सुभिक्षादिकम

प्रभवात् द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्नूनञ्च कारयेत्।।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम्।।
एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पञ्चद्वाभ्यां सुभिक्षकम्।।
त्रिषष्ठे च समता ज्ञेया शून्ये पीड़ा न संशयः।।

कल्पादि तिथयः-चैत्रशुक्ल १, वैशाख शुक्ल ३, कार्तिक शुक्ल ७, मार्गशीर्ष शुक्ल ९, माघ शुक्ल १३, चैत्र कृष्ण३।

दशावतार - मत्स्यावतारः चैत्रशुक्ल ३, अपराह्ने। रामावतारः चैत्रशुक्ल ९ मध्याह्ने। परशुराम अवतारः वैशाख शुक्ल ३, प्रदोषे। नृसिंहावतारः वैशाख शुक्ल १४, सायंकाले। कूर्मावतारः वैशाख शुक्ल १५, मध्याह्ने। कल्कि अवतारः श्रावण शुक्ल ६ सायंकाले, कृष्णावतारः भाद्रपद कृष्ण ८ निशीथे। वामनावतारः भाद्रपद शुक्ल १२ मध्याह्ने। बौद्धावतारः आश्विन शुक्ल १०, सायंकाले। वाराहावतारः भाद्रपद शुक्ल ३ अपराह्ने।

अथ जन्मकुण्डलीतः प्रतिवर्षीयप्रतिभाव विचार - जन्मागं प्रथमं विद्धि द्वितीयञ्च द्वितीयकम्। एवं द्वादश भावाः स्युर्द्वादशवर्षस्य सूचकाः।। द्विरावृत्या लग्न भावात् त्रयोदश पुरस्सराः, त्रिरावृत्तस्तु षट्त्रिंशद्वर्षाणि स्युरिहायुषाम्।। आवृत्तितस्तु दशभिः पूर्णतः पुरुषायुषः। वर्ष संज्ञक भावास्युर्यदि कोणेषु १।५।९ सद्ग्रहाः।। दैहिकं सकलं सौख्यं वर्षेऽस्मिन्नियतं शुभम्। तद्वर्षमासा लग्नात्स्युस्तथा भावाः धनादयः। तत्तद्भावस्य कोणस्था यदि सर्वशुभग्रहाः।। तद् वर्षे तस्य भावस्य विशेषात्सुख कारकाः।। एवं पापग्रहास्तेषु कोणेषु यदि संस्थिताः सबलाः भावनाशाय निर्बलास्त्वसुखाय च।। शुभैस्तु शुभाधिक्यं पापैस्तु भाव संक्षयः। मिश्र मिश्र फले ज्ञेयं बलाबल विशेषतः। इति।।

वार परत्वेन तैलाभ्यङ्ग फलं विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकान्तिः	मृतिः	धनप्राप्तिः	वृत्ति हानिः	विपत् हानिः	सुखं	फलम्
पुष्पं	०	मृत्	०	दूर्वा	गोमयं	०	पातन

समानगोत्रप्रवरविवाहेमहापातकमुक्तम् - आपस्तम्बः समानगोत्रप्रवरांकन्यामुद्वोपगम्य च। तस्यामुत्पाद्य चाण्डालं ब्राह्मण्यादेव हीयते। अन्यच्च एकस्मिन्प्रवरेतुल्यमातृगोत्रेवरस्य च। तमुद्वाहनं कुर्वंति सा भगिनी कन्या भवेत्।। आरूढपतितापत्यं ब्राह्मण्यां यश्चशूद्रजः। सगोत्रोढ्वा सुतश्चैवचाण्डालास्त्रयईरितः।।

अथ समानां क्रियादि विचारः-एकमातृजयोरेकवत्सरे पुरुषस्त्रियो। न समानक्रियां कुर्यान्मातृभेदेविधीयते।। नारदोऽपि विवाहस्त्येक जन्यानांषण्मासाभ्यन्तरे यदि।। असंशयात्त्रिभिर्वर्षैस्तत्रैकाविधवा भवेत्।। एकोदरप्रसूतयोः पुत्रयोः कन्ययोः कन्यापुत्रयोश्चापिनिषेधः सकलशुभ कर्मणाम्।। पुत्रविवाहानन्तरंपुत्र्युद्वाहनिषेधः पुत्रोद्वाहात्परं पुत्रीविवाहो न ऋतुत्रये। वर्षभेदे तु षण्मासाभ्यन्तरे विहितः शुभः।। कन्योद्वाहात्परं पुत्रविवाहः श्रेष्ठ।। सोदरकन्ययोः सोदराभ्यामुद्वाहे निषेधश्च नारद। नचैकजन्मनोः पुंसो नेकजन्मे तु कन्यके।। नूनं कदाचिदुद्वाहे नैकदा मण्डपद्वयमिति।।

अथ रव्यादिग्रहाणां जन्मभाद्गोचरफलवेधयोज्ञानाय चक्रम्।

श्री	सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
१	स्थान नाशःपथा	पुष्टि अन्नलाभः	भयम् पीड़ाच	बंधनम् भयम्	अरिष्टादि भयम्	सुखं शत्रु नाशः	सर्वनाशः पीड़ाभयम्	हानिः कष्ट भयम्	हानिः रोगभयम्
२	हानिः भयम्	धननाशः सुखम्	धननाशः नेत्रार्ति	धनलाभः	धनादि लाभः	सुखम् धनप्राप्तिः	शोकः धनहानिः	नैस्वः व्ययं	वैर वित्तनाशः
३	सुखम् श्रीप्राप्तिः	द्रव्याप्तिः सुखम्	सुखं श्रीप्राप्तिः	भयम् शत्रुतः	भयम् रोगाप्तिः	सुखम् अर्थलाभ	सुखार्थ लाभः	नैरुज्यं धनप्राप्ति	सुखलाभ वृद्धिः
४	रोगभयम् माननाशः	रोगःमा-नार्थहानिः	कष्टं शत्रुः भीतिः	धनसुखा-दिप्राप्तिः	धनहानिः भयं	धनागमः	पीड़ाभयं शत्रुवृद्धिः	वैरशोकश्च	भीति पीड़ा
५	दैन्यम् अर्थनाशः	सुखं कार्य नाशः	रुग्भयम् धननाशः	रोगभयम् शोकश्च	लाभः सुखम्	सुखम् पुत्रलाभ	धनपुत्रयोः नाशः	हानिः शोकश्च	सुखमर्थः नाशः
६	रिपुनाशः सुखम्	वित्तलाभः	सुखार्थ लाभः	अलाभ-स्थितिः	रोगः शोकश्च	शत्रुभयं पीड़ाच	सुखम् वित्तलाभ	सुखम् लक्ष्मीप्रा.	सुखम् वित्तलाभ
७	गमनम् धनहानिः	द्रव्यप्राप्तिः सुखम्	कार्श्य धननाशः	पीड़ाभयं विग्रहः	सुभोग सुखञ्च	शोकः अतिभयं	दोषः पीड़ाभयं	दारिद्र्यं हानिः	दुर्गति पीड़ा च
८	रोगार्त भयम्	क्लेश मृत्युभयं	भयंपाप वृद्धिः	धनादि लाभः	मृत्युभयं पीड़ाच	विपत्तिः धनदः	पीड़ाभयं शोकः	रुग्भयं व्यसनञ्च	पीड़ाभयं हानिश्च
९	कांतिक्षयः पापवृद्धिः	मानम् नृपभयम्	रुग्भयम् सुखम्	रुग्भयं धननाशः	सुखं सुमानं	सुख लाभः	पापम् धननाशः	पापकर्म रतः	पापं दैन्यश्च
१०	सौख्यसुख कर्मसिद्धि	शुभम् सुखम्	सुखम् शोकञ्च	सुखं सुखभागः	अति भयम्	धर्मलाभः असुख	वैमनस्य शुभः	वैरम् सुखम्	भयम् शोकञ्च
११	वित्ताप्ति सुखम्	विविधार्थ लाभः	लाभः सुखप्राप्ति	शुभः अर्थागमः	सौख्यं लाभः	दुःखम् धनागमः	सुखम् वित्तलाभः	सुखवृत्तिः प्राप्तिः	सुयशो ऽर्थलाभ
१२	द्रव्यनाशः पीड़ाभयम्	रोग धननाशः	रोग शोकञ्च	शोकः धननाशः	पीडा भयम्	धनागमः	क्लेशोऽ नर्थश्च	हानिः पीडाच	पीड़ाभयम् वैरञ्च

सहोदर भाई और सहोदर बहिन का विवाह शास्त्रोक्त नहीं है। एक मण्डप में दो विवाह नहीं करना चाहिये।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुधः	बृहस्पति	शुक्रः	श.रा.के.	ग्रहाः
१।६।१०।११	१।२।३।५।६	३।६।१०।११	२।६।१०।११	२।५।७।९।११	१।२।३।९।११	३।६।१०।११	शुभाः
१।२।५।७।९	७।९।१०।११	१।२।५।७।९	१।३।५।७।९	१।३।६।१०	१।२।५।७।९	१।२।५।७।९	पूज्याः
१।२।४।८	४।८।१५	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्द्याः

अथ वारपरत्वेन कालचक्रम्	पूर्व	अग्नि	दक्षि.	नैऋ.	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशः
	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	भौम	चन्द्र	सूर्य	०	वाराः

अथात्रप्रत्येक ग्रहाणां रेखाष्टकज्ञानाय सारणीयम्

तत्रादौखेरष्टकवर्गाङ्काः ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९	९	११			९	१२	११
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

अथचन्द्रस्याष्टकवर्गाङ्काः ४९

चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	ल.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	४	४	७	५	६	७	१०
७	६	५	८	७	११	८	११
१०	९	७	१०	९		१०	
१०	८	११	१०		११		१०
	११	१०	१२	११			
		११					

भौमस्याष्टकवर्गाङ्काः

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	ल.
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	४	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०		१०
८				९	११		११
			१०				१०
११				११			

अथ बुधस्याष्टकवर्गाङ्काः

बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	ल.
१	६	१	१	५	२	१	१
३	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	९	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
९		५	८	१२	१०	८	८
	८	९		११	९	१०	
११		९	१०			१०	११
१२		११	११			११	

अथगुरोरष्टकवर्गाङ्काः ५६

गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.
१	२	३	१/२	२	१/२	१	१/२
२	५	५	३	५	४	२	४
३	६	६	४	७	७	४	५
४	९	१२	७	९	८	५	६
७	१०		८	११	१०	६	७
८	११		९		११	९	९
१०			१०			१०	१०
११			११			११	११

शुक्रस्याष्टकवर्गाङ्काः ५२

शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	ल.
१/२	३	८	१/२	३	३	५	१
३	४	११	३	५	५	८	२
४	५	१२	४	६	६	९	३
५	८		५	९	९	१०	४
८	९		८	११	११	११	५
९	१०		९	१२			८
१०	११		११				९
११			१२				११

अथशनेरष्टकवर्गाङ्काः ३९

श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	ल.
३	१	३	३	६	५	६	१
५	२	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७		१०	१०	१२		६
	८		११	११			१०
	१०		१२	१२			११
	११						

लग्नस्याष्टकवर्गाङ्काः ५२

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१	३	३	१	१	१/२	१	१
३	४	६	३	२	४	२	३
४	६	१०	६	४	५	३	४
५	१०	११	१०	६	६	४	६
७	११		११	८	७	५	१०
९				१०	९	८	११
१०				११	१०	९	
११					११	११	

अष्टकवर्गराशिगुणकाः- मे.७, वृ.१०, मि.८, क.४, सिं.१०, कं.५, तु.७, वृ.८, ध.९, म.१०, कुं.११ मी.१२। ग्रहगुणकाः सू.५, चं.५, मं.८, बु.५, बृ.१०, शु.७, श.५।। रेखाफलम् १ क्लेशः, २ अर्थहानिः, ३ प्रवासकष्टम्, ४ समलाभः, ५ सुखं, ६ धनप्राप्तिः, ७ परमानन्द ८ कार्यसिद्धिः।।

अथ ग्रहाणामधिप्रत्यधिदेवताज्ञानमाहः ईश्वरश्च उमा चैव स्कन्दो विष्णुरतथैव च।। ब्रह्मणेन्द्र यमश्चैव कालश्चैव तथाष्टमम्। चित्रगुप्तन्तु नवमं अधिदैवत कीर्तित।. अग्निश्चैव तथा आपः पृथ्वी विष्णुरेव च। इन्द्रश्चैव तथेन्द्राणी तथैव च प्रजापतिः।। सर्पश्चैव तु ब्रह्मा च एता प्रत्यधिदेवताः।।

अथाधान काले चन्द्रवशात् प्रसवस्य ज्ञानाय चक्रम्

चन्द्रराशयः				दिनानि
१	४	७	१०	२७१
२	५	८	११	२९७
३	६	९	१२	२८१ वा २७६

अथ ग्रहाणां गोत्र ज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि.	राहु.	केतु	ग्रहाः
कश्यपः	आत्रेयम्	भारद्वाजम्	आत्रेयम्	आङ्गिरसः	भार्गवः	काश्यपः	पैठनस्	जैमिनियम्	गोत्राणि

अथ भद्रयाः मुखपुच्छादि परिज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	१४	तिथिनाम
प.	आ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेषु आदौ
५	५	५	५	५	५	५	५	घटयः शराः विष्टेरास्यं
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेषु अन्त्ये
३	३	३	३	३	३	३	३	घटित्रयं पुच्छे शुभकरं

प्रश्न कालात् आधानतो वा प्रसव कालिक चन्द्रविज्ञानमत्राह

यावत्संख्या द्वादशांशे शीतरश्मिव्यवस्थितः।। तत्संख्यावा ततो राशिर्जन्मादौ तद्गतं भवेत।।

यस्मिन् द्वादश भागे गर्भाधाने व्यवस्थितश्च चन्द्रः। तत्तुल्यर्क्षे प्रसवो गर्भस्थ नियतमादिशेत्प्राज्ञः।। समुद्रजातकेऽपि- यतमे द्वादश भागे सूतिस्तत्संख्यके विधाविति। अत्र लग्न चन्द्रयोर्मध्ये यो बलवान् तस्य द्वादशांशकवशेन चन्द्रराशिर्ज्ञेयः इत्युक्तं लघुजातके लग्नतो यो बलवान् तस्याद्विरसांशकान्विते विधौ प्रसवः।।

वार परत्वेन तैलाभ्यङ्ग फलं विधिः-

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकान्ति	मृतिः	धन प्राप्ति	वृत्ति हानिः	विपत हानिः	सुखं	फलम्
पुष्पं	०	मृत्	०	दूर्वा	गोमयं	०	पातन

तैलाभ्यंग वर्ज्य तदग्राह–रवौ भौमे व्यतीपाते संक्रान्तौ वैधृति अपि। षष्ठ्यां अष्टभ्यां च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न चर्वसु। अत्र तात्कालिकान्तियो ग्राह्याः।।

अथात्रतैलाभ्यंगदोषापवादमाहः– तैलाभ्यंग न दोषाय प्रत्यहं क्रियते च यः। उत्सवे वात रोगे वा यत्र वाचनिकोपिवा। मेश्रितं क्वथितं तैलं सार्षपं पुष्प वासितम्। द्रव्यांतरयुतं वापि नैवदुष्येत्कदाचन।।

वर्णादिपरिहार शौनक-वर्ग वैरं योनि वैरं गण वैरं नृदूरकम्। दुष्ट कूट फलं सर्व ग्रह मैत्रेण नश्यति।।१।। न वर्ण वर्गोन गणो न योनि र्द्विर्द्वादशे चैव षडष्टके वा। वरेऽपि दूरे नव पञ्चमे वा मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः।।२।। सद्भकूटं योनि शुद्धिः ग्रह संख्यं गुण त्रयम्। एष्वेकतमसद्भावे कन्या रक्षोगणा शुभा।।३।। राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे चांश नाथयोः। गणादिदोष्ठ ये प्पु द्वाहः पुत्र पौत्र प्रवर्धनः।।४।। स्त्री राशेर्वरभं दूरं कन्या दूरं शुभावहम्। व्यस्तं नृदूरमशुभं वश्यत्वात्तदपीष्टम्।।५।।

वार वेला ज्ञानाय चक्रम

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
४।५	७।२	६।२	५।३	६।८	३।४	१।६।८	दिने
६।४	७।४	२	६।४	५।८	३	६।१	रात्रौ

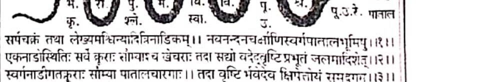
दिने–रवौ वर्ज्यं चतुष्पञ्च सोमे सप्तद्वयन्तथा। कुजे षष्ठ द्वयञ्चैव बुधे पञ्चतृतीयकम्।। गुरौ षष्ठाष्टकञ्चैव शुक्रे वेद तृतीयकम्। शनावाद्यन्तषष्ठ ञ्च वार वेलेति निन्दिता।।

रात्रौ-रवौ रसाब्धी द्विगगो हयाब्धी द्वयं महीजे च बुधे रसाब्धी। गुरौ शराष्टौ भृगुजे तृतीये रसाद्यां निशिवार वेला।।

अथ अज्ञात जन्म राशेः विशेषरतमाहः-अज्ञात जन्मानां नृणां नाम्नि भं परिकल्पयेत्। तेनैव चिन्तयेत् सर्वं राशिकूटादि जन्मभवम्। जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्। व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्यो निधनं भवेदिति।।

कालज्ञानम्–तात्काले दिवस निशांशा समुदेति राशि भागो यः। यावानुदयस्तावान् वाच्योदिवसस्य रात्रेर्वा।।

अथ वर्षाज्ञानाय सर्पाकारनाडीचक्रमिदम्



सर्पचक्रं तथा लेख्यमश्विन्यादित्रिनाडिकम्।। नवनन्दनचर्क्षाणिस्वर्गपातालभूमिषु।।१।।
एकनाडीस्थितिः सर्वे क्रूराः सौम्याश्च खेचराः तदा सद्यो वदेद्वृष्टि प्रभूतं जलमादिशेत्।।२।।
स्वर्गनाडीगतक्रूराः सौम्या पातालचारगाः।। तदा वृष्टि र्भवेदेव क्षिप्रतोयं समुद्रगम्।।३।।
नपुंसकानां योगः स्याद्वायुः स्त्रीयोगतो ध्रुवम्। पुंस्त्रीसंयोगतो वृष्टिर्ग्रहाश्च बलास्तथा।।४।।
क्लीबस्त्रीयोगतः शीतं पुंयोग वातजं भयम्। वातनाड्यादिगाखेटाः कुर्युर्नाडीभवं फलम्।।५।।
एकोऽपि तत्फलं दत्ते सुनाडी संस्थितो ग्रहः। भूसुतः सर्वनाडीषु दत्ते नाडीभवं फलम्।।६।।
बुधशुक्रमहीसुनुः गुरवश्चैकनाडिगः। निःसंशयं तदाकाले, जायते वृष्टिरुत्तमा।।७।।
चलयङ्गारके वृष्टि स्यं च बृहस्पतौ। शुक्रस्यास्तङ्गते वृष्टि स्त्रिधावृष्टिः शनैश्चरे।।

काशी से अक्षांश-देशान्तर-सारिणी

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.	नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
अयोध्या	२६।४८	०।८	३प.	कूचबिहार	२६।२०	१।४	२६प.
अमृतसर	३१।३९	१।२१	३२प.	कं.आ.दीप.अं	३३।५६	१०।४४	२५८प.
अलीगंज	२६।१२	०।१४	६पू.	क्वेटा	३०।१२	२।४०	६४प.
अमरावती	२०।५४	०५२	२१प.	काबुल	३४।३३	२।१८	५५प.
अमेठी	२६।७	०।१२	५प.	काञ्जीपुरम्	१२।५०	०।३२	१३प.
अजमेर	२६।२८	१।२३	३३प.	कुम्भकोणम्	१०।५७	०।३५	१४प.
अमरपुर	२६।५०	०।३८	१५पू.	कोल्हापुर	१६।४३	१।२७	३५प.
अहमदनगर	१९।६	१।२२	३३प.	केनबरा (आ)	३५।१९	११।०	२६४पू.
अलवर	२७।३२	१।४	२६प.	कोलम्बो (श्री)	६।५४	०।३२	२३प.
अलमोड़ा	२९।३५	०।३३	१३प.	खण्डपारा	२०।१६	०।२२	९पू.
अलीगढ़	२७।५३	०।५९	२०प.	गया	२४।४९	०।२०	८पू.
अम्हर्स्ट (वर्मा)	१६।४	२।२५	५८पू.	गाजीपुर	२५।३५	०।६	२पू.
अहमदाबाद	२३।१	१।४४	४२प.	गोरखपुर	२६।४७	०।३	१प.
आरा	२५।३४	०।१५	६पू.	गोंडा	२७।८	०।१०	४प.
आजमगढ़	२६।४	०।२	१प.	ग्वालपाड़ा	२६।११	१।१६	३०पू.
आगरा	२७।१२	०।४९	२०प.	ग्वालियर	२६।१२	०।४८	१९प.
आवा(मंडा)	२१।५५	२।१०	५२पू.	गिद्धौर	२४।५१	०।३३	१३पू.
आसनसोल	२३।४३	०।४०	१६पू.	गोलाघाट आ.	२६।३१	१।५०	४४पू.
ओटावा(कना.)	४५।२४	२६।२७	६३५पं.	गोहाटी आ.	२६।११	१।२७	३५पू.
इटावा	२६।४६	०।४०	१६प.	गोविन्दपुर	३२।५०	०।३६	१५प.
इन्दौर	२२।४४	१।१२	२९प.	ग्रीनिच (ब्रिटेन)	५१।२९	१३।४९	३३२प
इच्छागढ़	२३।५	०।२९	१२पू.	गोकर्ण	१४।३२	१।२६	३४प.
इम्फाल	२४।४८	१।५०	४४पू.	गोवा	१५।२७	१।३१	३६प.
उज्जयिनी	२३।११	१।११	२८प.	चरखारी	२५।१२	०।३२	१३प.
उदयपुर	२४।३४	१।३३	३७प.	चन्दौसी	२८।२८	०।४२	१७प.
उन्नाव	२६।४८	०।२३	९प.	चित्रकूट	२५।१२	०।२१	८प.
एटा	२७।३४	०।४३	१७प.	चुनारगढ़	२५।७	०।१	०प.
कछार	२४।५०	१।३८	३९प.	चाईवासा	२२।३३	०।२८	११पू.
कलकत्ता	२२।३३	०।५३	२१पू.	चण्डीगढ़	३०।४४	१।०	२४प.
कर्नाल	२९।४२	१।००	२४प.	छटक (शिल.)	२५।१	१।२६	३४पू.
कटक	२०।३०	०।२९	१२पू.	छतरपुर	२४।५५	०३३	१३प.
करांची	२४।५१	२।३९	६४प.	छपरा	२५।४६	०।१७	७पू.
कन्नौज	२७।३	०।२९	१२प.	छयगाँव आ.	२६।५	१।२३	३३पू.
काश्मीर	३४।६	१।२५	३४प.	जयपुर	२६।५३	१।११	२८प.
कानपुर	२६।२८	०।२७	११प.	जबलपुर	२३।१२	०।३०	१२प.
काशी	२५।१८	०।०	००	जगन्नाथपुरी	१९।४९	०।२८	११पू.
कासगंज	२७।४७	०।४३	१७प.	जामनगर	२२।२७	२।१	५२प.
काल्पी	२६।१०	०।३१	१२प.	जनकपुर	२३।४३	०।१२	५पू.
काठमाण्डू	२७।४३	०।२२	९पू.	जालौन	२६।९	०।३६	१४प.
कृष्णगढ़ (वं.)	२३।२३	०।५५	२२पू.	जमालपुर	२४।५८	१।१०	२८पू.
कोटाबून्दी	२५।१०	१।१०	२८प.	जोधपुर	२६।२०	१।४०	४०प.
कोहिमा	२५।४०	१।५०	४४पू.	जौनपुर	२५।४४	०।३	१प
कुरुक्षेत्र	२९।५७	१।१	२५प.	जलपाईगुड़ी	२६।३२	०।५७	२३पू

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.	नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
जमशेदपुर	२२।४८	०।३२	१३पू.	प्रोम	१८।४७	२।०	४८पू.
जूनागढ़	२१।२९	२।५	५०प	पिंडरा	२२।४५	०।१०	४प.
जिनिया	४६।१२	१२।५०	३०७प.	पेरिस (फ्रांस)	४८।५०	१३।२६	३२२प.
जकार्ता	६।१६द	४।०	९६पू.	फतेहपुर	२५।५५	०।२१	८प.
झांसी	२५।२८	०।४४	१८प	फैजाबाद	२६।४७	०।९	४प.
टेकारी	२४।५८	०।१७	७पू.	फर्रुखाबाद	२७।२६	०।३४	१४प.
टोकियो	३५।४०	९।२५	२२६	बलिया	२५।४६	०।१२	५पू.
डुमरांव	२५।३२	०।१२	५पू.	बहराइच	२७।३४	०।१४	६प.
ढाका	२३।४२	१।१५	३०पू.	बरेली	२८।२२	०।३५	१४प.
तिलहर	२७।५०	०।३२	१३प.	बक्सर	२५।३३	०।१०	४पू.
तञ्जावर	१०।४५	०।३८	१५प.	बड़ौदा	२२।१८	१।३७	३९प.
तिरुमति	१३।४०	०।४३	१५प.	बम्बई	१८।५६	१।४०	४०प.
त्रिवेन्द्रम	८।३१	१।०	२४प.	बलरामपुर	२७।२७	०।८	३प.
तेहरान (ईरान)	३५।४१	५।१७	१२७	वर्धमान	२३।१७	०।४८	१९पू.
दतिया	२५।४०	०।४५	१८प.	बांदा	२५।२८	०।२७	११प.
दरभंगा	२६।८	०।२९	१२पू.	बिहार	२५।११	०।२६	१०पू.
दार्जिलिंग	२७।३	०।५३	२१पू.	बीकानेर	२८।२	१।३६	३८प.
दीनाजपुर	२५।३७	०।५६	२२पू.	बेतिया	२६।४९	०।१५	६पू.
देहली	२८।३८	०।५७	२३प.	बालेश्वर	२१।३०	०।३९	१६पू.
देहरादून	३०।१९	०।५०	२०प.	बिलासपुर	३१।२०	१।०	२४प.
द्वारिका	२२।१४	२।२०	५६प.	बून्दी	२५।२६	१।१३	२९प.
डिब्रूगढ़	२७।२९	२।०	४८पू.	बुलन्दशहर	२८।२४	०।५१	२०प.
धवलपुर	२६।४२	०।५१	२०प.	बराकर	२३।४६	०।३८	१५पू.
धुले	२०।५३	१।२२	३३प.	बाँसी(बस्ती)	२७।१०	०।१	०प.
नरसिंहपुर	२२।५७	०।३७	१५प.	बाकरगंज	२०।३०	१।१३	२९पू.
नागोद (बुन्दे.)	२४।३४	०।२४	१०प.	बदायूं	२८।२	०।३८	१५प.
नासिक	१९।५९	१।३२	३७प.	बस्ती	२६।४८	०३	१प.
नागपुर	२१।१०	०।३८	१५प.	बाराबंकी	२६।५६	०।१८	७प.
नीमच	२४।२७	१।२१	३२प.	बगदाद	३३।२४	६।१९	१५२प
नैनीताल	२९।२३	०।३५	१४प.	बर्लिन(जर्मनी)	५२।३०	११।३५	२७८प
नेपालगंज	२८।०	०।१३	५पू.	बंगलोर	१२।५८	०।५५	२२प.
पवानर	२४।०	१।२	२५पू.	बेलगाँव	१५।५०	१।२४	३४प.
पटियाला	३०।२०	१।५	२६प.	बरहाणपुर	२१।१८	१।५	२६प.
पटना	२५।३६	०।२२	९पू.	बेंकाक(थाई)	१३।४४	२।५५	७०पू.
प्रतापगढ़	२५।३४	०।१०	४प.	भरोच	२१।४१	१।४०	४०प.
पीलीभीत	२८।३८	०।३१	१२प.	भरतपुर	२७।१४	०।५५	२२प.
प्रयाग	२५।२८	०।१२	५प.	भागलपुर	२५।१४	०।४०	१६पू.
पूर्णिया	२५।४९	०।४५	१८पू.	भुज (कच्छ)	२३।१५	२।१२	५३प.
पूना	१८।३०	१।३०	३६प.	भोपाल	२३।१६	०।५५	२२प.
पुष्कर	२६।२९	१।२५	३४प.	भुवनेश्वर	२०।१५	०।२७	११पू.
पुरुलिया	२३।२०	०।३५	१४पू.	मद्रास	१३।४	०।२८	११प.
पेशावर	३४।२	१।५४	४६प.				
पोरबंदर	२१।३१	२।१५	५४प.				

नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.	नगर	अक्षांश अं.क.	काशीसे देशान्तर घ.प.	मि.दि.
मधुबनी	२६।२०	०।३१	१२पू.	लोहरदग्गा	२३।२७	०।१७	७पू.
मण्डाले	२२।०	२।११	५२पू.	वीरभूमि	२३।५४	०।४५	१८पू.
मथुरा	२७।३१	०।५२	२१प.	वारहभूमि	२३।१०	०।३४	१४पू.
मझौली राज्य	२६।३८	०।१	०प.	वीरसिंहपुर	२४।३३	०।२०	८प.
मालदा	२५।३	०।५१	२०पू.	वैद्यनाथ	२४।३०	०।३७	१५पू.
माण्डवी (कच्छ)	२२।५०	२।१५	५४प.	वाशिंगटन	३८।५४	२६।३९	६४०प.
मेरठ	२९।१	०।५२	२१प.	विशाखापट्टनम्	१७।४३	०।३	१पू.
मेदिनीपुर	२२।२५	०।४३	१७पू.	शक्तिगढ़	२३।१५	०।५०	२०पू.
मोतीहारी	२६।४०	०।१०	४पू.	शाहजहाँपुर	२७।५३	१।५६	४६पू.
मैहरराज्य	२४।१६	०।२२	९पू.	शिवसागर	२६।५९	१।५६	४६पू.
मुरादाबाद	२८।५१	०।४२	१७प.	शिमला	३१।६	०।५७	२३प.
मुंगेर	२५।२३	०।३५	१४पू.	सहारनपुर	२९।५७	०।५५	२२प.
मैनपुरी	२७।१४	०।४०	१६प.	सागर	२३।५०	०।४३	१७प.
मिर्जापुर	२५।९	०।५	२प.	सोहावल	२४।३५	०।२२	९प.
मुजफ्फरपुर	२६।७	०।२५	१०पू.	शिलचर	२४।५०	१।३८	३९पू.
मैमनसिंह	२४।४६	१।१४	३०पू.	सिलहट	२४।५३	१।३०	३६पू.
मौलमीन	१६।२९	२।२६	५८पू.	सीतामढ़ी	२६।३४	०।२४	१०पू.
मुर्शिदाबाद	२४।११	०।५३	२१पू.	सीतारामपुर	२३।४५	०।३९	१६पू.
मक्का	२१।२५	७।७	१७१प	सरगुजा	२३।५	०।२	१पू.
मैसोर	१२।१८	१।२	२५प.	सीतापुर	२७।३४	०।२३	९प.
मछलीपट्टन	१६।१२	०।१७	७प.	सुलतानपुर	२६।१६	०।२	१प.
मदुरा	९।५८	०।४७	१९प.	सैनफर्नेंडो(स्पे.)	३६।२८	१४।५३	३५७प
मास्को(रूस)	५५।४५	७।३५	१८२प	सिंगापुर	१।२१	३।३०	८४पू.
रंगपुर	२४।४५	१।२	२५पू.	सिडनी	२३।५५	११।२३	२७३प.
रानीगंज	२३।३५	०।४१	१६पू.	सातारा	१७।४१	१।३०	३६प.
राँची	२३।३५	०।२३	९पू.	सूरत	२१।१२	१।४४	४२प.
राजमहल	२५।२	०।४८	१९प.	सोलापुर	१७।३९	१।१०	२८प.
रायबरेली	२६।१४	०।१७	७प.	सिलीगुड़ी	२६।४४	०।५५	२२पू.
रीवाँ	२४।३१	०।१७	७प.	श्रीनगर	३४।६	१।२२	३३प.
रायपुर	२१।१५	०।१३	५प.	श्रीरंगपट्टम	१२।२६	१।३	२५प.
रुड़की	२९।५२	०।५१	२०प.	हजारीबाग	२३।५९	०।२५	१०पू.
रावलपिण्डी	३३।३५	१।४०	४०प.	हरिद्वार	२९।५८	०।४८	१९प.
रोम(इटली)	४१।५६	११।४५	२८२प	हैदराबाद (द.)	१७।२५	०।४५	१८प.
राजकोट	२२।१८	२।२	४९प.	हैदराबाद (सि.)	२५।२५	२।२६	५८प.
राजमहेन्द्री	१७।०	१०।०	४प.	हाजीपुर	२५।४४	०।२२	९पू.
रामेश्वर	९।१७	०।३७	१५प.	हमीरपुर	२५।५८	०।२८	११प.
रंगून (वर्मा)	१६।४७	२।२०	५२पू.	हरदोई	२७।२३	०।२८	११प.
रायचूर	१६।१२	०।५५	२२प.	हल्द्वानी	२९।१५	०।३४	१४प.
लखनऊ	२६।५१	०।२०	८प.	हाथरस	२७।३७	०।४८	१९प.
लखीमपुर	२७।५७	०।२२	९प.				
लाहौर	३१।३५	१।३०	३६प.				

ग्रीनविच से काशी का देशान्तर १३ घटी ५० पल (५ घंटा ३२ मिनट) होता है। गणितागत सूर्य घड़ी के अनुसार यह अन्तर वाराणसी और इलाहाबाद के बीच आता है। या मद्रास के देशान्तर में पड़ता है। काशी से देशान्तर पूरब (+) एवं पश्चिम (-) होता है।

काशी से अन्य स्थानों के लिये लग्न-परिवर्तन की आसान विधि

श्रीमहावीर पंचाग में मेषादि द्वादश लग्नो का समाप्तिकाल दिया गया है, यह काशी या इसके आस-पास के स्थानों के लिये उपयोगी है, काशी से दूरस्थ स्थानों के लिये लग्नारम्भ एवं समापन में काफी अन्तर आता है, कई बार तो लग्न भी वदल जाता है।

नीचे दी गयी लग्न-परिवर्तन सारणी की सहायता से भारत के सभी प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्ति का समय सामान्य सरल गणित द्वारा तुरन्त ही ज्ञात किया जा सकता है। लग्नपरिवर्तन सारणी में अर्थात् नगर के आगे और लग्न के नीचे जो संस्कार मिनट है, उन्हें चिन्हानुसार यदि संस्कार (+) है, तो जोड़ने से और ऋण (-) है तो काशी की लग्नों में उसे घटाने से इष्टदेश या प्रदेश में लग्नों के समाप्त होने का समय ज्ञात हो जायेगा। जैसे ता.१ जनवरी २००१ ई. को दिल्ली में मेष लग्न समाप्ति का समय ज्ञात करना है, तो गणित इस प्रकार की जायेगी।

	घं.	मि.	
दिन में.	१	- ३१	मे। लग्नात काशी में (महावीर पंचांग में)
	+ ०	- १७	दिल्ली के लिये मेष लग्न का संस्कार धन (+)
दिन	१	- ४८	बजे दिल्ली में मेष लग्न समाप्ति का समय ज्ञात हुआ। रेलवे समयानुसार इसे १३-४८ भी लिखा जा सकता है।

इस प्रकार भारत के सभी प्रमुख स्थानों के लिये लग्न ज्ञात करके आप स्वयं कुण्डली बनाकर भावी घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कुण्डली में लग्न एव दशम बिन्दु को स्थान की विशेष महत्ता एवं उपयोगिता है, अतः जन्मपत्रादि गणित में सूक्ष्म शुद्ध लग्नों का ही उपयोग करना चाहिये। यदि सारणी में आपका नगर न मिले तो उसके नजदीक का दूसरा शहर ग्रहण करें। कुण्डली का सम्पूर्ण शुभारम्भ फलादेश लग्न शुद्धि पर आधारित होता है।

नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अगरतला	-३१	-३०	-३०	-३१	-३३	-३४	-३५	-३६	-३६	-३५	-३३	-३२
अमृतसर	+२२	+१९	+२०	+२५	+३२	+३८	+४४	+४६	+४६	+४१	+३४	+२८
अयोध्या	+ ०	+ १	+ ०	+ १	+ ३	+ ५	+ ६	+ ७	+ ७	+ ५	+ ३	+ २
अल्मोड़ा	+ ५	+ २	+ ३	+ ७	+१२	+१७	+२१	+२४	+२३	+१९	+१४	+ ९
अलीगढ़	+१५	+१४	+१४	+१६	+१९	+२२	+२४	+२६	+२५	+२३	+२०	+१७
अहमदाबाद	+४५	+४६	+४६	+४४	+४२	+४०	+३८	+३७	+३७	+३९	+४१	+४३
आगरा	+१७	+१६	+१७	+१८	+१९	+२१	+२३	+२४	+२३	+२२	+२०	+१९
इलाहाबाद	+ ४	+ ४	+ ४	+ ५	+ ५	+ ५	+ ५	+ ५	+ ४	+ ४	+ ४	+ ४
ऊना (हि.प्र.)	+१६	+१२	+१४	+२०	+२६	+३४	+४०	+४४	+४२	+३६	+३०	+२२
उज्जैन	+३३	+३४	+३३	+३२	+३०	+२८	+२५	+२४	+२५	+२६	+२९	+३१
कांगड़ा(हि.प्र.)	+१५	+११	+१२	+१८	+२५	+३२	+३९	+४२	+४२	+३५	+२८	+२१
कटक	- ३	- १	- २	- ५	-११	-१६	-२०	-२३	-२२	-१८	-१३	- ८
कलकत्ता	-१७	-१५	-१६	-१८	-२१	-२३	-२५	-२७	-२६	-२४	-२२	-१९
काण्ठमाडु	-१४	-१५	-१५	-१२	-१०	- ७	- ५	- ३	- ४	- ६	- ८	-११
कानपुर	+ ९	+ ८	+ ९	+१०	+१०	+१२	+१३	+१४	+१३	+१२	+१२	+१०
कुरुक्षेत्र	+१७	+१४	+१५	+१९	+२४	+२९	+३३	+३५	+३५	+३१	+२६	+२१
गया	- ७	- ७	- ७	- ८	- ८	- ८	- ९	- ९	- ९	- ९	- ८	- ८
गोण्डा	+ १	+ ०	+ १	+ २	+ ४	+ ६	+ ७	+ ८	+ ८	+ ६	+ ५	+ ३
गढ़वाल	+ ९	+ ६	+ ७	+११	+१६	+२१	+२५	+२८	+२७	+२३	+१८	+१३
चण्डीगढ़	+१४	+११	+१३	+१७	+२३	+२१	+३५	+३८	+३६	+३२	+२६	+२०
जम्मू	+१८	+१४	+१६	+२३	+३१	+३९	+४६	+५०	+४९	+४२	+३४	+२६
जालंधर	+२०	+१७	+१८	+२३	+२८	+३४	+४०	+४३	+४१	+३७	+३१	+२५
जवलपुर	+१६	+१७	+१६	+१५	+१३	+१४	+८	+७	+ ८	+ ९	+११	+१४
जमशेदपुर	- ९	- ८	- ९	- ९	- १२	-१४	-१७	-१७	-१७	-१६	-१३	-११
जमालपुर	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४

नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
जहानावाद	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७	- ७
झरिया	-११	-११	-११	-१२	-१३	-१५	-१६	-१६	-१६	-१५	-१४	-१३
तरवंगज	+१	+ ०	+ १	+ २	+ ४	+ ६	+ ७	+ ८	+ ८	+ ६	+ ५	+ ३
दिल्ली	+१७	+१६	+१६	+१९	+२२	+२६	+२९	+३०	+३०	+२७	+२४	+२०
द्वारिका	+६२	+६३	+६२	+६०	+६०	+५४	+५१	+४९	+५०	+५२	+५६	+५९
देहरादून	+१२	+९	+१०	+१४	+१९	+२४	+२८	+३१	+३०	+२६	+२१	+१६
धनवाद	-१२	-११	-१२	-१२	-१४	-१५	-१६	-१७	-१७	-१६	-१४	-१३
दरभंगा	-१३	-१४	-१४	-१३	-१२	-११	-१०	-१०	-१०	-११	-१२	-१३
नीमच	+३४	+३४	+३४	+३३	+३३	+३२	+३१	+३१	+३१	+३१	+३२	+३३
नवलगढ़	+२७	+२५	+२७	+२८	+३०	+३३	+३५	+३६	+३५	+३४	+३१	+२९
नालंदा	- ९	- ९	- ९	- ९	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०
पूना	+४८	+५१	+५०	+४५	+३८	+३१	+२५	+२२	+२३	+२८	+३५	+४२
पोर्ट ब्लेअर	-१७	-११	-१४	-२३	-३४	-४७	-५७	-६३	-६१	-५२	-४०	-२७
पटना	-९	-१०	-१०	- ९	- ९	- ९	- ८	- ८	- ८	- ८	- ९	- ९
बुलन्दशहर	+१५	+१४	+१७	+१७	+२०	+२३	+२५	+२६	+२४	+२४	+२१	+१८
बद्रीनाथ	+४	+१	+२	+७	+१२	+१८	+२४	+२७	+२६	+२१	+१५	+१०
बाराबंकी	+४	+ ३	+ ४	+ ५	+ ७	+ ९	+१०	+११	+११	+ ९	+ ८	+ ६
बलरामपुर	+०	- १	- ०	+ १	+ ३	+ ५	+ ६	+ ७	+ ७	+ ५	+ ४	+ २
बड़ौदा	+४४	+४६	+४५	+४३	+४०	+३७	+३४	+३२	+३३	+३५	+३८	+४२
बम्बई	+५१	+५३	+५२	+४८	+४२	+३६	+३१	+२८	+२९	+३३	+३९	+४५
बक्सर	- ५	- ५	- ५	- ४	- ४	- ४	- ३	- ३	- ३	- ३	- ४	- ४
बोकारो	-१०	-९	-१०	-१०	-१२	-१३	-१४	-१५	-१४	-१४	-१२	-११
भागलपुर	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६
भोपाल	+२६	+२७	+२७	+२५	+२३	+२१	+१९	+१८	+१८	+२०	+२२	+२४
भिवानी	+२१	+१९	+२०	+२३	+२७	+३०	+३४	+३६	+३५	+३२	+२८	+२५
मथुरा	+१८	+१८	+१९	+१९	+२१	+२३	+२५	+२४	+२३	+२४	+२२	+१९
मद्रास	+३०	+३५	+३३	+२४	+१४	+३	-८	-१३	-११	-२	+८	+१९
मुजफ्फपुर	-११	-१२	-१२	-११	-१०	- ९	- ८	- ८	- ८	- ९	-१०	-११
मधुवनी	-१४	-१४	-१४	-१३	-१२	-१२	-११	-११	-११	-१२	-१२	-१३
मुंगेर	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४
मेरठ	+१५	+१३	+१४	+१७	+२०	+२४	+२७	+२९	+२९	+२६	+२२	+१८
रांची	-७	- ६	- ६	- ७	- ९	-११	-१२	-१३	-१३	-१२	-१०	- ८
रानीखेत	+६	+३	+४	+८	+१३	+१८	+२२	+२५	+२४	+२०	+१५	+१०
रुद्रोली	+२	+ १	+ २	+ ३	+ ५	+ ७	+ ८	+ ९	+ ९	+ ७	+ ६	+ ४
रेवाड़ी	+२१	+१९	+२०	+२२	+२५	+२७	+३०	+३१	+३१	+२८	+२६	+२३
लखनऊ	+५	+ ५	+ ५	+ ६	+ ८	+१०	+१०	+१२	+१२	+१०	+ ९	+ ७
लुधियाना	+१८	+१५	+१७	+२१	+२७	+३३	+३९	+४२	+४०	+३६	+३०	+२४
सासाराम	- ७	- ६	- ६	- ७	- ७	- ७	- ८	- ८	- ८	- ८	- ७	- ७
सीतामढ़ी	-२१	-२२	-२२	-२१	-१९	-१८	-१७	-१६	-१७	-१८	-१९	-२०
शिमला	+१३	+१०	+११	+१६	+२४	+२८	+३३	+३६	+३५	+३०	+२५	+१९
हरिद्वार	+११	+९	+१०	+१४	+१९	+२३	+२८	+३०	+२९	+२५	+२१	+१६
हम्मीरपुर	+१४	+१०	+११	+१८	+२४	+३१	+३८	+४१	+४१	+३४	+२७	+२०
हम्मीरपुर	+१०	+१०	+११	+११	+११	+१२	+१३	+१३	+१३	+१२	+१२	+११
हापुड़	+१५	+१३	+१३	+१६	+२०	+२४	+२७	+२९	+२८	+२५	+२२	+१८

अथ जन्मकालादीर्घादि ३ भेदत्रयाणामत्र-चरादिराशिवशादायुर्बोधकचक्रमिदम्

दीर्घायु	मध्यायुः	अल्पायुः
चरभे १ लग्नेशः चरभे १ अष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेष	चरभे लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ रन्ध्रेशः
स्थिरभे २ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ अष्टमेशः	स्थिरभे २ लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः	स्थिरभे २ लग्नेश स्थिरभेश २ रन्ध्रेश
द्विस्वभावभे ३ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः	द्विस्वभावभे३लग्नेशः द्विस्वभावभे३रन्ध्रेशः	द्विस्वभावभे३लग्नेशः चरभे १ रन्ध्रेशः

अथायुर्निर्णयचक्रानुसारेण

अथायुर्निर्णयः। चक्रानुसारेण। जन्मलग्नाष्टमेशाभ्यां लग्न सप्तमयोः स्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथाशनिचन्द्राभ्यां लग्न होरालग्नाभ्यां चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णतव्यम्। प्रकारत्रयेऽप्येकस्मायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम्। विभेदे वा प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्। त्रयाणां विवादे लग्नहोरालाग्नायुर्ग्राह्यम्।। जन्मलग्ने विषभे द्वितीयाष्टमाधीशयोर्योवली लग्नेशभे द्वादश-षष्ठाधीशतोर्मध्ये यो बली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः। पणफरे स्थित्या मध्यायुः। आपोक्लीमे स्थित्या हीनायुरेव। एवमेवात्मकारकवशेनापि निर्णतव्यम्। लग्नाष्टमेशयोः कारकेण सहोच्चे वा योगे सर्वदामध्यमायुरेव।। विषमे जन्मलग्ने कारकः तृतीये, समे जन्मलग्ने कारकः एकादशे भवेद्वा कारक युति केन्द्रे हीनायुः पणफरे मध्यायुः आपोक्लीमे दीर्घायुः लग्नेशो रवेमित्रदीर्घायुः, समश्चेन्मध्यायुः शत्रुश्चेदल्पायुरिति।। सारण्युदाहरणम् कस्यचिज्जन्मेष्टम् २।८।५ जन्मलग्न ७।३५।६।५४ होरालग्नं १।३०।५१।३ लग्नेशो भौमः ९।१९।३०।३० अष्टमेशो बुधः २।३।१।४७ चन्द्रः १०।१६।२०।० अत्रलग्नेशाष्टमेशयोः प्रथमान्तयोः स्थित्या अल्पायुः। मन्देन्दुभ्यामल्पायुः लग्नहोरालग्नाभ्यामप्याल्पायुः। एवं अल्पायुरेव सिद्धम्। तत्र भौम, बुध लग्न चन्द्रलग्न होरालग्नानां णण्णामेशाणां योग-मासादि ६।१८।१४ विकलानां दिनादि १।१०।२४ एषामेकोपचितस्थानयोगातभुक्तवर्षादिः १०।१।२५।३४।२४ अल्पायु-विशुद्धं स्पष्टमायुषो भोग्यवर्षादिकम् २१।१०।४।२५।३६ एकमेव भोग्यांशैरपि भवेदिति। एवं ३६।४० वर्षखण्डाभ्यामपि।।

रोगत्रिनाडीचक्रम्

आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
पू.फा.	मघा	आश्लेषा
उ.फा.	हस्त	चित्रा
अनुराधा	विशाखा	स्वाती
ज्येष्ठ	मूल	पू.षा.
धनिष्ठ	श्रवण	उ.षा.
शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.
भरणी	अश्विनी	रेवती
कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा

रवीन्दुनामनक्षत्रमेक-नाड्यां यदाभवेत्।
तदा मृत्यु विजानीयादिति।

दशम लग्न सारिणी

०	अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	रा.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
९	०	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
१६	मं.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
९	१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३४	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
५८	वृ.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
१०	२	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६
४६	मि	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
१०	३	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
४६	क.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
९	४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५
५८	सि.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
०	रा.	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
९	५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
१६	कं.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
०	रा.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
९	६	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
१६	तु.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
९	७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
५८	वृ.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
१०	८	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३४	४६	५६
४६	ध.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
०	रा.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
१०	९	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
४६	म.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
०	रा.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
९	१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५
५८	कु.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	९
०	रा.	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
९	११	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
१६	मी.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२

दशम लग्न निकालने की विधि- लग्न सारिणी द्वारा प्राप्त सूर्यफल में इष्ट काल जोड़ने से घट् यदि अंक आया हो उसमें १५ घटी घटाकर जितनी संख्या मिले उस संख्या को दशम सारिणी में देखिए, उक्त संख्या उसके लगभग वाली संख्या जहाँ सारिणी में हो उसके बाईं ओर दशम लग्न तथा ऊपर उसके अंश होगें।

सूर्यदशाफल– सूर्य महादशा में एक नये व्यापार से धनप्राप्ति, अग्नि-चतुष्पद से कष्ट, नेत्रकष्ट, उदरविकार, दाँत कष्ट, बच्चों से अलग वास, बड़ों में किसी का वियोग। सूर्य में मंगल, गुरु, शुक्र का अन्तर शुभ चन्द्र राहु, शनि, बुध और केतु का अन्तर अशुभ।

चन्द्रदशाफलम् - "हिम-किरण दशायां मन्त्रदेव द्विजाप्ति ...."

चन्द्र में चन्द्र, गुरु बुध, शुक्र, सूर्य का अन्तर शुभ मंगल, राहु, शनि केतु का अन्तर अशुभ।

भौमदशाफल- यदि भूमिसुतस्य शस्त्रहतसुरभूपाला-वाद्यैनं भैषज्यानृतवञ्चनैश्च विविधैःकार्यैर्धनस्यागमम्। पित्तासृग्ज्वरपीडनं तु सततं नीचांगनासेवनं विद्वेषं सुतदार-गुरुभिदुष्ट्य भोगं कष्टं विदुः।। ***भौम में–*** भौम, राहु, शनि, केतु सूर्य चन्द्र का अन्तर अशुभ गुरु, शुक्र का अन्तर शुभ।

राहुदशाफल-सौख्यादिवित्तंस्थितिनाशनं च कलत्रपुत्रादिवियोग दुखम् अतीवरोगं परदेशवासं विवादबुद्धिकुरुतेफनीशः।।

विंशोत्तरीयमहादशान्तर्दशाज्ञानचक्रम

सूर्यदशावर्ष६				चन्द्रदशावर्ष १०				भोमदशावर्ष ७				राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९				बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रोहि.ह.श्रवण				मृ.चि.ध.				आर्द्रा.स्वा.शत				पुन.वि.पू.भा.				पुष्य.अनु.उ.भा.				आश्ले.रे.ज्ये.				मघा.मू.अश्वि.				पू.फा.पू.षा.भर.			
अन्तर्दशादि १८				अन्तर्दशादि ३०				अन्तर्दशादि २१				अन्तर्दशादि ५४				अन्तर्दशादि ४८				अन्तर्दशादि ५७				अन्तर्दशादि ५१				अन्तर्दशादि २१				अन्तर्दशादि ६०			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	गु.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	गु.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	गु.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	गु.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	गु.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	गु.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	गु.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

जन्मभं त्रियुतं तष्टमष्टभिः शेषतो दशा।। मंगलाद्या वृषेधृद्धाया संकटाष्टोदशामता।।१।।
भस्यभुक्त घटी स्वीय वर्षगुण्याभभोगतः।। लब्धं वर्षादिकं भुक्तं भोग्यं तच्छेषमुच्यते।।

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञानार्थ चक्रम्

मंगला १			पिंगला २			धन्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	स.	१८	२०	म.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	स.	१६	०	म.	२	१०	पि.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	स.	१३	१०	म.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	स.	१०	२०	म.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	स.	८	०	म.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	स.	५	१०	म.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
स.	२	२०	म.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
श्र.आर्द्रा चित्रा			ध.,पुनर्वसु स्वाती			पुष्य,विशाखा शतभिषा			अश्वि.,श्लेषा अनु.,पू.भा.			भर.,मघा, ज्ये.उ.भा.			कृ.,पू.फा. मूल,रेवती			रो.उ.फा. पू.षा.			मृग.,हस्त उ.षा.		

जन्मराशि जन्मलग्ना दरिष्टवर्षाणि

जन्म ल.	वर्षाणि					आयु
मेष	४	११	१६	४४	५८	१००
वृष	१	२८	३३	४४	६१	९०
मिथुन	४	१०	१४	३८	५८	८६
कर्क	५	२५	४०	४८	६२	१००
सिंह	५	१३	२८	३६	४८	६२
कन्या	४	१६	२३	३६	४५	१००
तुला	१५	३१	३५	६२	६४	७५
वृश्चि.	११	२१	३८	५२	६२	१००
धनु	२	१०	१८	३१	४२	६७।८१
मकर	५	१३	३६	५७	६२	९५
कुम्भ	२	२८	३३	४८	६४	९०
मीन	१	८	१३	३६	४८	८३

राहु में–राहु, शनि, केतु मंगल का अन्तर कष्ट कर। गुरुबुध शुक्र का अन्तर सुखद।

गु.द.फ.–स्थानप्राप्ति वित्तयांनाम्बराप्तिराजस्नेहचित्तशुद्धि विभूतिम्। ज्ञानचारं पुत्रदारादिलाभं देवाचार्यः स्वेविपाके करोति।।

गुरु में–गुरु, बुध, शुक्र, रवि चन्द्र का अन्तर शुभ फल, शनि केतु, मंगल का अन्तर अशुभ है।

शुक्र में – शुक्र, मंगल, गुरु शनि, बुध, अन्तर शुभ, सूर्य चन्द्र राहु, केतु अन्तर अशुभ।।

गु.द.फ.-स्वकीयदाये गुरुबन्धुमित्रार्थजनं कीर्तिसुखं करोति। दौत्यं च सत्कर्महिरण्यपण्येधनायति वातरूज्ं कुमारः।।

बुध शुक्र, रवि, राहु, शनि का अन्तर, शुभ, शेष अशुभ।

के.द.फ.-केतोर्दशायामरिनीच पीड़ा न शस्त्रक्षतिमुष्णरोगम्। मिथ्यापवादं कुल दूषितत्वं वहेर्भयं प्रोषणामात्मवेशात्।।

शनि में–शनि केतु, सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु का अन्तर अशुभ। बुध शुक्र और गुरु का अन्तर शुभ फलप्रद होता है।

केतु में–केतु राहु, चन्द्र मंगल, राहु शनि का अन्तर कष्ट दायक शेष शुभ।

शुक्रदशाफलम्–स्त्रीपुत्रवित्ताप्तिमतीवसौख्यंसुगन्धमाल्याम्बरभूषणाप्तिम्। यानादिभाग्यं नरपालतुल्यं यशः स्वपाके भृगुजः करोति।

अर्घ्य मन्त्रः- प्रसीद देवदेवेश विघ्नहर्ताधनप्रदः गृहाणार्घ्यं ममशान्तिं प्रयच्छमे।। दान-प्रति भौमवार को ताँबे के बर्तन में गुड़ गेहूँ रखकर दान देना चाहिए। इसे ऋणाधिक्य भूतवेताल डाकिन्योत्पादितसन्तानोत्पत्तिकष्ट से छुटकारा मिलता है।

तीनों नामों की कल्पना की जाती है। फिर भक्तीपूर्वक रक्तधान्य, रक्त पुष्प, गंध, धूप दीप और नैवेद्य से मंगल पूजन की विधि है।

अथमारकस्थानायुस्थानयोर्ज्ञानमाह - अष्टमर्क्षं तृतीयञ्च लग्नादायुरदाहतम् द्वितीयं सप्तमस्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिदरोगेशव्ययेशाष्टमेशदशास्वपि मारकसम्भवः परस्परमष्टमेशयोर्दशाऽन्तरञ्च न शोभनम्। मारके मारकान्तरान्तरे न शोभनम्। व्ययद्वितीयेशवद्ग्रहा सम्बन्धतः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽनिष्ठ सन्बन्धरहिता न मारककारिणी पापदशास्वनिष्टवेति।।

जन्म-चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा-साधन-सारणी

(जन्म कालिक चन्द्रमा के राशि, अंश, कला, विकला से विंशोत्तरीदशा के भुक्त वर्ष मास दिन-बोधक सारणी)

	मेष, सिंह धनु राशिस्थ चन्द्र				वृष,कन्या मकर राशिस्थ चन्द्र				मिथुन,तुला कुम्भ राशिस्थ चन्द्र				कर्क,वृश्चिक मीन राशिस्थ चन्द्र			
अंश	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१	के.	०	६	१	सू.	१	११	१२	मं.	४	०	९	बृ.	१३	२	१२
२		१	०	१८		२	४	२४		४	६	१८		१४	०	२४
३		१	६	२७		२	१०	६		५	०	२७		१५	७	६
४		२	१	६		३	३	१८		५	७	६	श.	०	११	१२
५		२	७	१५		३	९	०		६	१	१५		२	४	१५
६		३	१	२४		४	२	१२		६	७	२४		३	९	१८
७		३	८	३		४	७	२४	रा.	०	५	१२		५	२	२१
८		४	२	१२		५	१	६		१	९	१८		६	७	२४
९		४	८	२१		५	६	१८		३	१	२४		८	०	२७
१०		५	३	०		६	०	०		४	६	०		९	६	०
११		५	९	९	चं.	०	९	०		५	१०	६		१०	११	३
१२		६	३	१८		१	६	०		७	२	१२		१२	४	६
१३		६	९	२७			३	०		८	६	१८		१३	९	९
१४	शु.	१	०	२७		३	०	०		९	१०	२४		१५	२	१२
१५		२	६	०		३	९	०		११	३	०		१६	७	१५
१६		४	०	०		४	६	०		१२	७	६		१८	०	१८
१७		५	६	०		५	३	०		१३	११	१२	बु.	०	५	३
१८		७	०	०		६	०	०		१५	३	१८		१	८	१२
१९		८	६	०		६	९	०		१६	७	२४		२	११	२१
२०		१०	०	०		७	६	०		१८	०	०		४	३	०
२१		११	६	०		८	३	०	बृ.	१	२	१२		५	६	९
२२		१३	०	०		९	०	०		२	४	२४		६	९	१८
२३		१४	६	०		९	९	०		३	७	६		८	०	२७
२४		१६	०	०	मं.	०	४	६		४	९	१८		९	४	६
२५		१७	६	०		०	९	१५		६	०	०		१०	७	१५
२६		१९	०	०		१	४	२४		७	२	१२		११	१०	२४
२७	सू.	०	१	२४		१	११	३		८	४	२४		१३	२	३
२८		०	७	६		२	५	१२		९	७	६		१४	५	१२
२९		१	०	१८		२	११	२१		१०	९	१८		१५	८	२१
३०		१	६	०		३	६	०		१२	०	०		१७	०	०

उदाहरणार्थ– किसी का जन्म मकर के चन्द्रमा के १८ अंश, ३० कला ४१ विकला पर हुआ है। अतः उपरोक्त राशि-अंश की सारिणी में मकर राशि के खाने में १८ अंश के सामने देखने से चन्द्रमा को महादशा का ६ वर्ष, ० मास, ० दिन फल प्राप्त किया। पुनः कला का फल अनुपात करके ४ मास १५ दिन प्राप्त किया। पुनः विकला का भी फल अनुपात करके ३ दिन प्राप्त किया। सभी को जोड़ दिया तो ६ वर्ष, ४ मास, १८ दिन चन्द्रमा की महादशा का भुक्त समय प्राप्त हुआ। उक्त समय को चन्द्रमा की महादशा मान १० वर्ष में से घटाने पर शेष चन्द्रमा महादशा का भोग्य समय होगा।

अथ ग्रहाणां स्वगेहोच्चनीचमूलत्रिकोणभवनानि तथा जातिवर्णादयः भाग्योदयाब्दबोधकचक्रम्

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरु	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः	ग्रहा	तैलिक चक्रम्		
सिह	कर्कः	मे.वृश्चि.	मि.कन्या	धनु मीन	वृष तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन	गेहमानि			
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन	धनु	उच्च राशि अं.	स्था.	न.	फ.
मध्यान्ह	अपराह्न	मध्यान्ह	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या	कालवलम्	श्रृंगे	७	संवत्
सिह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कुम्भ	सिंह	मूलत्रिकोणानि	मध्ये	३	शोकः
ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	ह्रस्वादि संज्ञा	तले	२	विपत
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	अन्त्यज	अन्त्यज	अन्त्यज	जातयः	कर्णे	७	धनम्
चतुष्पद	सरीसृप	चतुष्पद	पक्षी	द्विपद	द्विपद	पक्षी	सरीसृप	सरीसृप	पश्वादि संज्ञा	दास्यु	३	ऋणम्
पुरुष	वनिता	पुरुष	नपंसुक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुं.स्त्री.संज्ञा	संभार	७	सुखं
क्रूर	सौम्य	पापः	सौम्यपाप	सौम्य	सौम्य	पापः	पापः	पापः	सौम्यादि संज्ञा	अर्कभात्		
रक्त	श्वेत	रक्त	हरितः	पीत	कर्पूर	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	वर्णानि			
वनचर	जलचर	वनचर	ग्रामचर	ग्रामचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचर	संज्ञान्तराणि			
नृलोक	भूलोक	नाग	स्वर्ग	स्वर्ग	नाग	नाग	नाग	नाग	लोकानि	न.	फलम्	
पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदयादि संज्ञा	३	अशुभ	
पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	कफल	वात	वात	वात	प्रकृतयः	३	शुभ	
कटुक	लवण	तिक्त	मिश्रित	मधुर	क्षाराम्ल	तिक्तं	तिक्त	तिक्त	कटुकादिरसा	४	अशुभ	
व्योमदृक्	समदृक्	व्योमदृक्	तिर्यग्दृक्	समदृक्	तिर्यदृक्	अधोदृक्	अधोदृक्	अधोदृक्	अवलोकनानि	२	अशुभ	
पूर्व मुख	प.मुख	द.मुख	उ.मुख	उ.मुख	पूर्वमुख	प.मुख	द.मुख	द.मुख	गृहदिङ्मुख	३	शुभ	
मुक्ता	रजत	वपु.	स्वर्ण	रत्न	रजत	लोह	अस्थि	अस्थि	पदार्थानि	१	अशुभ	
वृद्ध	मध्य	युवा	वाल्य	वृद्ध	मध्य	गलित	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था	५	अशुभ	
पशुस्थान	जलगृह	दग्धम्	गोष्ठम्	देवस्थान	जलस्थान	ब्राह्मभू	ब्राह्मभू	ब्राह्मभू	निवास स्थान	२	शुभ	
हरिवंशश्र	शिवार्चन	रुद्राभिषेक	कन्यादान	आमात्र	गोप्रतिमा	मृत्युञ्जय	भुजगदा.	ध्वजदा	क्षेमार्थमुपाय	४	शुभ	
२४ वर्ष	२४ वर्ष	२८ वर्ष	३२ वर्ष	१६ वर्ष	२५ वर्ष	३६ वर्ष	४२ वर्ष	४८ वर्ष	भाग्योदय	भाग्योदयावदस्य		

शुष्क	सजल	शुष्क	जल	सजल	शुष्क	शुष्क	शुष्कादि	संज्ञा
अयन	मुहूर्त	दिवस	ऋतु	मास	पक्ष १	वर्ष	कालानां	उच्चासप्त
सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	सत्वादिगुण	नीचसर्वेषु
वहि	अम्बु	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	देवी	ब्रह्मा	वायु	आकाश

भाग्योदयवर्षाणि प्रयोजनमाह।। यः खेचरः स्वगृहेस्वतुंगभवने षडवर्ग शुद्धश्चतस्यादिदेहिनृणां भवति सुख भाग्योदयं निश्चितमिति।।

गुरुसूर्ययोर्वलविचारः

स्त्रीणां गुरुबलं श्रेष्ठ पुरुषाणां रवेर्वलम्। द्वयोश्चन्द्रबलं श्रेष्ठ मितिगर्गेण भाषितम्।।१।। जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदोगुरु।। विवाहेऽथचतुर्थाष्ठ द्वादशस्थो मृतिप्रदः।।२।। स्वोच्चेत्वभेस्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे स्वराशावत्रापि शुभः।।

अथ मेषादीनां स्वामिवर्णधातुसंज्ञादिबोधकचक्रमिदम्

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेषादिराशयः
भौमः	शुक्रः	बुधः	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्रः	भौमः	गुरु	शनिः	शनिः	गुरु	राशीशाः
रक्त	श्वेत	हरित	श्वेता रुण	पाण्डुर	विचित्र वर्ण	कृष्ण	कनक सदृश	पिंगल	कर्पूर	बभ्रुव	स्वच्छ	राशीनां वर्णा
क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	द्विज	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	जातयः
पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्तादि संज्ञा
चर	स्थिर	द्विस्व भाव	चर	स्थिर	द्विस्व भाव	चर	स्थिर	द्विस्व भाव	चर	स्थिर	द्विश्व भाव	चरस्थिरादिसंज्ञा
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरम	स्त्री	पुरुष स्त्री रांज्ञा
पृष्ठो दयः	पृष्ठो दयः	शीर्षो दयः	पृष्ठो दयः	शीर्षो दयः	शीर्षो दयः	शीर्षो दयः	शीर्षो दयः	पृष्ठो दयः	पृष्ठो दयः	शीर्षो दयः	उभयो दयः	पृष्ठादिसंज्ञा
रात्रिः	रात्रिः	रात्रिः	रात्रिः	दिन	दिन	दिन	दिन	रात्रिः	रात्रिः	दिन	समान	दिन रात्रि बल
चतु ष्पद	चतु ष्पद	द्विपद	जलचर	चतु ष्पद	द्विपद	द्विपद	कीट	अ.द्वि. ज.च.	अर्द्धच. अर्द्धद्व	जलचर	जलचर	चतुष्पदादि संज्ञा
शीर्ष	मुख	वाहुः	हृदयः	उदर	कटि	वस्ति	शिश्न	उरुद्वय	जानु २	जंघा २	पादद्वय	कालांगनिवास
दक्षिण	अग्नि	उत्तर	वायव्य	पूर्व	उत्तर	अग्नि	याम्य	ईशानं	पश्चिम	पश्चिम	ईशान	प्लवत्वदिशा
ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	सम	ह्रस्वदीर्घादिकम्
क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूरसौम्यस्वसंज्ञा
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उतर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राशीनां दिशा
मेष भूमि	गांच राशय	गीत नृत्य स्थान	युद्ध जल समीप	अरण्य भूमि	स्त्री गृह नौका	स्वसद्म ऊपरभू	युद्ध सर्प निवास	युद्धभू. वाजि स्थान	वन जल समीप	शि.गृ. पा.भा.	जल समीप	राशिनांनिवास स्थानानि

अथ ग्रहाणां दीप्ताद्यवस्थाज्ञानम्

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽतिदुखितः।। विकलश्च कोपी नवधा खेचरो भवेत्।।१।। उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वोच्चाधिमित्रमे।। मुदितो मित्रभेशान्तस्मभवेदीनउच्यते।।२।। शत्रुभं दुःखितोऽतीवविकलः पापसंयुतः।। खलऽखलगृहे ज्ञेयः कोपीस्यादर्क सयुतः।।३।। भावानांस्थिरकारकाः।। सूर्यो १ गुरु २ कुजः ३ सोमः ४ गुरु ५ भौम ६ सितः ७ शनिः ८ गुरु बुधः १० जीवो ११ मन्दश्च १२ भावकारकाः।

अथाङ्गस्फुरणफलचक्रम्

स्थानानि	फलानि	स्थानानि	फलानि	स्थानानि	फलानि
मस्तकस्फुरणे	पृथ्वीलाभः	वक्षःस्फुरणे	विजयध्रुवम्	कण्ठ स्फुरणे	ऐश्वर्य लाभः
ललाटस्फुरणे	स्थानलाभः	हृदयस्फुरणे	वांछितसिद्धिः	ग्रीवास्फुरणे	रिपुभयम्
स्कन्धस्फुरणे	भोगसमृद्धिः	कट यांस्फुरणे	प्रमोदोबलश्च	पृष्ठस्फुरणे	युद्धपराजयः
भ्रुवोयुग्म	सुखप्राप्तिः	कटि पार्श्वे	प्रीतिरनुत्तमा	कपोलस्फु	वरांगनाप्राप्ति
भ्रुवोर्मध्ये	महत्सौ भाग्यं	आंत्रिकस्फुरणे	कोश वृद्धिः	बाहूस्फुरणे	मधुरभोजनम्
नेत्र १ स्फुरणे	धनाप्तिः	भगस्फुरणे	पति प्राप्तिः	वाहुमध्ये	धनागमः
नेत्रकोणयोः	लक्ष्मीलाभः	कुक्षिस्फुरणे	सुप्रीतिलाभः	वस्तिदेशस्फुरणे	अभ्युदयः
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	उदरस्फुरणे	कोश प्राप्तिः	उरोस्फुरणे	वस्त्रलाभः
नेत्रपक्ष स्फुरणे	राज्यलाभः	लिंगस्फुरणे	स्त्रीलाभः	जानुस्फुरणे	शत्रुवृद्धि
नेत्रपक्ष २ स्फुरणे	संग्रामेजयः	गुदस्फुरणे	वाहन प्राप्तिः	जंघस्फुरणे	स्वामीप्राप्तिः
नेत्रकोपांगदेश १	कलत्रलाभः	वृषस्फुरणे	पुत्रलाभः	पादोपरि	स्थानलाभः
नासिका १ स्फुरणे	प्रीतिसुखम्	ओष्ठ स्फुरणे	प्रियवस्तुलाभः	पादतले	नृपत्वम्
हस्तस्फुरणे	सद्द्रव्यलाभः	हनुदेशस्फुरणे	भयंमहत्	पादयोस्फुरणे	अलाभः

अथ तिथिवारयोर्भवारयोर्योगादनेकयोगानां बोधकचक्रम्

योगनामानि	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
चराख्ययोग	पू.षा.	आर्द्रा	विशाखा	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल
क्रकचयोगः	११ ति.	११ ति.	१० ति.	१ ति.	८ ति.	७ ति.	६ ति.
दग्धयोगः	१२ ति.	११ ति.	५ ति.	३ ति.	६ ति.	८ ति.	९ ति.
विषाख्ययोगः	४ ति.	६ ति.	७ ति.	२ ति.	८ ति.	९ ति.	९ ति.
हुताशनयोगः	११ ति.	६ ति.	७ ति.	८ ति.	९ ति.	१० ति.	११ ति.
यमघंट योगः	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
दग्धयोगः	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उत्तरा.फा.	ज्येष्ठ	रेवती
यमदंष्ट्र योगः	म.धनि.	वि.मू.	कृ.भ.	पू.षा.पुन.	उ.षा.अभि.	रोहि.अनु.	श्र.घ.
सर्वार्थसिद्धि-	ह.मृ.	श्र.रो.	अश्विनी	रो.अनु.	रेवती अनु.	रेवती अनु.	श्रवण
योगः।भवा,	उ.३,पुष्य	मृ.अनु.	उ.भा.	ह.कृ.	अश्विनी	अश्विनी	रोहिणी
रयोर्योगात्	अश्वि	पुष्य	कृ.श्लेषा	मृगशिरा	पुष्य पुनर्वसु	पुन.,श्रवण	स्वाती
अमृतसिद्धियोग	हस्त	मृ.श्र.	अश्वि.	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी

अथ ग्रहयोगशान्तिः

वामने-दुर्भिक्षादि भयं चैव चतुर्ग्रहसमन्वये। महारोगभयं राष्ट्रक्षयो वृष्टि विनाशनम्।।१।।
पञ्चग्रहसमायोगे दुर्भिक्षं सङ्गरादिकम्। जनक्षयो नृपवैरं गर्भनाशस्तु जायते।।२।।
ग्रहषट्समायोगे मन्त्रिणो मरणं भवेत्। पश्चादि भयं सर्व सङ्करादि जनक्षयः।।३।।
पट्टराज्ञीविनाशो वा महाभयमथाऽपि वा। सप्तग्रहसमायोगे क्षितीशमरणं ध्रुवम्।।४।।
जगत्प्रलयेनवाऽपि तदा निर्मानुषं जगत्। अत ऊर्ध्व महोत्पातनानादुःखमहाकुलम्।।५।।
सूर्यदव्यतिरिक्तश्चेत्तद योगोमहाद्भुतः। विना चन्द्रेण योगोऽपि जगत्प्रलयकारणम्।।६।।
तदृक्षजातजन्तूनां महारोगी महाभयम्। अर्थनाशः स्थाननाशो मानहानिनृपपीडनम्।।७।।
वात्तपित्तादिसम्भूतमहापीडा महद्भयम्। सप्त योगग्रहानृणां दोषान्कुर्वन्ति सर्वदा।।८।।
षण्मासाभ्यन्तरे वाऽपि आयुर्हानिः श्रियस्तथा। जन्माष्टद्वादशे राशौ चतुर्थे पञ्चमेऽपि वा।।९।।
पूर्वोक्तफलमेवात्र तस्माच्छान्ति प्रयत्नतः। कुर्याद्दोषानुसारेणवित्तशाठ्यं न कारयेत्।।१०।।
तत्तद्ग्रहाकृतिं कृत्वां सौवर्णेन प्रयत्नतः। सुवर्णेन तदर्द्धेन पादेनाऽपि कनीयसीम्।।११।।
वित्तशाठ्यं न कर्त्तव्यं कर्त्तव्यंशक्तितो नरैः। पूर्वोक्तलक्षणेनैव ग्रहमूर्ति च कारयेत्।।१२।।
ग्रहस्यैकैककलशग्रहयोगप्रमाणतः। कारयेत्कुम्भमेकं वा निव्रणं सुदृढं नवम्।।१३।।
ग्रहस्येशानदिग्भागे शुद्धदेशे समस्थले। कुण्डे वा स्थण्डिले वाऽपि होमं कुर्याद् विधानतः।।१४।।
तस्य पूर्वोत्तरे देशे पूजास्थानं प्रकल्पयेत्। चतुरस्रं हस्तमात्रं स्थण्डिलं तण्डुलेन तु।।१५।।
लिखेद्ग्रहाकृतिं तत्र स्थापयेत्प्रतिमांततः। अधिप्रत्यधिदेवादीन् दक्षिणोत्तरतः क्षिपेत्।।१६।।
उक्तगन्धैस्तथा पुष्पैस्तत्तन्मन्त्रैः फलैरपि। तत्तद्ग्रहोक्तमन्त्रेण पूर्वोक्तेनैव पूजयेत्।।१७।।
स्वस्तिवाचनपूर्वेण आचार्य ऋत्विजैः सह। ग्रहपूजादिकं कृत्वा नैवेद्यान्तं समर्पयेत्।।१८।।
ततो होमं प्रकुर्वीतस्वगृहोक्त विधानतः। चतुर्थ्यन्तं प्रकुर्वीतं कलशस्थापनं ततः।।१९।।
पूर्वोक्तेनैवविधानेन शुद्धतोयेनपूरयेत्। पञ्चामृतपञ्चगव्यं पञ्चत्वक पञ्चपल्लवम्।।२०।।
तत्र मन्त्रैर्विनिक्षिप्य औषधानि विनिक्षिपेत्। तद्ग्रहोक्ता विधिना मूल्यान्यादाय निःक्षिपेत्।।२१।।
अलिंगैर्वारुणैवाऽपि कलशं पूरयेद्गुरु। तत्तद्ग्रहोक्तविविधैस्तनमन्त्रैहुतेद् भक्तिभिः।।२२।।
चर्वाज्ये जुहयात्पश्चात्तिलाहुतिसमाचरेत्। अथ स्विष्टकृत् हुत्वा होमशेषं समापयेत्।।२३।।
भद्रासनोपविष्टस्य यजमानस्य ऋत्विजैः कलशस्योदकेनैवमभिषेकं समाचरेत्।।२४।।
योगग्रहोक्तमन्त्रैश्च अभिप्रत्यभिमन्त्रतः। नवग्रहोक्तमन्त्रैश्च जातवेदादिपंचकः।।२५।।
त्र्यम्बकेन मन्त्रेण क्षेत्रस्य पतिना अपि। तत इन्द्रद्वयेनेव लोकपालावृकैरपि।।२६।।
सुरारत्वा इति मन्त्रेण येन देवादयः क्रमात्। अन्यैश्च पुण्यसूक्तैश्च अभिषेकं समाचरेत्।।२७।।
अभिषेकाप्लुत वस्त्रमाचार्याय निवेदयेत्। ततः शुक्लाम्बरधरः कुर्यादाज्यावलोकनम्।।२८।।
ऋत्विग्भ्यां दक्षिणां दद्याद्धेनुशंखादिकानपि। तद्भावे यथाशक्ति हिरण्यमपि दापयेत्।।२९।।
ब्राह्मणान्भोजयेतपश्चात्तथादिभवसारत। एवं यः कुरुते भक्तया ग्रहदोषविवर्जितः।।३०।।
पूर्वोक्तसर्वदोषैश्च विमुक्त पुत्रवान् सुखी। आयुरैश्वर्यसम्पन्नो जीवेद्वर्षशतं नरः।।३१।।
इह लोके सुखं भुक्त्वा सुखी पश्चाच्छिवापुरं व्रजेद् - इति ग्रहयोगशान्तिः।।

राशियों का परस्पर शुभाशुभ योग

शुभ नव-पञ्चम		मध्यम नव-पञ्चम		श्रेष्ठ द्विर्द्वादश		अशुभ द्विर्द्वादश		प्रीति-षडाष्टक		शत्रु-षडाष्टक		अशुभ केंद्र	
९	५	९	५	२	१२	२	१२	६	८	६	८	४	१०
मेष	सिंह	कुम्भ	मिथुन	मेष	मीन	वृश्चिक	तुला	मेष	वृश्चि.	वृषभ	धनु	मेष	कर्क
वृष	कन्या	मीन	कर्क	मिथुन	वृष	मकर	धनु	मिथुन	मकर	कर्क	कुम्भ	वृष	सिंह
मिथुन	तुला	कर्क	वृश्चि.	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	सिंह	मीन	कन्या	मेष	कर्क	तुला
सिंह	धनु	कन्या	मकर	तुला	कन्या	वृष	मेष	तुला	वृष	वृश्चि.	मिथुन	कन्या	धनु
तुला	कुम्भ	अशुभ	सप्तक	धनु	वृश्चिक	कर्क	मिथुन	धनु	कर्क	मकर	सिंह	वृश्चि.	कुम्भ
वृश्चि.	मीन	मकर	कर्क	कुम्भ	मकर			कुम्भ	कन्या	मीन	तुला	मकर	कर्क
धनु	मेष	कुम्भ	सिंह	अपवाद								मीन	मिथुन
मकर	वृष			कन्या	सिंह								

विशेष - तृतीय - एकादश संबंध किन्ही भी राशियों का शुभ ही होता है, किंतु सम-सप्तक (राशि-प्रतियोग) तथा केंद्र (चतुर्थ-दशम) संबन्ध उपर्युक्त अशुभ समपसप्तक तथा अशुभ केंद्र की राशियों के अलावा शेष राशियों का ही शुभ होता है।

चन्द्र श्रृंगोन्नति का स्थूल ज्ञान मेष और मीन राशि के चन्द्रमा का सिरा दक्षिण में (वायें) ऊंचा होता है। वृष और कुंभ राशि के चन्द्रमा का सिरा वरावर होता है। बाकी राशियों के चन्द्रमा का सिरा उत्तर में (दाहिने) ऊंचा होता है।

पुष्यनक्षत्र प्रंशसा-

पुष्य को नक्षत्र सम्राट कहा जाता है। पुष्य नक्षत्र में स्वयं ही सभी दोषों को नष्ट कर देने की क्षमता है। पापैर्विद्धेयुते हीने चन्द्रताराबलेऽपि च। पुष्येसिध्यन्ति सर्वाणि कार्याणि मंगलानि च।। ग्रहणे विद्धोप्यशुभान्वितोऽपि विलोमगोऽपि करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहमेव पुष्ये।। पुष्य की बलवत्ता को देखते हुये इसमें पाणिग्रहण निषिद्ध है।

पञ्चक विचार-

जब घनिष्ठा नक्षत्र के आधे अर्थात् कुंभ राशि पर चन्द्रमा आता है। तब पञ्चक या पचखा आरम्भ होता है। जब अश्विनी नक्षत्र और मेष राशि पर चन्द्रमा आता है तो पञ्चक समाप्त हो जाता है।

एकादशी व्रतम्

अथाष्ट वर्षाद्दूर्ध्वमशीतिवर्षपर्यन्तमेकादशी, व्रताधिकारः।।

शक्तस्य तु वयसोर्ध्वमध्याधिकारः।। सभर्तृकाणां स्त्रीणां भर्त्रानुज्ञां पुत्राज्ञां च विनायधासव्रताद्यचरणो व्रतवैफल्यं भत्रायुक्षयो नरकञ्च।। अशक्तायां तु स्योदन वापि वायुः प्रशस्तमात्रोत्तनुरक्तं च इति। अशक्तेषु शक्तितारतम्याल्पाहारः न त्वेकादशीत्यागः। प्रमादादिनैकदश्यामुपोषणाद्यकरणे द्वादश्याभपि व्रतं कार्यम्।। द्वादश्यामप्यकरणे वा मध्यचन्द्रायण प्रायश्चितम्। वास्तित्योद्वरणो पिपीलिका मध्यचान्द्रायणम्।। अशक्तेसति, पुत्राच्चदेशेव स्त्रीपुत्रभगिनी भ्रातादिभिरेकादशीव्रताचरणे क्रतुशतजं पुण्यम्।

स्त्रियों के लिये पति आज्ञा प्राप्त करके ही एकादशी व्रत करना चाहिये। इसमें वारम्बार जलपान दिन में सोना, ताम्बूल भक्षण विशेष बोलना तथा विलास वर्जित है। आठ वर्ष से अस्सी वर्ष तक आयु वालों के लिए यह व्रत है। ॐ नमोनारायणाय मन्त्र जप करना चाहिये।

नियमित रूप से एकादशी व्रत रहने वालों को यदि कोई असमर्थता आ जाय तो उनकी पत्नी व्रत रक्खे। उसी प्रकार पत्नी की असमर्थता में पति व्रत करे पुत्र, भगिनी, और भ्राता भी इसके अधिकारी है।

प्रदोष व्रतम्- तत्र त्रयोदशीशुक्ला पूर्वा, कृष्णापरा ग्राह्यमिति माधवःशुक्ला त्रयोदशी प्रदोष-समये हेमाद्रि गोडग्रन्थेषु व्रतञ्च-प्रदोषोस्तसमया दूर्ध्व घटि काद्वयमप्युच्यते। यस्तु-त्रिमुहूर्तः प्रदोष स्याद्रवावस्त गते सति।। यद्वागोण प्रदोषकालपरः।। तेन प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी विलोक्यम्।। द्वितीयदिन व्रतम।। दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ तदेकरतदेसव्यापे वा उत्तरा उक्त इति। उद्वैव तिथियोरुभयोः प्रदोषव्यापिनी तिथिः। तत्र वा त्रिविभाग स्याप्तोभयत्रापि मन्यते। यदा तु कृष्णपक्षे च परविद्धा न लभ्यते। तदा वात्रापि पूर्वाविद्धा च ग्राह्येति- वशिष्ठ एकादशी तृतीया च षष्ठीचैव त्रयोदशी पूर्वाविद्धापि कर्तव्या यदि न स्यात्परेऽहनि।। प्रदोषे शनिवार योगस्य विशेषफलम्। शनिवार प्रदोषोऽयं दुर्लभः सर्वदेहिनाम् तत्रापि दुर्लभस्तस्मिन् कृष्णपक्षे समागते।। अथ श्रावणे सोमवासरे व्रतं प्रदोष व्रतवदस्य विधिः।। सोमवासरे व्रतं कार्य श्रावणे वैययाविधिः। शक्तेरुपोषणं कार्यमथवा निशि भोजनमिति।।

शनि प्रदोष व्रत का विशेष फल है। श्रावण सोमवार व्रत प्रदोष के समान है इसमें रात्रि समय भोजन हो सकता है।

अथोपत्रययज्ञसंख्यस्तत्रमनुः अपीडाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नाति वर्तते।। अथाष्टविशाश्लक्रबनांराचतुर्विशतेर्विशः।।२।। अतऊर्ध्वं त्रयोऽप्यंते यथाकालमसंस्कृतः। सावित्रीपतिता व्रात्या प्रभुवन्त्यार्विगर्हिता।।२।। अथोपनयने द्वादशलग्नानांफलानि।। मेषे भवति पाण्डित्यं वित्तविद्यायुता वृषे। युग्मे वेदान्तदर्शी स्यात्कुलीरे च षडांगवित्।। शिल्पधर्म करः सिंहे षष्ठे भवति पण्डितः। तुलायां वणिजः प्राप्तिः काण्डपृष्ठञ्च वृश्चिके। सर्वत्रपूजितश्चापे शूद्रवृत्तिमृगे तथा राजप्रेष्यो भवेत्कुम्भे मीने वेदागंपारगा इति। अन्यविशेषः शास्त्राधिपतिवारंच शाखाधिपः बलं शशी शास्त्राधिपतिलग्नश्च। व्रताय दुर्लभवते।। राजमातंडे।। पितुः सूर्यं बले श्रेष्ठं शाखाकर्णेशयोर्वटोः सर्वेषा गुरुचन्द्रार्कबलं श्रेष्ठं व्रतादिपुरा। उपनयने कालविशेषः- मुख्यकालस्तु बलवान्व्रते गोचरशुद्धितः। व्रतो निषिद्धकालस्य शान्तिर्नदृश्यते क्वचित्। ब्राह्मण का १६ क्षत्रिय का २२ वर्ष वैश्य का २४ वर्ष तक अवश्य यज्ञोपवीत हो जाना चाहिये।

वैशाख मास - वैशाखे सकले मासे मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमस्नास्ये प्रीयतां मधुसुदन। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।। माधवे मेषगे भानौ मुरारेमधुसूदन। प्रातःस्नानेन मे नाथ फलदो भव पापहन्।। वैशाखे त्याज्यम्।। कांस्यं मांसं मसुरान्नं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधुरान्नं च पुनर्भोजनं मैथुनं इति। मेषार्के दानविशेषः। यो मेषस्याऽर्के ददाति सक्तूनम्बूघटान्विताम्। उद्दिश्यपितृन् देवांश्च सर्वपापैः प्रमुच्यते।। दानमन्त्रः सक्तवो धर्मदा नित्यं ब्राह्मणप्रीतिकारकाः। त्वद्दानास्यपापानां क्षयोऽस्तु सुखमस्तु च।। वैशाखे सम्पूर्णस्नानाशक्तावन्ते त्रयोदश्यादिदिनत्रयम्।। अपि सभ्यग्विधानेननारी पुरुषोऽपिवा प्रातःस्नायी सनियमः सर्वपापैः प्रमुच्यते।। इति।।

अक्षयतृतीया कृत्यम्-सर्वतीर्थे स्नानं देवदर्शनं दानञ्चाक्षयफलम्।। दानम्- उदक्कुम्भान् सकनकान् सान्नसर्वरसैः सह।। यवगोधूमचणकान्सक्तुकुम्भान्तथा। व्यजनछत्रकुंभंचातपत्रमुपानहौ।। दानमेतद्देवान्पितृन चोदिश्यकुर्यात्।। संकल्पः- नामगोत्रमुच्चार्य अद्यैतत्रं शीतलोकदकयुतं घटं च विष्णुप्रीतये अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं राम्प्रददे। प्रार्थना एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्माविष्णु शिवात्मकः। अस्य प्रदानात्स फला मम सन्तु मनोरथाः।। गन्धोदकतिलैर्मिश्रं सान्नं कुम्भं फलान्वितम्। विष्णवेसंप्रदास्यामि अक्षयमुपतिष्ठतु।। पितृन्नदिश्यदाने-पितृभ्यसंप्रदानेन मम सन्तु मनोरथाः।। पितृभ्यः संप्रादास्यामीतिपदप्रक्षेपः-संकल्पोपितृणां प्रीतये इति विशेषः। अद्यपरशुरामं विधिवत्संपूज्यार्घ्यंदद्यात्- तन्मंत्रः। जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर।। तत्र विष्णोश्चन्दनपूजनफलम्।। यः करोति तृतीयायां विष्णोश्चन्दनपूजनम्।। वैशाखस्य सिते पक्षे स याति हरिमन्दिरमिति। युगादितिथौ दानादि फलम्।। कृतोपवासः सतिलं युगादिदिनेषु तु। दास्यन्त्यन्नानि सलिलं तेषां लोका महोदयाः।

ज्येष्ठ मास - कंजजपूजनेनानावस्त्रविभूषणैः वर्षकोटिशत सायंसूर्यलोकेमहीते। कंजजो ब्रह्मा। वामनपुराणे-उदकुम्भं जलं धेनु तालवृक्षः सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठ मासि च।। इति।।

अथामायां वट सावित्रीविधिः।। अमायांञ्च तथा ज्येष्ठे वटपूजे महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधिनानेन संयुक्ता सावित्रीप्रतिमां शुभाम्।। विधिनाषोडशोपचारैः संपूज्य ब्राह्मणाय दद्यात्।। तन्मंत्रः सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्राह्मणायसती प्रसन्नार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यतामिति ज्येष्ठ शुक्लेकादश्यां दशाश्वमेधस्नानफलम्- ज्येष्ठ मासि सितेपक्षे प्राप्य प्रतिपदां तिथिम्। दशाश्वमेध के स्नात्वा मुच्यते सर्व किल्विषैः। दशहरा ज्येष्ट मासि सितेपक्षे दशमीहस्तसंयुता। हरतेदशपापानितस्माद् दशहरा स्मृताः शुक्लपक्षेसु ज्येष्ठ मासि कुजेऽहनि।। अवतीर्णा यतः स्वर्गात् हस्तक्षेपे च सरिद्वरा।। दशहरां गंगा पूजनमन्त्र।। नमो भगवत्यै दशपाप हरायै गंगायै कृष्णायै विष्णुरूपिण्यै नन्दिन्यै नमोनमः।। दशहरायां दशोयागाः-ज्येष्ठ मासि सिते पक्षे दशमीबुधहस्तयोः व्यतिपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। बुधभौमयोः कल्पभेदन व्यवस्था। इयं च यत्रैव योगाधिक्यं सैव ग्राह्या।

आषाढ़ मास - आषाढ़शुक्ल २ रथयात्रा।। आषाढ़स्य सिते पक्षे द्वितीयाः पुष्यसंयुता तस्यां रथे समारोप्य रामं सौभद्रयासह। यात्रोत्सव प्रवर्त्यार्थ प्रीणयेत द्विजान्बहून्। ऋक्षाभावे तिथौ कार्या स सदा प्रीतये मम। अथ रामो बलरामः।। आषाढ़े पूर्णिमायां धान्यानां तोलनम्। आषाढ्यां सर्वधान्यानि संध्यायञ्च पृथक पृथक। तोलयेद्वर्णनाने- जलादीन्यपिसर्वशः।। मन्त्रतोऽभिमन्त्र्य निशितानभिवासयेत् तोलयेच्चततः प्रातस्तेन मानेन दैववित्।। वृद्धौवृद्धिः समेसाम्यं हासेहानिस्तथैव च।

आषाढ़ पूर्णिमायां वायुपरीक्षा।। आषाढ़पूर्णिमायाञ्च प्रदोषे वा दिवा।। निशि।। प्राच्यां वायुसुवृष्टिः स्याद्धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा।।१।। अल्पवृष्टिस्तथाऽग्नेयामग्नि- भीतिर्महर्घताः। स्वल्पवृष्टिः भवेद्याम्यां प्रजापीडा महर्घता।।२।। दूर्भिक्षंरौरवंघोरमनावृष्टिश्च नैऋते। वारुण्याञ्च महावृष्टिः धान्योत्पत्तिश्च मध्यमा।।३।। वायौ वायुः प्रचण्डश्च वृष्टि धान्यश्च मध्यम्।। बहुधान्यसुवृष्टिश्च उत्तरायां सुखी जनः।। ईशान्यां सस्य सम्पत्तिधान्यानि सुखिनो जना इति।।

श्रावण मास - श्रावणशुक्लपाञ्चमीयं परविद्धा। पंचमी नागपूजायां कार्या षष्ठेसमन्विता।। तस्यान्तु तृषिता नागा इतरा सचतुर्थिका।।१।। श्रावणे पंचमी शुक्ला सम्प्रोक्ता नागपंचमी। तामपरित्यत्य पंचम्याचतुर्थीसंहिता हिता।।२।। नागपूजनविधिः।। श्रावणे मासि पंचम्या शुक्लपक्षे वरानने।। द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्वणाः (सर्पा)।। घृतोदकाभ्यां पयसा तर्पयित्वा वरानने। गोधूमः पयसा सैव लाजैश्च विविधैस्तथा पूजयेद्विधि दीपैर्दधिदुर्वा प्रचुरैस्तथा। माल्यपुष्पोपहारैश्चब्राह्मणानामपि तर्पणम्। तेनतुष्टि समायान्ति पद्मकास्तक्षकादयः। आ सप्तमात्कुलं तस्य न भयं सर्पतो भवेत।। मन्त्रोऽयमुच्यते सर्वविषस्य प्रतिशोधकः। तस्य जपं तस्यामात्रेण न विषक्रमते क्वचित्। मन्त्रः - ॐ कुंकुलाय हुँफट् स्वाहा अस्य जपात्सर्वविषक्षयः आदौ लिखितस्थले सर्वनागेभ्यो नमः। सर्वनागानावाहयामीत्यावाहनं।। "सर्वनागेभ्योनमः इति मन्त्रेणषोडशोपचारैः संपूज्य प्रार्थयेत्।। मन्त्रः अनन्त वासुकि शेष पद्मकम्बलमेव च।। तथा कर्कोटक नागं नागमश्वतरं तथा धृतराष्ट्रं शंखपालंकालाख्यं तक्षकं तथा। पिंगरंगच्च महानागं प्रणमामि मुहुर्मुहुरिति।। स्नान क्षौर विचार - सिरः स्नानं प्रकुर्वीत दैव पित्र्ये च कर्मणि उदङ्मुखः प्राङ्मुखोवा श्मश्रुकर्मचकारयेत्।।३।।

भाद्रपदमास - भाद्रपदे-हर्षीकेशप्रीत्यर्थं गुडोदनलवणदर्दनम्। गणेशचतुर्थी।। विनायकव्रवचनात्।। चतुर्थीगणनाथस्य मातृविद्धाप्रशस्यते। अन्यदपि चतुर्थी तृतीयायां महापुण्यफलप्रदा।। कर्तव्याव्रतिना एव गणनाथसुतोषिता।।१।।

चन्द्रदर्शनार्घ्यदानमंत्र- क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भवः। गृहाणार्घ्यशशांकदेवरोहिणी सहितोमम।। ज्योत्स्नानांपतयेतुभ्यंज्योतिषांपतयेनमः। नमस्तेरोहिणीकान्त सुधावास नमोस्तु ते।।२।। नमोमण्डल दीपाय शिरोभाय धूर्जटेः। कालाभिवृद्धिनाथाय नमश्चन्द्राय चारवे।।३।।

अगस्त्यार्घ्यदानमन्त्रः- ऋग्वेदसंहितायाम्- अगस्त्य श्चनमानःखनेत्रैः प्रजामपत्यंबलमिच्छमानः। उभौवर्णावृषिरुग्रःपुपोषसत्यादेवेष्वाशिषोजगत्।।

जन्माष्टम्यांविशेषाः - अष्टमी कृष्णपक्षस्य रोहिणी ऋक्षसंयुता। भवेत्प्रोष्ठपदे मासि जयन्तीनाम सा स्मृता। विष्णुधर्मोत्तरे। रोहिण्यामर्धरात्रेतु सदा कृष्णाष्टमी भवेत्। तस्यामभ्यर्चनं शौरेर्हन्ति पापं त्रिजन्मजम्।। समायोगे तु रोहिण्यां निशीथे राजसत्तम्। समाजायतगोविन्दो बालरूपी चतुर्भुजः।। अष्टमीरोहिणीयुक्ता निशयर्द्ध यदिदृश्यते। मुख्यकालइतिख्यातस्तत्रजातो हरिः स्वयम्। रोहिणी च यदा कृष्णपक्षेऽष्टम्यां द्विजोत्तम। कृष्ण जयन्ती सा प्रोक्ता। सर्वपापहरी तिथिः।

जन्माष्टम्यांतत्पारणनिर्णयो निर्णयसिन्धौ ।। स्मार्तानां द्वितीय- दिनेऽष्टम्यामनष्टायांविरक्षस्येऽपि प्रातःकाल एवं पारणम्। तिथ्यन्ते तिथि भान्ते वा पारणा यत्रचोदिता। यामत्रयोर्ध्वगामिन्यां प्रातरेवहि पारणम् सर्वत्रते पारणायसमयः। तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते व्रतीकुर्वीतपारणम्।। अपवासनाशकाणि असकृज्जलपानाच्च सकृतताम्बूलभक्षणात्। उपवासः प्रणश्यते। दिवास्वापाच्च मैथुनात्।। अथ व्रतीनां विशेषनियमाः। गात्राभ्यङ्गशिरोऽभ्यंगं ताम्बूलं चानुलेपनम्।। व्रतस्थोवर्जयेत्सर्व यच्चान्यत्र निराकृतम् क्वचिदिवास्वापेऽपि।। प्रायश्चित्तं व्रती कुर्याज्जपेत्प्रणम सहस्रकम्।। मिथ्यावादे दिवास्वापे बहुशोऽम्बुनिषेवणे।। अष्टाक्षरंव्रतीजप्त्वाशतमष्टोत्तरं शुचिः अष्टाक्षरमन्त्र- ॐ नमो नारायणाय।

हरतालिकाव्रतनिर्णयः - तत्र चुर्थीसहिता या तु सा तृतीया फलप्रदा अवैधव्यकरा स्त्रीणांपुत्रपौत्रप्रवर्धिनी।। चतुर्थ्याचन्द्रदर्शनदोषशमनाय पठनीयमन्त्रः सिंहःप्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवताहतः। सुकुमारकमारोदीः स्तवह्येषस्यमन्तकः।। इति।। पंचम्यामपामार्गदन्तधावनमन्त्रः - आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजापशुवसूनि च ब्रह्मप्रज्ञां च मेधांच त्वन्नो देहि वनस्पते।।१।। मुखदोषनाशाय दन्तानां च विशुद्धये षष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम्।।२।। षष्ठ्यां सूर्यपूजनम्। निर्णयसिन्धौ।। शुक्ल भाद्रपदे षष्ठ्यां स्नानं भास्करपूजनम्। प्राशनात्पंचगव्यस्य अश्वमेधफलाधिकम्।। पंचगव्यप्राशनमन्त्रः - यत्त्वगस्थिगतं पापं देहेतिष्ठ ति मामके। प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्वाग्निरिवेन्धनमिति।। श्रवणयुक्तानां द्वादश्यां विष्णुपरिवर्तनोत्सवः। रात्रौषोडशोपचारैः श्री विष्णु संपूज्य प्रार्थयेत्।। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तिथिः। पार्श्वन परिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधवः।। श्रवण १२ उत्तराषाढ़युक्त नैवोपोष्या। उत्तराषाढ़संयुक्ता श्रीणामाध्याह्न्गेपि वा आसुरी सैव तारस्याद्भन्तिपुण्यपुराकृतम्।। बुधे श्रवण संयुक्ता सैव द्वादशी भवेत्। अत्यन्तमहतीसोऽयामुक्तं भवति चाक्षयम्। अनन्तचतुर्दशीनिर्णये। मध्याह्नव्यापिनी त्रिमुहूर्तोदयकालव्यापिनी चतुर्दशीपक्षे च वचनानि लभ्यन्ते तत्र माधवः सूर्योदयकालव्यापिनी हि अन्ये दिवोदासगतापमार्तण्ड-कालविधरमकालिदासादयः मध्याह्न्यव्यापिनी या च भाद्रशुक्ला चतुर्दशी। सैवान्तव्रते ग्राह्या पर्वयुक्त विशेषतः। ज्योतिर्विदाभरणे मध्याह्न्यकालान्तगता-चतुर्दशीहिताहिसाभाद्रपदेनृयोपिताम्। बुधैरनन्तमाद्दतन्वदा तदा कलोनापि ततः फलाप्तये। माधव निर्णयेनिर्णयसिन्धुकाराः भ्रान्ति कथयन्ति। तत्कथाप्रासंगेकमुक्तव्रतादि निर्णयविरोधादिनाऽयुक्तमेव। अतोसंध्याह्न्यव्यापिन्येव ग्राह्या।

आश्विनमास - जीवत्पुत्रिकामहालक्ष्मीव्रतयोर्निर्णयः महालक्ष्मीव्रतेऽष्ट मीचन्द्रो व्यापिनी ग्राह्या। पूर्वा वा परविद्धा वा ग्राह्या चन्द्रोदये सदा जीवत्पुत्रिका- तुलक्ष्मीव्रतंचाभ्युदिते शशांके यत्राष्ट मी आश्विनकृष्ण पक्षे यत्रोदयः वैकुस्ते दिनेशस्तदा भवेत्ज्जीवत्पुत्रीकाख्या। अत्रविशेष पूर्वद्युरन्येद्युः वा प्रदोषे यत्र चाष्ट मी। तत्र पूज्यः स नारीभिः राजा जीमूतवाहनः। अन्यच्च प्रदोषसमयेस्रीभिः पूज्योजीमूत वाहन। इति मैथिल निवन्धनिर्णयः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानांकाल विभागः- पूर्वान्हेदैविकं श्राद्धमपरान्हे पार्वणम्। एकोद्दिष्टं तु मध्यान्हं प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्। शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धं कुर्याद्विचक्षणः।। कृष्णपक्षेऽपराहने च रोहिणं न तु बंधयेत्।। क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्प्रतिविज्ञातदशध्यात्मृतेऽहनि। श्राद्धविघ्नेनिर्णयः श्राद्धविघ्नेसमुत्पन्नेह्यविज्ञाता मृतेऽहनि कर्तव्यं कृष्णपक्षे विशेषतः।। इति गयाश्राद्धकालः।। मीने मेषस्थिते सूर्ये कन्यायांकार्मुकेघटे। दुर्लभंत्रिपुलोकेषु गयायां पिण्ड पातनम्।। मकरे वर्तमाने च ग्रहण चन्द्रसूर्ययोः। दुर्लभं त्रि।। गयायांसर्वकालेषुपिण्डंदद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने तथास्ते गुरुशुक्रयोः।। न कर्तव्यं गयाश्राद्धं सिंहस्थे च वृहस्पतौ। गयाश्राद्ध प्रकुर्वीतसंक्रान्त्यादौ विशेषतः कालेवपरपक्षेःवा चतुर्थ्यादितिथिष्वपि महालयं गयाश्राद्धं मातापित्रोमृतेऽहनि। कृतोद्वाहोऽपि कुर्यात् पिण्डदानं यथा विधि।। मृताहंचसपिण्डञ्च गयाश्राद्धं महालयम्।

आश्विनशुक्लप्रतिपदा - कलशस्थापनम्।। तत्र विधिः- स्नानं मांगलिकं कृत्वा ततो देवी प्रपूजयेत्। शुभाभिमृत्तिकाभिश्च पूर्वं कृत्वा तु वेदिकाम्।।१।। अत्रान्वे वापयेत्तत्र जलकुम्भसमन्वितान् तत्र संस्थापयेत्कुम्भं विधिनामन्त्र पूर्वकम्।।२।। सावर्ण रजतं वापि ताम्रमृण्मयन्तुवेति। आदोसंकल्पः देशकालोसंकीर्त्य ममेहजन्मनि दुर्गाप्रीति द्वारा सकलापच्छान्ति पूर्वक दीर्घायुविपुल धन पुत्र पौत्राद्यनवछिन्नसन्तति वृद्धि स्थिरलक्ष्मीकोर्तिलाभ शत्रु पराजय सदाभीष्ट सिद्धयर्थंशारदनवरात्रप्रतिपदिहित- कलशस्थापनं दुर्गापूजनं कुमारी पूजनादिकं च करिष्ये।। ततो यथाविधिकलश वैदिकमन्त्रैः संस्थाप्य तदुपरि वरुणमावाह्य सम्पूज्य नूतनप्रतिमाया वा दुर्गामावाह्य पूजयेत्। पूजनमन्त्रः। जयन्तीमंगलाकाली भद्र कालीकपालिनी दुर्गाक्षमाशिवाधात्री स्वाहास्वधानमोस्तुते।। ॐ दुर्गे २ रक्षीणी २ स्वाहेतिमन्त्रेण सम्पूज्य प्रार्थयेत् आनन्द वरदे देवि दैत्यदर्पनिपातिनी। पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।१।। सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्विते। इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवगणैस्सह।।२।। दुर्गेदेवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय। बलि पूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह एकैक पूजनातकन्या मेकवृद्धयापि वा पुनः। द्विगुणां त्रिगुणां वापि प्रत्यहं नवकन्तु वा नवभिर्लभ्यते भूमिमैश्वर्यं द्विगुणेन तु। एकवर्षां तु या कन्या पूजार्थतां विवर्जयेत।। कन्यापूजनेऽन्योविशेषः। ब्राह्मणी सर्वकार्येषु युद्धार्थे क्षत्रियः तथाधनार्थे वैश्यवेशस्य सुखार्थे शूद्रवंशजा। दारुणां चान्त्यजातीयां पूजयेद्विधिना नरैरिति।।

हनुमज्जन्मनिर्णय- वाराहपुराणेः-कार्तिकस्यासितेपक्षेस्वात्यां भौमे चतुर्दशी। मेषलग्नेऽञ्जनीगर्भात् स्वयं जातो हरः शिव। शुक्लादिमासगणनाया आ.कृ.।। का.कृ. तुलार्के मेषलग्नेसालोक जन्मोत्सवः द्वितीय दिने दर्शन पूजनं चोक्तं। अमायां लक्ष्मी पूजा। देशकालौ संकीर्त्य ममगृहेऽचल श्रीवासायलक्ष्मी पूजनं करिष्ये। विहितोपचारैः पूजान्ते प्रार्थना।। नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रये। या गर्तिर्तव प्रपन्नानां सा मे भवतु तव दर्शनात्।

तुलासंक्रमणदीपदानम्-तुलायांतिलतैलेन सायंकालेसमागते। आकाशदीपं यो दद्यात्मासमेकं हरिं-प्रति। महता श्रियमाप्नोति जय सौभाग्यसम्पदः। आकाशदीपदान मन्त्रः। दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽन्ताय वेधसे।

प्रतिपदादितुलासंक्रान्ति यावत्।। अथगोवत्सद्वादश्यां-सवत्सरं पयस्विनी गां- अलंकृत्य विधिवत्सम्पूज्य ताम्रपात्रेण अर्घ्यंदद्यात्।। मन्त्रः। क्षीरोदार्णवसंभूते सुरासुर नमस्कृते। सर्वदेवमयी मातर्गृहाणार्घ्यं नमोनमः।। कार्तिकृष्ण त्रयोदश्याम्- सायंकालेऽपमृत्युनिवारकं गृहाद्बहिर्यमाय दीपदानम्। तत्र मन्त्रः। मृत्युनां पाशदण्डाभ्यां कालेन यमया सह। त्रयोदश्यां दीपदानात सूर्यजः प्रीयतां ममेति। कार्तिकस्यासितेपक्षे निरामुखे। यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यतीति। अद्येव नरकोद्देशेन चतुर्वर्तिसमायुक्तं सर्व पापप्रणुत्तये।। अत्रयमतर्पणमुक्तंमदनपारिजाते वृद्धमनुना। दीपोत्सवे चतुर्दश्यां कार्तिके यमतर्पणम्। अपामार्गस्य पत्राणि भ्रामयन्मस्तकोपरि। ततश्चतर्पणं कार्यं धर्मराजं नमामि इति। कार्तिकमास कृत्यम-विष्णुं कार्तिकं सकलं मासं प्रातः स्नायी च जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यं भुग्दन्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते। वामनपुराणे-अद्य कनकं दीपान्मणिफलादिकम्। दामोदरस्य प्रीत्यर्थम् प्रदद्यात् कार्तिकमासे। प्रबोधनोत्सवः। अत्रेकादश्यां द्वादश्यां वा षोडशोपचारैः विष्णुं तुलसीं च विधिवतसंपूज्य प्रबोधयेत्। प्रबोधमन्त्रा वाराहपुराणोक्ताः।। ब्रह्मेन्द्र रुद्राग्निकुवेरसूर्यसोमादिभिर्वन्दितवन्दनाय।। बुद्धस्वदेवेश जगन्निवास मन्त्रप्रभावेण सुखेन चेव। इयन्तु द्वादशी देवप्रबोधानार्थे विनिर्मिता। त्वमेव सर्वलोकानां हितार्थंशेषशायिना।। उत्तिष्ठोत्तिष्ट गोविन्द त्यजनिद्रां जगत्पते। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। स्थिते बोध्यते सर्वं उत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव। गतामेकधा विजयत्वेव निर्मूलं निर्मला दिशः। शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशवः। इन्द्रविष्णुरितिप्रोक्तो मंत्र उत्थापन हरेरिति चतुर्मास्य व्रत समाप्ति का मंत्र इदंव्रतं मया देव कृतं प्राप्त तव प्रभो। तेन में पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन इति।। **कार्तिकशुक्ल सूर्यषष्ठी निर्णयः**।। कलाकाष्ठानिमेषोऽपि यदि स्यादपरेऽहनि। षष्ठ्याः कथंचिदद्विपेन्द्रसेवोपोष्यामहातिथिः। षष्ट्यामुपोष्य विधिवत् सप्तम्यामर्कं पूजयेत्। सद्द्रव्यभोग्यायुश्चैव सम्प्राप्नोतीप्सितं फलम्।। उपोष्यगमा ६, त्यक्त्वा च यदेक पूजयेदिति विधौ श्वोऽर्घ्यादिना पुनरस्यैव प्राधान्यापगमात्, पूर्वदिनेऽर्घ्यादिना पूजयेत् सायं ६ वा ७ तिथिः ग्राह्येति नियमः।। ध्रुव निर्णयोरामनाथकृतातिथिनिर्णय, ल्लिखितो व्रतस्य तत्देशीयत्वात्। यमद्वितीया निर्णयः- यामद्वितायां प्रतिपद्युताग्राह्या।। यमद्वितीया मध्याह्न व्यापिनी पूर्वविद्ध, चेति हेमाद्रि । ऊर्जेशुक्लद्वितीया यामापराह्नेऽर्चयेत् यमम। स्नानंकृत्वाभानुजायां यम लोकं न पश्यति। प्रतिपदिविध स्कः लभ्ये यदि वा प्रातः प्रतिपदघटि त्रेकापरयुक्तान्यायपूर्वा।।५।। स्कन्दव्रतेऽविरिक्ता परा सदा।।७।। पूर्वाविध्यैव सर्वदा।।८।। कृष्णपूर्वा शुक्लेपरा शिवदेवोसंवादे कृष्णाऽपि परेव।।२।। कार्यम् नारीनिराजनं प्रातः मंगलमालिका।। गोवर्धन पूजापानगोवर्धनं पूज्य व्रतं चापि समाचरेत।। गोवर्धनपूजेव गोवर्धनपूज- भ्रातृभोजन-पूर्वागम् गोवर्धनपूजयेति।

अस्तापवादमाह । नित्ययाने गृहे जीर्णे प्राशने परिधान के वधूप्रवेशे मांगल्ये न मोढ्यं गुरुशुक्रयोः। गोदावर्यां गयायां च तीर्थेषु ग्रहणद्वये। अयने विषुवेचैव चातुर्मास्यव्रतादिषु। उत्सवेषु च सर्वेषु सीमन्ते च ऋतुत्रये सुरासुरेज्ययोश्चात्र मोढप्रदोषो न विद्यते इति।।

पोषपूर्णिमातो माघस्नानमन्त्राः।। दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्यमाघेपापविनाशने। मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युतमाधव। सपित्रेप्रसवित्रे देवे यथोक्तफलदोभव।। मंत्राविमौ पठन स्नायाततोऽर्घ्यदानमन्त्रः सवित्रेसावित्रे च परं धाम जले मम।। त्वत्ते जसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा। ततस्तर्पणादिकं कर्त्तव्यमिति।।

यावन्माघस्नानमसत्तो दिनत्रयम्।। माघमासे पुरस्कृत्य स्नायात दिनत्रयमिति।। माघे प्रयागस्नान माहत्म्यं प्रयागे माघमासे तु त्र्यहं स्नानस्य यत्फलं अश्वमेधसहस्रेण तत्फलं लभते भुवि।। अथ मकरसंक्रांति फलं स्कान्देधेनुं तिलमयो राजन् योदद्याच्चोत्तरायणे सर्वान् कामनावाप्नोतिविन्दते परम् सुखम्।। माघे देयाः तैलकम्बलकाश्चैवतीर्थं देयास्तु नित्यशः। ततः प्रज्वालयेद्वह्नि सेवनार्थं द्विजन्मनाम्।।१।। एवं स्नाना वासाने तु भोज्यं देयं च वस्त्रादिकम्। भोजयेद्द्विजदाम्पत्यं भूषयेद्वस्त्रभूषणैः।।२।। कम्बलाजिनरत्नादि वासांसि विविधानि चोलकानि च देयानिप्रच्छादनवस्त्रानि।।३।। उपानहौ तथा ? गुप्तमोचकौ पापमोचकौ अनेन विधिना स्नानेन माधवः प्रीयतामिति।।४।। माघमासनियमः।। भूमौ शयीत होतव्या आज्यन्तिलसमन्वितम्। सर्वान् कामनावाप्नोति विन्दते परम् सुखम्।। विष्णुधर्मोत्तरेः सौम्यायने तु विप्राय वस्त्रदाने महत्फलम्। तिलपूर्णमाषां दत्वा रोगैः प्रमुच्यते।। शिवरहस्ये च तस्यां कृष्णतिलैस्नानं कार्यंचोद्वर्तनं शुभम्।। तिलादेयाश्च विप्रेभ्यः सर्वदेवचोत्तरायणे।। तिलतैलेन दीपश्च देयाः शिवगृहे शुभा इति।। प्रयागे तीर्थं स्नानमुक्तं काशीखण्डे।। काश्यां दशाश्वमेध ये तपसि स्नान्ति मानवाः। दशाश्वमेधजनितं फलं तेषां भवेद्ध्रुवमिति।। माघकृष्णचतुर्थ्यांतु प्रादुर्भूतो गणेश्वर इति। अत्रषट्तिला पापनाशनीति।। अमायांऽवशेषमाघे क्रियते दानं तद्दान मेरुसन्निभम्। तत्र सावित्रीसहित ब्राह्मणं पूजयित्वा धेनुदद्यात् हेमाद्रि भविष्योत्तरः। अमायां माघमासस्य पूजयित्वा पितामह। गायत्री सहितं देववेदांगभूषितम्।। नवनीतमयी धेनुं फलेर्नानाविधैर्युताम्। सहिरण्यां सवस्त्राणांचब्राह्मणाय निवेदयेत्।। कीर्तयेत्प्रीयतामत्र सनातनः पद्मयोनिः। स्थानं स्वर्गेऽथपाताले यन्मर्त्ये किंचिदुत्तमम् तदाप्नोत्यसंदिग्ध पद्मयोनेः प्रसादतः।

माघ शुक्लसप्तसंख्या येनार्चयतेरवितत् पापविनाशाय- श्री भास्करप्रीत्यर्थमरुणोदये स्नानमन्त्रः यद्यदाचरितं पापं मया जन्मसुजन्मसु। तन्मे च शोकं च माकरोहन्तु सप्तमी। यद्यदत्र कृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं स्यापि ज्ञाताज्ञातंचयेपुनः- इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तिसप्तके। सप्तव्याधिसमायुक्तेहर माकरिसप्तमी।। स्नानान्तर अर्घ्यम् दद्यात्। सप्तर्षिसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर इति। जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तिके। भीष्माष्टम्यां तर्पणम्। तत्र मंत्रः। वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृत्य प्रवराय च। गंगापुत्राय भीष्माय सर्वदाब्रह्मचारिणे। इति।।

अथ शिवरात्रिव्रतमहात्म्यम् - परात्परं नास्ति शिवरात्रिः परात्परम्। येनार्चते भक्तेशं रुद्रत्रिभुवनेश्वरम्।।१।। जन्म-जन्मसहस्रेषु भ्रमते नात्रः संशयः वर्षे वर्षे महादेवो नरोनारीपतिव्रता ।।२।। शिवरात्रौ महादेव नित्यं भक्त्या प्रपूज्येत्। अर्णवोयादिवा शुध्येत् क्षीयतेहिमवानपि।।३।।

फाल्गुनशुक्लपूर्णिमायां होलिका दाहः- तत्रपूजा- देशकालौ संकीर्त्य मम सुकुटुम्बस्य दुण्ढाराक्षसीपीड़ापरिहारार्थं होलिका पूजनमहं करिष्ये। असक्तयाभयसंत्रस्तैः कृत्वा त्वम् होलिबालिशे। अतस्त्वां पूजयित्वाभूते-भूतिप्रदाभव इति ध्यात्वा। होलिकायै नमः इति। विहितोपचारान्ते दीपनमन्त्र। दीपयाम्यद्यते घोरे चिति रक्षांसि सप्तमे। हिताय सर्वजगतां प्रीतये पार्वतीपतेः। अनेनार्चनेन होलिका-धिष्ठ्यत्रोदेवताप्रीयताम्। होलिकायां ज्वलितायाम्। तमग्निं त्रिपरिक्रम्यं शब्देलिंगभगादिगतैः तेन शब्देन सा पापाराक्षसी तृप्तिमाप्नुयात्। द्वितीयदिने होलिका भस्मधारण मन्त्रः- वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शंकरेण च। अतस्त्वं पाहिनो देवि विभूतिर्भूतिदाभवति।। होलिकावायु परीक्षा- पूर्वे राजा प्रजासुखं आग्नेमग्निभयं दक्षिणेनैऋत्येदुर्भिक्षं पश्चिमे महावृष्टि वायव्ये वायुवृद्धिः, उत्तरे सुभिक्षं इशान्याञ्च प्रजासुखं संक्षेपात्सकाल-तिथिनिर्णयः। रमभाहित्वापरविद्धा।। गणेशव्रते चन्द्रोदये ग्राह्यम् ।।५।। नागपूजायां सर्वत्र पूर्वविद्धम्।।१०।। नवमीयुक्तं च शुभाऽलाभे औदयिकी ।।१।। स्मार्तरुदयव्यापिनी ।५९। दण्डालिकोपोष्या। पारणार्थाद्वादश्यांलाभे १० विद्धाप्युपोष्या। परमपोष्या।। परमवैष्णवे ५३ दण्डाधिकाया द्वादश्या मुपवासतेनकदाचिद् दशमी विद्धाया सामान्य वैष्णवः ५५ दण्डाधिकाया द्वादश्या मुपलासीनकदाचिद् दशमी विद्धाया सामान्य वैष्णवः ५५ दण्डात्मिका-एकादशी नेवोपोष्या।१२। सर्वत्र सर्वान पूर्वविद्धाकृष्णा परविद्धा कृष्णापूर्वा शुक्लापरा।।१५।।

संक्षिप्त पूजन विधि

पूजा प्रारम्भ करने से पूर्व पूजक (यजमान या स्वयं) स्वस्थचित्त होकर आसन पर बैठकर 'ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः' कहकर आचमन करें तत्पश्चात् 'ॐ हृषीकेषाय नमः' उच्चारणपूर्वक हस्तप्रक्षालन कर 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥' इस मन्त्र के साथ सबसे पहले बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से शरीर की पवित्रता हेतु जल छिड़कने के बाद प्राणायाम करें। 'ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवाःस्वति नः पूषा-व्विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।' इत्यादि मन्त्र के साथ स्वस्ति वाचन तथा गणपत्यादि देवताओं का स्मरण करें अनन्तर तदनन्तर हाथ में जल, पुष्प, सुपारी, दक्षिणा लेकर संकल्प करें-'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽहनि द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते बौद्धावतारे........... नाम्निसंवत्सरे.......अयने.........ऋतौ........ मासे.....पक्षे.....तिथौ...... वासरे.......नक्षत्रे शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानेषुस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण-विशेषणविशिष्टायां....... गोत्रोत्पन्नः....... नामाऽहं मम कायिक-वाचिक-मानसिकज्ञाताज्ञात-सकलदोषपरिहार्थं श्रुति-स्मृतिपुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सकलकामना-सिद्ध्यर्थञ्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः पूजनमहं करिष्ये।' तत्पश्चात् सुपारी पर मौली लपेट कर चावलों पर स्थापित करें और नीचे लिखे आवाहन मन्त्र पढ़कर अक्षत छोड़ें। यदि मूर्ति हो तो पुष्प छोड़ें। **आवाहनम्**-गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्॥ उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्॥ आगच्छ भगवन्देव। स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव॥ **आसनम्**-रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!॥ (आसनं समर्पयामि) **प्रतिष्ठा**-अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥ **पाद्यम्**-उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥ (पाद्यं समर्पयामि) **अर्घ्यम्**-अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह। करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते। (अर्घ्यं समर्पयामि)। **आचमनम्**-सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्॥ आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर॥ (आचमनीयम् समर्पयामि) **स्नानम्**-गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे॥ (स्नानम् समर्पयामि)। **दुग्धस्नानम्**)-कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥ (दुग्धस्नानम् समर्पयामि) **दधिस्नानम्**-पयसा तु समुद्भूतं मधुराम्लं शक्तिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (दधिस्नानम् समर्पयामि) **घृतस्नानम्**-नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकं। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (घृतस्नानम् समर्पयामि) **मधुस्नानम्**-तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधुः। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (मधुस्नानम् समर्पयामि)। **शर्करास्नानम्**-इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारकम्। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (शर्करास्नानं समर्पयामि)। **पंचामृतस्नानं**-पयोदधिघृतं चैव मधु च शर्करा युतम्। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (पंचामृतस्नानं समर्पयामि)

चन्दनम्-मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम् चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (चंदन स्नानं समर्पयामि) **शुद्धोदकस्नानम्**-मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ (शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि) अनन्तर शुद्धदेववस्त्र से भगवान को पोछें तत्पश्चात् **वस्त्रम्**-सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्। (वस्त्रम् समर्पयामि)। **यज्ञोपवीतम्**-नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥ (यज्ञोपवीतम् समर्पयामि) **गन्धम्**-श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्। (गन्धम् समर्पयामि) **रोली**-कुंकुमं कामनादिव्यं कामिनीकामसम्भवाम्। कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर!॥ (रोली समर्पयामि) **सिन्दूरम्**-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥ (सिन्दूरम् समर्पयामि) **अक्षतम्**-अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥ (अक्षतान् समर्पयामि) **पुष्पम्**-पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैःकुमुदैरथ चम्पकैः। पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्॥ (पुष्पम् समर्पयामि) **पुष्पमालाम्**-माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो! मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर। (पुष्पमालां समर्पयामि) **विल्वपत्रम्**-त्रिशाखैर्विल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः। तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर॥ (विल्वपत्रम् समर्पयामि) **दुर्वा**-त्वं दुर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरैरपि। सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकार्यकरी भव॥ (दुर्वा समर्पयामि) **दुर्वांकुरम्**-दुर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायकः॥ (दुर्वांकुरान् समर्पयामि) **शमीपत्र**-शमी शमय मे पापं शमी लोहितकण्टकी। धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी। (शमीपत्रम् समर्पयामि) **अबीरगुलालम्**-अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च। अबीरेणार्चितो देव अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ (अबीरगुलालञ्च समर्पयामि) **आभूषणम्**-अलंकारान्महद्दिव्यान्नानारत्नविनिर्मितान्। गृहाण देवदेवेश प्रसीद परमेश्वरः॥ (आभूषणम् समर्पयामि) **धूपम्**-वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ (धूपम् दर्शयामि) **दीपम्**-साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥ (दीपम् दर्शयामि) **नैवेद्यम्**-शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम्। उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥ (नैवेद्यम् निवेदयामि) **मध्ये पानीयसमर्पणम्**-अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धिं च पिबेच्छया। त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यतृप्ते महात्मनि!। (मध्ये पानीयं समर्पयामि) **ऋतुफलम्**-इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि। (ऋतुफलम् समर्पयामि) **आचमनम्**-गङ्गाजलं समानीतं सुवर्णकलशेस्थितम्। आचम्यतां सुरश्रेष्ठ शुद्धमाचमनीयकम॥ (आचमनीयं समर्पयामि) **ताम्बूलम् पूंगीफलञ्च**-पूंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्। (ताम्बूलं पूंगीफलञ्च समर्पयामि) **दक्षिणा**-हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ (दक्षिणां समर्पयामि) **आरती**-चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥ (आर्तिक्यं दर्शयामि) **पुष्पाञ्जलिम्**-नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!॥ (पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि) **प्रार्थना**-रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षकः। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्। (प्रार्थनां समर्पयामि) अनया पूजया श्रीमहागणपतिः प्रीयतां न मम॥ इसी प्रकार अन्य देवों की भी पूजा करनी चाहिये। □

संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय

१. नवसंवत्सरारम्भः–**पिङ्गल** नामक नवसंवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ९ अप्रैल मंगलवार से प्रारम्भ होगा। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मंगलवार होने से **'मंगल'** इस वर्ष के राजा हुए हैं। **मेष संक्रान्ति १३ अप्रैल शनिवार** को लग रही है इसलिये मंत्री पद **'शनि'** को प्राप्त हुआ है। वासन्तिक नवरात्र का कलश स्थापन मध्याह्न अभिजित मुहूर्त दिन ११।३६ बजे से १२।२४ बजे के मध्य किया जायेगा अथवा वैधृति योग की समाप्ति दिन ३।१७ बजे के बाद से सूर्यास्त तक किया जा सकेगा।

२. आषाढ़ कृष्ण पक्ष–इस पक्ष में द्वितीया तिथि तथा पुनः चतुर्दशी तिथि का क्षय हो गया है जिसके कारण यह तेरह दिन का ही पक्ष है। इसे ज्योतिषशास्त्र के **ज्योतिर्निबन्ध** आदि ग्रन्थों में **'विश्वघस्त्र'** पक्ष कहा गया है। यह अशुभफलकारी होता है तथा विवाहादि कोई भी शुभ-मांगलिक कार्य इस पक्ष में नहीं किये जाते। इससे **रौरव** कालयोग भी कहा जाता है। सम्बन्धित प्रमाण पक्ष में दिया गया है।

३. रक्षाबन्धन–श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा **तिथि दिनांक १९ अगस्त सोमवार** को दिन में १।२५ बजे तक भद्रा व्याप्त है, अतः भद्रा के पश्चात दिन १।२५ बजे के बाद से रक्षा बन्धन का शुभ मुहूर्त बन रहा है। कहा गया है **'इदं भद्रायां न कार्यम्। भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।'**' रक्षा बन्धन बहनें अपने भाईयों के तथा पुरोहित-ब्राह्मण अपने यजमानों की रक्षा के लिए इस पुनीत कार्य को करते हैं, अतः भद्रा का निवास कहीं भी हो वर्जित है। **श्रावणी पूर्णिमायां भद्रा रहितायां रक्षार्थ रक्षिकाबन्धनं कारयेत।**''

४. श्रीकृष्णजन्माष्टमी– **२६ अगस्त सोमवार** को सप्तमी तिथि दिन ८।२० बजे समाप्त होकर अष्टमी तिथि लग जायेगी तथा रात्रि ९।१० बजे से रोहिणी नक्षत्र भी प्रारम्भ हो जायेगी। इस प्रकार अष्टमी तिथि-रोहिणी नक्षत्र **'जयन्ती योग'** बना रहा है। शास्त्रों में बुधवार तथा सोमवार को भी पुण्यफलकारक बताया गया है-**''किं पुनर्बुधवारेण सोमे नापि विशेषतः।''** अतः स्मार्त्त गृहस्थों के लिये **२६ अगस्त** को श्रीकृष्णजन्माष्टमी का पर्व मनाना अत्यन्त पुण्यफलकारी होगा। अपने को विशिष्ट वैष्णव मानने वाले तो औदयिक अष्टमी एवं रोहिणी में २७ अगस्त मंगलवार को श्रीकृष्णजन्माष्टमी मनायेंगे। वस्तुतः यह पर्व ही दो दिन का है एवं दोनों दिन के पक्ष में पर्याप्त शास्त्र प्रमाण मिलते हैं।

५. शारदीय नवरात्र महाष्टमी एवं महानवमी–शारदीय नवरात्र में अष्टमी तिथि दिनांक ११ अक्टूबर शुक्रवार को ही नवमी तिथि क्षयवती है, अतः महाष्टमी एवं महानवमी का व्रत एक ही दिन ११ अक्टूबर शुक्रवार को किया जायेगा।

६. विजयादशमी–विजया दशमी का पुण्य पवित्र पर्व १२ अक्टूबर शनिवार को दशमी तिथि एवं श्रवण नक्षत्र के योग में मनाया जायेगा।

७. धनतेरस–२९ अक्टूबर मंगलवार को दिन १०।५९ बजे से त्रयोदशी तिथि प्रारम्भ हो जायेगी अतः प्रदोष काल में त्रयोदशी तिथि मिलने के कारण २९ अक्टूबर मंगलवार को ही धनवन्तरि जयन्ती एवं धनत्रयोदशी का पर्व मनाया जायेगा।

८. दीपावली-प्रदोष काल एवं रात्रि व्यापिनी अमावस्या तिथि **३१ अक्टूबर गुरुवार को दीपावली का महापर्व मनाया जायेगा।** लक्ष्मी पूजन के लिए तीन मुहूर्त निर्धारित किये जा रहे हैं। **१.** वाणिज्यिक प्रतिष्ठान आदि में यदि दिन में ही पूजन करना हो तो स्थिर लग्न कुम्भ १।३३ बजे से ३।४ बजे के मध्य। **२. सर्वोत्तम प्रदोष काल का मुहूर्त्त स्थिर वृष लग्न में ६।११ बजे से ८।८ बजे के बीच तथा ३.** महानिशा के पूजन का मुहूर्त्त स्थिर सिंह लग्न १२।३९ से २।५३ बजे के मध्य। स्थानीय समय के अनुसार स्थान विशेष का समय निर्धारित किया जायेगा। कृपया लग्न परिवर्तन तालिका से काशी के उपरोक्त समय में लग्न के समय में धन अथवा ऋण कर समय निर्धारित कर लें।

९. होलिकादहन–होलिका दहन तीन नियमों का पालन करते हुए किया जाता है। **१.** फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तिथि हो। **२.** रात का समय हो एवं **३.** भद्रा बीत चुकी हो। तदनुसार **१३ मार्च गुरुवार को रात्रि १०।३७ बजे भद्रा** बीतने के बाद होलिका दहन किया जायेगा। स्थानीय समय के अन्तर को देखते हुए रात्रि १०।३७ बजे के बाद होलिका दहन का मुहूर्त्त निर्धारित किया जाता है।

१०. काशी में रंग की होली–काशी की अपनी परम्परा के अनुसार रंग की होली काशी में तथा काशी की परम्परा को मनाने वाले अन्य स्थानों में रंग की होली **१४ मार्च शुक्रवार** को होगी।

११. होली रंगोत्सव धुरेड्डी सर्वत्र–शास्त्र के नियम के अनुसार चैत्र कृष्ण प्रतिपदा (औदयिक) तिथि में ही रंग की होली धुरेड्डी, छरेंडी का पर्व मनाया जाता है। अतः काशी क्षेत्र से अन्यत्र सर्वत्र १५ मार्च शनिवार को होली का पर्व मनाया जायेगा।

भारतीय पर्व एवं व्रतोपवास संवत् २०८१

पर्व	तिथि	वार
विक्रम नवसंवत् वसन्त नवरात्रारम्भ	९ अप्रैल	मंगल.
झूलेलाल जयन्ती	१० अप्रैल	बुध.
मुस्लिम पर्व ईद	११ अप्रैल	गुरु.
मेष संक्रान्ति (सत्तू संक्रान्ति)	१३ अप्रैल	शनि.
चैती छठ, अम्बेडकर जयन्ती	१४ अप्रैल	रवि.
श्रीरामनवमी, रामचरित मानस जयन्ती	१७ अप्रैल	बुध.
महावीर जयन्ती जैन	२१ अप्रैल	रवि.
चैत्री पूर्णिमा, श्री हनुमद् जयन्ती	२३ अप्रैल	मंगल.
बाबू कुंवर सिंह जयन्ती		
परशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया	१० मई	शुक्र.
आद्यजगत गुरु शंकराचार्य जयन्ती	१२ मई	रवि.
श्री रामानुजाचार्य जयन्ती	१३ मई	सोम.
गंगा सप्तमी	१४ मई	मंगल.
नृसिंह चतुर्दशी	२१ मई	मंगल.
वैशाख पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती	२३ मई	गुरु.
वट सावित्री व्रत (बरगदाई)	६ जून	गुरु.
श्रीगंगा दशहरा, गायत्री जयन्ती	१६ जून	रवि.
निर्जला एकादशी (भीमसेनी)	१७ जून	सोम.
सन्त कबीर जयन्ती, ज्येष्ठ पूर्णिमा	२२ जून	शनि.
रथयात्रा	७ जुलाई	रवि.
हरिशयनी एकादशी	१७ जुलाई	बुध.
गुरु पूर्णिमा	२१ जुलाई	रवि.
धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जयन्ती	६ अगस्त	मंगल.
हरियाली तीज (कजरी तीज)	७ अगस्त	बुध.
नाग पंचमी	९ अगस्त	शुक्र.
भारतीय स्वतन्त्रता दिवस	१५ अगस्त	गुरु.
रक्षाबन्धन	१९ अगस्त	सोम.
कज्जली (रतजगा)	२१ अगस्त	बुध.
कज्जली तीज, संकष्ठी बहुला गणेश चतुर्थी	२२ अगस्त	गुरु.
हलषष्ठी, ललही छठ	२५ अगस्त	रवि.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी स्मार्त्त गृहस्थ	२६ अगस्त	सोम.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव	२७ अगस्त	मंगल.
कुशोत्पाटिनी सोमवती अमावस्या	२ सितम्बर	सोम.
भौमवती अमावस्या	३ सितम्बर	मंगल.
हरितालिका तीज, ढेलहिया चौथ, चन्द्रपूजा	६ सितम्बर	शुक्र.
वैनायकीवरद श्रीगणेश चतुर्थी, गणेशोत्सव	७ सितम्बर	शनि.
ऋषि पंचमी	८ सितम्बर	रवि.
लोलार्क षष्ठी	९ सितम्बर	सोम.
महारविवार व्रत	१५ सितम्बर	रवि.
अनन्त चतुर्दशी, विश्वकर्मा पूजा	१७ सितम्बर	मंगल.
पितृपक्ष श्राद्ध तर्पणारम्भ	१८ सितम्बर	बुध.
महालक्ष्मी पूजन समापन	२४ सितम्बर	मंगल.
जीवित्पुत्रिका व्रत, सोरहिया मेला समाप्त	२५ सितम्बर	बुध.
मातृनवमी	२६ सितम्बर	गुरु.
सर्वपैतृ अमावस्या, पितृ-विसर्जन	२ अक्टूबर	बुध
गांधी व शास्त्री जयन्ती		
शारदीय नवरात्रारम्भ	३ अक्टूबर	गुरु.
महाअष्टमी, महानवमी	११ अक्टूबर	शुक्र.
विजयादशमी	१२ अक्टूबर	शनि.
नवरात्र व्रत का पारणा	१२ अक्टूबर	शनि.
पापांकुशा एकादशी, भरत मिलाप (काशी)	१३ अक्टूबर	रवि.
कोजागरी पूर्णिमा	१६ अक्टूबर	बुध.
शरद पूर्णिमा, वाल्मीकि जयन्ती	१७ अक्टूबर	गुरु.
करक चतुर्थी, करवा चौथ	२० अक्टूबर	रवि.
अहोई अष्टमी, राधाष्टमी, राधा जयन्ती	२४ अक्टूबर	गुरु.
धनतेरस, धन्वन्तरी जयन्ती	२९ अक्टूबर	मंगल.
नरक चतुर्दशी, हनुमत जयन्ती	३० अक्टूबर	बुध.
दीपावली	३१ अक्टूबर	गुरु.
अन्नकूट, काशी से अन्यत्र गोवर्धन पूजा	२ नवम्बर	शनि.
काशी गोवर्धनपूजा, भईयादूज, चित्रगुप्तपूजा	३ नवम्बर	रवि.
सूर्यषष्ठी व्रतारम्भ, नागनथैय्या (काशी)	५ नवम्बर	मंगल.
सूर्यषष्ठी (डाला छठ)	७ नवम्बर	गुरु.
गोपाष्टमी	९ नवम्बर	शनि.
अक्षय नवमी	१० नवम्बर	रवि.
हरिप्रबोधिनी एकादशी, तुलसी विवाहोत्सव	१२ नवम्बर	मंगल.
बैकुण्ठ चतुर्दशी	१४ नवम्बर	गुरु.
कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानकजयन्ती, देवदीपावली	१५ नवम्बर	शुक्र.
श्रीकालाष्टमी, कालभैरवाष्टमी	२३ नवम्बर	शनि.
रुद्रव्रत (पीड़िया)	२ दिसम्बर	सोम.
विवाह पंचमी	६ दिसम्बर	शुक्र.
मोक्षदा एकादशी, गीता जयन्ती	११ दिसम्बर	बुध.
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	१४ दिसम्बर	शनि.
क्रिसमस डे, बड़ा दिन, मालवीय-अटल जयन्ती	२५ दिसम्बर	बुध.
गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती (नवीन मत)	५ जन.२५	रवि.
गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती (प्राचीन मत)	६ जनवरी	सोम.
मकर संक्रान्ति, खिचड़ीपर्व	१४ जनवरी	मंगल.
गणेश चौथ	१७ जनवरी	शुक्र.
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती	२३ जनवरी	गुरु.
भारतीय गणतन्त्र दिवस	२६ जनवरी	रवि.
मौनी अमावस्या, कुंभ महापर्व (प्रयाग)	२९ जनवरी	बुध.
बसन्त पंचमी	३ फरवरी	सोम.
हरसूब्रह्मदेव जयन्ती, महानन्दा नवमी	६ फरवरी	गुरु.
माघी पूर्णिमा, रविदास जयन्ती	१२ फरवरी	बुध.
जानकी जयन्ती	२१ फरवरी	शुक्र.
महाशिवरात्रि	२६ फरवरी	बुध.
आमलकी रंगभरी एकादशी	१० मार्च	सोम.
होलिकादहन	१३ मार्च	गुरु.
होली (काशी में)	१४ मार्च	शुक्र.
रंगोत्सव, धुरेड्डी, होली काशी से अन्यत्र सर्वत्र	१५ मार्च	शनि.
रंगपंचमी	१९ मार्च	बुध.
बुढ़वा मंगल (काशी का)	२५ मार्च	मंगल.
महावारुणी पर्व योग	२७ मार्च	गुरु.
चान्द्रसंवत्सर २०८१ समाप्त	२९ मार्च	शनि.

पत्र व्यवहार का पता-

रामेश्वरनाथ ओझा एम.ए. ज्योतिषाचार्य

प्रधान सम्पादक

श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम्

कार्यालय

बी.३७/१८२-क, खन्ना वाटिका, बिरदोपुर, वाराणसी-२२१०१०

ज्योतिष सम्बन्धी विमर्श के लिये पत्र भेजें, उत्तर दिया जायेगा।

सत्वाधिकारी रामेश्वरनाथ ओझा की ओर से आनन्द अग्रवाल द्वारा मुद्रित तथा ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुक्सेलर, राजादरवाजा वाराणसी से प्रकाशित।

नोट-प्रस्तुत पंचाङ्ग में हर संभव सावधानी बरती गयी है। फिर भी मुद्रण या मानवीय भूल संभव है। सुझाव या समाधान के लिए फोन नं. 9369516832 पर संपर्क करें।